MERUSUNDARAGAŅI-VIRACITA

ŚĪLOPADEŚAMĀLĀ-BĀLĀVABODHA

L. D. SERIES 77
GENERAL EDITORS
DALSUKH MALVANIA
NAGIN J. SHAH

EDITORS
H. C. BHAYANI
R. M. SHAH
GITABAHEN



L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD-9

MERUSUNDARAGANI-VIRACITA

SĪLOPADESAMĀĻĀ-BĀĻĀVABODHA

L. D. SERIES 77
GENERAL EDITORS
DALSUKH MALVANIA
NAGIN J. SHAH

EDITORS

H. C. BHAYANI R. M. SHAH GITABAHEN



L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD 9

Printed by

Mahanth Tribhuvandas Shastri

Shree Ramanand Printing Press

Kankaria Road

Ahmedabad-380022.

Published by
Nagin J. Shah
Director,
L. D. Institute of Indology
Ahmedabad-380009.

FIRST EDITION

October 1980

"Printed with the financial assistance of the Government of Gujarat."

PRICE RUPEES

मेरुसुन्दरगणि-विरचित

शीलोपदेशमाला-बालावबोध

संपादको

इ. चू. भायाणी

र. म. शाह

गीताबहेन



लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर अहमदाबाद ९

प्रधान-संपादकीय

जयसिंहस्रिश्य जयकीर्तिए (विक्रमनी दसमी शताब्दी ?) महाराष्ट्री प्राकृत भाषामां आर्या छंदमां १९४ गाथामां रचेली 'शीलोपदेशमाला' उपर मेहसुन्दरे वि. सं. १५२५मां (=ई. स. १४६९मां) मांडवगढमां रचेली बालावबोध, मूळ 'शीलोपदेशमाला' साथे, सौप्रथम प्रकाशित करतां आनंद थाय छे. संस्कृत-प्राकृत भाषामां रचायेली महत्त्वपूर्ण धार्मिक, शास्त्रीय के उपदेशात्मक कृतिनो जूनी गुजराती भाषामां करवामां आवेल विवरणात्मक गद्य अनुवाद ए बालावबोध कहेवाय छे. बालावबोधसाहित्य ई. स. नी १३मी सदीना उत्तरार्धथी मळे छे. आ साहित्यनुं अध्ययन गुजराती गद्यना विकास पर सारो प्रकाश पांडे छे. मेरसुन्दरने। प्रस्तुत बालावबोध विक्रमनी १६मी शताब्दीनी कृति होई ते समयना गुजराती गद्यनो सारो परिचय आपे छे. एनो मोटो भाग ४३ कथाओए रोवयो छे. एटले कथाविकास अने कथाघटकोना अभ्यासीओने पण ए उपयागी नीवडशे. वळी, भाषाशास्त्रीय दृष्टिए एनो अभ्यास करनारने महत्त्वनी सामग्री पूरी पाडवानी एनी क्षमता छे. आम अनेक दृष्टिए एनं प्रकाशन महत्त्वनुं पुरवार थशे.

विद्वान संपादकोए छ प्राचीन हस्तप्रतोने आधारे 'शीलोपदेशमालाबालावबोध'नुं चीवटपूर्व क संपादन कर्युं छे. उपरांत, पहेलां छपायेल मूळ 'शीलोपदेशमाला'नी गाथाओ अशुद्धप्राय होई, संपादकोए आ संपादनमां विविध हस्तप्रतो तेम ज छंदने आधारे पाठशुद्धि करी छे. वळी, अभ्यासपूर्ण भूमिकामां तेमणे बालावबोधसाहित्यनो परिचय अने तेनुं महत्त्व, मूळ 'शीलोपदेशमाला' अने तेना कर्ता, शी. मा. बालावबोधना कर्ता मेरुसुंदर अने तेमनी कृतिओ, शी. मा. बालावबोधना कर्ता मेरुसुंदर अने तेमनी कृतिओ, शी. मा. बालावबोधना कर्याओं, प्रतिपरिचय अने संपादनपद्धति, शी. मा. बालावबोधनी भाषाकीय लाक्षणिकताओं वगेरेनुं रोचक अने समुचित निरूपण कर्युं छे. प्रस्तुत संपादन संशोधकोने उपकारक बने ए हेतु-थी तेमणे 'शीलोपदेशमाला'नी गाथाओनी अकारादिसूची, 'शी.मा. बालावबोध'मां उद्धृत संस्कृत—प्राकृतपद्योनी अकरादिसूची अने महत्त्वना शन्दोनी सार्थ सूची तेयार करी आपी छे जे प्रन्थना अन्ते छापी छे. आम आ संपादनने अनेक दृष्टिए उपयोगी बनाववा तेमणे खूब काळजी लीधी छे, ते बदल आपणे सौ तेमना ऋणी छीए.

जूनी गूजराती साहित्यकृतिओना प्रकाशनमां सहकार आपवा बदल गूजरात राज्यना भाषा-नियामक श्री जोषीपुरानो हुं अंतःकरणपूर्वक आभार मानुं छुं. आ ग्रंथना प्रकाशनमां आर्थिक सहाय करवा बदल गुजरात सरकारनो हुं आभारी छुं.

ला. इ. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद : ३८०००९ १ ओक्टोबर, १९८०

नगीन शाह अध्यक्ष

अनुक्रम

भूमिका

१-२८

प्रास्ताविक (पृ. १), मूल प्राकृत शीलोपदेशमाला अने तेना कर्ता (२), शीलोपदेशमालानी संस्कृत अने गुजराती टीकाओ (२-३), मेहसुन्दर उपाध्याय अने तेमनी कृतिओ (३-५), शीलो-पदेशमाला-बालावबोध (६-८), प्रत-परिचय अने संपादन-पद्धति (८-१२), बालावबोधो (१२-१३), शीलोपदेशमाला-बालवबोधनी भाषाकीय लाक्षणिकताओ (१३-२७), उपसंहार (२८)

शीलोपदेशमाला-बालावबोध

१-१८२

(मूळ प्राकृत गाथाओ तथा तेमनो गुजराती बालावबोध)

बालावबोधगत कथाओ: गुणसुन्दरीनी कथा (पृ. २-४), द्वीपायन ऋषिनी कथा (६-७), विश्वामित्र ऋषिनी कथा (७-८), नारद मुनिनी कथा (९-१३), रिपुमर्दन राजानुं दृष्टांत (१४-१७), इन्द्रनुं दृष्टांत (१७), विजयपाल राजानुं दृष्टांत (१८-१९), हरिनी कथा (२०), इत्त्रनुं दृष्टांत (१७), व्रह्मनी कथा (२०), व्रह्मनी कथा (२०-२२), आईन्द्रमारनी कथा (२४-२८), नंदिषेणनी कथा (२८-३०), रथनेमिनी कथा (३१-३२), नेमिचरित्र (३४-४६), मिल्लिनाथ-चरित्र (४७-५०), स्थूलभद्ग-चरित्र (५१-५६), व्रत्रस्वामि-चरित्र (५६-६३), सुदर्शन श्रेष्टिनी कथा (६४-६७), वंक-चूलनी कथा (६८-७१), सती सुमद्रानी कथा (७३-७५), मदनरेखा सतीनी कथा (७५-७९), सती सुन्दरीनुं दृष्टांत (८०-८२), अंजनासुन्दरी-दृष्टांत (८२-८७), नर्भदासुन्दरी-कथा (८७-९२) रितसुन्दरी-कथा (९३-९६), ऋषिदत्ता कथा (९६-१०४), दवदंतीनी कथा (१०४-११६), कमला सतीनी कथा (११९-१२३), नेद्यंतीनी कथा (१३९-१३३), रोहिणीनी कथा (१३४-१३५), कूलवाल्यानी कथा (१३०-१३९), हुपदीनी कथा (१४०-१४२), नुपुरपंडितानुं दृष्टांत (१४३-१४८), दृत्तदृहितानी कथा (१४८-१५०), अगडदत्तनी कथा (१५४-१६१), प्रदेशी राजानी कथा (१६१-१६२), सीतानी कथा (१६७-१७८), अगडदत्तनी कथा (१५४-१८२).

शीलोपदेशमालानी गाथाओनी अकारादि सुची

963-68

शीलोपदेशमाला-बालावबोधमां उद्धृत संस्कृत-प्राकृत पद्योनी

अकारादि सूची

१८५

महत्त्वना शब्दोनी सार्थ सूची

१८६-१९२

भूमिका

प्रास्ताविक :-

प्राचीन गुजराती साहित्यमां गद्यनुं खेडाण पण विपुल प्रमाणमां थयेछुं ते हवे सिद्ध हकीकत छे. आ गद्यनो मोटो भाग 'बालावबोध' प्रकारनी रचनाओमां मळे छे.

'बालावबोध' एटले संस्कृत-प्राकृत भाषामां रचायेल महत्त्वपूर्ण धार्मिक—शास्तीय के उपदेशारमक—ग्रंथोनां जूनी गुजराती भाषामां करेल विवरणारमक अनुवाद. 'बाल'मां अब के अल्पन्न गृहस्य अने नवदिक्षित के बालवयना मुनिनो अर्थ समायेल छे के जे संस्कृत—प्राकृत भाषाना ज्ञानथी वंचित होय. आवा बालजनोने तेमनी पोतानी भाषामां धर्म-रहस्यनो बोध करावया विद्वान जैन मुनिराजोए अनेक बालावबोधोनी रचना करी छे.

बालावबोध-साहित्यनो प्रादुर्भाव छेक ई.स.नीते रमी सदीना उत्तरार्धथी थयेल जोवा मळे छे. पण दीर्घ अने परिष्कृत कही शकाय तेवी कृतिओनी परंपरा चौदमी शताब्दीथी शरू थाय छे. उत्तरप्रच्छीय तरुणप्रभस्रिकृत 'षडावर्यक—बालावबोध' (बि. सं. १४११, ई. स. १३५५) ने आवी आद्य रचना कही शकाय. त्यारबाद तपागच्छना प्रसिद्ध आचार्य सोमसुंदरस्रि (ई. स. १३७४-१४४३) ना रचेला उपदेशमाला, षडावर्यक, योगशास्त्र, आराधनापताका, नवतत्त्वप्रकरण, भक्तामरस्तोत्र, षिटशतकप्रकरण ब. अनेक ग्रंथो परना महत्त्वपूर्ण बालावबोधो मळे छे. तदुग्गंत खरतरगच्छना आचार्य जिनसागरस्रि-प्रणीत षिटशतक चालावबोध (वि. सं. १५०१, ई. स. १४४५) अने बीजा जैन मुनिओ द्वारा केटलीक बाला० रचनाओ मळे छे.

पंदरमा शतकना प्रारंभमां अनेक ग्रंथो पर विशद बालावबोघो लखनार मेरुसुंदर उपा-ध्याय आवे छे. तेमना रचेला षष्टिशतक—प्रकरण अने वाग्मटालंकारना बालावबोघो आ पूर्वे प्रगट थई चूक्या छे. अहीं जयकीर्तिस्रि-रचित प्राकृत गाथाबद्ध सीलोवएसमाला (शीलो-पदेशमाला) ना बालावबोधनी संशोधनात्मक आवृत्ति आपी अमे तेमां एकनो उमेरो करीए छीए.

आ शीलो. बाला. नुं महत्त्व वे रीते छे—एक हो ते पंदरमी सदीनी गुजराती भाषा पर प्रकाश फेंकवा माटे अत्यंत उपयोगी ने प्रचूर सामग्री पूरी पाडे छे, बीजुं तेमांनी कथाओं कथासाहित्यना इतिहास अने कथानकोनी परंपराना अध्ययन माटे मूल्यवान छे.

१. प्राचीन गुजराती गद्य अने बालावबोध साहित्यना वधु परिचय माटे जुओ: गुजराती साहित्यनो इतिहास, गुजराती साहित्य परिषद, प्रंथ-१ प्रकरण-८ तथा ग्रंथ-२ प्रकरण-२१.

२. जैन गूर्जर कविओ, मो. द. देसाई, मा-३, पृ. १५७१-१७०३

है। ,, ,, ,,

४. घडावश्यक-बालावबेध, संपा. डॉ. प्रबोध पंडित, सिंधी जैन ग्रंथमाला, मुंबई-१९७६.

५. बन्नेना संग डो. भोगीलाल ज. सांडेसरा, प्रका. म. स. विश्वविद्यालय, व्होद्रा, प्रका. वर्ष-क्रमे १९५३, १९७५.

मूळ प्राकृत शीलोपदेशमाला अने तेना कर्ता :-

अहिंसा, सत्य, क्षमा, दया, तप, सम्यक्त्व, शील आदि गुणाना पालननो सरळ प्राकृत गाथाओमां सीघो उपदेश अने ते ते विषयमां अनुकरणीय व्यक्तिओना चरित्रनो निर्देश—ए प्रकारनी धर्मीपदेशात्मक गाथाबद्ध कृतिओनी एक परंपरा प्राकृत साहित्यमां बोवा मळे छे. धर्मदास गणिनी उपदेशमाला, हरिभद्रसूरिनी उपदेशगद, जयसिंहसूरि-रचित धर्मोपदेशमाला इत्यादि आनां प्रसिद्ध उदाहरणो छे. शोलोपदेशमालाने पण आ परंपरामां मूकी शकाय.

शीलोपदेशमालामां शील एटले के (जैन साहित्यना रूढ अर्थमां) ब्रह्मचर्य-पालन विषयक उपदेश आपवामां आग्यो छे. दृष्टांतरूपे तेमां शीलपालन करनार अनेक महान स्त्री-पुरुषोनो निदेश छे. शीलमंगथी यती हानि अने शीलपालनथी यतां लेकिक—अलेकिक लाभोनं वर्णन प्रचलित उदाहरणो द्वारा करो सामान्य जनोने शीलनुं महत्व समजाववानो कविनो आमां उद्देश छे.

महाराष्ट्री प्राकृत भाषामां, आर्या छंदमां ११४ गाथामां रचायेली शीलोपदेशमालाना कर्ता जयसिंहसूरि—शिष्य जयकीर्ति नामे छे. गुरु—शिष्य विशे अन्य कंई माहिती प्राप्त थती नथी. जयसिंहसूरि नामक एक आचार्ये धर्मरासगणि-रचित उपदेशमालानुं अनुसरण करीने धर्मोपदेशमाला नामक प्राकृत गाथाबद्ध रचना अने तेनुं विवरण करेल छे. कृष्ण मुनिना शिष्य आ जयसिंहसूरिए पोतानो धर्मीपदेशमालानुं विवरण नागोरमां वि.सं ९१५मां पूर्व कर्याने उवलेख छे. संभव छे के शीलोपदेशमालाना कर्ता जयकीर्ति आ जयसिंहसूरिना शिष्य होय अने गुवनी धर्मीपदेशमालानुं अनुकरण करी शिलोपदेशमालानी रचना करी होय. जो आम होय तो जयकीर्तिनो समय विकमनी दशमी शताब्दी अनुमानी शकाय.

शीलोपदेशमालानी सेंकडो हस्तप्रतो जैन ज्ञानभेडारोमां मळे छे ते हकीकत एनु केटछुं महत्त्वपूर्ण स्थान हतुं तेनो निदेश करे छे.

अत्यार सुधीमां शीछोपदेशमालानी वे आवृत्तिओ छपाई प्रसिद्ध थई छे. ई. स. १९०० मां अमदावादनी विद्याशाला मंस्थाए शीलोपदेशमाला मूळ अने तेनो गुजराती अनुवाद तथा तेनी शीलतरंगिणी नामक टीकानो मात्र गुजराती अनुवाद प्रकाशित करेल अने ई. स. १९०९ मां श्रावक हीरालाल हंसराजे जामनगरथी शीलतरंगिणी टीका सहित शीलोपदेशमाला प्रकाशित करेल. आ बन्नेमां मूळ गाथाओ अशुद्धप्राय छपायेल छे, अमे अहीं विविध हस्तप्रतो तेम ज छंदना आधारे पाठनिर्णय करी शुद्ध पाठ आप्यो छे.

शीलोपदेशमालानी संस्कृत अने गुजराती टीकाओ :-

शीलोपदेशमाला जैन साहित्यमां औपदेशिक रचनाओमां महत्त्वपूर्ण स्थान धरावती होवानुं एना परनी अनेक टीकाओथी पण सिद्ध थाय छे. जिन्दत्नकीशमां शीलोपदेशमालाना चार संस्कृत टीकाओनी नींध छे. है—(१) आ. सोमतिलकसूरि रचित शोलतरंगिणी, (२) लिलतकीर्ति—कृत टीका, (३) पुण्यकीर्ति—कृत अने (४) अज्ञात—कर्नृक वृत्ति. आमांनं

१ जुओ -जैन साहित्यका बृहद् इतिहास (पार्श्वनाथ विद्याश्रम, वाराणसी, १९६८ भा• ४, प्रकरण-३•

२. एजन, पृ. १९६.

३. जिनरत्नकोश, ह. दा. वेलन्कर, पुना, १९४४, पृ. ३८५.

प्रथम शीलतरंगिणी सिवाय बाकीनी त्रण विशे नामाल्लेख सिवाय कशी माहिती मळती नथी, ज्यारे शीळतरंगिणी आगळना पेराग्राफमां जणाव्या प्रमाणे प्रकाशित थई गयेल छे.

शीलतरंगिणीनी रचना घद्रपव्लीय गच्छना आ० संघतिलकसूरिना पद्दशिष्य आ. सोमतिलकसूरि, अपरनाम विद्यातिलके वि. सं. १३९४ (ई. स. १३३७) मां करेल छे. तेमना रचेला अन्य ग्रंथोमां वीरकल्प, षड्दर्शनसृत्रटीका, लघुस्तवटीका अने कुमारपालदेवचरितना नामो मळे छे.

शोलतरंगिणी टीका अहीं विशेष उल्लेखनीय एटला माटे छे के मेर्सुंदर उपाध्याये आ संस्कृत टीकाने अनुसरीने बालावबोधनी रचना करी जणाय छे. शीलतरंगिणीमां जे जे कथाओं छे ते बधी ज कथाओं ते ज क्रमे अने लगभग सरखा विस्तारथी बालावबोधकारे गुजरातीमां आलेखी छे.

जुनी गुजरातीमां शोलोपदेशमाला पर अनेक बालावबीघ जुदा जुदा समये रचायेला मळे छे, जेनी यादी आ प्रमाणे छे—

क्रम	कर्ता	लेखन सं वत	रचना संवत	हस्तप्रत—संग्रह अने स्थळ
१.	अज्ञात	१४६६	-	हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर, पाटण
₹.	"	१५२१		**
₹.	मेरुसुंदर		१५२५	अनेक संग्रहमां
8.	अशात	१५३० पूर्व	***	
u .	,,	१५५१		छाणी
ξ.	**	१५८८		
v.	,,	१६१६		हेमचंद्राचार्य ज्ञान मंदिर, पाटण
٤.	• ••		१६४०	
٩.	",	१९२१	_	प्र. कान्तिविजयजी संग्रह, वडोदरा

आ यादी परथी जणाय छे के मेरुसुंदर उपाध्यायनी पहेलां पण शीलोपदेशमाला पर बालावबोधो रचाया हता. पण आ बालावबोधोमां मेरुसुंदरना बालावबोध जेटली प्रसिद्धि बीजाने नथी मळी.

मेरुसुंदर उपाध्याय अने तेमनी कृतिओ:-

शीलोपदेशमाला-बालावबोधना कर्ता उपाध्याय मेरुसुंदर विक्रमना सोलमा शतकना पूर्वा-र्घमा थई गया. तेओ लरतरगच्छना प्रसिद्ध आचार्य जिनभद्रसूरि (वि.सं.१४४९-१५१४) ना पट्टशिष्य आ जिनचन्द्रसूरि (वि.सं.१४८७-१५३०) ना शिष्य वा० रत्नमूर्ति गणिना शिष्य हता.

१. जैन परंपरानो इतिहास, ले. त्रिपुटि मुनि, भा. र, पृ. ४३६.

२. शीलो. बाला विचान पछी दश वर्षे (वि. सं. १५३५ मां), शीलो विला विचान वि

मेरसुंदर उपाध्याय तेमना रचेला बालावबोधोने कारणे प्रसिद्ध छे. अस्यार सुधीमां तेमना रचेला चौद जेटला बालावबोध जाणवा मळेले. शीलो० बाला० नी हस्तप्रतोनी शोध करतां अमने तेमना रचेल बे वधु बालावबोधनी जाण थई छे — एक धमदासगणिनी उपदेशमाला परनो अने बीजो छे नंदिषेण-कृत अजितशांतिस्तवन उपरनो. प्रथम बालावबोधनी प्रत रोयल एशियाटीक सोसायटीनो मुंबई शाखानी लायब्रेरीमां छे अने बीजानी प्रतो गटणना हेमचन्द्राचार्य शानमंदिरमां तथा अमदाबादना ला. द. विद्यामंदिरना संग्रहमां छे .

आ रीते अत्यार सुधीमां कुल सोळ बाल।वबोध तेमना रचेला उपलब्ध थाय छे. ते बधानी विगते सूचि नीचे आपी छे—

क्रम	र कृति		रचना∼संवत	विशेष नोंध
₹.	शत्रुं जय-स्तवन	बालावबोघ	१५१८	अप्रकाशित
₹.	पुष्पमाला-प्रकरण	"	१५२३	»;
₹ '	षडावस्यक-प्रकरण	5,	१५२५	आ तथा पछीना वे बाला०
٧.	शीलोपदेशमाला	,,	,,	नी रचना मंडप दुर्गमां थई छे.
٧.	षष्टिशतक-प्रकरण	,,	१५२७	प्रकाशित ^५
€.	कर्पू रप्रकर-स् तोत्र	,,	१५३१	अप्रकाशित
	वाग्भटालंका्र	,,	१ ५३५	प्रकाशित [®]
	भक्तामर-स्तोत्र	,,	अज्ञात	अप्रकाशित
ዓ.	भावारिवारण-स्तोत्र	,,	",	,,
₹ .	कल्प-प्रकरण	,,	55	";
	पंचिनिर्यथी-प्रकरण	,,	7,9	3.5
१२.	योगशास्त्र	31	,,	••
	विद ग्व मुखमंडन	"	"	,,
	वृत्त् रत्नाकर	,,	,,	,,
-	उपदेशमाला	,,	,,	"
₹६.	अ जित शांतिस्तवन	,,	•••	15

- र. जैन गूर्जर कविओ, भा॰ १, पृ० ६०१-२; भाग-३, पृ. १५८२-८५ तथा डो. भो. ज. सांडेसरा संपादित षष्टिशतक प्रकरण, प्रस्तावना पृ. १५-१६.
- R. Descriptive Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the Library of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Bombay, Vols. iii-iv, 1930, p. 404 (Ms. no. 1570)
- 3. Catalogue of Manuscripts in Shri Hemachandracharya Jain Jnanamandira, Patan, Part. 1, 1972 p. 563 (Ms. no. 12969) and p. 564 (Ms no 12994).
- ४. ला. दः भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावादना पुन्यविजयत्री आदि संग्रहमां हस्तप्रत क्रमांक-२२०४०.
- ५. षष्टिशतक-प्रकरण, संपा० डो. भो. ज. सांडेसरा, प्राचीन गुर्जर ग्रंथमाला, म. स. युनि०, वडोदरा, १९५३.
 - ६. वारभटालंकार, संपा० प्रका० उपर मुजब, १९७५.

आ बालावबोधो उपरांत हेमचन्द्राचार्य ज्ञान मंदिर, पाटणना संग्रहमां मेरुसुंदर उपाध्यायना नामे प्रदनोत्तर-पद्शतक नामक एक गुजराती रचना तथा ६ जेटलां नानां नानां संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश स्तोत्रो^२ पण मळे छे.

बालावबोधोनी यादी बोतां जणाय छे के उपाध्यायजीए विदिध विषयोना संस्कृत-प्राकृत ग्रंथोने गुजरातीमां उतार्या छे. वृत्तरताकर, वाग्लट लंकार अने विद्रधमुखमंडन जेवा जैनेतर ग्रंथोना बालावबोधो पोताना शिष्योने काव्य अने अलंकारनी समज आपवा तेमणे रच्या होई शके. ज्यारे षडावर्यक, शीलोपदेशमाला, उपदेशमाला आदिना बालावबोधो नवदीक्षित शिष्यो तेम ज साधारण ज्ञान धरावता आवकोने धर्मनां तत्त्वोनो बोध कराववाना उद्देश्यथी रच्वा जणाय छे. भव्य एटके के मुपुक्ष जीवोने बोध आपवाना हेतुथी पोते आ बालावबोधनो रचना करी छे एम तेओए स्वयं शीलो० बाला० नो प्रशस्तिमां क्ह्यं छे.

उपाध्यायजी समक्ष ते समये आदर्शरूपे तरुणप्रभसूरि, सोमसुन्दरस्रि, जिनसागरस्रि आदि रचित बालावबोधो हता. पडावश्यक बाला. नी प्रशस्तिमां तेमणे जणाव्युं छे के तरुणप्रभस्रि-रचित घडा. बाला.ना अनुसार पोते आ बाला. रची रह्या छे.

मेरुसुन्दरनी विशिष्टता एमना लाघवमां रहेली छे. निरर्थक लंबाण विना ज तेओ मूळना अर्थने गुजरातीमां सचोटताथी अने सरळताथी उतारी शक्या छे.

तेमना उपलब्ध बोलावबोधोमां मात्र ७ना रचना वर्षनी नोंध छे. तेमांथी प्रथम श्रुंजय स्तवन बाला० नी रचना वि. सं. १५१८ नोंधाइ छे अने वाग्भटालंकार—बाला० नी रचना वि. सं. १५३५ बाकीना पण आ समयगाळानी आजुबाजु ज रचाया होवानुं कही शकाय. वळी षडावश्यक, शीलोपदेशमाला अने षष्टिशतकप्रकरण ए त्रणना बालावबोधो मंडपदुर्ग (हालना मध्यप्रदेशमां आवेल मांडु के मांडवगढ) मां रहीने तेओए त्रणेक वर्षना गाळामां रच्या छे.

१. हेमचन्द्राचार्ये ज्ञान मंदिर, पाटण, हस्तप्रत नं. १२३६६.

२. हेमचन्द्राचार्य ज्ञान मंदिर, पाटण, हस्तप्रत नं. ११५०१.

३. जुओ पछीनो पेरेग्राफ.

^{8.} Descriptive Catalogue of Sans. Pkt. Mss. in the Library of the B. B. R. A. S., Bombay, Vols. III-IV p. 400 (Ms. no. 1535)

५. षिटशतक प्रकरणनो बालावबोध मेरुसुंदर उपाध्याये बनारसमां रही रच्यो होवानुं पोताना षिटशतक प्रकरणना संपादनमां डॉ. सांडेसराए नोंध्युं छे. (प्रस्तावना, पृ. १५). 'वणारीस' शब्दनो 'बनारस एवो मळतो अर्थ करवाथी आ मूल थई जणाय छे. वणारीस'नो अर्थ अहीं 'वाचक' के 'उपाध्याय' एवो छे. अने मेरुसुन्दरना विशेषण तरीके ते पद अहीं तृतीया विभक्तिमां प्रयोजायुं छे. वळी ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरना सग्रहमांनी नं. ३६५९नी षिटशातक प्रकरण-बालावबोधनी प्रतिनी प्रशस्तिमां तेनी रचना मंडपदुर्गमां वि. सं. १५२७ मां थयानुं स्पष्ट जणावेल छे.

शीलोपदेशमाला-बालावबोध

शीलो. बालानी एक हस्तप्रतमांथी श्री मो. द. देसाइए बालावबोधना अंतमां आपेली लेखकनी स्वरचित प्रशस्ति नेंभी छे. ते आ प्रमाणे छे—

श्रीमत्-खरतर-गच्छे बहु-गुण-संबुध-राज-विदिते । षट्तिशत्-गुण-सहिता श्रीमिष्जनमद्रस्योऽभवन् । तत्रश्चाच्छ-शृङ्गार-हार-नायक-सिन्नभाः । श्रीजनचन्द्रस्र्रन्द्राः जयन्ति सपरिच्छदाः । तेषां गुरूणामादेशं प्राप्य श्री-जय-मन्दिरं । श्रीमद्रत्नमूर्ति-गणि-वाचनाचार्य-शिष्यकः । श्रीमेरसुन्दर-गणेगुं ण भक्ति-परायणः । नाना-पुण्य-जनाकंणे दुर्गे श्री-मण्डपामिषे । उदार-चरित ख्यात- श्रीमाल्जाति-सम्भवः । संघाधिप-धनराको विवयोऽस्ति द्यापरः । तस्याभ्यर्थनया मन्यजनोपकृति-हेतवे । श्रीलोपदेशमालाया बालावकोषो मया रचितः । तावन्ननदत् सोऽयं याविजन-वीर-तीर्थिमदम् ॥

आ प्रशस्ति परथी शीलो. बाला.नी रचनानी समय, स्थळ अने उद्देश त्रणे स्पष्ट थाय छे—ि. सं. १५२५ (ई. स. १४६९) मां बाला. नी रचना मेरुपुन्दर गणिए मंडाहुगैनां करो. श्रीमाल ज्ञातिना संघरति घतराजनो प्रार्थनाथी भग्यजनोना उपकार माटे लेखके आ रचना करी.

मूळ गाथा आपी एनो अनुवाद करवो अने वच्चे वच्चे अघरा शब्दोनी समज्ति आपता जवी एवी खास करीने बालावबोधनी परिपाटि होय छे. अहीं पण ए ज पद्धति मेरुसुंदरे अपनावी छे. विशेषमां मूळ गाथाओमां आवतां दृष्टांतोने विस्ताराने संपूर्ण कथा रूपे रज्जू कर्यों छे. आधी मूळ ११४ प्राकृत गाथाओनी व्याख्यानी विस्तार ६००० प्रत्थाप्र जेटलो मोटो थयो छे. आम बालावबोधनो मोटो भाग आ दृष्टांतो अने कथाओए रोक्यों छे.

कथाप्रकृतिओ अने कथाघटकोना अभ्यासनी हिष्टिए उपयोगी होई आ बधी कथाओनी विषय-निर्देश, कथा-क्रमांक अने पृष्ठ-संख्या साथेनी यादी नीचे आपी छे. शोल उपरि —

१ गुणसुंदरीनी कथा श्रीत्रभ्रंश उपरि---

ष्ट. २ -४

२ द्वीपायन ऋषिनी कथा

£ --\e

३ विश्वामित्र ऋषिनी कथा

- १. जैन गूर्जर कविओ भा. ३, खं-२, पृ १५८३.
- २. शीलो. बाला ना प्रस्तुत संगदनमां उपयोगमां लीधेली हस्तप्रतोमां मात्र एक В प्रतमां, जून शाब्दिक फेरफार साथे, आ प्रमाणिनी ज कवि-प्रशस्ति मळे छे. पण ते अधूरी छे. जुआ प्रति-परिचय.

•	
षील उपरि —	
४ नारद मुनिनी कथा	९ - १३
स्त्री-दासत्व उपरि	
५. रिपुमद्देन राजानु इन्टांत	१४-१७
६. इन्द्रेनुं दृष्टांत	१७ —
७. विजयपाल राजानु हन्टांत	१८- १९
८. हरिनी कथा	₹•-
९. हरनी कथा	₹•-
१०. ब्रह्मा नी कथा	₹•₹
११. चंद्रनी कथा	२१-
१२. सूर्येनी कथा	२१
१३. इन्द्रनी कथा	२ १ –२२
विषयनी प्रबळता उपरि	
१ ४. आर्द्रकुमारनी कथा	28-26
१५. नंदिषेणनी कथा	₹८-३०
१६. २थनेमिनी कथा	₹ ₹ – ३ २
कामविजेता शीलवंत महारमानुं च ^र रत्र	
१७. नेमि-चरित्र	₹ ४ −४६
१८. मल्लिनाथ-चरित्र	Y9-40
१९. स्थूलभद्र—चरित्र	ष् १ – ५ ह
२०. वज्रस्वामि—चरित्र	५६-६३
२१. सुदर्शन श्रेष्टिनी कथा	६४-६७
२२. वंकचूलनी कथा	६८–७१
सती चरित्र—	
२३. सती सुभद्रानी कथा	૭ ૨ – ૭ ૫
२४. मदनरेखा सतीनी कथा	७५-७९
२५. सती सुंदरीनुं दृष्टांत	८०-८२
२६. अंजूनासु दरी - दृष्टांत	८२-८७
२७. नर्मदासु दरी-कथा	८७-९२
२८. रतिसुंदरी कथा	९३९ ६
२९ ऋषिदत्ता कथा	९६-१ ०४
३०. दवदंतीनी कथा	१०४–११६
३१. कमला सतीनी कथा	१ १६ - १ १९
३२. कलावतीनी कथा	११९-१२३
३३. शीलवतीनी कथा	१२४-१३१
३४. नंदयंतीनी कथा	१३१—१३३
३५, रोह्णिनी कथा	<i>१३४–१३५</i>

शीसभ्रष्टनुं उदाहरण—	
३६. कूलवाॡ्ञानी कथा	१३७१३९
सती चरित्र	
३७ द्रुपदीनी कथा	१४०-१४२
असतीनी कथा	
३८ नूपुरपंडितानुं दृष्टांत	१४३—१ ४८
३९ दत्तदुहितानी कथा	१४८१५०
४० अगडदत्त (मदनमंजरी)नी कथा	१५४–१६१
४१ प्रदेशी राजा (नी राणी)नो कथा	१६१-१६२
सती चरित्र-	
४२. सीतानी कथा	१६७-१७८
४३. घनश्री नु ं दृष्टांत	१७९–१८२

आमांनी केटलीक कथाओना मूळ जैन आगमो के आगमोनी चूर्णि, नियुक्ति आदि टीकाओमां रहेलां छे उदा० रथनेमिनी कथा उत्तराध्ययन सूत्रमां अने प्रदेशी राजानी कथा रायपसेगइय नामक उगांगमां मळे छे केटलीक कथाओ जैन पौराणिक साहित्यमांथी लेबामां आबी छे. उदा० सीतानी कथा, नेमिनाथ-चरित्र आदि. तो केटलीक कथाओ वसुदेबहिंडी (अगइदत, नर्मरामुद्धारी, ऋषिदत्ता आदि कथाओ), समरारच्चकहा (धनश्रीनुं हथांत) जेवा प्राकृत कथा ग्रंथोमांथी लेबामां आबी छे.

मूळ प्राचीन साहित्यमां मात्र नाम निर्देश होय तेना केटनाय दृष्टांतो पाछळना साहित्यमां पल्लवित थतां थतां लांबी कथानुं रूप धारण करे छे. आवा कथा-विकासनुं आछेखन एक स्वतन्त्र संशोधननो विषय छे.

अगळ नोंध्युं छे तेन शीलोपदेशमालानी सोमितलकसूरि रचित संस्कृत टीका शीलतरंगिणोनो बालावबोधकारे प्रच्र उपयोग कर्यो जणाय छे. छतां शीलो. बाला. मात्र अनुवाद न बनतां एक स्वतंत्र रचनानी कक्षामां मूकी शकाय तेवी कृति बनेल छे ते उगा. मेहसुंद्रानी आख्पानकार तरीकेनी सिद्धइस्तताने आभारी छे.

प्रत-परिचय अने संपादन-पद्धति :-

मेर्सुंदरना शीलो॰ बाला॰ नी घणी मोटी संख्यामां प्रतो अमदावाद, पाटण, जेस-लमेर, खंभात, लीमडी आदि अनेक स्थलेशना जैन ग्रंथमंडारोमां मळे छे. आ हकोकत कृतिनी लोकप्रियतानी अने व्याख्यान वगेरेमां व्यापक्रपणे ते उपयोगी रही होवानी सूचक छे.

प्रस्तुत संगदन प्रतोनी प्राचीनता व॰ ध्यानमां लईने नीचेनी ६ हस्तप्रतोना आधारे करवामां आव्युं छे, जेमनी संज्ञा ऋमे B, C, K, L, P अने Pu छे.

शीलो॰ बाला॰नी सौ प्रथम नकल तथा पाठांतरोनी काची नेांघ श्रीमती गीताबहेन रायजीए वर्षो पूर्वे करेली. तेमणे B प्रतिनी नकल करी हती अने L तथा P प्रतोनां पाठांतरो लीबां हतां. संपादन-समये अमारी पासे आमांनी मात्र L प्रति ज हती. आथी पाठनी चाकसाइ

१. प्रस्तुत संपादनमां मूळगठना ए. १ थी ३२ सुधी B प्रतिनी संज्ञा भूलथी A कृपाई छे, ते B समजवी.

अने निर्णय माटे अमे ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरमांना विविध हस्तप्रत—संब्रहोमां रहेल शीलो० बाला० नी अनेक प्रतोमांथी प्राचीनता अने गुद्धिनी दृष्टिए महत्त्वपूर्ण जणाती K अने Pu प्रतो पसंद करी. तदुपरांत पाछळथी मळी आवेल, B ना जेवी ज, बीजी एक C संज्ञक प्रतनो उपयोग कर्यों छे.

आ रीते B उपरथी नेांघायेल पाठने C, K, L, P अने Pu प्रतोना आधारे शुद्ध करेल छे. B अने P प्रतोनो परिचय ते ते प्रतना संग्रहना छपायेल स्चिपत्र परथी अहीं आपेल छे.

B घो बोम्बे ब्रान्च ओफ घी रोयल एशियाटीक सोसायटी, मुंबईना हस्तप्रत-संप्रहनी कागळनी हस्तप्रत, नं. १६६४³. माप-१०" × ४.५" (२५.५ × ११.५ से. मी.)

पत्र-१६४, प्रतिपृष्ठ लगभग १३ पंक्ति, छेल्छं पत्र (१६५) खूटे छे. लेखनकाळ—अनुमाने विक्रमनी सोळमी शताब्दीनो अंतभाग.

आदि :- ॥ ६० ॥ श्री वीतरागाय नमः ॥ श्री नाभेयममेयश्री सुरैश्च सहितैहितैः । प्रणिपत्य सत्यभक्त्या

अंत :- श्रीखरतर-गच्छे बहु-गण-यति-संयुते घरा-विदिते ।
बट्निशत्-गुण-सहिता श्रीमिडिजनभद्रसूरयोऽभवन् ॥
तत्पद्वाचल-शृङ्गार-हार-नायक-सन्निभाः ।
श्रीजिनचन्द्रसूरीन्द्राः जयन्ति सपरिच्छदाः ॥
तेषां गुरूणामादेशाः(शं) प्राप्य श्रीजयमन्दिरं ।
श्रीमद्रस्नमूर्ति-गणि-वाचनाचार्य-सेवकः ॥
गुरु-भिक्त-परो नित्यं मेरुसुन्दर आदरात् ।

...

प्रतनुं छेल्छं पत्र न होवाथी प्रशस्ति अधूरी मळे छे.

C. श्रो ला द. भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, अमदावादना शेठ श्री आणंदजी कल्याणजो संग्रहनी कागळनी प्रति, नं० १२६२१ पत्र- १७६, माप- १०. ५" × ४ ५" (२६ × ११. ५ से. मी.) प्रति पृष्ठ पंक्ति १३, प्रतिपंक्ति अक्षर ५० लगभग. स्थिति- सारी, ग्रुद्धप्राय. लेखन-समय÷ विकमनी सोळमी सदी अनुमाने.

आदि- ॥६०॥ नमो वीतरागाय ।

॥ श्री वामेयममेय.....

अंत— प्रशस्ति विना ज, अपूर्ण,

आ प्रतनो उपयोग २९ मी ऋषिदत्तानी कथा (पृ. ९६) थी करेल छे.

१. जुओ- A Descriptive Catalogue of Sans. and Pkt. Mss. in the Library of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vols. III-IV, Compl. by H. D. Velankar, Bombay 1930, p. 426.

K. श्री ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर. अमदावादना श्री कीर्तिसुनि संग्रहनी कागळनी प्रति नं ० १०१३७.

पत्र- ११०, माप- १०. ५ % × ४. ४" (२६×१० से. मी.)

प्रतिपृष्ठ पंक्ति १७ लगभग, प्रति-पंक्ति अक्षर ५५ लगभग. स्थिति-सारी,

लेखन-समय:- वि. सं. १६७२

आदि— ।।६०।। श्री गुरुम्यो नमः ।।

।।श्री वामेयममेय...

अंत इति श्री शीलोपदेशमाला-बालावबोधः संपूर्णः ॥ श्री खरतर-गच्छे श्री जिन-चन्द्रसूरि- शिष्य वा० मेरुसुन्दर-गणि-विरचितः । शुभं भवतु लेखक-पाठकयोश्च ॥

तत्व २५- व्रत ५- चन्द्र १- मिते वर्षे सन्मेरुणा रचित एषः।

तावन्निं(नं)दतु सोऽयं याविष्जन-वीर-तीर्थमिदं ॥

याहरा पुस्तके हष्टं ताहरा लिखितं मया।

यद(दि) शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयतां ॥

संवत १६७२ वर्षे भाद्रवा श्रुदि ११ गुरी अहम्मदाबाद-वास्तव्य श्राविका रही आदे-[१श]इं शीलोपदेशमालनु(मालाना) बालाविबोधनी प्रति साधवी(भ्वी) रंगवृद्धिनइं नेशाली-आनइं मजीइं प्रति वहिरावी पुण्यार्थे ।।श्चमं भवतु ।।

L. रोठ आणंदजी कल्याणजी जैन ज्ञानभन्डार, लीमडीनी कागळनी प्रति नंबर-२५६६.

पत्र १३१, प्रतिपृष्ठ पंक्ति- १५, प्रतिपंक्ति अक्षर- ५२ थी ५४.

माप- १२[?] × ४.८[?] (३०. ५×१२ से. मी.), लेखन-समय- वि. सं. १६०८. आदि- ॥६०॥ श्री जिनाय नमः ॥

॥ श्री वामेयमामेय...

अंतः इति श्री शीलोपदेशमाला-प्रकरण-बालावबोषः समाप्तः । ग्रंथाग्र ६००० । संत्रत १६०८ वर्षे पोष वदि २ बुधे सिध(सिद्धि) योगे । अद्य श्री स(सु)लतानपुर-वंदरे वा. श्री व(वी)नित[ति]लक-स(शि)ध्य-मुनि-राजत(ति)लक लख्य(लिखि) ते । श्र(स्व)यं पठनार्थः (थै) ।। शुभं भवतु ।।छ।।

P. भांडारकर ओरिएन्टल रीसर्च ईन्स्टीट्युट, पूनानी कागळनी प्रति नं. १२६० (१८८७-९१ना संग्रहमांनी), पत्र- ३०३.

लेखन-समय : वि. सं. १६१७.

आदि:-- ।।श्री सर्वेज्ञायं नमः ।। श्रीवामेयममेय - ----

अंतः — इति श्री शीलोपदेशमाला । वा० श्री मेरुसुन्दरोपाध्याय निवर्गचत श्रीशोलो-पदेशमाला नालावबोधः समाप्तमिइ(१)ति ॥ श्री ॥ ग्रुमं भवतु लेखकस्य ॥ संवत १६१७ वर्षे माधमासे ग्रुक्लपक्षे पूर्णातिथौ भृगुवासरे ॥ शाखीराज्ये । पा० जल्लालदी(लुद्दी) न अक्वर(रे) राज्यं सा(शा)सति । श्री फतिहाबादपुर-मध्ये चंडालिया गोत्रे चड० जींदा । तत्पुत्र च० नानिग । श्री शीलोपदेशमाला [बाला]वबोधस्य पुस्तक(कं) लिखापितं । मांगल्यं ददातु ॥छ।।

याहरा पुस्तकं(के) हष्ट्वा(ष्टं) ताहरा लिखितं मया ।

यदि शुद्धमञ्जुद्धं वा मिम दोषो न दीयते ॥१॥ तैळादक्षं(क्षेत्) जळादक्षं(क्षेत्) रक्षेत् सिथ(शिथि)ल-बन्धनात् । मुख-इस्ते न दातन्यं एवं वदति पुस्तके(कं) ॥२॥

र्म. ६००० । तदुपरि श्लोक पञ्चशतानि ५०० । तदुपरि श्लोक द्वाविंशति २२

Pu. श्री ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, अमदावादना मुनिराज श्री पुण्यविजयजी हस्तप्रत-संमहनी कागळनी प्रति, नं ३८०४

पत्र २ थी १२६ (प्रथम पत्र खूटे छे.)

माप- १०"× ४.२" (२५. ५ ×१०. ५ से. मी.)

प्रतिपृष्ठ पंकित १६, प्रतिपंकित अक्षर- ५० लगभग.

्रियति:- मध्यम. लेखन-समयः- वि. सं. १५६८.

आदि-पत्र १ छुं नथी.

अंत—इति श्री शीलोपदेशमाला-प्रकरण-बालावबोध समाप्तः । संवत १५६८ वर्षे चैत्र विद नवम्यां तिथो भृगु-वासरे लिख्य(खि)तं । श्रुमं भवतु ।। श्री श्री बृहद्गच्छे पूज्य श्री श्री श्री श्री श्री मितसुन्द[र] सूरि तत्तद्टे श्री श्री श्री श्री श्री प्रमासागर स्रि..... गुमं भवतु ।। श्री श्री ।। महाहडीय गच्छे महारिक श्री मितसुन्दरसूरि श(शै)क्ष मुनि महीसुन्दर-पठनार्थं ।। श्रीरस्तु ।। देवी(ब्यै) नमः ।।

उपरनी छये प्रतोमां एक मात्र K. पाछळनी (सं. १६७२) छे अने तेना पाठमां केटलांक नोधवालायक परिवर्तनो थयां छे. ज्यारे बाकीनी बीजी पांचे प्रतो लेखकना समयनी निकटनी होई पाठनी बाबतमां लगभग एकरूप छे अने तेथी ज प्रमाणभूत पण छे. मात्र लहियाओनी बेदरकारीने कारणे अत्रतत्र भाषाविषयक भूलो नजरे चडे छे.

गাত।व**बोधनी विशिष्ट शैलीने ध्यानमां राखीने प्रस्तुत संपादनमां अमे नीचेना नियमोने** अनुसर्या छी**ए**ः

- (१)मूळ प्राकृत गाथाओ घाटा टाइपमां मूको छे अने तेना संख्यांक सळंग (१ थी-११४) आप्या छे. प्रंथना अंते आ मूळ गाथाओनी पण अकारादि सूची आपी छे. मूळ गाथाओनी शुद्धि माटे दाळाववोधनी ज प्रतो पर आधार नहीं राखतां मूळमात्रनी अनेक प्रतो बोईने पाठशुद्धि करेळ छे.
- (२) मूळगाथा पछी 'ठयाख्या' एवा शीर्षक नीचे गुज०बालावबोध आपेल छे.बालावबोधमां आवतां प्राकृत—संस्कृत उद्धरणोने सादा टाइपमां मूक्यां छे अने नंबर आप्या नथी. तेनी अका-रादि सूची ग्रंथांते आपी छे. बालावबोधमांना दृष्टांतो अने कथाओंने (१ थी ४२) क्रमांक आपी ते दरेकनी शरूमां चोरस कोष्ठकमां शीर्षक आपी अने अंते फूदडी मूकी जुदा तारवी आपेल छे.
- (३) बालावनोधना सळंग गद्यने फरिच्छेद पाडी जरूरी विरामिचह्नो मूकवा उपरांत शब्दार्थ-समजूती खातर लेखके आपेल पर्यायोने बराबर(=)ना चिह्नथो दर्शाच्या ले वळी परप्रत्ययो स्पष्ट करवा शब्द अने प्रत्ययनी वच्चे हाईफन (-) मूकी छे. उदा -भणी,-माहि, -लगी,-पाहि•
- (४) अञ्चुद्ध शब्दादिनुं शुद्ध रूप गोळ कोष्ठमां () अने अमे उमेरेला शब्दादि चोरस
 [] कोष्ठमां मूक्या छे. संदिग्ध शब्दादि पछी(?) प्रश्नार्थ . मूकेल छे.

(५) तिसई-तिसई, कन्हइ-कन्हिल, पाहि-पाहिति, लगी-लगइ, आव्या-आविआ, हुआ-हुआ इत्यादि रूपोमां वे के वधु रूपो अनेक वार मळतां होई ए बधां रूपो प्रचलित होवानुं अनुमानी शकाय छे. अमे बन्ने के वधु प्रकारना रूपो यथावत् राख्यां छे. १६ मार्च, १९८०. -र. म. शाह अमदावाद * *

बालावबोधो

प्राचीन गुजराती गद्यसाहित्य घणुं ज विपुल छे, अने तेमां कथाप्रधान बालाबनोधो सीयो विशेष महत्त्वना छे. चोदमी शताब्दायां आ प्रकारनी कृतिओ मळे छे. तेमांनी कथाओ पूर्ववर्ती प्राकृत-संस्कृत कथाओ पर आधारित होवा छतां घणी वार ते केवळ यांत्रिक शब्दानुबाद नहीं, पण जुदा श्रोताओंने लक्षमां शस्त्रीने, मूळ कथामां जरूरी फेरफारो करी नवेसरथी कहेली होय छे. आथी तेमने घणे अंशे स्वतंत्र कथाकथनना गद्य तरीके लई शकाय.

'षडावश्यक', 'उपदेशमाला', 'शीलोपदेशमाला', 'पुष्पमाला', 'योगशास्त्र', 'भवमावना', जेवा औपदेशिक प्रकरणो परनी हीकाओ कथाकोशो जेवो हती, तेथी तेमना परथी संख्यांबंध बालाववोधो रचाया छे. आ उपरांत 'ज्ञाताधर्मकथा' जेवो कथाप्रधान आगमग्रंथ, 'जंबुचरित्र,' 'पांडवचरित्र' अने 'कल्पसूत्र' (तोथैंकरचित्रं)) जेवो चरित्रप्रधान कृतिओ अने 'पंचतंत्र' जेवो लोकप्रिय कृतिओ पण कथाप्रधान बालाववोधो माटे अनुकूळ नीवड्यां छे. आमांथो केटलीक कृतिओ पर तो उत्तरोत्तर अनेक हाथे नवनवा बालाववोध— पांचसात के आठदस सुधी पण रचाता रहा। छे. तहणप्रम, सोमसुन्दर, हेमहंस, माणिक्यसुन्दर, मेरुसुन्दर, आसचन्द्र वगेरेनुं आ विषयमां महत्त्वनुं अर्पण छे.

प्राचीन पद्यसाहित्यनो सरखामणीमां गद्यसाहित्यना सम्पादन, संशोधन उपर घणुं ज ओहुं छक्ष अपायुं छे. मुनि जिनविजयजीना 'प्राचीन गुजराती गद्यसंदर्भ' (ई.स.१९३०)थी आ दिशामां पहेल थई. तेमां तथा ते पछीना चारपाँच प्रयासी द्वारा अद्याविध प्रश्नाशित कथायुक्त गद्यकृतिओनी विगतो नीचे प्रमाणे छे:

षडावश्यक-बाला <i>०</i> (केटलोक अंश)	१३५५	तर्गप्रभ	जिनविजय संपादित	ा 'प्रचीन गुजराती गद्य संदर्भे'मां
उपदेशमाळा-बाला ०	१५ मीनो पूर्वार्ध	सोमसुन्दर		
(केटलोक अंश)			"	,,
योगशास्त्र-वाला॰ (वे	हेटलोक अंश)	> ,	"	39
षडावश्यक-बाला०	१५ मीनो	हेम ंस	,,	,,
केटलोक अंश	मध्य भाग		,,) ,
उपदेशमाला-बाला	१४८७	नन्न	टी. ए न . दवे	सम्पादित (१९३५)

१.मो. द. देशाई, 'जैन गूर्जर किन्नो', भाग ३, खंड २ (१९४४) पृ.१५७२-१७०३; मो. ज. सांडेसरा, 'गुजराती साहित्यनो इतिहास', ग्रंथ१ (१९७३), पृ. २९३-२९८; ह. चू. भायाणी, 'गुजराती साहित्यनो इतिहास,' ग्रथ २-(१९७५), पृ. ६६७-६६८, ६७५-६७८.

२. ते पहेलां तेस्धितोरीए तेमना 'नोट्स ओन ग्रामर ओव ओल्ड वेस्टर्न राजस्थानी' (१९१४)मां बालावबोधोमांथो थोडोक अंश आ'यो हतो.

पंचाख्यान-बाला० १६ मी शताब्दी यशोधर सांडेसरा अने पारेख संपादित (१९६३) (पहेलुं तन्त्र)

षडावश्यक-वाला० १३५५

तरुणप्रभ प्र.बे. पण्डित संपादित (१९७६)

'शीलोपदेशमाला' पर पंदरमी शताब्दीथी लईने सत्तरमा शताब्दी सुधीमां पांच-छ बाला-बंबोधो रचाया छे. मेरुसुन्दर उपाध्यायनो प्रस्तुत बालाबनीध मुख्यत्वे तो रुद्रपट्लीय गच्छना संघ-तिलकसूरिना शिष्य सोमतिलकसुरिए चौद्मी शताब्दीना मध्य लगभग रचेली 'शीलतरंगिणी' टीकानो मुक्त अनुवाद छे.

शोलोपदेशमाला-बालाबबोधनी भाषाकीय लाक्षणिकताओ

शी. बा. नो भाषा उपर थोडेक अंशे प्राकृतनो (मूळग्रंथनी भाषा) अने संस्कृतनो (आधारभूत टीकानी भाषा) प्रभाव छे. संस्कृत प्रभावना द्योतक अनेक शब्दोमां विशेषे नीयेना जेवा तत्सम(के तत्समप्राय) कियापदोनो समावेश थाय छे. प्रसद, अपहर्, विसर्ज्, नमस्कर्, आश्रय्, उन्मूल्, उपशम्, अवगाह्, अभ्यस्, संतोष्, व्यामोह्, आलेच्, आच्छाद्, प्रतिबोध्, अवगण्, प्रयुज्, पिंडलाम्, आवर्ज्, विराध्, ध्या, कलंक्, क्षाम्, वळी रसवती, अधिष्टायका वगेरे संख्याबंध शब्दो पण आ प्रभावना द्योतक छे.

प्राकृत प्रभावना द्योतक केटलाक शब्दोः

धातु—संपज्, पडिवज्, अहिआस्, आलोय्, प्रतिबृह्म, पञ्चक्ख, उपाय्, भख, वक्खाण्, अन्य शब्दों: आकुटी, तहांत्त, कलाबह (तेम ज कलावती).

केटलाक फारसोमांथी स्वोक्टत शब्दोनो वपराश पण नोंचपात्र छे : कागल, कारखानंड (५२), खरच, बगल, बंदोवाण, बंदोखाणंड, मजूद.

अवारनवार मेरसुन्दरे लोकप्रचलित कहेवतोनो उपयोग पण कर्यो छे. पण समग्रपणे लेतां, श्री.मा.बा.ना गद्यने तत्कालीन कथाकथनना गुजराती गद्यनुं प्रतिनिधिरूप गणी शकाय. शैली एक तरफथो आलकारिकता अने प्रस्तारने टाळे छे, तो बीजी तरफथी ते केवळ मुद्दानोंध के कोरी रूपरेखा बनवाथी बचे छे अने वर्णन, भावनिरूपण, संवाद वगेरेनो पण मापमां आश्रय ले छे. बेशण स्थळे ता प्रासबद्ध टूंका वर्णकोनो पण उपयोग कथी छे, जेम के पा. ६८ (वर्षाकाळनुं वर्णन), पा. ७८ (युद्धवर्णन), पा. ९८ (योगिनीवर्णन), पा. १३२ (विरहिणीवर्णन) मेरसुन्दरगणि उपाध्याय होवा छतां पांडित्यनो प्रभाव 'जितकासी' जेवा थोडाक शब्दप्रयोगो पूरतो ज पड्यो छे.

दी. बा.नी भाषाविषयक नोचेनी नोंधनो उद्देश व्याकरणर्दाष्ट्रए थोडीक विशिष्टताओ टपकाववानो छे, व्यापक प्रयास माटे तो वधु व्यवस्थित रीते अने मेच्सुन्दरना बीजा बालाव-बोधोने पण आवरो लईने सामग्री तारववी आवश्यक छे. वळी साहित्यिक दृष्टिए आ गद्यनो विचार करवानुं अहीं सहेज पण बन्धुं नथी.

१. ध्वनितत्त्व

(१) क्वचित् इ नो अः विष्स अने वरस, परिणू अने परण्, पिंडिख् अने पडख, थिकड अने थकड, बाँहीन अने बहिनि, जि अने ज, अधिकरणना ॰ इइं अने ० अइ, सामान्य इदंतना ॰ इवड अने ० अवड; धातुस्वर अ के ओ पछी ० इवड नो इ कोई वार छत थयो छे : जोइंबा, थाइवा तेम ज रोवा, थावा, जावा.

- (२). इ नो यः भूतकृदंतना ०उनी पहेलां (क्वचित्)ः आव्यउ, काट्यउ, जणाव्यउ, भूख्यउ. भूतकृदंतना ०आ नी पहेलां (व्यापकपणे)ः कर्या, आव्या, मोकल्या वगेरे. क्वचित् रहियां, वीटियाः भविष्यना ०सिइ तं ०स्यइ (क्वचित्)ः हुस्यइः अन्यत्रः सिउं उपरांत स्यूं (अने सृं). एकबार विणासिउं ने बदले विणासुः
 - (३). क्वचित् अइ नो इ: नइ अने नि, कन्हइ अने कन्हि.
- (४). अंड नो इं अउरतंड अने उरतंड, कडितग अने कुतिग, कडण अने कुण, ॰नड अने ०नु, जड अने जु, तड अने तु. भूतकृदंतनां विस्तारित अंगोमाः कहिंड, आविड, कराविड वगेरे. क्वित् अंड नो ओ : वरिसिजो, वसाविड्यो, हलाविड्यो, पामड अने लहु, सम्बोधन ब. व. मां लोकड अने प्रधानो.
- (५) अंत्य अनुनासिक लुप्त करवानुं वलणः करणविभिन्तिना ०इइं ने बदले ०इइ,अकारान्त न्युं क्किलिंग प्रत्यक्ष विभक्ति एकवचनना ०उं ने बदले ०उ, बहुवचन ०आँ ने बदले आ, त्रीजा पुरुष बहुवचनना ०ईं ने बदले ०इ वगेरे.
- (६) बे स्वर वच्चेना हकारनी, आसपासना अक्षरोना स्वर पर विविध असर: अनुवर्ती अ नो इ के उ, पूर्ववर्ती नासिक्य व्यंजन के छ पछीनां अ नो छोपः विहिचा, रहिती, कहिवराव, पुहची, मुहतउ, मुहतउ, महुतउ, मुहुर; ए (एह) अने तूं (तुहुं) जेवामां हकारनी छोप थयो छे.
- (७) प्रकीर्ण फेरफार : शय्या नुं शिय्या, करण नुं किरण, बालावबोध नुं बालाविबोध, तिरस नुं तिरस, पट नुं पुट, कंचुकीनुं कुंचकी, कडलुउनुं कुडलुउ, अनइ नुं नह, मयणहल अने भीणहल, चीतराविवा नुं चीतरावा, फेरविवा नुं फेरिया अने करणवार तथा कणवार कुणहइ मां हकार तेहइ, जेहइ ना साहश्यप्रभावे छे.
- (८). संस्कृतमांथी स्वीकृत शब्दीमां (तत्समोमां) संयुक्त व्यञ्जन व्वचित् विश्लिष्ट बन्यो छे : सनेह, महातमा, महातम्य; बे स्वर वच्चेना क् नो ग् थयो छे : कुतिग, विणग, आगर, नरग, भरगी, उपगार, उपगरण, सुगाल; छ नो छ थयो छे : काष्ट, विश्वष्ट, अष्ट, अधिष्ठा- यका; स्नो श्रू थयो छे: दीक्ष्या, सिख्या, शिख्या

२. रूपतत्त्व : साधक प्रत्ययो

- (१) विशेषण परथी माववाचक नाम बनावतो पणडं प्रत्यय केटलीक बार तत्सम साधित भाववाचक नामने लाग्यो छे (ने एम बेवडो प्रत्यय जोवा मळे छे.) : पौरूषपणडं, गौरवपणडं, सौर्यपणडं, सौभाग्यपणडं, पुरुषार्थपणडं, धैर्यपणडं, धीरिमपणडं, लघुत्वपणडं, प्रभुत्वपणडं, देवत्वपणडं, यौवनपणडं, उपरांत विकारपणडं, विश्वासपणडं.
- (२). अण प्रत्यय बाळा आख्यातिक नामने हार लागीने कर्तृवाचक (भविष्य कृदंतनी अथेछाया घरावता) नाम संघाय छे: करणहार, घरणहार, कहणहार, वहणहार, वसणहार, देणहार, करावणहार, लगाडणहार, जाणहार, पालणहार.
- (३). क्वचित् अ प्रत्यय नाम परथी विशेषण बनावती जोवा मळे छे : तापसं वेष, भावकड धर्मे
- (४). भूतकृदंतना रूपने (विशेषे निरपेक्ष रचनामां) अण लागीने निषेधवाची रूप बने छे: अणदेखांडिइ, अणआलोइ, अणविचारिइ, अणजीतउ, अणजणावतउ, अणबोलिउ. विण- पण वपराय छे: विणभागवी.

- (५). कुरसावाचक -ई ∃ प्रथयः सियालीउ; -इल : थोडिलउ.
- (६) राजल मां विशेषनामने दंकाव ने ल प्रत्यय लगाडे हो छे.
- (৬) कडितगीयाल मां कडितगीड एवा मत्वर्थीय ईड प्रत्ययने फर्रथी मत्वर्थीय आह
 - (८) पूर्विलंडं, जातिलंड (= जातवान).
- (९) ससंभ्रांत अने सकोमल मां तत्सम संभ्रांत अने के।मल ए विशेषणोने स्वार्थे स- लाग्यो छे

३. नामिक अंग

(१) नीचेनां नामो स्त्रीलिंग छे:

आगि, अग्नि, दुंदुभि, शशि, मणि, महिमा, दृढमा, वस्तु (='चीज'), पाखंड, थाप (=थापो); देवता पुलिंग छे : देवता अदृश्य हुउ.

(२). नोचेनां साधित स्त्रीलिंग अंगो ध्यानपात्र छे:

कडिण : ए कडिण ?

प्राणनाथि : हे प्राणनाथि !

युक्ती (=योग्य) : राखिवा युक्ती नही.

लेणहारि: दीक्षा लेणहारि छइ.

जाणी (जाण उपरथी)

अधिम, नीचि, निस्नेहि महिला

(३). नीचेनां अंगो अकारान्त छे :

गुर (= गुरु), शांतन (= शांतनु).

४. आख्यातिक अग

कर्मणि अंग

जुनुं है प्रत्ययवाळु अंग केटलीक वार वपरायुं छे, परंतु ते मोटे भागे तो अकर्तृक रचनामां किया करवानी भलामणना अर्थमां वपरायुं छे. अने तेमांथी वर्तमान पहेला पुरुष बहु-वचननुं हेइ वाळुं रूप नीपजवा लाग्युं छे. नवा कर्मणि अंगनों प्रत्यय -आ- छे.

कर्मिणिनो -आ लागतां समराइ मां घातुस्वरना आ नो अ थयो छे.

प्रेरक अंग

-आव् प्रत्ययः धोआवइ, जोआवइ, कहावइ. आव् प्रत्यय लागतां परावइ मां धातुस्वरना आ नो अ थयो छे.

-आर् प्रत्यय चींतारइ मां पण मळे छे. आर् प्रत्यय लगतां धवारइ मां धातुम्वरना आ नो अ थयो छे.

-राव् प्रत्ययः देवराव् , छेवराव् , कहिवराव् , सहिवराव्

प्रेरकनां कर्मणि रूपः देवराइ, लेवसइ, कहिवसइ, सहिवरासिइ.

प्रेरकनुं प्रेरकः चडावाविड, वधराविड.

दूषिववा मां अव् प्रत्यय छे. चिंतव्, पूर्व्, गोपव् मां अव् प्रत्यय प्रेरणार्थ नथी. रीसाव् मां आव् प्रत्यय प्रेरणार्थ नथी.

५. संधि

नअर्थक न (सामान्य) अने म (आज्ञार्थ रचनामां) पछी आ थी शरू यतुं क्रियारूप आवतां केट**ीक** वार अ+आ नी संघि थईने आ परिणम्यो छे :

नावरं, नावर, नापउं, नापइ, नादरउं, नाचरोइ मापिजो, माणेसि, मावेसि

६. निपातो

-नइ, -न

संबंधक भूतकृदंत -ई प्रत्ययान्त छे, पण केटलीक वार ते रूपने -नइ लगाडीने विस्तरण कराय छे. ते ज प्रमाणे आज्ञार्थना रूपने अनुरोधदर्शक -न के -नइ लागे छे.

संबंधक भू. कृ. जोईनइ, हसोनइ, करीनई, विचारीनइ वगेरे.

आज्ञार्थः कहि-न, कहि-नइ, जोइ-न, जोख-नइ,

जि, इ

नामिक अंग अने अनुगनी वरूचे जि अने इ मुकाय छे :

शील जि नउं महातम्य, कर्म जि नउं फल, नाद जि नइ विषइ, धर्म जि नइ विषइ, हाथ जि माहि, जगाविवा जि भणी, सार-इ-नउ संदेह, प्राण-इ-पाहइ.

७. पर्याय-समास

एक स्वीकृत शब्द (संस्कृतमांथी के फारसीमांथी) अने बीजो तेना समानाथर्क के तदेवार्थक चाल वपराशनो शब्द—ए बेना समासनां थोडांक उदाहरण मळे छे. उच्च शलीना पण अजाण्या शब्दनो प्रयोग चाल शब्दथी समजाववानी वृत्तिमांथी तथा न्याख्यानशैलीमांथी (के क्वचित अनुवाद-प्रवृत्तिमांथी) आ वलण उद्भवे छे. अन्य अर्वाचीन भारतीय—आर्य भाषाओमां पण आ प्रकारना समस्त शब्दो मळे छे. कागळपत्र, मालसामान, धनदोल्यत वगेरे अर्वाचीन गुजरातीमां वपराय छे.

आ उपरांत चालु वपराशना समानार्थ के लगभग समानार्थक शब्दोना समासनां पण बेचार उदाहरण मळे छे.

श्रीफळ-बील्रं, खग-पांखीड, शिवा-फेकारी, सीमा-सेंढड, उद्यान-वन, किप-वानर, वस्तु-भांड, जाण-वेत्ता, पित-भर्तार, उचित-योग्य, मान-अहंकार, सम-शपथ, प्रभातइ-सवारइ, गरहीती-निंदीती, हीन-दयामणड, सारणा-वारणा, काज-काम, ग्वाही-साखीआ

८. आख्यातिक समास

आमां परस्पर संकलायेला अर्थ वाळा बे क्रियारूप संयुक्तरूपे वपरायेलां होय छे. उदाहरणोः

हस्तींद्रइ कांइ चेयइ-वेयइ नहीं; नलराजा कांइ चेयइ-वेयइ नहीं; जाइ-आवइ, जईइ-आवीइ,भणती-गुणतो, गरहीती-निदीती, सूतां-बइसतां, हीडतां-फिरतां, लालिउ-पालिउ, दीठी-सांभली. छूटो प्रयोग पण बोलइ नहीं, चालइ नहीं एवो मले छे.

एक रचनामां वरि अने भलंड एकार्थंक साथे वपराया छे, तेमां वरि थी, शरू थती पूर्व प्रचलित रचना अने अंते भलंड वाळी नवी रचना—ए बेनो संकर थयेलो छे :

वरि अजायर पुत्र भलर

ते ज प्रमाणे त्रिहु त्रिभुवन एवा प्रयोगमां त्रि बेवडायो छे.

भूमिका

९. समस्त क्रियापदो

पोताना मूळ अर्थमां नहीं, पण कशाक गौण अर्थमां, अन्य आख्यातिक भातुना संबंधक भूत कृदंत, सामान्य कृदंत वगेरे जेवां रूपो साथे मुख्य क्रियापद तरीके वपराता क्रियापदो वाळी (अर्वाचीन भारतीय भाषाओना वर्तमान स्वरूपमां घणी जाणीती) रूपार्थ रचनाओ शी॰ वा॰मां गणनापात्र संख्यामां मळे छे:

लाग्: करिवा लागड अने ए ज प्रमाणे धरिवर, कहिवा, चालिवा, पूछिवा, मानिवा, लीजिवा, जावा वगेरे साथे लाग्

मांड् : करिश मांडी, कित्वड मांडिड.

दे : करिवा दिइ (अने ए ज प्रमाणे राखित्रा, मरिवा, आवित्रा, जावा, लेवा वगेरे साथे), वहिची दीधउ

मूंकः बांधी मूंकिउ, भरी मूंकिउ, बारणां देई मूक्यां, सीखवी मूकी छइ, राखी मूकी, घाती मूकिउ.

जा : लेइ गया, करावी जाइ , नीकली गयउ, नासी गयउ, वीसरी गयउ.

आव् : मिली आवड, लेइ आविड, पूछी आवड, जोई आवीई.

ऊड़् : हणवा ऊठचा.

बइट् : रोवा बइठी.

रह : करत उरह (=कर्यां करे), रोतड जिरह (=रोयां ज करे), सुई रहिड. छांइ : मंकी छांडिड.

आ ज संदर्भमां मुख्य कियापदना संबंधक भूतकृदंतनी साथे कर्ना भूतकृदंतना (संलग्न इतर कियार्थना सूचक) प्रयोगनां उदाहरण नोंधीए :

हसी करी, ऊठी करी, जाणी करी, लेई करी, विमासी करो.

स्टह् अने पाम् धातुओं अन्य क्रियापदना सामान्य कृदंत साथे शक्वुं ना अर्थमां वपराय के ए पण अहीं ज नोंधी रुईए :

पइसिवा न लहुइ, आविवा न लहुइ, ते लेवा लहुइ, जावा लहिसिड.

१० सहायक क्रियापद

हू अने था बंने सहायक कियायद तरीके वपराया छे. हूनो प्रयोग वधु प्रमाणमां थयो छे, अने हिंदोनी जेम ते थाना अर्थमां पण वारंवार वपरायो छे. नीचेना वाक्योमां हू बंने अर्थमां एक साथे वपरायो छे :

नहीतिर मरण हूड न हूं तडं, पुत्र हूइ न हुइ, नहुतड हूड.

११. संयुक्त काळनां रूप

पामउ छउं	मोकलिउ छइ	
आवं छुं	आणी छडं	मेल्ही हुसिइ
रहइ छइ	दीधी छइ	पडचा हूँता
बोलइ छइ	मृकिउ छइ	कहि₃ं हू तउं
भमड छड	गया छइं	देता हूंता, सांभलो हूंती, सूरी हूंती
आविउ ह् तउ		नहूतउँ मूँकतउ

जावउं छइ नथी दीघड

र्लाजइ छइ

४२. कर्मणि रूपो: जाणीसिइ, देखाडीसिइ, पामीइ, रचीइ प्रव्वालीइ, मोकलीइ जाईइ, सारीई, जगाडीइ, जाणीइ, वालीइ, काढीइ, मागीइ, जिपाइ, लोपाइ, अवाइ, जवाइ, शकाइ, घसाइ, हणासिइ.

१३ कुदंत : कर्मणि वर्तमान कुदंत : पालीतज्ञ.

भूत कृदंत : केटलांक आगळथी ऊतरी आवेलां 'सिद्धावस्थ' भूत कृदंतनां रूप मळे छे : लागड, छूटड, त्रूटड, उभगड, थाकड.

क्वचित कूबरि जीतड, कदंबि हारिड एवी भूतकृदंतने कर्मण गणती जूनी रचना मळे छे. पण घणुंखर अकर्मक क्रियापद साथे कर्तरि रचना होय छे.

कर्मणि भूतकृदंत : बंधाणड, झलाणड, रोसाणड, भराणडं, थंभाणड, दूखाणड, दूह-वाणड, पचाणी, मुकाणडं, संतोषाणड, छेदाणड, प्रतिबोधाणा.

१४. अनुगो अने नामयोगी

्इइं के -इ प्रत्यय उपरांत-लगइ, —इ करो,-इसिउं करणार्थ छे. 'साथे' ना अर्थमां —सिंहत, —साथिइं, —संघातिइं वपराया छे. संप्रदानना अर्थमां —नइ,—माटि तथा —नइ अर्थि (हेति, करिण, काजि, कीधइ) मळे छे. अगदानना अर्थमां -इतु (-तु), थी, थिकउं, हूतउ छे. —नउं ने -तणउ संबंधार्थ छे.

'पासे' ना अर्थमां-पासि, -पाहिइ,-पाहंति, कन्हइ, कन्हिल, समीपि मळे छे. -पासि,-कन्हइ ने समोपि कर्मना अर्थमां पण वपराया छे.

- -लगइ करणार्थ, अपादानार्थ अने 'सुघी'ना अर्थमां वपरायो छे. 'सुघी' ना अर्थमां लगइ उपरांत सीम अने तांई पण मळे छे. 'पाछळ' ना अर्थमां पाछिले, -केडिइं, पूंठिईं छे.
 - --इतु (-तु) : अपादानार्थ : भव-इतु, मुख-इतु, यंत्र-इतु, उत्संगितु, देवलोक-तु.
 - -**उपरांत**ः अतिरिक्तनात्नाचक.
 - -ऊपरि : अधिकरणार्थ ('ऊपर').
 - -कन्हइ (-कन्हि),-कन्हिलिः (१). 'पासे' (२) कर्मार्थ ('ने')ः सार्ध्य-कन्हइ पूछइ, मा-कन्हइ पूछइ, बाप-कन्हइ पूछइ.
 - -केडिइं : 'केडे,' 'पाछळ'.
 - -दकडं : 'पासे.
 - -तणाउं (कवचित ज): संबंधार्थ.
 - -तांई : 'सुधी'-- ता-तांई, उद्य-तांई.
 - -थिकउं (-थकउं) : अपादानार्थ- घोडा-थका (='घोडेथो'), तिहां-थिकी, तेह-थका, जेह-थका,-मगाहि-थकी, -माहि-थिकउ
 - -थी : अपादानार्थ देवलोक-थी, तिहां-थी, -माहि-थी.
 - -नइ : कर्मार्थ -- हरिणीनइ लेइ; संवदानार्थ तू शिशुपालनइ दीधी, शिष्यनइ भणावे.
 - **—तउं :** संबंधार्थ.

- -पाखइ : 'वगर'.
- -पाख़ती : 'आसपास, फरतु.'
- -पासि (१) 'निकट', (२) लाक्षणिक अर्थमां, (३) कर्मार्थ -पासि पूछइ.
- -पाहंति : '(१) 'पासे', 'पासेथी', (२) '-ना करतां'.
- -पाहिइ (-पाहर्इ, पाहिइ, पाहिइ, पाहिइ): (१) 'पासे', (२) '-ना करतां'.
- -पठिई : 'पाछळ'.
- -प्रति,-प्रतिइं : 'प्रत्ये'--कन्या-प्रतिइं.
- -भणी : (१) 'माटे खातर'—उपकार-भणी, भांजिवा-भणी, मिल्लवा-भणी, करिवा-भणी, तेह-भणी ('ते माटे', 'तेथी', 'ते कारणे') (२) 'हावाथी', 'हतो एटले'— वहूना भाई-भणी, गुरुना गौरव-भणी, देवर-भणी, (३) 'तरफ' —तुम्ह-भणी, सिंहल-द्वीप-भणी.
- -माटि: 'माटे' -तेह-माटि.
- -माहि : 'अंदर'--अंतःपुर-माहि.
- -लगइ (-लगी) : (१). 'थी', 'वडे'—गर्व-लगइ, विनय-लगइ, स्नेह-लगइ, एह-लगइ, शील-लगइ, कर्मयोग-लगइ, लहुडपण-लगइ, रासोगवश-लगइ, बुद्धि-लगी। (२). 'ने लीधे'—अधकार-लगइ, सकोमलपणा-लगइ, असूर-लगइ (३) 'सुधी'—आज-लगइ, जां लगइ.....वां-ताई.
- -वडइ : 'वडे', '-ने बदले'.
- -विण : 'विनां'.
- -समड : 'सरखुं'
- -समान : 'सरखुं'
- -समीपि : (१). 'पासे'; (२). लाक्षणिक अर्थमां—राजाइ कलाचार्य-समीपि भिणवा मूं किउ, पुत्री महुता-समीपि मागी (३) कर्मार्थ—राजा राणी-समीपि वात पूछइ, (राजा) प्रभाति महुता-समीपि पूछइ.
- -सहित : 'साथे'.
- -संघातिइं (संघाति) : 'साथे'.
- -साथिई (साथि): 'साथे'.
- -सामुहुउं (साम्हुं) : 'सामुं'.
- -सारइ : 'अनुसार'—मनसा-सारइ.
- -सिडं (-सु) : 'साथे' 'नारी'-सु.
- –सीम 'सुधी'---युग-सीम, आज-सीम, मास-दिवस-सीमः
- -हाथि : 'ने हाथे', 'मारफते', 'द्वारा'-वेश्यानइं हाथि कहाविजं.
- -हूं तड: अपादानार्थ ('थी', 'मांथी')—ऋषि-हूं तड, घर-हूं तड, माथा-हूं तड, मूल-हूं तड, हष्टि-हूं तड, द्वार-हूं तड, शील-हूं तड, तिहां-हूतड.
- इं सिउं(सु) : 'थो' मउडइं सिउं, निश्चइं सिउं, छानइं सिउं.
- -इ करी : करणार्थ ('वडे') बाणि करो, जीपवह करी, माहात्म्यह करी, नामि करी, जाणवह करी, तिणि करी.

शीलोपदेशमाला-बालावबोध

-नइ अर्थि, नइ हेति,-नइ कारणि,-नइ काजि (काजिई), -नइ कीधइ (स्नी-नइ कीधइ, ताहरइ कीधइ, माहरइ कीधइ, किहनइ कीधइ = 'कोइनाथी').

-नइ पादमृलि '-नी पासे'—सूरिनइ पादमृलि.

-नइ विषइ '-ने विषे'.

-नइ समीपि : अचलपुर-नइ समीपि.

-नी परिइं: '-नी जेम', '-नी पेठें'.

आ उपरांत टाली 'सिवाय'ना अर्थमां वपरायो छे.

१५. क्रियापदना प्रयोगो : वर्तमान पहेला पुरुष बहुवचन. आमां एकवचननी जेम —उं प्रत्यय छे. (अम्हे करउं, अम्हे पहिवज्ञउं).

आपणपंड (आपणपुं) 'पोते', 'पोतानी जात', 'जात' ए अर्थमां वपरायो छे. जेम के ते मुनि वांदी आपणपुं ('पोताने') धन्य मानिवा छागी.

बीजी तरफ (१) अनेकनो समाबेश करता वक्ता पक्षनी वात, अथवा तो (२) वक्ता श्रोतानी पासे कशी दरखास्त मूके ते, व्यक्तिनिरपेक्ष कर्मणि रचना रूपे पण मूकी शकाती. नीचेनी रचनाओ जुओ :

अम्हे यत्न घणड करडं, पणि जाणी न सकीइ.

एक वार ... कन्या मगावीइ.

नर्मदासुंदरी मागीइ. घरि जईइ. चालउ जोई आवीइ.

आवि, पासे करी वली खेलीइ. चाल तउ, ए बात जोईइ. स्वामी, कुंडिनपुरि जईइ. आ साथे नीचेना जेवी रचना मूकी जुओ :

पितानउ वियोग सहसिउं, पणि पृथ्वीना कउतिग जोईइ.

आपणपे आगइ देसांतरनी मनसा करतां, हिव ते सफल करीइ.

आ बधाने परिणामे —ईइ वाळुं रूप आपणपे नी साथे जोडायुं अने वक्ताश्रोतानो समावेश करती पहेला पुरुष बहुवचननी नवी रचना उद्भवी :

आपणपे जई सांभलीइ आपणपे जूए खेलीइ आपणपे बेहू युद्ध करीइ ईणइ नगरि आपणपे रहीइ प्रभात-समइ आपणपे जईइ. आपणपे आपणडं बल जोईइ आपणपे एक-एकनी बांह नमावी आपणपे ससरइं दीठा.

भविष्यकाळमां पण आ प्रकारनी रचना मळे छे :

आपणपे इहां सुईसिइ.

आमांथी आपणइ 'आपणे' वाळी रचनानो विकास थयो.

एनां पण एकवे उदाहरण मळे छे :

आपणइ जईइ-आवीइ नही. आपणइ ... राज्य भोगवीइ छईं.

आ रचनाओमां आपण- वक्ताश्रोताना आखा पक्षनो निर्देश करे छे.

आ सिवाय आपणडं 'पोतानुं', आप 'पोते' (आप सुखी था '(तुं) पोते सुखी था') अने आपहणीइ, आफहणी, आफे 'आपोआप' वपरायेलां छे. १६. विध्यर्थ के भविष्य आज्ञार्थ माटे (अनुरोध के भलामणनो भाव व्यक्त करवा) बीजा पुरुष एकवचनमां -ए प्रत्यय वाळां रूप मळे छे :

> धरे, करे, जाणे, रहे, थाए, जाए, मोकळे, करावे, भणावे, देखाडे, उपसमावे,

आमां 'बरजे', 'करजे', 'भणावजे' वगेरेने। अर्थ छे. -ज् प्रत्यय वाळां रूप पण मळे छे : छेजे, जाणजे, कहिजे, बरिसिजो, वसाविज्येा, हराविज्येा, आविज्यो.

अनुगना प्रयोग

१७. कर्मार्थ -नइ :
सचेतन कर्म मोटे मागे, अपभ्रंशनी जेम, -नइ अनुग विनानुं हे।य छे
मइं तूं भरतार पिंडविजिड. भर्तार पूछिड.
मइं तूं जीवतड मूकिड छइ. राजा वीनविड.
हूं आणी छउं. ते स्त्री इहां आणि.
हूं मोकिछिउं छउं शीता आणी. शीता मागी.
क्किमणी दीधी पाडोसणि पूछीं जनक पहुचतड कीधड.
म्लेच्छ हणी... तूं ओछखी. हूं अवगणी हूं नुंहनइं आपी. तूं अम्हे पामिड नही.

क्वचित् -नइ अनुग कर्मार्थे वपराया छे:

अनज तूं ह-नइ शिशुपाल-नइ दीधी.

(ते साथे, 'आज रुक्मी-राजाइ तूं शिशुपाल-नइ दीधी).

अम्हे तूनइ उलिखिड. एक सहश्र वर्षनइ अतिक्रमी ...

१७. संप्रदानने -नइ संबंधवाचक तरीके : अर्वाचीन गुजराती प्रयोगो अनुसार अपेक्षित संबंधवाचक -नुं ने बदले केटलाक प्रयोगोमां संप्रदानने -नइ वपरायो छे. ते नरगनइ अतिथि थाइ. महात्मानइ भक्ति कीधी. नलनइ जय हु. आज माहरइ पग दाझइ छइ. इम दस दिन राजानइ गया.

जि को जेहनइ उपदेश दिइ, ते तेहनइ गुरु

रणनइ कडतिगीयाल हूतड. देवतानइ पूजा-निषेध ... चंडिकानइ पूजा-भणी... पुत्रीनइ वर जोतां... (सुन्दरी) स्वामीनइ पहिली श्राविका हुई

ते पुत्रीनइ भर्तार होसिइ। स्वर्गनइ भाजन हूआ। ऐ ताहरइ पहिलड गणधर थासिइ। ताहरइ बेटड तुझनइ सखाईड हूड। तु किसिड माहरइ ए प्राणवल्लभा राक्षसी छइ? उद्यानवननइ रखवालडः जे कमलानइं शत्रु हूंता ते मित्र हूआ।

तुझनइ विडंबना कीधी तेहनइ आऊखर्ज थोडर्ज. पणि तुम्हारइ गांगेय पुत्र. आ संदर्भमां नीचेना प्रयोगो पण नोंघपात्र छे :

सर्वोत्तम पुत्र ताहरइ होसिइ. ताहरइ पुत्र होसिइ. इम दस दिन राजानइ गया. झूझनइ (= 'ने माटे') साम्हा थया. १८. करण अर्थे -नडं.

संबंधार्थक —नं विशेषण तरीके वपराता भूतकृदंत पूर्वे करणना अर्थमां प्रशेषायो छे : आर्द्रकुमारनी मोकली...ताहरी वरी नारायण लेई जाइ... विषयनउ वाहिए... रागना वाह्या... स्त्रीनउं वाहिउं.. राजानां दीधां आभरण महात्मानउ कहिउ वृत्तांत... लोभनउ लीयउ... वायनउ अंदोब्लिड.

१८. क्रियानाम तरीके वपरातां भूतऋदंत ः

माहरडं कीघडं. अम्हारडं कीघडं.

क्रियानाम तरीके वपरातां विध्यर्थे ऋदंतोः करिवडं, देवडं, रोइवडं

१८. काळ्ना प्रयोगोः

वर्तमानमां सामान्यतः सङ्।यक छ विनानु रूप, क्वचित छ वाछुं रूप मळे छे : घातइ, लोटाडइ, नासइ वगेरे.

पाम इं छ इं, बोलइ छइ, भम उछ उ वगेरे.

वर्तमाननो आसन्न भविष्यना अर्थमां उपयोगः

हूं पण .. नाग पूजिवा-भणी मध्याह्नि आवरं छडं.

हिव हूं गुरु-कन्हिल जई आलोयण लिउं छउं. हूं चारित्र लिउं छउं. आदतवाचक भूतकाळ माटे वर्तमान कृदंतनुं रूप वपरायुं छे:

दतबाचक भूतकाळ माट वतमान कुदतनु रूप वपरायु । वसस्य संग्रह्म सामस्य - माहि रहिती

आगइ हूं ए तापसवन-माहि रहिती. गौण वाक्यमां वर्तमान, अने मुख्य वाक्यमां भूत :

जु महात्मा नक्त्हिल आवइ, तु अजी ते महातमा कारसिंग दीठड. वर्तमान निषेधार्थमां नथी साथे वर्तमान कृदंत : मिली नथी सकतड. भविष्य निषेधार्थमां नहीं साथे वर्तमाननुं रूप :

वार नही लागइ. हूं मनुष्य-लोकि नही आवरं. नही छूटइ नही दिउं.

१९. कृदंतना प्रयोग

वर्तमान ऋदंत अने भूत ऋदंत ज्यारे विशेषण तरीके वपरायां छे त्यारे, तेम ज अन्य विशेषणो पछी पण अनेक वार तेमनी पछी हूंतउ के थिकउ मुकायुं छे : आ हिंदी रचनानी (दिया हूना दान वगेरे) याद आपे छे. अर्वाचीन गुजरातीना प्रारंभमां पण रोतुं छतुं वगेरे जेवा प्रयोगो थता. केटलीक वार ए 'होईने' के 'थईने' नो अर्थ घरावे छे. उदाहरणो :

सूडी रोती हूं ती कहिवा छागो. बीहती हूं ती ...घर-माहि मई. राजा सूतउ हूं तड ...सांभछिवा छागड. मोक्षमार्ग साधीता हूं ता ...रोसाणड हूं तड...

पाळोती हूं ती...वाध्ती ह्ती... . हसी हू ती रीसाणी.

स्राजिड हूं तड...हर्षित हूं ती...विस्खड हू तड...

कहणहार हूंतउ भणइ विरते हूंते विरक्त हूंते हैंते हैंते

सहर्षित सस्नेह हूं ती. जे गृहस्थ हूं ती. जे गृहस्थ ईता (=होईने).

हत-हृदय हूं ता समुद्र-माहि बूडइ.

राजा गजारूढ हूं तंज रइवाडीइ नीकिलेज. अति विषयासक्त हूं तंज मोहिड थिंकउ ...च्यामोहिड थिंकज ...हर्षित थिंकां.. शून्यिचत थिंकड ...बीहती थंकी.. आकाशमार्गि जाता थंका ...सभाना लोक हाजिविया थिंका इसिड मणड...

सर्चित थिंकउ...

वर्तमान अने वर्तमान हूं तड पण आ रीते वपराय छे :

संतुष्ट वर्तमान....संतुष्ट वर्तमान हूं तड.... करग–अधिकरण विभक्ति वाळी निरपेक्ष रचनामां पण क्वचित कृदंत पळी हूं तड वपरायुं छे : इम पूछिइ हूं तइ...किहइ हूं तह....

२० जोईइ वाळी रचनाओ.

पालिउ जोईइ, परिहरी जोईइ, नमानी जोईइ, कीधी जोईइ, उतारिउ जोईइ, मोकलिउं जोईइ, हुई जोईइ, दीधी जोईइ, साहियां जोइसिइ. वर्तमान कृदंतनुं -आं प्रत्यय वाळुं रूप संबंधक वर्तमान कृदंत तरीके निरपेक्ष रचनामां तेम ज इतर प्रयोगोमां वारंवार वपरायुं छे. उदाहरणो :

इम करतां, सर्व देखतां, देखतां जि, धरतां जि, मुझ छतां; पिंढतां केटली वार लागिसिइ. माहोमाहि युद्ध होतां. मनुष्यना संहार थातां, मू जोयतां एहनइ कुण दूहवइ छइ. वाद करतां ऊतर नावइ...वस्त्र कापतां हाथ वहइ नही. श्रीमती-नइ दान देतां आद्रकुमार तिहां आविउ.

आ प्रमाणे छतां ना अर्थमां थकां पण वपरायुं छे :

सुमित्र-थिकां.

तुम्ह-कन्हलि थकां

उपरांत नीचेना प्रयोगो नोंधपात्र छे :

मुझनइ बलतां राखि. सील पालतां दोहिलडं. धर्मऋत्य करतां दोहिलां. स्त्री-साथिइं वाद कग्तां सोभइ नहीं. जातां शोभइ नहीं.

छागनउ वध तपस्वीनइ करतां जुगतउ नहीं (ते साथे, जीविवा युगतउं नहीं). राखतां विचालइ ('अटकावतां वच्चे ज').

कर्ता साथे कृदंतनी करण-अधिकरण वाळी निरपेक्ष श्चनाओ ('सित सप्तमी') नां केटलांक उदाहरण:

नारद अणहणिइ पाछउ आविज. मिथिला दाझतइ...
चमर ढालीते..., इम उलंभइ दीघइ , गीते गाइते..., शील लोपाति....,
दान दीजते..., ब्रह्मा रीसाणइ..., क्षुघा उपनीइ..., कारणि ऊपनइ...,
यादव आगलि चालते..., लग्न ढुकडइ आविद्य..., राजानइ अणकिहइं...
लव अनइ कुश रीसाणे ह्ते, इम पूछिइ हूंतइ..., किह हूंतइ..., वलतइ
ऊतरि .., दीघइ हूंतइ..., सान कीइइ हूंतिइ ..., एतले राजाए मिले...

२१. क्रियाविद्योषणना प्रयोगो.

जेतलइ-तेतलइ 'जे घर्डाए', 'जेवो—तेवो'ना अर्थमां वपराय छे :

इम जेतलइ देवानी मनसा कीधी तेतलइ... जेतलइ जिमचा बइठउ तेतलइ....

जिम-तिम रीतिवाचक होवा उपगंत केटलोक रचनाओमां जिम नो 'जेथी' अने तिम-नो 'तेथी' अर्थ थाय छे. अहीं 'जेथी' एटले 'जेथी करीने', 'जेने परिणामे', अने ते ज प्रमाणे 'तेथी'. उदाहरणो :

माहर पुत्र आपि, जिम हूं जाडं तु सखीनइ जगाडि, जिम पग तळांसइ. तिम किमइ वर्णव्या जिम.., तिम देखांडिडं जिम ते कामार्त हूड.

तिम किमइ राजा वीधिउ जिम...., तिम व्यवसाय मंडाविउ, जिम....धनवंत हुउ. जड-तउ (जु-तु) ('जो-तो' ना अर्थमां अने 'ज्यारे न्त्यारे'ना अर्थमां). केटलक नोंघ-पात्र प्रयोगो :

जु जीव जायड, तु मरण छइ.

भार दर्शाववा तु वाळुं वाक्य पहेलां मुकाय छे :

गर्व तु भाजइ, जड बोजी सडिक हुइ. हूं तु स्त्री, जु एक वार.... शील तु पलइ, जड नारी-सु संसर्ग वर्जइ.

तु माहरी प्रीतिनु प्रमाण, जु एहनइ प्रतिबोधर्डः 'ज्यारे -त्यारे 'के 'जेबो -तेबो' (तात्कालिकतात्राचक ना अर्थमां :

जड जागइ, तु मनुष्य मारिड देखी ... जड अतिक्रम्या, तु... जु महात्मा-कन्हिळ आवइ, तु...महातमा काउसिंग जि दीठड. जु पहुचइ, तु...देखी

भा ज प्रमाणे जे —ते अने जां —तां (= 'ज्यां सुधी —त्यां सुधी') वाळां वाक्योनो कम भार मुक्तवा उलटावाय छे :

यति ते कहीइ, जे संकटि पडया सील राखइ.

ते नउ सिंउ प्रमाण, जे... संबंधी नइ चमत्कार न ऊपजाबइ.

हिवइ तूं ते उपाय चींतवि, जे...

माहरइ घरि तां मावसि, जां ताहरइ ... पुत्र हूउ न हुइ. एक हूं अभागीड छउ, जे विषयनड वाहिउ चारित्र न छिउं.

जां-तां 'ज्यां सुधी-त्यां सुधी' ना अर्थमां वपराय छे.

जां लागइ —तां लगइ पण मळे छे.

'ज्यारे —त्यारे' माटे जहीइं—तहीइं, अने क्वचित जियारइ—तिवारइ छे. यदा कालि पण एकाद वार 'ज्यारे' ना अर्थमां वपरायुं छे.

गौण वाक्यना निर्देशक सामान्य रीते जु (जड), क्वचित् जे के कि:

पूछिउ हूं तउं जउ ...जउ तूं एहबी वाचा दि**इ जे..., वली इं**द्रि वश्न लेई कहिउ कि... कांई (परनार्थ) 'कारण के', केम के :

अश्व लेवा नहीं दिउं, कांइ, जेहनउं बीज तेहनी वस्तु. निमंद्र पणि विनयप्रतिपत्ति कीधी, कांई...

बे विकल्प दर्शाववा कइ — कइ :

कइ डील दीजइ, कइ अधिक धननी राशि आणीइ. किसिन्डं 'शंं ?' — तुझनइ किसिन्डं वीसरिन्ड. भार दर्शाववा बंने विकल्पना निषेष वाळां वाक्योमां आरंमे न : न नंदराजा दान दिइ, न प्रधान वर्णवइ.

२४. विशेष्यनी पछी विशेषण

विशेषण-विशेष्य एवो सामान्य कम कैटलीक वार उलटाय छे, अने विशेषण (के विशेषणीय खंड) विशेषणनी पछी लगोलग मुकाय छे, अथवा तो ते कियापद पछी, वाक्यने छेडे मुकाय छे.

(१) विचालइ नदी एक महांत आवी ।

युग्म एक वसइ ।
दिन बि गया ।
वात सर्व... ।
ए प्रतिज्ञा दोहिली कांइ कीधी ?
राज आपणडं...
माली एक आपणड विश्वासी तेडी....
प्रतिज्ञा आपणी....
च्यारि कुंडल रत्नना देई....
वयर बालक आठ वरस नड संघाति लेई....

(२) पुत्र प्रसंविड सुर्थे-समान ।
पुत्र जन्मिड सर्वे-लक्षण-संपूर्ण ।
घणा अश्विकसोरा हूया बहुमूल्य ।
ए सिडं सांभलीइ छइ लाजनड कारण ?
चिहि रचावी चंदनना लाकडानी ।
लोक घणा कडितगीयाल मिल्या छइं नगरीना ।

२५. क्रियाविशेषणीय खंड त्राक्यान्ते

क्रियाविशेषणीय खंड वाक्यमां अनुकूळता प्रमाणे गमे त्यां पण क्रियापदनी पूर्वे मूक्तवाना ब्यापक वलणनी साथोसाथ तेने वाक्यान्ते—एटले के क्रियापदनी पछी—मूक्रवानुं वलण पण अनेक वार देखाय छे.

(१). अनुग बाळो खंड —
ते सोनारनइ दीघां समारिवा-भणी ।
तातउं कथीर पीघउं शोधि होवा-भणी ।
चारित्र ठीघउं साचउ सनेह पाळिवा-भणी ।
सांझइ पाळउ बळिउ घर-भणी ।
दूत मोकळिउ स्नेह-ळगइं ।
पारणउं न करइ माया-ळगी (१) ।
चारित्र लीघउं सहस्र क्षत्रियकुमार-साथि ।
एहवउं नाम तेह-भणी पडिउ परमार्थ-इतु ।
कराविउ ऋषि-पाहइ ।

दूत मोकलिंड वरणानइ काजि ।
कन्या मागी धनगिरिनइ कीधइ ।
बुद्धदास जिनदासनइ घरि आविड वाणिज्यनइ हेति ।
कांइ कडतिग दीठउं पृथ्वी-माहि ?
अतिथि जमाडीइ शालि, दालि, मोदके करी ।

(२) इतर ---

बांधी मूकिउ छइ लोहने भारसहस्ते ।
शिला चूर थइ बालकनइ प्रहारिइं ।
बिहार करतां आव्या नर्मदापुरि ।
बली थापिइ तीणइ थानकि ।
त्यां निम अनइ मल्लिनाथ प्रणम्या महा-प्रासादि ।
तेह-नड ध्यान करइ छइ रातदिवस ।
पतित्रता किहवा लागी हाथ जोडीनइ ।
निम ए नाम दीधउं बालकनइ ।
बृष्टि कीधा सर्व देखतां ।
हुं आंबइ चडी छउं आंबा खावानी वांछाइ ।
तेहनी हूं बेटी गंगा एहवइ नामि ।

२६ संबंधक भूतकृदंत वाळा वाक्यखंडनुं क्रियापद अकर्मक होय अने मुख्य क्रियापद सकर्मक होय (अथवा तेथी ऊलटी परिस्थिति होय) त्यां भूतकाळनी बाबतमां अर्वाचीन प्रयोगधी मध्यकाळीन प्रयोग जुदो पडे छे. कर्तानुं रूप वाक्यखंडना क्रियापद अनुसार (नहीं के मुख्य क्रियापद अनुसार) 'करण विभक्ति' ना प्रत्यय छे छे के नथी छेतुं. जेम के

नारायणि पाणिप्रहण करी रुक्मिणीनइ किह्वा लागउ।
पर्वतक...आवी वात कही |
शिशुपाल-राजाइ सर्व सामग्री करी कुंडिनपुरि उद्यानिविन आविड।
पुण्यपालि प्रयाणभंभा देवरावी पाळड चालिउ।
गुणसुंदरी नीकली रसवती राजानइ परीसी |
पल्लीपतिइं गलइ कुहाडउ करी शंखकुमारनइ शरणि आविड।
सुमित्र आवी कुसुमनी वृष्टि कीधी |
अतेउरीए ते आचार्यनी रूपसंपदा सांभली.... गुरुनइ वांदिवा आवी ।
तिणि अन्यदा कमलानुं रूप सांभली काम-विह्नल हूउं।
पिताइ आवी जाणी सामुहु आव्यउ ।
क्वित कर्मनुं पुनरावर्तन कगनुं छे. ता क्वित जुदा जुदा कमे होय छे.
तिसिइं गुरे ते पाषाण आवतड जाणी गुरु टली अलगा हुआ ।
कुमार केतलाएक दिन तिहां रही.... रात्रिइं बेहू चाल्या ।
शंखकुमार ... वांदी, पूजी पछइ मणिशेखरि विद्याधिर कुमार कनकपुरि आणीड।

२७. पूर्ववर्ती -- नड अनुग वाळा के तेवा बीजा पूर्ववर्ती वर्धक वाळा नामने अनुग सीधो नथी लागतो, पण तेना निर्देश करता दर्शक सर्वनामने लागे छे. जेम के-

चंद्रगतिनं पुत्र भामंडळ, तेहनइ रूप देखाडिडं.

सावद्य व्यापारना योग, तेहनउं वर्जन.

आपणुं मित्र अभयकुमार, तेहनइ मिली आवडं.

राजा मृगनु आहेडड, तेहनइ विषइ रसिक हूंतड.

जह्नु नाम विद्याधर, तेहनी हुं बेटी.

गुरुनु पुत्र पर्वतक, तेहनइ मिळवा-भणी आविज

आपणी चंद्रमती प्रिया, तेहनइ वधराविउ.

दश्चबुद्धिना लक्षण, तिणि करी विराजमान.

लक्ष्मी श्रेष्ठिनी पुत्री, तेहनड रूप देखी...

विक्रमराजानं पुत्र धन, तेहनं ए रूप.

परमेश्वरनी प्रतिमा, ते पणि चडावी.

ते पद्मना मित्र कुटु बी, तीणे प्रधाननइ घणड कहिड.

माहरी पुत्री चंद्रवती, तेहनइ बहिन हुअइ.

माहरा पुत्र महेश्वरदत्त, तेहनइ हेति....

चंद्रयश राजाना जण, तीणे झालिउ.

वीतरागनी प्रतिमा, तेहनइ पूजी...

ए अंजनासुंद्रीनड पुत्र, तेहनडं नाम घटइ.

आपणउ पति खर राक्षस, ते-कन्हलि.....

ऋषिद्त्त मंत्र, तेहनइ ये।गि...

आ रचनाओं मूळ तो 'जे...ते' वाळी रचनाओं छे, जेमांथी 'जे' अनुक्त रह्यों छे. जो '''ते वाळी रचनाओं पण मळे छे :

हिवइ जे रामलक्ष्मण, तेह इ शीतानइ लेई आपणइ नगरि आन्या.

आपणु विता जे बुद्धिसागर, तेहनइ कहइ.

जे तपस्वो शील-सहित, तेहनड कारण कहइ.

जे सुसाध्र चारित्रीया, तेहनइ.....

जे लेकीक देवता, तेहनी विडंबना कहइ.

जे स्नेह, ते जाइ नही.

२८. पूर्ववर्ती गौण वाक्यमांतुं विशेषनाम, उत्तरवर्ती मुख्य वाक्यमां पण सुर्वनामधी निर्दिष्ट न थता पुनरावर्तित थयु छे :

जक्खाइं जेतलइ एक वार सांभल्या, तेतलइ जक्खाइं राजा देखतां पाठ दीधड. जु महात्मा-कन्हलि आवइ, तु अजी ते महातमा काउसरिंग दीठड.

हिव बुद्धिदास सुभद्रः-सहित सुखिइ युगलीयानी परिइं सुख अनुभवतां अन्यदा बुद्धिदास चीतवइ.

२९. थोडीक संकुल रचनाओनां नोंधपात्र उदाहरण :

यहवाइ पाडोसी, जेहनउ मनुष्य हणिउ हूं तड, ते जड जागइ तु मनुष्य मारिड देखी कोलाहल कीधड. अथवा मुझनइ धिग्धिकार हु, जे मइ जिनधर्म छांड हुंतइ हूं कुटुंबिइं छांडी नीचेनी रचनामां ए किसिउं अंते आववाने बदले वच्चे आव्युं छे : तूं मुनि- पुत्रिका हुईनइ सांप्रत ए किसिउं राक्षसी थई ?

३० नामिक वाक्यो :

विषेय तरीके कोई पूर्ण आख्यातिक रूप होवाने बदले आ प्रकारनां वाक्योमां नाम, विशेषण वगेरे हाथ छे.

प्रश्नार्थ वाक्यो :

ए कडण स्त्री, कडण बालक ? कहि-नइ, तूं कउण? तूं कहिनी वेटी ? बलिभद्र-नारायण अम्हे इ, कि ए छव नइ कुश ? एकली आवास-माहि कांइ ? नेमिक्कमार ए नाम स्या-भणी? किसिडं देवांगनानड रूप, किंवा मनुष्यनड रूप ? ताहर जीवतव्य सिड काजि ? पंगे पडतां स्यउ टोष ? ए वात नड किम ? आपणइ ए स्यूं कांतणडं ? ते नल किहां अनइ तूं किहां ? ओळखाण के चोकस माहिती देतां वाक्यो : हूं ब्रह्मचारी हूं तड ब्रह्मचारी हूं तु स्त्री. पह तउ माहरउ जेठा ए तु ताहरी बहिन. तेहनी राणी विदेहराणी. तूं तु लघु. तुम्हे त एकाकी ए इम अनइ ते तिम. ए आवास, ए नगरी, ए कीडावन रोहिणीनं रूप-लावण्य अमृत तेहनी कूई. प घोडउ तु माहरा पितानउ. बेटी मानी, बेटड वापनड. ए प्रताप सर्व तुम्हारउ.

भार दशिवता संकुछ वाक्यो : जे स्नेह, ते जाइ नही. धन्य ते, जे चारित्र पालइ. जेहनड बीज, तेहनी वस्तु.

सघले आपणडे स्वार्थ जि बाल्हड.

जेहनडं बोज, तेह जि धणी. जां प स्त्री-रत्न ताहरइ घरि नहीं, तां ताहरड जन्म फोकट. ते प्रदेश नहीं, ते स्थानक नहीं, जिहां कोई व देखह. तु हूं, जड एहनइ शील-हूंतड पाडडं.

अन्य उदाहरणो

बिहुनइ डील-इ जूजूआं, पणि जीव एक जि.
पणि तुम्हारइ गांगेय पुत्रः
सत्यवतीना पुत्रनइं राज्यः
तेह—भणी माहरडं मन नहीः
तेहनइ आऊखडं थोडडं.
जड जोइ, तुन ते खांडडं, न ते स्त्री.

३१. केटलाक रूढिप्रयोगो :

घणडं किसि अं ? 'वधु द्युं कहीए ?' ' किं बहना. '

हिव स्यूं चालइ ? 'हवे ग्रुं बळे ?' मई सिउं चालइ ? 'माराथी ग्रु' वळे ?' वाहरइ चड्या 'युद्धमां मददे आठ्या', 'वारे चड्या' त इम जाणडं 'तो मने एम लागे छे-थाय छे...' इम जाणीइ 'जाणे के...' जाणइ छइ जु ...'(एमने) एम थाय छे के...' जिम मेलीइ आवइ 'जे रीते मेळ पडे...' जे एवडा इ मान-अइंकारना घणी '...मान-अहंकार घरनारा' वार नही लागइ 'वार नही लागे' आपणपानइं एहवरं अधम कर्म करिवा नावइ'...करबुं न घटे' बालक प्रसविद्व, इहां रहिवड नावइ '...रहेबु' न घटे'. बारणा देई मुक्या 'बारणां बंध करी राख्या'. तेहनइ हाथि भद्रा वेची. 'तेनी मारफत ...' केहनड घरि जई रही घटड़ 'कोई ने घरे जईने रही हे।वानुं संभवे छे'. ए अंजनासंदरीनड पुत्र तेह्नु नाम घटइ. सर्पद्व खाधच 'सर्प करडयो', 'एरू आमडयो'. जीविवड वांछड 'बीववा इच्छे छे'. तुझनइ किसिउं वीसरिउं ? 'तने छुं भुलाइ गयुं ?' अंजनानइ तृषा बुसुक्षा वीसरी गई. राखिड इ रहड नहीं 'राख्यों तो ये रहे नहीं'. हिवड़ ईणड़ अधिकारि सरिउं 'हवे आ अधिकार बस थयो'.

सई 'सो' संबद्ध नाम साथे संबंधार्थ अनुगयी जोडाईने वपरायो छे : घांटना सई.

महात्मा पणि मण्या जोई 'महात्माओ पण भणीने जाय'.

दिहाडीनी भेटि 'दरसे अभी भेट'

भावइ जिम (='गमे तेम करीने) ता कुछनी वृद्धि कीधी जोइइ.

जाते दिहाडे 'दिवसो जतां --वीततां', 'जाते दहाडे'.

तं वहिलंड था 'उतावळ कर, जलदी कर'.

परह छड 'दूर थाओ', 'दूर रहो'.

ईणइ सिउं विणासिउं ? 'एनो शुं वांक ?' (लाक्षणिक).

तेहे सिउं विणासिउं छइ ?

कमें महारखं सिखं करिइ ? ('...मने शुं नुक्शान करशे ?')

जोइ-न, जोउ-न 'जोने, जुओने'—श्रोतानुं खास ध्यान खेंचवा, भार मूकवा वाक्यारंभे तेम ज वाक्य वच्चे पण वपराया छे.

* *

प्रस्तुत संपादनकार्यमां भाग लेनार संशोधकोना कर्तृ त्वनी विगतो नीचे प्रमाणे छे :
गीताबहेन : B हस्तप्रतनी प्रतिलिपि; L अने P प्रतोना महत्त्वना पाठांतरोनी नोंध.
र. शाह अने ह. भायाणी : C, K अने Pu प्रतोना उपयोगी पाठांतरोनी नोंध;
पाठनिणिय; समग्रपणे प्रथपाठनी निष्यत्ति; प्राकृत गाथाओना पाठोनी हस्तप्रतने
आधारे चकासणी; संपादित पाठनी गोठवणी अने रज्ञआत; प्रूफ सुधारवां.

- र. शाह : भूमिका पृ. १-१२ तथा अंते आपेली गाथासूची (पृ. १८३-८५.)
- ह. भायाणी : भूमिका पृ. १३-२६; महत्त्वना शब्दोनी सार्थ सूची (पृ. १८६-९२); समग्र कार्युनुं मार्गदर्शन अने देखरेख.

गीताबहेने १९५६-५७ मां जे कामनो संशोधननी तालीम मेळववा आरंभ करेलो, परंतु तेमां विशेष प्रगति थाय ते पहेलां जे छोडवानु थयेछ, ते काम छेवटे १९७९मां फरी अमे हाथ घरी अने पूरू करी शक्या : आनो यश डा.द. भारतीय संस्कृति विद्यामिदिरना भूतपूर्व संचालक दलसुखभाई मालवणियाने तथा वर्तमान संचालक डो. नगीनदास शाहने तथा गुजरात सरकारने (तेमना तरफथी मळेली आंशिक आर्थिक सहायने कारणे) घटे छे. अहीं अमे तेमना परये तथा हस्त-प्रतोनो उपयोग करवा देवा माटे नीचेनी संस्थाओ प्रत्ये अमारी आभारनी लगणी व्यक्त करीए छीए :

- (१) ला.द भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदाबाद.
- (२) भांडारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टिट्युट, पूना.
- (३) एशिआटिक सोसायटी, मुंबई.
- (४) जैन ज्ञानमंडार, लींबडी.

युनिवर्सिटी कक्षाए प्राचीन गुजराती गद्यसाहित्यना अध्ययनमां आ संपादन थे हुंक उपयोगी नीवडरो एवी आशा अस्थाने नहीं गणाय.

१०-१०-८०, अमदावाद. 🖂 🔩 🔻 🚉

हरिक्छभ आयाणी

मेरुसुन्दर गणि-विरचित शीलोपदेशमाला-बालावबोध

मेरुसन्दरगणि-विरचित शीलोपदेशमाला-बालावबोध

श्रीवीतरागाय नमः । श्रीनाभेयमभेयश्रीसहितं महितं सुरैः । प्रणिपत्य सत्यभक्त्याऽनन्तातिशयशालिनम् ॥१ श्रीजिनचंद्रगुरूणामादेशान्मेरुसुन्द्र-विनेयः । शीलोपदेशमालां विवृणोति शिशुप्रबोधाय ॥२

धुरि इष्टदेवता नमस्करी शीलोपदेशमालाना बालाविबोध-भणी आदि-गाथा कहइ -

आबाल-बंभयारिं नेमिकुमारं निमत्तु जय-सारं । सीलोवएसमालं बुच्छामि विवेग-करिसालं ॥१

व्याख्या — आबाल-ब्रह्मचारी, आजन्म चतुर्थव्रतधारो श्रीनेमिकुमार बावीसमउ तीर्थकर नमस्करी, शीलक्ष्य उपदेश तेहनी मालानु बालाविश्रेष मूर्खजनना उपकार भणी हूं किह्म । नेमिकुमार ए नाम स्था-भणी ! जे यहरूयावासि विणिण सई वरिस घरि रही, राज अन्द राजीमती परिहरी, कुमारपणइ चारित्र लीघउं। वली केहैं त्र उ छह ! जयसारं जय कहीइ त्रिमुवन तेह-माहि शीलक्ष्प धरिवानु ए सार=प्रधान छइ, अथवा बाह्य अन्द अंतरंग वहरी जीपवइं करी सार छई। वली, विवेगकरिसाल विवेकक्षीउ करि=हस्ती जिम हस्ति-शाला आश्रइ तिम विवेक शीलबंत पुरुषनइं आश्रइ ॥।

हिवइ शीलने उपदेश कहई--

निम्महिय-सयल-हीलं दुहवड़ी-मूल-उक्खणण-कीलं । कय-सिव-सुह-संमीलं पालह निच्चं विमल-सीलं ॥२

ठयाख्या — तुम्हे विमल=निर्मल शील निरय=सदा पालउ । पणि शील केहवउं छइ ? निम्म ॰ सघलाई मिथ्यात्वनी हीला=पराभव जीणइं मंथाणानी परिइं मथ्या=फेडचा छइं । दुह् ० दुख-रूपिणी वेलि मूल-हूंती उन्मूलिवानइ कारणि तीक्ष्ण खीला-समान । कय ० कृत=कीघी शिवसुख= मोक्षसुखनी प्राप्ति छइ, एहवउं उत्तम शील पालउ ॥२

ह्विइ शील-लगई इहलोक नइ परलोकनां फल कहणहार हूंतउ भणह-

लच्छी जसं पयावो माहप्पमरोगया गुण-सिमद्धी । सयल-समीहिय-सिद्धी सीलाओ इह भवे वि भवे ॥३ षरलोए वि हु नर-सुर-सिमिद्धिमुवभुंजिऊण सीलभरा । तिहुयण-पणिय-चरणा अरिणा पाविति सिद्धि-सुहं ।।।४

१. К. श्रीगुरुम्यो नमः. Р. श्रीसर्वज्ञाय नमः L. श्रीजिनागमाय नमः २. К. °सहितं सेन्यमानममराणैः. A. सुरैव सहितैः हितैः. ३. Р. कहियइ. ४. К. मालानु श्रेणिनु. ५. Р. त्रिन्नि. L. त्रिणि. ६. Р. कहिया. ७. А. आश्रई, Р. आश्रय. ८. Р. कहियइ. ९. А. थक्ड. १०. Р. सीलधरा. ११. Р. परमप्यं.

ए बिहुं गाथानी ज्याख्या – ईणइ भिंव शील-लगइ एतला बोल संपजइं : गृहांगणि लक्ष्मी, चक्र-वर्ति वासुदेव बलदेव मंडलीकादि तणी ऋदि संपज्ञइ, यश पणि वाधइ । प्रताप, आज्ञा कोइ लांधी न सकई, महात्म्य=शीलना प्रभाव-लगइ सीह रीसाणउ इ सीयाल सरीखउ थाइ, आगि फीटी पाणी थाइ इत्यादि । आरोग्यपण उं=रोगरहित्यण उं, गुणनी समृद्धि—घण उं किसिंउ ? सकल समीहित=मनोवांछित फलनी प्राप्ति शील लगइ इहलोकि इत्यादि फलनी प्राप्ति हुई । हिवइ परलोकि नर=मनुष्य, सुर=देवतानी समृद्धि भोगवी शील-लगइ त्रिभुवने प्रणमित-चरण हूंता जीव मोक्षसुख पामइं । इणि कारणि आरिणा प्राक्तन ग्रुभाग्नुभ कर्मरूप वेदनी कर्म क्षिय घातिउं तेह भणी अरिण=क्षीण समस्त कर्म, इम शील-लगइ मोक्ष पामइ । एतलउ बिहुं गाहनउ अर्थ हुउ ३-४॥ हिवइ जे उत्तिम शील पालइ ते भवांतरि गुणसुंदरीनी परिइ संपदा पामइ ते कथा कहीइ —

लक्ष-योजन-प्रमाण जंबूद्वीप, तेह-माहि भरतक्षेत्र, तिहां श्रीभद्दिलपुर नगर। तीणइ नगरि राजा श्रीअरिकेसरि राज्य करइ। तेहनइ शीलादिक गुणे अलंकृत कमलमाला^४ नामिई पद्दराणी । ते बिन्हइ घणां सुख अनुभवतां देवदेवता मनावतां। घणे दिहाडे गुणसुंदरी एहवइ नामिइं पुत्री जाई । ते गुणसुंदरीनउ जन्ममहोत्सव राजाई पुत्रजन्मनी परिइं महाविस्तरि कीघठ । पछइ पांच प्रकारिई घात्रीए पालीती हूंती, जिम मेरुपर्वतनी चूलिकाई कल्पवेलि वाघइ तिम गुणसुंदरी वाधती हुंती, कलाचार्य-समीपि चउसिठ कला, गीत रृत्य शास्त्र देशभाषा लिपि गणित बाद्य इत्यादि शास्त्र शीखती, यौवन-भरि आवी देखी, माताई सालंकार साभरण करी पिता समीपि मोकली । पिताई पणि हर्ष स्नेह-लगइ उत्संगि बइसारी, पुत्रीनउं रूप अनइ आपणी राजऋद्धि देखी, गर्व-लगइ पृथ्वी तृण-समान मानतउ, समस्त सभालोक आगलि इसिउं वचन बोलइ, 'अहो लोको ! तुम्हे जे संपदा ऋद्धि पामी ते प्रमाण कहिनुं ?' तिसिइं सभाना लोक [°]हाजीविया थिका[°] इसिउं भणइ, 'स्वामिन् ! ए सर्व तुम्हारु प्रसाद ।' तेतलइ गुणसुंदरी कन्या लोक छांद्रआ बोल बोलता देखी माथउं धूणी हिसवा लागी। तिस्हि राजा पुत्रीनउं हासूं देखी पूछिवा लाग 3, 'हे विच्छि! तूं कांइ हसी ?' तिसिइं गुणसुंदरी कहइ, 'आम तात! ए सर्व लोक अलीक बोल्इं छइं । जिणि कारणि जीविइं जेहवउं कर्म बांधिउं हूइ तेहवउं फल पामइ, इहां संदेह न जाणिवैंड'। इम पुत्रीनउं वचन सांभली वली राजा कहइ, 'त्ं कहिनइं प्रमाणिई सुख पामइ छइ ?' गुणसुंदरी कहइ, 'हूं आपणा कर्मनइ प्रमाणिइं सुख पीमउं छउं ।' ए वात सांभली राजा रीक्षाणउ हूंतउ पुत्री उत्संगि-तु नांखी प्रधाननइ कहइ, 'जाउ, तुह्री नगर-माहि जि को गाढइ दुःखी काष्टमारन उवहणहार पुरुष हुइ ते ल्यावउ । तेतल इ प्रधाने ऊठी करी कठीआरउ^{९२}एक आणिउ । राजाई पुत्रीनां आभरण वस्त्र सर्व ऊदाली ते कठीआरान**ई** पाणि-

११. K. उत्संग तु, P. उत्संगि थकी; L. उत्संगि तु लांखो. १२. P. गाम मांहि सोचा पुरुषु एक.

१. P. L. 'यहा पणि वाधह' नथी. २. L. K. लोपो उलघी. ३. K. कहीइ छइ. P. किहियइ. ४. L. कमला, ५. P. पटराज्ञी. ६. P. धात्री करी. ७. P. आजीवकानइ अथि. L. नथी. ८. p. 'अनके राजानना भय लगई', एटलं वधारे. ९. P. आणिवउ, L. जाणवउं. १०, P. भोगवउं छउं । बली गाथा कहइ। गाथा —

सञ्बो पुञ्वक्याणं कम्माणं पात्रए फलविवागं। अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमित्तं परो होइ।।१

ग्रहण करावी, आपणी हिष्टि-हूंती अलगो करी किहिडं, 'जा³, आपणडं कर्म भोगवि'। तिसिइं प्रधाने प्रणाम करी राजा वीनविड, 'स्वामी ! एवडड कोप पुत्री ऊपरि न कीजह।' तुहह राजानड कोप उपशमह नहीं।

तेतल्डं गुणसंदरी आपणपउं धन्य मानती ते काष्टहार-संघातिई जिहां जीर्ण घर पडिउं छइ तिहां आवी, मर्तारनइ आसन मूकी, हाथ बोडी^४, आगलि ऊमी रही । पछइ काष्ट्रवाहक इसिउं कहइ, 'हे भदि! तूं आपणी इच्छाइं जिहां विचारि आवड तिहां 'जा । सोनउं जिहां जाइ तिहां गौरवपगउं लहइ।' ए वात सांभली गुगसुंदरी कहई, 'स्वामिन्! इणिइ भवि चितामणि समान महं तुं भरतार पडिविजाउ। आज पछः ए वात न कहिवी।' पछड काष्ट्रवाहकनइ माथइ वेणी करिवा-भणी मस्तकना अलक विरला वरिवा तेतलइ बावन्ना चंदननउ परिमल आविउ । आपणी उत्पातिकी बुद्धिई ' स्वामिन् ! आज काष्टनउ भारउ किहां वेचिउ !' तेणिइ कहिउं, 'मई भोजन-माटि कंदोईनइ हाटि म्ंकिउ छइ।' पछइ गुणसुंदरीइ भर्तार-सहित तेणइं हाटि जई, कांइं एक भोजननंड मल देई. काष्ट्रनंड भारंड घर माहि आणिउ। ते बावन्ना चंदननां काष्ट खंडोखंडि करी, सुरहिया गांधीनइ हाटि खंड एक वेचिवा मोकल्डि । तेणिइ सोना समडं तोली चंदन लीघडं । पछइ तेणिइं सोनइ वस्त्र आभरण सर्व नवां कीघां । वृत तंदुलादिके घर संपूर्ण भराणडं । पछइ राजसताई भरता-रनइ स्नान कराविड । हवइं ते रांकनइ राजसुताना लाभ-इतु पुण्यपाल इसिड नाम लोके दीघड ।

तिवार-पछई राजसुताई ते पुण्यपाल पासि ते चंदनवृक्ष अणावी खंडउ खंडि करी व्यापाल पासि ते चंदनवृक्ष अणावी खंडउ खंडि करी व्यापाल पासि व्यापाल पासि वेदन वेचावी , व्यवहार सीखवी, धनराशि एकठी करी, नगर-माहि व्यवसाय मंडाविउ । पणि लेखउं न जाणइ, अक्षरमात्र समझइ नहीं । पछइ नगर दूकडउं गाम एक छइ तिहां गुणसुंदरी पुण्यपालनइ लेई माई-प्रमुख सर्व स्त्र , अंक, सर्व व्यवहार, सर्व परीक्षा थोडाई दिवस-माहि सीखवी ।

तिवार-पछई संघातनी रचना करी तिहां हूंतां पोतनपुरि गयां । तेणई नगरि पुण्यपाल-पाहिइं तिम व्यवसाय मंडाधिउ जिम थोडा दिवस-माहि अति घनवंत हुउ । तिसिइ गुणपुंदरीई पूर्विछा पुण्य-छगई जुना घर-माहि वहीयावट एक लिखिउ लाघउ । ते वाचिवा लागो । तिहां साते ऊखवे ईटवाह सोनानउ हुइ एहवा प्रयोग देखो हिर्षित हूंती, संयोग मेली, सुवर्णनी राशि करी, राजा-समीपि भूमिका मागी, उत्तंग-तोरण प्रासाद कराविउ । पछई कांई एक मन-माहि विचारी, पुण्यपाल-पाहई घणा प्रवहण वस्तु भरावी, सिइलद्वीप-भणी पुण्यपाल नई गुणसुंदरी चाल्यां । वाटई महांत यश उपार्जतां अनेक धर्मकार्य करतां, सिहलद्वीपि आव्यां । तिहां धननइ बलिइं अनेक तुरंगम, भद्रजाती हस्ती, अनेक मणि माणिक्य रत्न मुक्ताफलना संग्रह करावी. पुण्यपालनइ इसिउं कहिउं, 'स्वामिन् ! ते धननउं सिउं प्रमाण जे स्वजन-संबंधीनइ चमरकार न ऊपजावइ ? एह-भणी भिद्दलपुरि पिता अरिकेसरी राजाइं जे हूं सभा-माहि अवगणी अ त्ंहनई कर्मनां फल जोवा-भणी आपी, तेह-भणी तिहां जई कर्मनउं फल देखांडउं।' इम कहिइ हूंतइ पुण्य-पालिइं प्रयाण-भंमा देवरावी पाछउ चालिउ अ ।

१. P. की घी; L. तेडी. २. P. जाहि. ३. L. आपणं. ४ P. जाहि. ५. B. भर्त्तारनइ आगिल. ६. A. राजसुताइं पुण्यपाल. ७. K. पाहिइं. ८. P. 'उरडउ...ते' नथी. ९. L. नथी. १०. P.L. वेची. ११. P.L. नथी. १२. L. नथी. १३. P. अवगणी हूंती. १४. L. नथी.

मार्गि अनेक धर्मकाज करतां भिद्रलपुरनइ उद्यानविन आवी, सर्व हस्ती अस्व तिहां शकी, सप्तभूमिक आवास करावी, पछइ अनेक बहुमूल्य वस्तु भेटि लेई, राजानई मिलिउ। तिसिई राजाई ते तेह्वी अपूर्व वस्तु देखी हर्षिउ हूँतउ घणउं मान दीघउं । तिसिइं प्रधानइ कडी राजा बीनविड, 'स्वामिन्! ईणइः पुण्यपाल नायिकई जे घोडा हाथी आण्या छई ते आपणपइ तिहां जई जोईइ, द्रव्य देई स्वेजेंड ।' ए वचन सांभली पुण्यपाल राजानई प्रणमी कहइ. 'स्वामिन्! धन-पालइ जि काई जोईइ ते भंडारि अणावउ, अनइ एकवार घरि आवी अम्हारा मनोरथ पूरवउ ।' पछई राजा अनह पुण्यपाल बेहू गुणसुंदरीनइ आवासि आव्या । पछइ स्नान-मज्जन देवार्चन करी जेतलइ राजा भोजनशा लाई आवी जिमवा बहठड, तेतलइ सुवर्ण स्थाल, सुवर्णमय वाटली आगिलि मांडी । तिसिइ पूर्वदिसिना द्वार-हंती गुणसुंदरी नीकली, स्वेत वस्त्र स्वेत आभरण पहिरी, फलफूल सूंखडी लेई. राजानइ परीस्यां। वली गुणसुंदरी दक्षिणद्वार-हूंती नीलां वस्र नीलां आभरण पहिरी रसवती राजानडं परीसी । वली उत्तरनइ द्वार-हंती पीलां वस्त्र पीलां आभरण पहिरी, पकवान परीस्यां । पछइ पश्चिम दिसिनइ द्वारि रातां वस्त्र रातां आभरण धरती, गोरसादिक परीसी करी. गुणसंदरी पाछी गई । पछइ जेतलइ राजा भोजन करी पुण्यपाल संघातिह स्नेहमइ वात करइ⁸ तेतलइ गणसंदरी पितादत्त पूर्विलउ वेष पहिरी राजानई प्रणाम कीघउ । तेतलइ राजाई प्रतिका ओलखी, लाजिउ हुंतउ दीनपणइ रहिउ । पछइ पुत्रिकानई उत्संगि बइसारी कहिवा लागउ, 'वित्स ! ताहरडं स्वरूप देखी कर्मनडं फल मई साचउं मानिउं । जि कांई जीव दुख नइ सुख पामइ ते सहं कर्म-जि-नं फल।' इसिउं कही राजा कहइ, 'मइं भोजन कग्तां तूं ओलखी नहीं, हवइ तूं आपणउ वृत्तांत कहि। ए पुण्यपाल कउण ११ तिसिइं गुणसुंदरीइं सान की घइ हं तिइं प्रतिहारिणीईं मूल-हंतउ चंदननउ वृत्तांत कहिउ ।

पछइ मातापिताए पणि अतिस्नेह-लगइ पुत्री-जमाई ओलखी, आप अनइ जमाई-पुत्री सर्वे हाथीइ बइसारी, महा महोत्सवि नगर-भणी चलाव्यां । तेतलइ अंतरालि श्रीवर्द्धमान-स्रि भविकजननई उपदेश देता देखी, राजा जमाई-सिंहत गुरुनई वांदी, उपदेस सांभलिवा-भणी आगलि बइठउ । तिसिइ गुरु कहइ, 'यतः —

लक्ष्मीर्यशः कुळे जन्म प्रतापः प्रियसंगमः । श्रीधर्मकल्पवृक्षस्य फलमेतिज्जनोदितं'।। १ ॥

पह्चउ उपदेस दीघउ । वली गुरु कहइ, 'जे गुणसुंदरीइं भवांतरि शील पालिउं तेहनडं ए फल लाघउं, क्रिमइं मोक्ष पणि पामिसिइ।' इत्यादि श्री-गुरु-मुलि राजाइं गुणसुंदरीनउ पूर्वभव-स्वरूप सांभली, वैराग्यरंग-पूरित हूंतउ, जमाई-पुत्रीइं परवरिउ, राजा नगर-माहि आविउ । अनेक धर्मकार्य करिवा लागउ । पछइ श्रीपुण्यपालनइं आपणउं राज देई अरिकेसरी राजाइ चारित्र लीघउं । पछइ ते अखंड राज्यश्री पालतां पुण्यपाल नइं गुणसुंदरीनइ सुलोचन नामिइं पुत्र हूउ । यहांगणि घणा वधामणा हूया । सकल कला क्रिमइं अभ्यसी कुमार राज्यभारनइं योग्य हूउ । तेतलइ राजाइं ते सुलोचन-पुत्रनइ राज देई, पुण्यपाल-गुणसुंदरीइं चारित्र महा महोत्सिव लेइ नि:कलंक त्रत पाली, मोक्षसुखनउं भाजन हूआं । इम शील ऊपरि गुणसुंदरीनी कथा जाणिवी ।। १।।

L. मर्जन. २. A. बइसइ. ३. A. वाटला, P. वाटुली. ४. P करइं छइ. ५. P. कम्मनड, L. कर्मनू. ६. L. ते कुण.

हिवइ समग्र गुणे सहित पुरुष शील-पाखइ शोभइ नहीं ते कहइ — देवो गुरू य धम्मो वयं तवं गुत्तिमवणिनाहो वि । पुरिसो नारी वि सया सील-पवित्ताई अर्ग्धति ॥५

ठ्याख्या—देव कहीइ शासननउ कारक; गुरु=धर्माचार्य; धर्म दयारूप; वत दीक्षारूप; तप बाह्य अभ्यंतर बार भेदे; गुप्ति=मन-वचन कायनउं राखिवउं; अवनिनाथ=नरेंद्र; 'अपि' शब्दइ तु द्रमक भोखारी धर्माधार पुरुष; नारी=स्त्री; सदा=निरंतर; शीलनइ प्रमाणिइं=अर्थीइ; शीलिइं पवित्रित हूंतां गौरवपणुं पामइं, मोक्षनइ योग्य थाइं॥५

शील पालतां महा दुष्कर तेह-भणी बिहुं गाथाए करी कहइ —

दायारसिरोर्माणणो के के न हुया जयम्मि सप्पुरिसा । के के न संति कि पुण थोव चिचय घरियसीलभरा ।।६ छठ्ठहमदसमाइं तवमाणा वि हु अईव उग्गतवं ।

छिट्ठहमदसमाइ तवमाणा वि हु अइव उग्गतिब । अक्खलिय-सील-विमला जयम्मि विरला महामुणिणो ॥७

ठ्याख्या-ए जग-त्रय-माहि दातार-शिरोमणि कडण कडण सत्पुरुष नथी हूआ १ जीमूत-बाहन-सरीखा अपि तु घणाइ कर्णादिक हूआ। वली कडण कडण दातार नथी जे कृपा-लगइ आपणउं जीवितव्य तुलानइ विषद तोल्ड १ जिम श्रीशांतिनाथनइं जीविइं वज्रकुमारिइं पारेवउ राखिउ, इम अनेक अभयदान देवानइं दातार दीसइं छइं। अनइ वली कडण दातार नहीं हुइ १ पणि शोलत्रतना घरणहार पुरुष जग-त्रय-माहि थोडिला जि दीसइं, जिणि कारणि सर्व त्रत-माहि शीलत्रत मुख्य ॥६॥

छट्टम० - छट्ठ अहम दसमादि, पक्ष-क्षपण मास-क्षपणादि महांत उग्र तपना करणहार घणाइ दीसइं, पणि अस्खलित शील=अखंड ब्रह्मव्रतना पालणहार विरला जि जयवंता दीसइं। जिणि कारणि सिद्धांतिइं इम कहिउं -

अक्लाणसणी कम्माण मोहणी तह वयाण बंभवयं । गुत्तीण य मण-गुत्ती चडरो दुक्लेण जिप्पंति ॥१

इम शीलवत दोहिलउं छइ, उपक्रोशाना घरि वसणहार महात्मानी परिइं। जिम महात्माइं नेपालदेशि जई रतन-कंबल स्त्रीनइ वचिन-आणिउ इत्यादि घणाइ दृष्टांत जिनशासनि छइ।।।। वली पह जि शील-ऊपरि लौकिक ऋषिना दृष्टांत देखाइतु कहइ—

जं होए चि सुणिज्जइ निय-तव-माहप्प-रंजिय-जया वि । दीवायण-विस्सामित्त-पसुह-सुणिणो वि पब्सट्टा ।। ८

ठ्याख्या — जे लोक-माहि इसिउं सांभलीइ जे आपणा तपनइ महातम्यइ करी जगत्रय रंजवी द्वीपायन विश्वामित्र ऋषि प्रमुख पारासरादि पर-सासनि एवडा ऋषि हुआ, ते पणि स्त्रीना हाव, भाव, कटाक्षक्षेप, वचन, श्रुंगार देखी शील-हूंता भ्रष्ट थया । पणि ते ऋषि केहवा छइं १ स्कृड सेवाल, स्कां पलासनां पत्र, कंद, मूल भक्षण करता छइं । एहवा ऋषि शील-हुंता चूका ॥८॥

हिवइं इहां ते ऋषिनी कथा कहीइ -

१. K. धर्माधारी. २. P. गाहइं. A. गाहे ३. P. नही. ४. P. ताकडिइ. ५. A. तोलीइ. ६. K. थोडाइ. ७. APL. रइणहार. ८. K. महिमाइं ९. 'पर-सासनि...देखी' पाठ A. मां नथी.

[२. शीलभ्रंश-ऊपरि द्वीपायन ऋषिनी कथा]

ईणइ भरतक्षेत्रि हस्तिनागपुरि शांतन राजा राज्य करइ, आपणी प्रजानइं सुलिइं पालइ। परं राजा मृगनु आहेडउ, तेहनइ विषइ रसिक हूंतउ। एकदा हरिण देखी राजाइं घोडउ मूंकिउ। तेतलइ हरिण हरिणीनइ लेई वन-माहि नाठउ। राजाइ वन-माहि जातउ जातउ सात भूमिकानउै एक आवास दीठन । पछइ राजा अश्व मूंकी आपणि आवास-माहि सातमी भूमि जेतल्ड चडइ, तेतल्ड रूप-वंत कन्या एक पाणीनउं पात्र लेई राजा साम्ही आवी, राजानइं आसन मूंकिउ, घणउ विनय साचिवड । पछइ अति संतोषिउ हूंतंड राजा कन्या-प्रतिई पूछइ, 'हे सुभिग ! तूं कहिनी बेटी ? एकली आवासमाहि कांइ ?' इम पूछिइ हूंतइ बालिकाइं कहिउं, 'राजन्! सांभलि, जहनु नामा विद्याधर, तेहनी हूं बेटो गंगा एहवइं नामि । माहरइ पिताई पूर्विइं नैमित्तिक पूछिउं हूंतछं जड, "पुत्री गंगानई वर कडण होसिई ?" तिसिइ नैमित्तिक कहिउं, "ए गंगानई पांडुक-वन-माहि वरनी प्राप्ति होसिइ।" पछइ पिताई ए सप्तभूमिक आवास करी हुं इहां मूंकी ते वचन आज सफल थयउं 🗗 एहवां कन्यानां अमृत ससनेह-कारीयां वचन सांमली, तिहां जि गांधर्वविवाहिई पाणिग्रहण गंगा कन्यानं कीधउं । पछइ सांतन राजा महा ऋदिनइ विस्तारि गंगानइ नगरि लेई आति । पंच प्रकारि विषयसुख मोगवतां अनुक्रमिई पुत्र जायउ। नाम गांगेय दीघउं। बीजना चंद्रमानी परिइं वृद्धि पामतउ, बहुत्तरि कला अभ्यसतउ, विरोधतः धनुर्विद्या सीखी । इम अनेरइ प्रस्तावि तेह जि हस्तिनागपुर-समीपि यमुना नदीनइ उपकंठि पारासुर ऋषिई तप करतां धीवर एकनी पुत्री मच्छगं घा इतिईं नामिई दीठो । अति-सरूप देखी पारासुर ऋषि ध्यान-हुतउ चूकउ । मच्छगंघा घरि आणी । केतले दीहाडे संतानप्राप्ति हुई । बेटउ जायउ । मच्छगं घाइ तेहनइ द्वीपायन नाम दीघंड । मोटंड हूउ पछइ द्वीपायनि तापसी दीक्षा लीघी, तप तिवा लागउ। ए स्वरूप आगलि कहीसिइ।

हिवइ मच्छगंषा १ योजनगंषा २ सत्यवती ३ ए त्रिण्णि नाम हूयां। एहवइ प्रस्तावि हिस्तिनागपुरने स्वामी शांतन राजा क्रीडा करिवामणी नावइ बहसी यमुनानदीनह कांठइ आविड। तेतलह शांतन राजाहं तेह जि सत्यवती, घीवरनी पुत्री वडी दीठी। महांत रूप देखी सराग हूंतड शांतन राजा तेहना पितानहं कहइ जड, 'ताहरी बेटी मुझनइ आपि'। तिवारहं घीवरिंह कहिउं 'तुझ सरीखडें जमाई छामह किहां १ पणि तुम्हारइ गांगेय पुत्र। तेह हूंतां माहरी पुत्रीना पुत्रनई राज न हुइ। जड त् एहवी वाचा दिइ जे 'सत्यवतीना पुत्रनई हूं आपणंड राज दिउं' तड हूं आपणी बेटो त् हनई दिउं'। इणि वचिनई राजा सर्चित थिकडें घरि गयडें। राजा राजनी कणवार न करइ, भोजन पणि न करइ। एहवइ प्रस्तावि गांगेयई जाणिउं जड राजा एह भणी चिंता करइ छइ। पछइ गांगेय घीवर कन्हिलें जई, सरयवती पुत्री मागी, एहवउं वचन दीघंड जड, ''सत्यवतोना पुत्रनई राज्य। हुं बहाचारी। मई राज सही परिहरिंड।' एहवी वाचा देतां देवताए जय-जयारव करते फूलनी वृष्टि कीचा। गांगेयिं भोष्म उप्र कर्म कीघंडं तेह-भणी भीष्म ए नाम हूउं। तिवारई घीवरिंह योजनगंघा पुत्री दीघी। शांतन राजा परिणिड।

क्रमिइं योजनगंधाइं बि पुत्र जन्म्या, "चित्रांगद १ चित्रवीर्य २ । पछइ बेहु" बालक योवनाभिमुख-हूंता सर्व-कला अभ्यसी, राजयोग्य "हूआ तेतल्हं शांतनराजा परोक्ष

१. P. सातभूउ. २. A. थया. ३. P. सारोखउ. ४. P. तुझनइ. K. तुम्हनइ. ५. P. हूंतउइ. ६. P. L. आविउ. ७. K. करणवार. ८. A. कन्तइ. ९. K. एह-वड'नाम दोघड. १०. P. वित्रांगज.११. A. बिए; M. P. वेवइ. १२. A. थवा.

हुउ । चित्रांगदनइं राज्य दीधउं । इम केतलइं कालिइं नलांगद वहरी साथिइं झुझ करतां चित्रांगद पडिउ । पछइ चित्रांगदनइ पाटि चित्रवीर्य बइसारिउ । तेहनइं अंबिका अंबालिका अंबा ए त्रिण्णि स्त्री सहित भोग भोगवतां, राज ॄपालतां, संतानविण चित्रवीर्थ पणि परोक्ष हूउ । तिसिइं गांगेयिईं चींतविड, 'भावइ तिम तां कुलनी वृद्धि की ची जोईइ. अनइ हूं तउ ब्रह्मचारी । भूमिका-रूप त्रिण्णि स्त्री तउ छइं, अनइ बीजनउ संभव जोईइं। तेह-भणी चित्रवीर्यनी वडी भार्या अंबिका, पारासुर ऋषिनउ पुत्र सत्यवतीनउ पहिलउ बेटउ द्वीपायन एहवइ नामिइ जे महा उग्र तपी मासक्षपणनइ •पारणइ सुकउ सेवाल पलास ों पत्र कंद-मूल भारती, बीजेंडं मासक्षपण करह, पारणइ सूकड सेवाल लिइं — एहवड जे ऋषीश्वर तेह समींपि अंविका मोकली । तिवारइं अंबिकाइं चींतविउं, 'ए तु माहरउ' जैठ' इसी लाज-लगइ वस्त्रनइ थानिक सूकर्डि सर्वांगि लगाडी, शुंगार करी. द्वीपायन-कन्हिल गई । तिसिइं द्वीपायन पणि रूपिई मोहिउ थकउ अंबिकानइ आदरई । पछइ द्वीपायनि कहिउं. 'ताहरइ⁸ पत्र होसिइ, पणि पांडरइ वर्णि होसिइ।' बीजइ दिनि पणि स्नाननइ अवसरि अंबालिका मोकली। द्वीपायन-समीपि तिणि लाज-लगी आंखिइं पाटा बांध्या । पछइ ऋषि कहइ. 'ताहरइ पुत्र होसिइ, पणि अंघ होसिइ। वली त्रीजइ दिनि अंबा मोकली। तिणि अंबाइ आपणड ठामि लाज-लगी दासी मोकली। इम त्रिहुंनइ पुत्र जनम्या, पांडु १ धृतराष्ट्र २ विदुर ३ एहवा नाम ह्या । तु जोउ एहवाइ ऋषि स्त्रीना संसर्ग⁸ लगइ शील-हूंता चुका । तु ए**हवा महा विषय** विषम छड । इहां द्वीपायननउं स्वरूप कहिलं ॥२

हिव विश्वामित्रनं स्वरूप कहीई -

[३. शीलभ्रंश-ऊपरि विश्वामित्र ऋषिनी कथा]

गाधिराजानउ पुत्र विश्वामित्र एहवइ नामि क्षत्रिय-वंश-मंडन । तिणि वशिष्ट ऋषिनी स्पर्धाइ अहंकार-लगइ तापसी दीक्षा लीधी । स्का सेवाल, नीरस आहार, मासि मासि पार-णउं करइ । सूर्य साम्ही दृष्टि, चिहुं पासे अग्निना च्यारि कुंड बल्डं—इम महा दुस्तर तण करइ । ते विश्वामित्रनइ तप-लगइ अनेक शक्ति हृई । एकदा प्रस्तावि वशिष्ट-विश्वामित्रनइ विरोधि, कोई एक अंतिज-समान पुरुष आवी वशिष्टनइ कहइ, 'मुझनइ याग करावउ ।' तिवारइ वशिष्ट कहइ, 'त् पतितनइ हूं याग नही करावउं ।' पल्टइ विश्वामित्र-कन्हिल जई प्रार्थना कीधी । तिवारइ विश्वामित्रिइ "वसिष्टनी स्पर्धा-लगइ कहिउं, 'तुझनइ हूं याग कराविसु ।' पल्टइ सर्व उपस्कर मेली सर्व ऋषि तेडचा, याग कराविउ, पणि वशिष्ट नाव्यउं । पल्टइ याग हूया-पल्टइ विश्वामित्रिइ कहिउ, 'तृ स्वयं देहि स्वर्गि जा ।' जेतलइ ते स्वर्गि गयउ, तेतलइ देवताए मिली इंद्र वीनविउ । इंद्रि कहिउं, 'तृ पाल्यउ जा ।' पल्टइ निर्मित्सउ हूंतउपाल्लउ आवी ऋषिनई कहिउ । ऋषिइं वली मोकलिउ, वली इंद्रि वज्र लेई कहिउ कि, '''जा, नहीतिर मस्तक-छेद किरसु ।' पल्टइ बीहतउ पाल्यउ आवी ऋषिनइ कहिउं । पल्टइ ऋषिनइ देवता-सिउ वयर ऊपनउ । तिहां-थिकी विश्वामित्रिइ नवी स्रष्टि करिया मांडी ।

१. P. माहरइ. २. P. हूंतल. ३. A. ताहरल. ४. P. संग, L. संगम, ५. P. विषय महा. ६. A. L. लेई. ७. विशिष्टनी. ८. L. विशिष्ट. ९. A. या, P. जाजे. १०. P. जाहि. ११. P. जाइ.

पछइ देवताए मिली विमासिउं जड, 'ए विश्वामित्र ब्रह्मानी सृष्टी ऊथापी आपणी सृष्टि थापइ'। तिवारई तेत्रीस कोडि देवताए मिली मेघ राखिउ, तु विश्वामित्रि कूआ नवा करी भूमिका-हुंतुं पाणी कादिउं। पछइ वली जउ गाई दूध देती राखी, तु भइंसि नवी की धी। मोणस पणि नवा करिवा मांडया, तु नालिकेर मस्तकनई ठामि कीघउं, कोहलूं हईआनइ ठामि कीवउं, दूचीया हाथनइ ठामि कीचा। इम करता देखी सर्व देव बीहना । पछइ पगे लागी ऋषि मनाविड । पछड् मनुष्य न कीघा । एवडी शक्ति ऊपनी । इसिइ सौधर्मेन्द्र अवधिज्ञाननइ बिल तपनुष्ठ महातम्य जाणो मन-माहि बोहनउ जु'ए ऋषि तपन्नि माहरी इंद्र-पदवी पणि लेसिइ, तु कीणइ उपाइ तप-हृंतउ पाडउं।' इम चींतवी मेनिका देव-कन्या तेडीनइ इंद्रिइ कहिउं जउ, 'विश्वा-मित्रनइ तप-हृंतउ पाडि । पछइ मेनिकाइ इन्द्रनउ वचन पडिवजी, जीणइ आश्रमि विश्वामित्र छइ तिह्यां आवी, वसंत-ऋतु अवतारी । अदार भार वनस्पती मउरी, कोइलि टहूका करइ, भमरा रुणञ्जूणाट करइ, आंबानी मांजरइ परिमल वाधिउ, मलयाचलनउ वाय वायउ-इत्यादि वसंत-ऋतु अवतारी, मेनिका देवांगनाइं ऋषि-आगिल नाटक मांडिउं। आपणउं मुलगउं रूप देखाडी सोल भेद शुंगारना करी कोकिल-स्विर पंचम-राग-गर्भित गीत गान, वेण-वंस-वादन, चृत्य हाव माव, कटाक्ष, रूप बाण-विक्षेप, अंगना स्पर्श तिम किमइ करवां मांडयां, जिम विश्वामित्र ध्यान-हूंतर्उ^२ चूकर, विवेक नाठउ, मन खलभलिउं । जेतलङ् नेत्र ऊघाड्यां, तेतलइ कंदर्पने बाणि वोंघी ऋषि जाजरउ कीघउ । काम-विद्वल हूंतउ मेनिका सेवी, घणउ काल विषय-छुब्ध रहिउ, सर्वे तप-ध्यान-हूंतउ चूक्उ। तु एहवाइ क्षत्रीय-जात तपि करी शोषितदेह द्वीपायन-विश्वामित्र-जमदमि-रेणुका-प्रमुख घणाइ पारासुर-विस्वादिक लौकिक ऋषि ते ही ध्यान-हुंता पड़िया | एह-भणी शील पालतां दोहिलउं | ए ऋषिना विस्तार महामारत-हूंता जाणिवा | ए कथा त्रीजी जाणिवी ।।३॥

४अन्यानता-लगइ जे शील-हूंता भ्रष्ट थया तेहनु स्यू कहीइ १ अनइ जे परमतस्व जाणइ, विषय विष-समान मानइ, तेहनइ शील पालतां दोहिलउं ——

जाणंति धम्मतत्तं कहंति भावंति भावणाओ य । भव-कायरा वि सीलं धरिउं पार्लति नो पवरा ॥९

ठयाख्या — जाणइ=बूझइ यथोक्त वीतरागनउ भाषित मार्ग । ते किसिउं १ एकलूं जाणी जि रहंइ, अनेराइ जीव आगलि धर्मनउं तत्व कहइ=उपदिसइ, अनइ बारइ भावना आवणइ चित्ति भावइ, अनइ भव=संसारना जे अनेक जरा-मरण-जन्मादिक भय छइ तेह-थका घणउं बीहइ, तिर्णि करी कायर छइ, एहवा-इ हूंता शीलबतनउ अंगीकार करी पाली न सकइ । एह अक्षरार्थ कहिउ ।

अथ वली आगम-माहि शील पालिवा-ऊपिर च्यारि मांगा कहिया ते कउण १ एक, जीब सीहनी पिरइं व्रत आदरइ, सीहनी पिरइं पालइ — ए मांगउ सर्वोत्तम १। सीहनी रीतिइं लिइं, सीबालनी रीतिइं पालइ—ए मध्यम भांगउ २ । सीयालनी पिरइं लेई, व्रत सीहनी पिरइं पालइ—ए ही मांगउ वारू ३ । सीयालनी पिरइं व्रत लिइं, सीयालनी पिरइं पालइ—ए अधम भांगउ ४। ए चतुमेंगी-माहि वि भांगा उत्तम, वि भांगा मध्यम जाणिवा ।।९

हिव**इ सघ**लां-इ **घर्म**कृत्य करतां दोहिलां, परं तेह-पाहि सील^{*} पालता घणउ दोहिलउ वली तेही जि कहइ —

दाण-तव-भावणाई-धम्माहितो सुदुकरं सीऌं । इय जाणिय भो भव्या अइजत्तं कुणह तत्थेव ।। १०

१. P. आंबा मडरिवा लागा. २. P. थकी. ३. A. गात्र. ४. अजाणपणा—लगइ ५. P. पाइंति.

च्याख्या :—दान-तप-भावनादिक-धर्म-पाहइ शीलव्रत पालतां दुकर=दोहिल्उं इसिउं जाणी, भो भविको, तेह जि शील ऊपरि अति यत्न=परम आदर करउ। इम गाहनउ अर्थ ॥ र०॥ शील ऊपरि जे एवडड आदर ते कहइ −

> तं दाणं सो अ तवो सो भावो तं वयं खलु पमाणं । जत्थ धरिज्जइ सीलं अंतर-रिउ-हियय-नव-कीलं ।। ११

च्याख्या :—दान तेह जि लेखइ गणीइ, तप तेह जि लेखइ गणीइ, भावना तेह वि प्रमाण, ब्रत पाल्य उं तेह प्रमाण, जिहां दानि तिप भावि ब्रति एहनइ विषइ जे निर्मेख उं शिक्ष घरीइ । तेह जि प्रमाण, पणि ते शील केहवउं छइ ? अंतरंगरिपु = वइरी रागद्देष-रूप, तेहनइ ही इन्ना खोला समान । इणि कारणि सर्व धर्म-माहि मुख्य शोल जि ।।

हिवइ शीलनउ महातम्य कहइ -

कलिकारओ वि जनमारओ वि सावज्ज-जोग-निरओ वि । जं नारओ वि सिज्झइ तं खलु सीलस्स माहण्पं ॥१२

व्याख्याः — कलिगारउ=संग्राम, इझनउ करावणहार, इणि कारणि घणा लोकनइ मरामणहार, एकनी स्त्री बीजा-पाइइ अपहरावइ, संयोग-वियोग करइ, यली सर्जकनउ करणहार, इणि कारणि सावद्ययोग करिवा कराविवा निरत=सावधान । अनेराइ जीव-हिंसादि व्रतनइ बिषइ शिथिख=दीलउ इ हूंतउ एड्वउ जे नारद सोधउ=मोक्ष-फलनउ भोका हूउ ते खलु=निश्चइ शीलनउ प्रमाण= महातम्य जाणिवउ ।।१२।।

ए नारदना केतलाएक अवदात कहीइं, पणि तथापि पहिलाउं नारदनी उत्पत्ति कहीइ -

[४. शील-ऊपरि नारदनो कथा]

चेदि देशि शुक्तिमती नामि पुरी । तिहां अभिचंद्र राजा राज्य करह । खीरकदंब उपाध्याय-कन्हिल राजानउ पुत्र वसु, उपाध्यायनउ पुत्र पर्वतक, त्रीजउ नारद ए त्रिण्णड वेद मणइं । अन्यदा आकाशमार्गि चारण श्रमण महात्मा जाता थका वात करिवा लागा जु, 'ए उपाध्यायनइ विशिष्य नरकगामी, एक स्वर्गगामी ।' ए वात सांमली उपाध्याय खेद घरतउ, पछइ परीक्षा-मणी कणकना कृकडा करी प्रचळन्न दीधा, किहुउं 'जाउ, जिहां कोई न देखह तिहां जई हणिष्यो ।' पछइ त्रिण्णइ शिष्य नीकल्या । वसु नइ पर्वतक किहां ईक सूनइ घरि जई ते कृकडा हणी, पाछा आव्या, अनइ नारद अणहणिइ पाछउ आविउ । गुरुनइ प्रणाम करी कहइ, 'इं तुम्हारउ आदेस पामी नीकलिउ, पणि ते प्रदेश नही, ते स्थानक नही, जिहां कोई न देखह। सघले वीतराग तउ देखह '। पछइ उपाध्याय नारद योग्य जाणी संपूर्ण विद्या भणाविउ । पर्वतक नइ वसु नरकगामी जाणी वैराग्यइ दीक्षा लेई आपणउं काज सारिउ ।

पर्वतक बापनइ थानिक नेसालीआ भणावइ । नारद आपणइ स्थानिक गयं । अभिचंद्र-राजाइ दीक्षा लीघी, तेहनउ पुत्र वसु राजि बहठउ सुखि प्रजा पालइ । एतल्ड अवसरि मृगना आहेडा-भणी भील एक नीकलिउ । मृग देखी आकर्णात बाण मूकिउं । फटिक-सिलाइ ते बाण खेलउं । पछइ तीणइ फटिक-शिला जाणी प्रच्छन्न राजा आगलि आवी वात कही । राजाइ ते शिला फटिकनी अणावी शिला-सिहासन घडाविउं, ए स्त्रधार हणिउ, जिम वात बाहरि न फूटइ। पछइ तिणि सिहासनि राजा

१. L पाहंति २. P. 'माहरउ आत्मा देखइ आकाशगामी जीव देखइ' एटड्रं वधारे, ३. L. वैराग्य तु.

बहुसुइ। आसन-द्भुकडउ कोई आविवा न लहइ। पछ्ड लोक-माहि एहवी महा महिमा वाधी जु सत्यवचन-लगी वसुराजानउं सिंहासन आकाशि रहइ।

अन्यदा नारद गुरुना गौरव-भणी गुरुन पुत्र पर्वतक तेहनइ मिलवा-भणी आविड । तिसिइं 'नेसालीआनइं पर्वतक भणावइ छइ । तिहां इम कहिउं जउ, ''अजिर्यष्टच्यं'' इति ऋग्वेदनउं पद नारद देखता भणाविया लागउ जु. 'अज कहता पर्यु, तीणे याग करिवड' । एहवउं पर्वतक वखा-फ्तउ देखी नारदि आपणा कान ढांकी कहिउं, 'गुरे तु अज ति-वार्षिक = तिहुं वरसना त्रीहि कह्या हूंता' । तिसिइं पर्वतक कहइ, 'अज छाग कह्या क्रिंता, जु न मानइ तु वसु-संका साखीउ सहाध्याई कीजइ । वली एहवउं पण कीजइ जे कृडउं बोलइ तेहनी जीभ छेदीइ'। पछइ नारद ते वचन प्रमाण करी देव पूजवा निमित्तइ घरि आविड । तेतलइ माता-सहित पर्वतक एकांति वसुराजा-कन्हिल आवी वात कही जउ नारद संघाति ए पण बोलिउं छइ । वसु कहइ, 'नारदइ कहिउं ते सावउं। गुरे अज तिहुं वरसना त्रीहि जि कह्या हूंता। तई अयुक्तउं कांइ कहिउं?' पछइ उपाध्यायनी भार्या वसुराजानइ कहिवा लागी जु, 'पुत्र-भिक्या दिइ तु पर्वतकनउं वचन साचउं किरी।' पछइ दाक्षिण्य-लगइ वचन पडिविजिउं। प्रभाति नारद-पर्वतक आव्या। सभामाहि वसुराजा-प्रत्यक्ष आपणी आपणी वात कही। तिहां दाक्षिण्य-लगइ वसुराजाई असत्य वचन बोलिउं। देवताइ तेतलई सिंहासन-हूंतु वसुराजा नांखी मारिउ, नारदनइ जयजयकार कीघउ।

पछड़ ते नारद एकदा प्रस्तावि द्वारवती नगरीइ गयउ । तिणि द्वारवतीइ कृष्ण वासुदेव राज्य करइ । तेहनइ सत्यभामा पट्टराणी छइ । तेह साथि विषय-सुख अनुभवतां, एक दिनि नारद-ऋषि नारायण-कन्हिं आविड । नारायण साम्हउ ऊठिउ, पंचांग प्रणाम करी, आसिन बहसारी,धन-कनकादिके करी संतोषिउ । क्षण एक रही नारद-ऋषि नारायणना अंतः पुर-माहि आविउ । तिणि प्रस्तावि सत्यभामा शृंगार करी, आपण में मुख आरीसा-माहि जोती हूंती, सखी-साथि वात करिवा लागी । सत्यभामाइ ते नारद आविउ जाणिउ नही, भिक्त बहुमान न दीघउं । एहवइ प्रस्तावि ऋषि मन-माहि चींतवइ, 'जोउ, मुझनइ जे देवता छई ते ही मानई, पछइ मनुष्यनउ स्यउं कहीइ १ पणि ए सत्यभामा नारायणनइ मानिइ, धन-योवननइ गर्वि मुझ साम्हउं इ न जोइ । तु किमही एहनउ गर्व ऊतारिउ जोईइ । ए स्त्रीनउ गर्व तु भाजइ, जउ बीजी सउिक हुइ ।'

तु इम चींतवी कौतक-प्रिय नारद तिहां-हूंतउ आकाशि ऊपडयउ , कुंडिनपुर नगरि आविउ। तिहां रुक्मी राजा राज्य करइ। तेहनी बिहिन रुक्मिणी एहवइ नामि महा रूपवंति यौवन-भरि छइ। तेह समीपि नारद आविउ। रुक्मिणीइ आसन-बहुमाने करी ते ऋषि गाढउ संतोषिउ। पछइ तिणि आसीस दीधी, 'हे बच्छि! त्रिखंड-भोक्ता नारायणनी बल्लभा होज्ये'। तिसिइ रुक्मिणीइ पूछिउं, 'ऋषिराज! ते नारायण किहां छइ! कउण छइ! किसिउ छइ?' इम पूछिइ हूंतइ नारद-रिषि नारायणनउ रूप सौभाग्य गुण तिम किमइ वर्णन्या, जिम रुक्मिणी नारायण-ऊपरि सानुराग हूई। पछइ ऋषि १. P लेसालिआ. २. P. बोकडा. ३. P. पर्वतकनी माता ४ L. सिंहासिन थकउ प. P. L कन्हलि. ६. P. उडिउ, L. ऊडिउ.

कहिउं, 'पुत्रि! चिंता म कर, तूहनइ भर्तार नारायण होसिइं।' इम आश्वासना देई, चित्रगर-पाह्इं रुक्मिणीनउं रूप लिखावी, नारद-ऋषि द्वारकाइं आवी, नारायणनइ मिलिउ।

नारायणि बहुमान देई ऋषि पूछिउं, 'कां पृथ्वी-माहि कउतिग, आश्चर्य-वात कां दीठी-सांभली ?' तिसिइं ऋषिइं प्रस्ताव जाणी ते चित्रामनउ पुट दीधउं ! नारायण ते देखी किह्वा लागउ, 'ए' किसिउं देवांगनानउ रूप, किंवा मनुष्यनउ रूप ?' इम पूछिइ, दिनमणीनी बात सर्व कही । वली कांह्वा लागउ, 'ताहरू जन्म सफल तहीइं जि जहाइं, ते दिनमणी परणेसि । जां ए स्त्री-रत्न ताहरइ घरि नहीं, तो ताहरउ जन्म फोकट ।' इत्यादि वचन सांभली सांमली, चित्रामनउं रूप जोई जोई, सानुरागपणइ नारायण नारद-प्रति इतिउं कहइ, 'अहो ऋषीश्वर! तिम करउ, जिम दिनमणी माहरइ घरि आवइ । जिम कल्पद्रम सेविउ नि:फल न हुइ, तिम तुम्ह आगलि प्रार्थना कीधी नि:कल न हुइ' । पछइ नारिद कहिउं, 'तिम किजिसिइं, जिम तुम्हारउ मनोरथ सफल थासिइं । पणि एक वार एकमी-राजा-समीपि दूत मोकला कन्या मगावीइ' । इम कही नारद रुम्मोराज-कन्हिल गयउ ।

पछइ नारायणि दूत मोकली रुक्मी-राजानइ कहाविउं जु, 'ताहरी बहिन रिक्मणी मुझनइ आपि।' दूति जई ए बात कही जेतलड, तेतलड रुक्मी-राजा रीसाणड, कहिवा लागड, 'हूं गोवालाना पुत्रनइ आपणी बहिन नहीं आपउं। महं शिद्यपाल-राजानइ बहिन दीधी छह।' इसिउं वचन दूत-आगलि कही दूत पाछड मोकलिड।

तेतलइ इकिमणीनी घाविमाताइं इकिमणी-आगलि जई कहिउं ज़, 'आज तूंहनइ शिशुपालनइ दीघी'। पछ्ठ हिमणी 'असमाधि करवा लागी। तिवारइं घाविमाताइं कहिउं, 'अइमुत्तइ केवलीइ इम कहिउं हूंतउं जु "'हिक्मणी नारायणनइ घरि अप्रमहिषी हुस्यइ।'' ए वात इम मह सांमली हूंती, अनइ आज तु हक्मी-राजाइ तूं शिशुपालनइ दीघी। अनइ नारायणि पणि जणे मोकलिड हूंतु, तेहनउ बोल न मानिउ। हिव स्यू चालइ ? अथवा वली केवलीना बोल अन्यथा महुइ'। पछइ हिक्मणी कहइ, 'मइ पणि इणि मिन प्रतिशा कीघा, ज मर्तार, त नारायण नहीतरि नहीं'।

एहवउ निश्चय जाणी, धाबिमाताई शिशुपालनउ लग्न-दिवस आवतउ जाणो, छानउ एक दूत नारायण-समीपि मोकली, वीवाहनउ दिवस जणाविउ जु, 'तुझे आठिममइ दिनि सही आविज्यो । गुप्तपणइ हूं पणि नागदेवतानइ भुवनि नाग पूजिवा-भणी मध्याह्न आवंड छउं'। ए संकेत-ऊपरि जेतलइ नारायण बलदेव-सिहत रिथ बइसी प्रछन्न आविउ, तेतलइ शिशुपाल-राजाइ विवाहनी सर्व सामग्री करी कुंडिनपुरनइ उद्यानि विन आविउ, रुक्मी-राजा सामुहउ आवी आवासि ऊतारिउ । तेतलइ नारद कल्हिप्रय आवी नारायणनइ कहइ', 'ताहरउ ए प्रस्ताव छइ।' तिसइं एकिमणी धाविमाता-सिहत संकेत-स्थानिक आवी । तेहनउं रूप देखी नारायण चींतवइ, 'जेहवी नारिद वर्णवी हूंती, तेह पाहइं अधिक रूप एहनउं दीसइ छइ।' पछइ तिहां जि नारायणि गांधर्व-विवाहि पाणिग्रहण करी रुक्मणीनइ कहिवा लग्नउं', 'हे

१. L. पाहंति २. P. मां आना बदले आ पाठ: 'माहरउ जन्म तउ हो सफल जउ ए स्त्री माहरइ आवइ। तिसइ ऋषि कहइ...' ३. A जे. ४. P. सखिइं. ५. L. विलाप. ६. A. जे. ७. P. दूत. ८. A. किहउ, P. रुक्मणो धाविमातानई कहिउ; L किह. ९. L. पाहि; A. पाहिते. १०. P. किहउ.

भद्रि ! ताहरइ कीषद दूर पंथ अवगाही रागवश-उगइ हूं इहां आविउ, तु हिवई तुम्हे विलंब म करउ, ईणइ रथि बइसउ'। पछइ रुक्मिणी रथि बहठी। रथ पवनवेगि चालिउ।

षाविमाताइं आपणा माथा-हूंतउ बोल ऊतारिवा-भणी मोटइ सादइ पोकार किथी, 'अहो होको ! षाउ षाउ , जोउ जोउ, कोई विद्याधर अथवा मनुष्य किमणीनइ लेई जाइ छइ ।' तेतल नारायणि पंचयत्र नाम शंख पूरी, आपणपउं जणावी, रथ खेडाविउ । तिसिइ नारद किलियि शिशुपाल समीपि आवी कि होवा लागउ ज 3, 'ताहरी वरी नारायण लेई जाइ, तु ताहरे जीवतव्य सिइं काजि । इसिइं कम्मी-राजानइ पणि ग्रुद्धि हुई । पछइ बेवइ क्क्मी अनइ शिशुपाल-राजा अमित सैन्य मेली वाहरइ चड्या । पछइ वयरीना समूह आवता देखी किमणी कि हिवा लागी, 'हे प्राणनाय! तुम्हे तु बि जणा एकाकी, ए तु चतुरंग कटक मेली केडइ आव्या । हिवइ माहरइ की धइ तुम्हनइ विणास ऊर्पाजेसिइ । तु इम जाणउं, कुलनी क्षय-कारिणी हूं आज हुई'। तिसिइं किमणी कायर देखी नारायण आपणउं वल देखाडिवा-भणी महांत एकं बुक्ष एकणि बाणि करी छेदिउ । पछइ वली हाथि मुद्रिकारत्न हूंतउ ही राजिहत, ते कपूरनी परिइं चूर्ण करी कहिवा लागउ, 'हे प्रिये! ते बापडा मुद्र आगि किम ऊमा रहि-स्यइ ?'।

इसिइं रुक्मी-शिशुपाल दूकडा आव्या देखी बिलमद कटक-सामह मूंकिउ, आपणपइ नारायण रिक्मणीनइ रिथ बहसारी चालिवा लागड । तेतल रिक्मणीइं किहेंडं, 'माहरा माई-नइ जीवदान' देख्यो'। पछइ बिलमद नारायण-रिक्मणीनइ विसर्जी मंथाणानी परिइं वयरीनुं दल मिथना लागड। हिल करी, मुसलि करो हणतां, अनेक सुमट पड्या। तिसिइं शिशुपाल सामह अठिउ। रणत्र वाजइ छइ। इसिइं बिलमद्रइ मुसल-सिउं शिशुपाल तिम किमइ ताडिउ, जिम नासी गयउ। इसिइ नारद किल-कुत्हली आकाशि नाचिवा लागड, हाथि ताली वातर्ज कहइ, 'अरे शिशुपाल! कांइ नासइ ?' तिसिइं रिक्मीराजा पणि रण-भूमिकानइ विषइ अति रीसाणड हूंत बिलमद-साथइ श्रुझ करिवा लागड। अनेक आयुध मूंकइ। तिसिइं बिलमदि तीक्ष्ण श्रुरम-वाणि करी किक्मीनां हथीआर सर्व काप्यां। माथइ दाढीइ नावीनी परिइं बाणि करी मुंडन कीघडं। पछइं बिलमद रिक्मीनइ कहिवा लागड, 'मइं तूं बहूना माई-मणी जीवतड मूकिउ छइ। भीलारीनी परिइं पेट मिर, फोकट म मिर।' पछइ असमर्थपणइ नीचउं माथउं घाती रहिउ। तिहां बिलमदि कीतिस्तंम रोपी, जैन-पदवी पामी, द्वारावतीइ पाछउ आविउ। नारायणनइ ते सर्व वृत्तांत कहिउ।

पछइ नारायण रुक्मिणीनइ इसिउं कहइ, 'ए देवता-कृत आवास, ए देवतानी नीपाई हारावती नगरी, ए क्रीडावन । इहां तू मननी इच्छाइ सुखिइ रहि ।' इसिइ प्रस्ताव लही रुक्मिणी नारायण-प्रति कहइ, 'स्वामिन ! जिम सेवक कोई झाली आणीइ, तिम हूं आणी छउं । न आणीइ, माहरउ निर्वाह किम होसिइं ? काई सउकिनां वचन हासा ' सहियां जोईसिइ'। तिसिइं नारायण हसी करी रुक्मिणी-प्रति कहइ, 'सघलीइ सउकिनइ धुरि हूं तुझनइ करिसु'। ईणि वचनि इक्मिणी संतोषाणी । नारायण केतला-एक दिन तेह जि वन-माहि रहिउ । पछइ नारायणि ते वन-माहि वसंतसमइ महालक्ष्मीनइ देहरइ आगिली प्रतिमा ऊडाडीनइ तेहनइ ठामि सालंकार साम-

१. L. थु. २. P. पुकार, L. पुकार कीधी. ३. P धावउ धावउ ४ L किशिपाल (ए प्रमाणे अन्यत्र पण) ५. P. किसइ ६. L. थई. ७. L. जीवतदान. ८. P. बजावतड; L देतु. ९ A. ऋण. P. रुण; L. रिण १०. L. रुक्मीया (अन्यत्र पण) ११. P. सांसहाा.

रण करी किमणी बहसारी, अनइ नारायण नगरि-माहि आविड । तिसिइं सत्यभामाइं पूछेडं, 'स्वा-मिन्! मायावी! किह-न, ते कडण कन्या तइ आणी छइ?' तिसिइ माधन किहवा छागड, 'मइ वन-माहि लक्ष्मीनइ सुनिन ते मूको छइ।' पछइ सत्यभामा सड केइ परिवरी तिहां जोना आवो, चड-पखेर देहरडं जोई पणि देखह नहीं। पछइ लक्ष्मीनि वरांसइ ते किमणीने पगे छागी किहिंगा लागी, 'हे मात! नारायणि मुझ ऊपरि सडिक आणी छइ, पणि तिम करि, जिम सडिकनड दुख मुझनइ न हुइ। माहरा मनना मनोरथ पूरि।' इम कहती पगे लागी। देहरा-माहि चड-पखेर जोना छागी, तुहइ न देखई। पछई पाछी आवी नारायण-प्रति कहइ, 'हे धूर्तिशरोमणि! तई प्रिया किहां मूकी छइ?' नारायण कहइ, 'चािल देखाडडं'। तिसिइं लक्ष्मीनइ ठािम बहठी किमणी देखाडी। तेतल्ड सत्यमामा रीसाणी नारायण-प्रति कहइ, 'ए पाखंड तई जि सीखवी'। जोइन, हूं एवडी वडी इ तेहनइ पगे पाडी।' तिसिइ नारायण हसीनइ किहा छागड, 'बहिनने पगे पडतां स्थउ दोष १ एह जि तुझनइं संतुष्ट हूंती मनोवांछित फल पूरिसिइ।' इणि दचनि रीसाणी सत्यभामा नीचडं माथउं घाती रही। तिसिइं नारद आवी कहइ, 'तहींइं तई माहरी अवझा कीधी, तु जोइन्न, सडिकनडं संकट तुझनइं हुउ।' पछइ नारायणि सघळी सडिक देखतां पटराणी हन्मणी थापी।

एहवड नारद संमेडानड लगाडणहार, जीणइं दूबदी परद्वीपि मोकली, अनइ नारायणि जिणि रीतिइ वाली इत्यादि केतला नारदना संबंध कहींइ ? एहवड जे नारद मोक्षि गयड, ते केवलंड शील जि नडं महातम्य जि जाणिवंड । इति सील-ऊबरि नारद-ऋषिनी कथा ।।४।।

हिवइ जे तपस्वी शील-रहित तेहनउं कारण कहइ — दाया वि तवस्सी वि हु विसुद्ध-भावो वि सील-परिभट्टो । न लहइ सिवसुहमसमं ता पालह दुक्करं सीलं।। १३

च्याख्या:—दातार सदाइ दान दिइ छइ, तपस्वी सदाइ तप करइ छइ, निर्मल भावना-सहितइ, पणि शीलि करी रहित, शोलभ्रष्ट प्राणी असम=अक्षामःन्य शिवसुख न पामइ। तेह-भणी दुक्कर शील, अहो लोको! तुम्हे पालउ।। १३॥

अनेराइ विसमां काज करतां घणाइ दीसइ, पणि सील पालतां विरला जि केई दीसइ — ए संबंध बिहु° गाहे करी कहइ —

दीसंति अणेगे उग्ग-खग्ग-विसमंगणे महासमरे । भग्गे वि सयल-सिन्ने मंभीसा-दाइणो धीरा ॥१४ दीसंति सोह-पोरिस-निम्महणा दल्लिय-मयगल-गणा य । मयण-सर-पसर-समण् सपोरिसा किंतु जइ किंपि ॥१५ (युग्मं)

व्याख्या: अनेक=घणाइ उम्र भयना (?) कारक एहवउं उम्र खड्ग, तिणि करी विषम संग्रामांगण=भूमिका जिहां छइ, इस्या महा रोद्र संग्राम-माहि समस्त कटक भाजतां हूंता, 'अहो सुभटो ! म नासउ, म बीहउ' एहवी मंभीस =धीरपणउं, तेहना देणहार, इस्या धीर-पुरुष घणाइ पृथ्वी-माहि देखीइ ॥१४॥

१. L. रुक्मणीनइ. २. L. पखे. ३. A. ठामि छइ बइठी छइ. P. रुक्मणी बइठी. L. 'बइठी' नथी. ४. P. जोईनइं. ५. P. L. भयनइ. ६. A. P. L. बंभीस.

जे मदोन्मत्त हस्तीना गण=समूह जेणइ निर्देल्या छई, एहवा जे सिंह, तेहना पराक्रम, तेहनइ मथणहार, एहवा पुरुष घणाइ दीसई, पणि मदन=कंदर्प, तेहना जे शर=बाण, तेहनउ प्रसर=प्रस्ताव हुइ जि वारइ, मदन=कंदर्पना वाण विछूटई, तीणो वेलाइ जे पौरषपणउं घरई, शोज-सन्नाह पहिरी अगंजित अगजोता ऊमा रहई, एहवा पुरुष केई विरलाइ जि छई, श्रीशूलिमद सरीखा ॥१५॥

वली जे पुरुष संसार-माहि महा सुभट कहवराई, ते पणि रागना वाह्या स्त्रीनउं दासपणउं करई —

जे नामंति न सोसं कस्स वि भुत्रणे वि ते महा-सुहडा । रागंधा गलिय-बला रुलंति महिलाण चरण-तले ॥१६

ठयाख्याः — त्रैहोनय-माहि जे किहिनइ आपणउं मस्तक नमावइ नहीं, ते ही महा सुभट रावणादिक रागि करी अंघ, गलित=गलिउं जेहनउं बले छइ, ते हा कंदर्पना वत लगइ स्त्री, ते तेहना पग-तलइ रुलड्=लाटोकगणां करइ, वही दीणगणउं बोलइ ॥१६॥

वली विशेष कहइ -

सक्को वि नेय खंडइ माहप्प-मडप्फरं जए जेसि। ते वि नरा नारीहिं कराविया नियय-दासत्तं ।।१७

व्याख्या:—जेह पुरुषन उमहातम्य मङप्फर=स्फूर्ति-लगी जे गर्व, जग=संसार-माहि शक= इंद्र इ खांडी न सकइ, तु बीजा मनुष्य देवनी केही वात ?—एहवाइ सुभट नारी=स्त्रीए आपण उं दासपण उं^४ कराव्या ॥१७॥

हिव ते-ऊपरि भुवनानंदाराणी-रिपुमर्दनराजानु दृष्टांत कहीइ — [५. स्त्रीना दासपणा-ऊपरि रिपुमर्दन-राजानु दृष्टांत]

ईणइ भरतक्षेत्रि सुखावासि नगरि रिपुमईन राजा राज्य करइ। तेहनउ प्रधान बुद्धिसागर। तेहनी प्रिया रितिसुंदरी जाणिवी। हिव तेहना घर-हूंतउ पूर्व-दिसिइ देवताना विमान-सरीखउ श्रीआदिनाथनउ प्रासाद। तेहनइ द्वारि सहकार वृक्ष छइ। तिहां सूडा-सूडीनउ युग्म एक वसइ। अन्यदा सूडीइ पुत्र जायउ। तिणि जन्मि सूडउ-सूडो महांत आनंद पामतां आपणउ जन्म राजाना जन्म-पाहइं अधिक मानवा लागा। अनेरइ दिविस सूडउ अनेरी सूडी-संघाति आसक हूउ जाणी, ते पुत्रनी माता सूडी सूडानइ मालइ आविवा न दिइ, इसिउं कहइ, 'जिहां ताहरि विचारि आवइ, तिहां तू जाइ'। पछइ सूडउ कहइ, 'माहरउ पुत्र आपि, जिम हूं जाउं।' तिवारइ सूडी कहइ, 'एक आगइ अन्याय करइ, वठी बेटउ पणि मागइ ?'। इम झगडउ करतां घणा दिन गया। पछइ कीर-युग्मि राजानी सभाइ जई कहिउं जु, 'स्वामिन्! अम्हारउ विवाद' मांजउ।' हिसउ कही आपणउ आपणउ चत्तांत कहिउ। तिवारइं जे प्रधान छइ, तीणे कहिउं जउ, 'स्वामी! बेटी मानी, बेटउ बापनउ।' एहवउ न्याय करी सूडानइ पुत्र अपाविउ। सूडी निरास रोती हूंती कहिवा लागी, 'राजन! तइ तउ ए विवाद इम मांजिउ, पणि रूडउं न कीघउं। हिव ए न्याय तुम्हे वहीइ लिखावउ, जउ, आज पछी बेटउ बापनउ, अनइ बेटी मानी'। पछइ राजाइ वहीइ ए न्याय लिखाविउ।

१. P. बल पराक्रम. २. L. महिला स्त्रीना. ३. P. लोटीगणा. ४. P. दासपणुं किंकरपण्डं कराव्यडं. ५, A. L. पाइ. ६. P. झगडड

तिवार पछी सुडी आंबइ जई बइटी । तेतल आंबा-तल आंबा-तल आंबानी दीटउ । तिणि सुडीइ ते ऋषि वांदी वैराग्य-लगी आपणउं आऊखउं पूछिउं । तिसिइं ते श्रुतज्ञानी कहइ, 'तृं मनुष्य-अायु बांधी, आज हूंतइ त्रीजइ दिनि तृं मरीनइ महुतउ बुद्धिसागर, तेहनी भार्या रतिसुन्दरी, तेहनी कूखइ अवतार लही पुत्रीपणउं पामेसि । पछइ क्रमिइं तृं राजानइ घरि वछमा थाएसि'। इम वचन सांमली, महातमानउ कहिउ बृतांत देहरानी भीतिइं सर्व लिखिउं।

पछइ आराधनापूर्वक महातमा-समीपि अणसण लेई, विधिइ पाली, तिहांथी चवो रतिसुंदरीनी कृष्विइं अवतार लीध्ड । तिहां भुवनानंदा ए नाम दीध्र । पिताइ पुत्रीनइ जिम्म महा महोत्सव कीध्र । पुत्री वाधिवा लागी । मउडइ मउडइ सर्व कला अभ्यसी । पूर्विला पुण्यनइ प्रमाणि पितानइ घरि रहिती । अनेरइ दिवसि बालिका-माहि रमती श्रीआदिनाथनइ देहरइ गई । तिहां परमेसरनइ प्रणाम करी देहरउं जोवा लागी । तिसिइं मीतिइं जे सूडीनइ भवि अक्षर लिख्या छइं, ते अक्षर देखी, कन्याइं जाती-स्मरण ज्ञान पामी, पूर्विलाउ भवंतर अनइ राजानउ न्याय, पुत्रनउ वियोग सर्व दीठउं। पछइ चींतिवा लागी, 'एह जि आदिनाथनइ प्रसादि मइं मानुषउ जन्म लाध्यउ, तु एह जि वीतरागनी पूजा करउं।' पछइ परमेश्वरनी पूजा करिवा लागी।

तिसिइं बुद्धिसागरि मुहुतइ महा जात्य तुरंगम एक वेचातउ लीघउ । ते अश्वनी अनेक रक्षां करइं । एकदा राजाइ वात सांभली जु, महुतानइं घरि जातीलउ घोडउ छइ। पछइ राजाइं घणी वछेरी जातिग्रुद्ध मोकली। ते तुरंगम-इतु घणा अश्विकसोरा हूया बहुमूल्य। पछइ एक दिवसि राजाइं ते सर्व वछेरा माग्या। जण लेवा घरि आव्या। तेतलइ ते महुतानी पुत्री राउला जणानईं कहइ, 'हुं तुम्हनइ ए अश्व लेवा नहीं दिउं, कांइ!, जेहनउं बीज, तेहनी वस्तु। ए घोडउ तु माहरा पितानउ। ते-हूंता ए अश्व ऊपना।' इणि वचने तलारि जई राजा वीनविड, 'स्वामिन्! मुहुतानी पुत्री लेया न दिइ। इम कहइ, "जेहनउं बीज, तेह जि घणी।" हिवइ स्वामी! जिम तुम्हनइ रुचइ, तिम करउं। पछइ ए बात सुवनानंदाइ आपणु पिता, जे बुद्धिसागर, तेहनइ पूर्विला भवनउं स्थल्प सघलउं कहिउं। इम करतां वली राजाइ प्रधान मोकली घोडा मगाव्या। तिवारइ सुवनानंदाइ कहिउं, 'जाउ, जोउ राजानी वहीइ स्युं लिखिउं छइं? वेटा बापना इम जु लिखिउं हुइ तु घोडा म लेख्यो, नहों तु आपणा घोडा लिउ।' पछइ प्रधाने जई राजा-आगलि बात कही। राजा वही जोआवी। तिमइं जि अक्षर नीकल्या। पछई राजा विस्मयापन्न-चित्त हूंतउ कहिवा लागड, 'ए कांई एक बालपंडिता छइ। हिवइ घोडा म मागिसिउ।'

इम लगार-एक मन-माहि रीस घरी, केतला-एक दिन अन्तरालि घाती, पछइ राजाइ मुहुता-समीपि पुत्री मागी। पाणिग्रहण करीनइ भुवनानंदानइ कहिंड, 'जु तू पंडिता छइ, तु माहरइ घरि तां मा बसि, जां ताहरइ सर्व लक्षण पुत्र हूड न हुइ।' तिसिइ भुवनानंदा हसीनइ कहिंवा लागी, 'हे पाणनाथ! पुत्रना जन्म हूया पछी हूं ताहरइ घरि आविसु. इम्हिइ नहीं आवंड। पणि एक वात सांभलि, हूं तु स्त्री, जु एकवार तुझ पाहइं आपणा पग घोआवंड , वली आपणा पगनी वाणही तुझ पाहिइ वहावंड । इसी प्रतिशा करी बापनइ घरि आवी।

[े] १ ${f P}$, यस्त् २ ${f A}$, कीजइ. ३. ${f P}$. नीपना. ४ ${f P}$. नफुरानइं. ५. ${f P}$. तलांसांउ,

एकांति पिता तेडी सर्व वात कही । तिवारइ पिता कहिवा लागउ, 'हे वित्स! ए प्रतिशा दोहिली कांई कीघो ?' पुत्रो कहिवा लागी, 'आम तात! बुद्धिवंतनई प्रतिशा सी दोहिली छइ ?', तिवारइ पिता कहइ, 'वित्स! देवताना बल-पालइ कांई न चालइ' । तिवारइ भुवनानंदा कहइ, 'तात! कमैना वश-लगी बुद्धिना संभव हुइ । पिण सांभ्रलि, तात! राजाना घर-द्वकडउ एक श्रीआदिनाथनउ प्रासाद मोकलउ' करावि । तिहां त्रिकाल नाटक मंडावि, तिहां पात्रनां घर करावि, तेह-माहि माहरउ पिण घर करावि ।' पछइ ए सर्व मुहतइ कराविउं ।

हिवइ तिहां अर्धरात्रिनइ समइ भुवनानंदा नाटक करइ । आपणउं नाम लीलावती कहावइ । इम करतां एकदा राजा घवलगृह-माहि सूतउ हूंतउ ते लीलावतीनां गीत सांमलिवा लागउ । पछइ सामान्य राजपुत्रनउ वेस करी रात्रिनइ समइ जिहां लीलावती नाचइ छइ, गीत गाइ छइ, तिहां पश्चिम द्वारि आवी राजा जोवा लागउ । तेतलइ लीलावतीई नेत्र-कटाक्ष-बाणे तिम किमइ राजा वींधिउ, जिम प्रति दिवस तिहां राजा रात्रिई आवइ, तिहां रहइ । पछइ राजा जे जे चेष्टा करइ, जे जे वात जे जे बोल कहइ, ते ते सर्व पिता-आगिल लीलावती कहइ, अनइ पिता पणि सर्व विहियाविट लिखइ । इम करतां घणा दिन गया ।

इम एकदा अर्धरात्रिई लीलावती सखीए परिवरी सुखासनि बंइसी श्रीआदिनाथनइ भुवनि आवइ। राजा पणि आन्यउ^ड। ^४तिसइ लीलावती**इं राजा आविउ जाणी नाटक विसर्जी** लीलावती आपणा पगनी वाणही जाणी करी वीसारी, आपणपइ सुखासनि बइसी पाछी वली। तिसिइं राजाइं चींतिवर्डं जड, 'ईणी बापडीइ वरांसइ रस्न खचित वाणही वीसारी, तु रखे कोई चोर लेई जाइ। इम चींतवी राजा आपणपइ वाणही लेई, माथइ चडावी, केडइ जावा लागउ । तिसिइ लीलावती घरि आवी सखीनइ कहइ, 'आज महं वाणही देहरा-माहि बीसारी ।' तिसिइं राजा कहइ, 'मइं आणो छइ, तुम्हे लिउ ।' पछइ लीलावतीइ बाणही लेई करी राजानइ कहिउं, 'आज माहरइ पग 'दाजई छइं । तुं सखीनइ जगाडि जिम पग तलांसइ"।' तिसिइं राजा कहइ, 'कांइ सखी जगाडीइ ? हं ताहरा पग तलांसउं"।' इम बडी वार रैंपग तलांसतां लीलावतीनइ निदा आवी । तिसिइ सउणामाहि संपूर्ण चंद्रमा मुख-माहि पइसतु दीठउ । पछइ लोलावती जागी राजानइ घणउ श्रम देखी इसिउं कहिवा लागी, 'हे प्राणनाथ! हिवडां मइ सउणा-माहि चंद्रमा मुखि प्रवेस करतउ दीठउ ।' राजा कहड, 'हे प्रिये ! सर्वोत्तम पुत्र ताहरइ होसिइ ।' इसिइ प्रभातनां वाजित्र वाजिवा लागा । राजा ऊठी आपणइ घरि आबिउ । लीलावती पणि आपणां धर्मकृत्य करी, बाप-समीपि आवी, रात्रिनी सर्व वात कही । पछइ घर-माहि सुखिइं गर्भ पालइ छइ । बारणां देई मूक्यां । वली बीजइ दिनि राजा तिहां आविउ। पाडोसणि पूछी, 'लीलावती किहां गई ?' ते कहइ, 'हूं न जाणउं'। पछइ राजा अति स्नेह-लगइ रात्रि तां मोटइ किंट गमाडी । पछइ प्रभाति सहता-समीप पुछइ, 'हे मैत्रीश्वर! तुम्हारइ देहरइ लीलावती एहवइ नामि विलासिनी जे मूलगी हूंती ते

१. P. L. मोटउ. २. A. पात्र नृत्य. ३. AL पणि सदाई आवह ४. A. इम अन्यदा प्रस्ताचि, L.अन्यदा प्रस्ताबि. ५. P. पावडी. ६. P झलझलाई ळंड ७ A. जगाबि., ८. A. पगतला उल्हांसइ ९. A. पगतला उल्हांसिसु. १०. A. पगतला उल्हांसह

किहाँ गई ?' तिवारइं प्रधान कहिवा लागउ, 'स्वामी! तेहना पाङ्कआ आचार देखी मह काढी। ते न जाणीइ, कहिनइ घरि जई रही घटड़।' पछड़ राजा अणबोलिंड रहिंड।

इसिइ प्रस्तावि पूरे मासे सुवनानंदाइ सर्वांग-लक्षण पुत्र जन्मिन, अनइ गुण्तपण्ड सुहुतइ राखिउ । अनुक्रमिइं सर्व विद्या सर्व कला अभ्यशावी । पछई सुहुतउ पुत्री-पुत्रनइ लेई राजमत्रिन आविउ । तिसिइ राजाइ पृछिउं, 'मंत्रीश्वर! ए कउण स्ती, कउण बालक ?' तिसिइ अवसर लही प्रधान कहइ 'स्वामी ! ए ते सुवनानंदा, माहरी पुत्री, ताहरी वल्लमा । ए ताहरउ पुत्र, माइरउ दोहित्रउ बालक ।' इम कहिइ हूंतइ, जेतलइ राजा काई वल्तू बोलइ, तेतलइ महुतइ ते वही काढी राजानइ हाथि आपी । ते वही राजा जोवा लागउ । जे जे बोल बोल्या, जे जे वात कीवी, ते ते चींतवी चींतवी लाज अनइ हर्ष घरतउ, पुत्र उत्संगि बइसारी, राजा कहिवा लागउ, 'वत्स ! ए राजऋदि सर्व ताहरी छइ । ताहरी माताइं प्रतिज्ञा आपणी सर्व निर्वाही । एवडी बुद्धि, एवडा पराक्रम अनेथि दीसइ नही ।' तिस्हं प्रधान कहइ, 'स्वामी! घता म करउ । ए प्रजाप सर्व तुम्हारउ । जे धूलि सूर्यना बिवनइ आछादई, ते प्रताप धूलिनउ नही, ते वायुनउ प्रताप ।' पछइ राजाइ ते सुत्रनानंदा पहराणी कीघी, घणउ काल राज पाठी, परम वैराग्य घरतउ पुत्रनइ राज देई, आपणपइ चारित्र लेई, परमार्थ साधिउ ।

जउ एहवउ इ प्रचंड रिपुमर्दन राजा स्नीनउं दासपणउं करइ, तु बीजा राजानुं स्यूं कहीं इ

।। इति स्त्रीना दासपणा-ऊपरि रिपुमर्दन-रायनी कथा ।।५॥

मरणे वि दीणवयणं माणधरा जे नरा न जंपंति । ते वि ह कुणंति लल्लि बालाण वि नेहगहगहिला ॥ १८

ठ्याख्याः— जेहनइ मान जि धन छुइ, एहवा उत्तिम नर=मनुष्य मरणांति=प्राणनइ त्यागि-इ दीन वचन न भाषइं, मरण आगमइ पणि दयामणां वचन न बोल्डं, एहवाइ जे छईं मान-वत पुरुष. अहंकारन त्याग करी स्नेहरूप ग्रह=व्यंतर तेहनइ ग्रहि करी प्रथिल=विकल परविश हुंता, बाल!=स्त्री आगलि लालिगालि करइं । रांकनी परिइं दयामणां वाक्य बोल्डं । तु सामा-स्य मनुष्य कउण मात्र १ जे देवेंद्र ते ही स्त्री—आगलि लालिपालि करइं, ते कहीइ छइ —

[६. इंद्रन्ं हच्टात]

कुण ही एकि नगरि पोसालइ घणा महातमा रहंइ । तिहां एक लघु माहातमा पोसाल पुंची काजउ जहणा-पूर्वक सोधिया लागउ । तिहां जीव सोधतां मायना भावतां अवधि-ज्ञान ऊपनंउ । तेहनइ प्रमाणि पृथ्वीना स्वरूप देव-लोक देखिवा लागउ । तिणि प्रस्तावि इंद्र इंद्राणी आगलि लालिपालि करइ छुइ । तिण समइ इंद्राणीइ इंद्र पग-सिउं ठेली परहउ करिउ देखी महातमा मन-माहि चींतिविवा लागउ ' धिग् धिग् ए जीव, जे कंदर्पनु वाहिउ । एवडउ इंद्र किम स्त्रीनइ पिग लागइ छइ !' पछुइ इंद्रनउं स्वरूप एहवउं देखी चेलानइ हासउं आविउं। अवधि-ज्ञान एतलइ जि रहिउं। ए संक्षेपि दृष्टांत कहिउं। इम दीलवृत पालतां दोहिलउं ॥६॥

वली विजयपालराजा-लक्ष्मीदेवीना द्रष्टांत कहीइ -

१. L. 'कहिनइ.....घटइ' ने स्थाने 'किहाँ छइ' P. नश्री २. P. ते प्रताप वायरानउ, धूलिनउ नही ३. P. अनेरा. ४. L. पउजी ५. A. हिवइ ६. P. मां 'इति ब्रीलोपदेशमाला वा॰ हरिकथा' एटछं वधारे

[७. स्नेहमह ऊपरि विजयपालरायनं दृष्टांत]

पुश्मिताल नाम नगर । तिहां श्री विजयपाल राज करइ । तेहनइ रंमा नाम पट्टराणी । हिन् अन्यदा प्रस्तानि राजा गजारूढ हूंतउ रइवाडीइ नीकलिउ । तिहां लक्ष्मी, श्लेरिटनी पुत्री, तेहन् उप्य देखी श्लेरिट-कन्हइ मागी राजाइ पाणिप्रहण की घंउ । पछइ अति विषय-आसक्त हूंतउ राजा अंतःपुर-माहि थकउ रहइ । विवेक करी विकल राजा राज्यनी कणवार ने करइ । तिसिइ प्रधानि आवी राजा वीनविउ, 'स्वामी ! अति विषय-सेवा सोभइ नही । भलउ इ मनुष्य अति विषय लगइ लघुता पामइ । तेह-भणी तुम्हे राजानी चिंता करउ ।' तिसिइं राजा वलतुं कहिंबा लागड जे, 'ए मृगाक्षी लक्ष्मी जीवइ तां जि लगइ मुझनइ जीवत्वय छइ ।' एहवउ राजान अमिप्राय जाणी जेतलइ मुहुता कांई विमासइ तेतलइ राजानी वल्लभा परोक्ष हुई । प्रभात-समइ राजा ए वात सांभली अचेत हूउ । तेतलइ बावना चंदन शीतल जलने उपचारे करी राजा सचेत की घउ । पछइ रोतउ हूंतउ असंबद्ध वचन बोलिवा लागउ । तेतलइ प्रधान कहिवा लागा 'स्वामिन ! ए देवी परोक्ष हुई । हिवइ अमिदाघ दीजइ ।' राजा वलतुं कहइ, 'तुह्रो आपणा मावापनइ अमिदाघ दिउ ।' इम करतां मध्याह्न समय हुउ तु ही राणी न बोलइ। पछइ राजाई मोजन छांडिउ । इम दस दिन राजानइ गया ।

तिसिइ प्रधाने कांइ एक आलोची पुरुष एक सीखवी राजा-कन्हलि मोकलिउ जउ, 'महाराज! तुम्हारी प्रियाइ हूं स्वर्ग हूंतउ मोकलिंड। इसिंड कहाविउं छइ जउ हूं मनुष्य-लोकइ नहीं आविउं । इहां अञ्चि दुर्गैधि तेह-भणी मइ न अवाइ । स्वर्गि तउ संपूर्ण सुख छइ । जु माहरी आर्ति छइ तु तूं वेगज आविज्ये ।' तिसिइ राजाइ प्रधान पूछ्या, 'मई स्वर्गि किम जाईइ³?'। प्रधाने कहिउं, 'स्वामी ! पहिछुं तां भोजन करउ, पछह स्नान विलेपन सर्वे करड । पुएयकाज साधउ । जिम ए जण आविउ छइ तिम वली पाछउ वलावीई ।' इम कही राजानइ भोजन कराविउं जिणि कारणि रागांध जीव करणीय-अकरणीय कांई न जाणइ। पछइ ते जण प्रधाने प्रच्छन्न राखिउ। दिन बि गया। तेतलइ वली प्रधाने कपूरवासित सोपारी नइ पान ते जण-हाथि मोकल्यां। कहिउं, 'देवीइ मोकल्यां छुई।' राजा रलीयात थिकउँ लेई आरोगिवा लागउ। वली दिन वि पडखी अपूर्व फल लेई आविउ। राजा तेहनई पंचांग पसाउ करी संतोषइ। तेतलइ प्रधाने चीतविउं, रखे कोई धूर्त शिरोमणि ए मेद मांजइ तेह-भणी वली कांई उपाय रची है। पछ इ भू जात्र एक एको नल कस्त्रिकाई खरडी अश्वर कोरी राजान इकागल लिखी प्रधाने जग-हाथि दोघउ । तिणि राजान इ आणी दीघउ । राजा वांचिवा लागउ । तिहां इम लिखिउं छइ, 'स्वस्ति श्री पुरिमताल-नगरि श्री विजयपाल राजानां चरण नमस्करी स्वर्गे हूंति लक्ष्मीराणी वीनती करइ छइ, स्वामिन् ! इहां इंद्र आविवा न दिइ, तेह-भणी ए जण-हाथि हिवडां आभरण वस्त्र मोक्रलिज्यो । वली मासि पाखि वस्त्र मोकलिज्यो ।

तिसिइं प्रधाने कहिउं, 'स्वामी! देवीनइ कांई मोकलिउं जोईइ। राजाइ प्रधान पूछ्या, 'ए जण किम जाइ छइ!' पछइ प्रधाने कहिउं, 'वेदि-माहि आगि प्रज्वालीइ तेह-माहि ए वृद्ध जण पइसइ।' इम जेतलइ प्रधाने कूडउ ऊतर क्षीधउ तेतल्ड पद्म नामा श्रेष्ठि तिणि मेद मांजिवा-मणी राजा आगिल कहिवा लागउ, 'स्वामिन्! ए वृद्ध एतलउ भार लेई नहीं सकइ। तेह-भणी कोई

१. A. करणवार, २. P. L कन्हइ. ३. P. जवाइ. ४. P पाहइं, L पाहंति ५. P. थकउ, L. थिउ.

तरुणं पुरुष मोकलीइ।' तिसिइ प्रधाने विमासीनइ कहिउं, 'एह जि श्रेष्ठि तरुणं दीसइ छइ। एह जि मोकलीइ।' राजाइ कहिउं 'इम जि करउ।' पछइ ते पद्म श्रेष्ठि बलात्कारि झाली बैलास्वामिननी परि लीजिवा लागं । तिसिइ मार्गि लोक पूछइ, 'ईणं ह सिउं' विणासिउं ?' प्रधाने कहिउं, 'मुखना दोष-लगइ लीजह छइ ' पछइ ते पद्मना मित्र कुढ़ंबी तीणे प्रधाननइ घणं कहिउं जउ, 'ए अपराध खमं ।' पछइ प्रधाने ते मूकिउ।

अन्यदा राजा प्रधान प्रति कहइ, 'ए लक्ष्मीराणीनइ घणा दिन थआ³ । हिवइ स्वर्ग-हूंती इहां तेडावउ । हूं ते राणी पाखइ रही न सकउं ।' पछइ प्रधाने कांई विमासी करी नवयौवना कोई एक विलासिनी', तेह जि राजानां दीघां आभरण पहिरावी, लक्ष्मी एहवउं नाम देई उद्यान-वन-माहि मूकी। प्रधाने राजा वीनविउ, 'स्वामिन्! स्वर्गि जण एक मोकलिउ छइ।' वली बीजइ दिनि प्रधाने राजा वीनविउ, 'स्वामी! वधाविउ। देवी लक्ष्मी वन-माहि आवी छइ।' राजा तत्काल मेह देखी जिम मोर नाचइ तिम ते वात सांमली नाचिवा लागउ। सर्व स्वरंग आभरण पसाइ दीचां।

पछइ मोटइ विस्तारि राजा वन माहि राणी सामुहु गयउ । राणी गौर-वर्ण देखी प्रधान प्रित राजा कहइ, 'ए तड पहिलंड काई स्थामवर्ण हूंती, हिवडां गौर दीसइ छइ ।' तिसिइं प्रधाने किहिउं, 'स्वामी! एहवी सी भ्रांति आणउ छउ ! इंद्रि संतुष्ट होइ वर्तमान सालंकार-साभरण सर्वांग-सुंदरी करी मोकली छइ ।' पछइ राजाइ ए वात साची मानी , गजेन्द्रि बइसारी नगर-माहि आणी । हिवइ राजा ते राणी-समीपि स्वर्गनी वात पूछइ । प्रधाने ते सीखवी मूकी छइ । ते विलासिनी तिम किमइ राजानड चित्त रंजवइ जिम ते राजा सर्व साचड करी मानइ । इम करतां राजानइ घणां वरस वडल्यां । घरि पुत्रना जन्म हूया । पछइ राजा आऊखानइ क्षिय मरण पामी नरकादि दुख पाम्यां । तु तोउँ जे एहवाइ मान अहंकारना घणो ए कंदर्पना वश-लगइ एवडी लालिपालिनां विलसित कीषां॥ इति स्नेहमह ऊपरि विजयगालरायनउ दृष्टांत ॥ आ

जे पंडित हुइ तेहइ स्त्रीनां वचन सांभली चूकइ ते कहइ – जे सयलसत्थ-जलनिहि-मंदरसेला सुएण गारविया । बाला-लल्लर-वयणेहिं ते वि य जायंति हयहियया।।१९

च्याख्या :—जे समस्त शास्त्ररूप समुद्र ते अवगाह भणी मेर-पर्वत समान हुइ अनइ सिद्धान्तना रहस्य ममें जाणवइ करी गर्व -संयुक्त हुइ, एहवाइ पुरुष बाला = स्त्री तेहने लल्लर-वचने= हाबभाव विलास सहित वाक्ये हतहृदय हूंता रागसमुद्र माहि ब्रूडइं, तु अनेरा जीवनउ स्यू कहिवउं १

हिवइ जे लोकीक देवता तेहनी विडम्बना कहइ -हरि-हर-चउराणण-चंद्-सूर-खंदाइणो वि जे देवा । नारीण किंकरत्तं करंति धिद्धी विसय-तन्हा ॥२०

ठ्याख्या : -हरि= नारायण, हर = ईश्वर, चतुरानन = ब्रह्मा, चंद्र, सूर्य, स्कंद=कार्तिकेय प्रमुख जे देव तेही नारी = स्त्रीए आपणउं दासपणउं कर न्या, तु धिग धिग ए विषय-तृष्णानइ कारणि ।

१. P, बालीनी L, बालीनी. २. P• किसउं. ३.P हूआ. L. हूया. ४. P. विलासिनी सीपनी. ५. P• जोवउ

ते इहा धुरि हरिनी कथा कहीइ -

[८ हरिनी कथा]

द्वारवती नगरीइ नारायण आपणडं राज्य पालइ। अन्यदा छ मासनइ पारणइ दुवाँसा-रुषि वन-माहि आविउ। तिहां पारणानइ अर्थि नारायण ते डिवा गयउ। तिसिइं दुर्वांसा कहिवा लागड, 'रथ आणि। तिहां ज एकणि पासइ स्विमणी, एकइ पासइ तूं ज्यइ तु रिथ बइसी ताहरइ घरि आवउं।' पछइ नारायणि पिडविजिउं। रुषि रथइ बइठउ। पछइ बेहू रिथ जूता। मार्गि चालतां रुविमणी सकोमल-भणी चाली न सकइ। तृषा ऊपनी। तिसिइं नारायण-सामुद्उं जोइ तृषा आपणी जणावी। तिसिइं नारायणि अंगूठइ करी भूमिका चांपी पाणी काढिउं। रुविमणीइ पाणी पीषउं। तेतलइ रुषि रीसाणउ। नारायणनो आंखि-माहि पराणउ लोयउं। तिवार पछी पुंडरीकाक्ष एहवउं नाम हुउं। एतलइ हरिनो कथा कही।।८।।

हिवइ हरनी कथा कहीइ -

[९. हरनी कथा]

यदा कालि दक्ष नामा प्रजापित संउ कन्यानं प्रदान करिवा लागंड, तिवार्द सत्तावीस कन्या चेद्रिन दीधी। इम समलीइ कन्या देतां देतां एक कन्या रही। कोई वर न देखह। ईश्वर मस्मांगी, गलइ रंडमाला, हाथि खप्पर, वाहन वृष्प एहवंड देखी कन्या गोरी ईश्वरनं देई निश्चित हूड। तिवार पछइ दक्ष प्रजापित जाग मांडिंड। तिहां सर्व जमाई लेडचा। आपणी आपणी रुद्धिह सर्व जमाई आव्या। पणि रुषि ईश्वर न तेडिंड, जाणिउं एहवंड कुरूपि जमाई आविंह अमारी माम जासिह।

पछइ अनेक ब्रीहि जब तिल सिमधादि सर्व यागना उपकरण मेल्या। मनुष्यनां सहस्व मिल्या छइं। ब्राह्मण व्यास त्रिवाडी दवे ओझा पंड्या आचार्य मिश्र रुषि जोसी तिहां सर्व मिल्या छइं। तिसिइं नारद-ऋषि पणि न तेडिउ, जाणिउं कलह करिसिइ। पछइ ए बात नारदिइं जाणी। नारद ईश्वर-समीपि गयउ, 'जोउनइ दक्ष नामा प्रजापितइं सहू तेडिउ, पणि त् एक ज न तेडिउ। तु आज ताहरी माम जासिइ।' ईश्वरि कहिउं, 'ऋषि! स्युं कीजइ?' कहिउं, 'जई आपणु पराक्रम देखाडि ' पछइ ईश्वर गौरी-सिहत तिहां आविउ, तुहीं दक्ष प्रजापितइ बोलाविउ नहीं। पछइ गौरीइ अरमान पामी अभि कुण्ड-माहि झांग दीधी। तिसिइं ईश्वर रोसाणउ, आग्नेय शस्त्र मूकिउं, तिणि प्रलयकाल-सरीखउ अमिदाघ ऊरानउ। यागना लोक सर्व दिसोदिसि नाठा। इणइ प्रस्तावि गौरीनउ विरह अणसहतइं अमृति करी ते अमिकुण्ड सीचिउं, गौरी जीवाडी, स्नेह लगइ आपणउ अर्घ अंग दीधउ। तिवार पछी अर्द्धनारीनटेश्वर ए नाम हूउ। ए बीजी कथा।। रा

[१० ब्रह्मानी कथा]

हिवइ ब्रह्मा प्रजापित संसारनं असारपणं देखी वन-माहि जई अदार कोडि वरस दुकर तप करिवा मांडिउं । तिसिइं इंद्रिइ समा-माहि अवधि-ज्ञाननहं बिल ब्रह्मा तप तपतं देखी मिन-माहि बीहनं, 'जउ ए रुषि रीसाइ तु मुझनइ पणि पाडइ।' हिवइ इंद्रनइ भय-लगइ समाधि नहीं। पछइ रंभा-तिलोत्तमादिक इंद्राणी हाथ जोडी बीनती करिवा लागी, 'स्वामिन! तुझनइ असाध्य तु कांई नथी, एवडी चिंता ते कांई? प्रसाद करी कहड़। अथवा आलोचनइ योग्य न हुइ स्त्री, तथापि सुखदुःख प्रकासिइं खोडि नहीं।' तिवारइ इंद्र कहइ, 'ईणइ ब्रह्मा चउद युग

१. P. पुरानी चमोई

ताई तीब तप करिवा मांडिउ, तिणि माहरुं मन कांपइ – जुरखे इंद्रपद लिइ।' तिसिइं इंद्राणी कहि, 'स्वामिन! ए ऋषिनइ तप हूंता पाडतां केतली वार लागिसिइ?'

पछइ इंद्रि इंद्राणी सर्व तिहां मोकछी । तिसिइ देवांगनाए गीत-गान-नाद-गर्भित नाटक तिम किमइ मांडिउ, जिम ब्रह्मा सकल इंद्रियनी चेष्टारहित हिरणनी परिइं एक नाद जि नइ विषइ लीन हुउ । पछइ ब्रह्मा ते नाटक देखी तृठउ देवांगना प्रति कहइ, 'वर मागउ ।' तिसिइं देवांगनाए कहिउ, 'स्वामिन ! जु तृठउ तु हिवइ ए छाग' ए कादंबरी मदिरा अनइ अम्हन्तइ आदर ।' तिसिइं ब्रह्माइं कहिउं, 'तुम्हारा संसर्ग-लगइ ता जाइ, छागनउ वध तपस्वीनइ करता जुगतउ नहीं । पणि ए मदिरा पाणी-सरीखी, ते-भणी तुम्हारइ वचनि ए मदिरा आदरिसु ।' पछइ यथेष्ट मदिरापान कीधंउ । तेतलइ ब्रह्मानइ उन्माद ऊपनउ, क्षुधा ऊपनीइ छाग हणी मांस-भक्षण करी देवांगना साथी कीडा कीधी । पछइ देवांगनाए चींतविउं, 'एहनउ तप तु गमाडिउ । हिवइ जे घणा वरसनउ तपनउ पोतउं ते नीटाडिवउं ।' इम चीतवी ऋषि-हुंतउ दक्षिण-दिशिइ नाटक मांडिउं । लाज लगी जोई न सकइ । तिसिइ कहिउं 'वर्ष कोटि तपना प्रमावइ दक्षिण-दिशिइ मुख थाउ ।' ते तपनइ प्रमाणइ मुख थयउं। इम कोडि वर्ष कोडि वर्ष विहचतां ज्यारि मुख ब्रह्मानइ हूया । पछइ देवांगनाई आकाशि नाटक मांडिउ । अर्घ कोडि वर्ष विहचतां ज्यारि मुख ब्रह्मानइ हूया । पछइ देवांगनाई आकाशि नाटक मांडिउ । अर्घ कोडि वर्ष विहचतां च्यारि मुख ब्रह्मानइ हूया । पछइ देवांगनाई आकाशि नाटक मांडिउ । अर्घ कोडि वर्ष विहचतां च्यारि मुख ब्रह्मानइ मुख छोदिउं । देवांगना हसी स्वर्णि गई । तु जोउ, जे ब्रह्मा ते ही चतुर्मुख हुउ, स्त्रीनउ दासपणउं पामिउं ।। इति ब्रह्मानी कथा ।। १० ।।

[११. चंद्रमानी कथा]

चंद्रमा पणि यदा कालि सर्व देवताए मिली ज्योतिश्चक-माहि वडाई दीधी । सर्व नम-स्करिवा आन्या । तिसइ बृहस्यतिनी मार्या अति रूपवती देखी चंद्रमाह भोगवी । तिहां बुध पुत्र जन्मिउ । ए चंडथी कथा॥ ११॥

[१२. सूर्यनी कथा]

हिव सूर्य सहस्र किरण घरतउ पृथ्वी-माहि फिरइ । तिसिइं रन्नादे देखी व्यामोहिउ प्रार्थना करइ । तिसिइं रन्नादे कहइ, 'स्वामिन ! मह ताहरउ तेज सहवाइ नही । तेज ओछउं करउ ।' पछइ विघात्रा-समीपि जई सूर्य कहइ 'रूप ओछउं किर ।' विघात्राइं किहउं, 'जां तू मुखि नही बोलइ, तां-ताई ताछो रूप ओछउं किरसु ।' पछइ संघाडउ आणी, यंत्रइं सुर्य चडावी, ताछिवा मांडिउ । पग-ताई ताछतां सूर्य दूखाणउं । सुखि बोलिउ । ब्रह्मा रीसाणइ यंत्रइतु सुर्य ऊतारी मूकिउ । आघउ न ताछइ। पछइ सुर्यइ पिंग मोजडा घाती रन्नादे आदरी। तु जोउ, स्त्रीना स्नेह-लगइ एवडउ इ सुर्य एवडी पीड सहइ ॥ ए पांचमी कथा ॥१२॥

[१३ इंद्रनी कथा]

इंद्रिइ जिवारइ गौतम रुषिनइ रूपि अहिल्या सेवी, तिवारइ रुषि द्वारि आविउ । तिहां इंद्र मार्जारनइ रूपि नीकलतउ देखी शराप दीधउ, 'सहस्र-भगो भव'। पछइ देवताए मोटि कृष्टि मनावी सहस्रनेत्र एहवउं नाम कराविउ ऋषि पाहइ । इम स्त्रीना वश-लगइ एवडउ इंद्र

१. A. P. दूषीणड .

कष्ट पामइ इत्यादि घणा लोकीक देवता इम स्त्रीना वशदर्तीया हूया किंकरपणउं पाम्या । तु ए विषयतृष्ठणानइ धिग्धिककार हु ॥ ए छठी इंद्रनी कथा ॥१३॥

℅

वली विशेष कहइ -

पूइज्जंति सिवत्थं केहिं वि जइ कामगददा देवा । गत्ता-सूयर-पमुहा किं न हु पूर्यंति ते मूढा ॥ ११

च्याख्या: — जु किमइ एहवा मिथ्वात्व-मादेराइ गतचैतन्य हूंता कामि करी गईभ-समान । हिरे हर ब्रह्मादिक देव मोक्षनइ हेति जे पूजइ, ते जीव मूढ अज्ञान गर्ता सूकर = भूंड, सूकर-प्रमुख कहता छाग स्वानादिकनई कांइ न पूजई ! तेहे सूं विणासिउं छइ !। कामनी व्याप्तिइ करी ए पुणि सरीखाई छइ । संसार-गर्ता•माहि पड्या छइ । तेहनई गर्त्ता-सूकरनी पूजा की घी जोईइ, ते पणि मोक्ष देसिइ । इति उपहास वाक्य ।।

हिव कामातुर देवतानइ पूजा-निषेध उपहासपूर्वक कहइ -

विसयासत्तो वि नरो नारो वा जइ धरिज्ज गुरुभावं । ता पारदारिएहिं वेसाहिं वा किमवरद्धे ॥२२

व्याख्या: - विषयासकत = कामातुर नर व्यास विश्वामित्र विशिष्ट ब्राह्मण अथवा कामभोगनइ विषइ आसकत नारी = स्त्री हुई पार्वती अरुंघती रेणुका गंगादिक तेहनह विषइ गुरुनउ भाव घरीनइ गुरुगुरुणी करी जु मानीइ, तु पारदारिक वेश्यादिक गुरु-गुरुणी करी कांई न मानउ ? तेहे सूं विणासुं ? जइ तेह-माहि विशेष गुण कांई दीसइ नहीं ।

हिव एकणि शोलत्रत आकुटी लगी भागइ अनेरां च्यारि व्रत भाज**इ। एहवउ त्रिहुं** गाहे करो कहइ। तिहां पहिला गाह कहीइ-

> मेहुण-सन्नारूढो नवलक्ख हणेइ सुहुम-जीवाणं । इअ आगमवयणाओ हिंसा जीवाणमिह पढमा ॥२३

ठयाख्या:--मैथुन-संज्ञाइं आरूढ=अब्रह्म-सेवापर पुरुष सूक्ष्म जीव छः सस्थ नइ अगो-चर केवलीए दृष्ट नव लाख जीव हणइ इस्या आगम-वचनइ तु पहिली जीवहिंसा एह जि प्रकट जाणिवी । एह जि जिणि कारणि आगमि इसिउं कहिउं छइ −

इत्थीजोणीए संभवंति बेइंदियाइ जे जीवा । इक्को व दो व तिन्त व लक्ख-पहुत्तं व उक्को ं ।।१ पुरिसेण सहगयाए तेसि जीवाण होइ उद्दवणं । वेणुग-दिहंतेण तत्ता य सिलागनायेण ।।२ पंचिदिया मणुस्सा य एगनरभुत्तनारिगव्भिम्म । उक्को सं नवलक्खा जायंति य एगहेलाए ।।३ नवलक्खाणं मज्झे जायइ इक्कस्स दोण्ह व समित्त । सेसा पुण एमेव य बिलयं वच्चेति तत्येव ।।४।। इत्थीज।णिमज्झे गव्भगया य हवंति नवलक्खा । उप्यज्जेति चयंति य समुच्छिमा ते य असंख्या ॥५॥ असंख्इरिथनरमेहुणाउ मुच्छंति पंचिदियमाणासाउ । निसेस-अंगाण विभिक्त चंगे भणइ जिणो पन्नवणा उवंगे ।।६॥

इत्यादि । इम शील-भंगि जीवनइ प्राणातिसत-त्रजनउमहिलउ भंग ऊपजइ । वली शील-भंग करता बीजुं त्रत भाजइ तेह कहइ— नो कामीण सच्चं पसिद्धमेयं जणस्स सयलस्स । तित्थयरसामिपमुहादत्तं पि हु तत्थ खलु हुज्जं ॥२४ अवंभं पयं चिय अपरिगाहियस्स कामिणी नेय । इय सील-विज्ञयाणं कत्थ वयं पंचवयमूलं ॥२५

व्याख्या: -विषयाभिलाषी कामीजननइ सत्य वचन न हुइ ए बात सर्व-लोक-प्रसिद्ध छइ। ए-भणी बीजड मृषावाद-व्रतनड भंग ऊपजइ। वलो कामीजननइ त्रीजड अदत्तादाननड भंग पणि हुइ ते कहइ। तित्थयर=तीर्थं करे सर्व प्रकारि मैथुन-सेवा निषेधी छई। स्वामी=राजाइ पणि मैथुन-सेवानड आदेस नथी दीधड। प्रमुख शब्द-लगइ माना पिता स्वजन-वर्ग तेहे पणि आदेश नथी दीधड। ते-भणी अदत्तादान-तणड पणि भंग हुइ।

वली कामीनइ चउथा व्रत,पांचमा व्रतनु भंग ऊपजउ ते कहइ— अबंभं० : कामी=विषया-भिलाषीनइ अब्रह्म-सेशा प्रकट जि छइ । विषयाभिलाषी पुरुष मनसा वाचा कर्मणा करी स्वदार-परदारनी सेवानि करतउ जि रहइ, इणि कारणि अब्रह्म-सेवा प्रकट जि हुइ । विषयाभिलाषीनइ अपरिग्रहीत परदार विधवा वेशा दासी स्त्रीनइ विषइ कामना = अभिलाष हुइ, आसेवना पणि हुइ । एह-भणी सील-रहित मनुष्यनइ पांच व्रतनउ मूल किहां रहइ ? शीलव्रत लोपाति पांचइ व्रत लोप्या आकुट्टि-लगइ भाजइ पणि ।

अथ शील पालिवानइ विषइ उपदेस कहइ -

ता कह विसय-पसत्ता हवंति गुरुणो तहा पुणो तेहिं। भग्गा जिणाण आणा भणियं एअं जओ सुत्ते ॥२६

च्याख्या:—तु अहो लोको ! कह्र विषयनइ विषइ आसक्त गुरु किम हुइ ? अपि तु न हुइ । एक शीलवतनइ मंगि सर्व वत भागां जि । ते-भणी शीलवंत गुरु सेविवा । अथवा कर्मना योग-लगइ दुःशील भाव करइ, तु तिणि जिन=वीतरागनी आज्ञा भांजी। ते किसी आज्ञा, जिणि कारणि सूत्र=सिद्धांत-माहि इसिउं जिनेश्वर कहिउं छइ, ते सिद्धांतना वचन कहीइ छइ -

न वि किंचि अणुनायं पिंडसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं। मुत्तुं मेहुणभावं न तं विणा रागदोसेहिं।।२७

च्याख्या :—जिनवरेंद्रें=तीर्थ करे साधुमहात्मानइं सावद्य-योग अनइ सावद्य-व्यापार करण-कारावण अनुमति=अनुज्ञा न दीघी। अनइ वली कारणि ऊपनइ अपवाद-पदि सावद्य परमेश्वरे पणि निषेधिउ नथी। जिणि कारणि पूज्य श्रीजिनवल्डभसूरि गुरे इसिउं कहिउं —

'संधरणिम असुद्धि दुण्ह वि गिण्हंतदितयाण हियं।

आउरदिइंतेणं तं चेव हियं असंघरणे ॥'

वली कहइ - 'देवगुरुसंघरुको चुन्निज्ञा चक्कविष्टिसिन्नं पि'। इत्यादि । परं एक मैथुनभाव टाली अपरं सर्व उत्सर्ग-अपवाद-पदि कीजइ, पणि एक मैथुन नहीं । तिहां एकांत निषेष जि किहिउं छइ । ते रागद्वेष विण न हुइ । ते तु रागद्वेष संसार-वृक्षना बीज, ते सर्वथा न करिवा। रागद्वेष-लगइ संसार वाधइ । 'को दुक्खं पाविष्जा॰'...।

हिवइ शीलनउ सर्व उपदेश कहइ -

ता सयल्इयरकट्ठाणुट्ठाणसमुज्जमं परिहरेउं । इक्कं चिय सीलवयं धरेह साहीणसयलसुहं ॥२८ ठ्याख्या:—तु सकल=समस्त इतर=बीजां कष्टानुष्टान=तप परीसह क्रिया-कलाप प्रमुख ए सर्व उद्यम परिहरी, एक=अद्वितीय शीलवत घरड=पालड, पणि ते शीलवत केहवउं छह—साहीणस• —स्वाधीन=हाथ जि माहि । बार देवलोक, नव धैवेयक, पांच अनुत्तर मोक्षना अनंत सुख जेह थका छह एहवउ शील, अहो भविको ! पालड ।

हिव ते शील तु पलइ, जड नारीनु संसर्ग वर्जंइ । जिम अग्निनइ योगि मीण गल्ड तिम नारी = स्त्रीना संसर्गे-लगइ पुरुष शिथिल थाइ ।

> सावज्जजोग-वज्जण-सज्जा निरवज्ज-उज्जया वि जए । नारीसंगपसंगा भग्गा धीरा वि सिवमग्गा ॥२९

च्याख्यां:-जे पुरुष सावद्य व्यापारना योग तेहनउं वर्जन=परित्याग करिवा-भणी जे सज्ज= सावधान छइ, वली निरवद्य=सुद्ध शीलादि निःपाप कर्म साधिवा-भणी ऋजु=सरल छइ, जगत्रय-माहि एणइ प्रकारि मोक्षमार्ग साधिवा-भणी धीर छइ, तेही नारी=स्त्रीना प्रसंग=परिचय-लगइ मोक्षमार्ग साधीता हुंता भाजइ=पड्इॅ । यत: ─

संसार तव पर्यन्त-पदवी न दवीयसी । अंतरा दुस्तरा न स्युर्येदि रे मिदिरेश्वणा ॥१ दिव नारीना संग-लगइ जीव पडइ ते-ऊपरि दृष्टांतगर्भित गाथा कहइ – संवेगगहियदिकखो तब्भवसिद्धी वि अदयकुमारो । वयमुङ्सिय चउवीसं वासे सेविसु गिहवासं ॥३०

ठयारुया:—-जीणइ संवेग=वैराग्य-लगइ दीक्ष्या लीधी, तब्भवसिद्धिगामी=तीणइ जि भवि मोक्ष जाणहार आर्द्रकुमार तेही स्त्रीना प्रसंग-लगइ चारित्रवत मूकी चउवीस वरस ग्रहस्थावासि विषयसुख अनुभव्यां। ते भावार्थ कथा-हूंतउ जाणिवउ। हिवइ ते कथा कहीइ —

[१४. विषयसुख-ऊपरि आर्द्रकुमारनी कथा]

आदननामा देस। तिहां आदनपुर नगर। तिहां आदनराजा राज्य करइ। तेहनी मार्या अप्र-महिषी आदिका। तेहनउ बेटउ आदकुमार जाणिवउ। अतिहिं गुणवंत जीवदयानइ विषइ आर्द्र जेहनउ मन एहवउ छइ। समग्र कला अम्यसतउ यीवनाभिमुख हुउ।

हिवह एहवइ प्रस्तावि राजगृह नगरि । राजा श्रीश्रेणिक परम जिनमक्त । तेहनड बेटउ अभयकुमार । इम आगइ आदनराजा नइ श्रेणिकराज नइ माहोमाहि महा प्रीति छइ । तेह-भणी राजा श्रेणिक आपणा प्रधान-हाथि आदनराजानइ घणी मेंटे मोकली। तिणि प्रधानि समाइ जई आदनराजा आगलि सउंचल लोंबपत्र कंवलदिक घणी वस्तु मूंकी । पछइ राजाई महाआदिर मेटि लेई श्रेणिक राजानी कुशल-क्षेमवाक्ती पूछो जउ, 'राजा लोक सहू समाधि छइ ?' इम पूछतां आईकुमार चाप-कन्हइ पूछइ, 'तात ! ते कउण मगधाधिप ?' तिसिइ राजा कहिवा लागउ, 'आईकुमार ! सांभलि । मगधरेसनउ अधिगति श्रेणिक राजा । तेह-साथि आपणइ चिरंतन प्रीति छइ । कमागत चाली आवइ छइ । तेहिन कुलि अनइ आपणइ कुलि प्रीतिइं अतर नही ।' ए वचन सांभली आईकुमार प्रधान-प्रति पूछिवा लागउ, 'राजा श्रेणिकनइ बेटउ कोई छइ, जेइ-साथि हूं पणि प्रीति मांडउं ?' तिसिई प्रधान प्रणाम करी कहिवा लागउ, 'अहो ! समन्न बुद्धिनउ निधान, पांच सई मुहता-मांहि मुख्य, दक्षबुद्धिना लक्षण तिणि करी विराजमान एहवउ अभयकुमार राजा श्रीश्रेणिकनउ पुत्र छइ । ते किसिंउ तुम्हे

सांभलिउ नथी ? सवले देशे प्रसिद्ध विख्यात छइ।' ए वात सांभलि मिन हर्ष घरतउ प्रधान प्रति कहइ, 'जिशारइं पिता आदनराजा तुझनइ चलावइ तिवारइं मुझनइ मिली चालिज्यो ।'

पछइ आदनराजाइं ते प्रधाननइं घणउ बहुमान देई, मुक्ताफल-प्रसृति घणी वस्तु मेट देई, प्रधान पाछउ वलाविउ। वली संघाति आपणउ प्रधान एक मोकलिउ। तिसिइ ते प्रधान आईकुमार-समीपि आवी किह्वा लागउ जउ, 'हूं राजां चलाविउ।' तीणइ पणि मुक्ताफल-प्रसृति घणी वस्तु अभयकुनार-भणी चलावी। केतले दिने पंथ अवगाही राजग्रह-नगरि आवी राजा श्रेणिक-आगलि ते सर्व मेटि आणी मूंकी। ते देवी राजा संतोषाणउ। तिसिइं प्रधानिइ अभयकुमारनइ आईकुमारनी मोकली मेटि दीधी, संदेसा सर्व कह्या। पछइ अभयकुमार मन-माहि चींतवइ 'सही कोई विराधित-चारित्रीयउ अनार्यदेशि ऊरनउ छइ। पणि इम जाणीइ ते जीव भव्य छइ, जिणि कारणि मुझ साथिइं प्रीति तुह जि करइ छइ, जउ उत्तम जीव छइ। तु हिवइ माहरी प्रीतिनु प्रमाण, जु एहनइ प्रतिबोधउं।' इसिउं विमासी वलती मेटिनइ मिसिइं श्रीवोतरागनी प्रतिमा रत्नमय महांत आचार्यनी प्रतिष्ठि एहवी एक मजूस-माहि घाती। वली पूजानउ उपगरण—घांटी, रस, धूपधाणां, चमर, अष्टमंगलीक इत्यादि सर्व तेह-माहि घात्यां, बारणइ तालू देई मुद्रा आपणी दीधी। बीजी घणी मेटि संघाति देई प्रधाननइ कहिउं, 'ए माहरी मेटि आदनराजा-छानी आईकुमारनइ देख्यो, अनइ कहिज्यो— एकांति ए मेटि हलाविज्यो।'

पछइ ते प्रधान(? नि) आदनराजानइ श्रेणिकराजानी मोकली मेटि दीधी । आईकुमारनइ छानी मेटि मजूस सर्व दीधी, अनइ संदेसा सर्व कह्या । पछइ आईकुमार एकांति बइसी जु मजूस हलावइ तु माहि-थकी रतनमय श्री वीतरागनी प्रतिमा नीकली । ते जोई मन-माहि चींतववा लागउ, भाहरइ मित्रि मुझनइ आभरण मोकलिउं छइ ।' माथइ, हाथि, खबइ प्रतिमा मूकइ पणि किहाई बंधि नावइ । पछइ चीतवई, 'एहवी प्रतिमा मई आगइ किहां दीठी हूंती ? ' इम ईहापोह करतां जातीस्मरण ऊपनउं । पूर्विलड भवांतर दीठउं ।

ए भव-इतु त्रीजइ भिव, मगहदेशि वसंतपुरि सामायकाभिध कुणंबी हूंतउ । भार्या वंधुमती-सिहत सुस्थित चार्य-समीपि धर्म सांमली दीक्षा लीधी । वंधुमती महासती-सिहत गुरू-सिथि विहार करिवा लागउ । इम एकदा प्रस्तावि वंधुमती महासती, तेणइ सामायकाभिधि महातमाई दीठी । पूर्विला स्तेइ-लगइ अनुराग ऊपनउ । ए स्वरूप महासतीई जाणिउं—रखे ए मर्यादा मूंकइ । ए पछइ तिणि वंधुमतीई शील राखिवा-भणी अणसण लोघडं, प्राण छांडचा । ए वात तिणि माहात्माई सांमली जउ, 'माहरइ कीघइ वंधुमतीई प्राण छांडचा ।' पछइ ते साधु असमाधि करई । 'धन्य ते महासती जीणइ शील राखिउं, प्राण छांडचा । तु हिव मुझनई जीविवा युगा हुं नही, जे हूं भगनव्रत हूंतउ शोल पाली न सक्डं।' पछइ ते महातमा अणसण लेई देवता हूउ ।

र. P. L. बीजी महासतीए जाणी बंधुमतीनई उपदेस दीघउ । पछई बंधुमती चींतिवा लागी —जउ समुद्र मर्यादा मूंकइ तउ स्यउं चालइ । हिव अनेरी महासतीए जाणिउ रखे ए मर्यादा मूंकइ । पछई तिणि बंधुमतीई अणसण लीधउं, शील राखिवा-भणी प्राण पणि छांडचा ।

तिहां-हूंतउ चिवी अनार्य-देशि हूं आईकुमार हूउ । तु धन्य ते अभयकुमार जीणइ हुं प्रतिमानइ भिसिइ प्रतिबोधिउ । पणि अजी माहरइ पोतइ घणा पाप छइ, जे अभयकुमारन हूं मिली नथी सकतउ ।'—इम मनोरथ करइ । प्रतिमानइ एकांति सदा पूजइ ।

एकदा राजा प्रति कहइ, 'हे तातपाद ! जु कह[उ] तउ एक बार आपणु मित्र अभयकुमार तेहनइ मिछी आवर्ड ।' तिसिइ राजा कहइ, ' वच्छ ! आपणइ प्रोति ठामि नि थकां छई, पणि जईइ आवीइ नहीं ।' ए वात सांभली आईकुमार गाढेरउं अभयकुमारन**उं** सूतां-बइसतां एह जि चीतवइ, 'जु पांख हुइ तु ऊडी मगहदेस छइ, केहवउ राजगृह छइ, ते अभयकुमार केहवउ पछइं आदनराजाई चींतविउं जउ, 'ए आईकुमार तु चलचित्तउ दीसइ छइ। जाणीइ घरि नहीं रहइ ।' पछइ पांचसइं सुभट पाषती रखोपइ मूंक्या, देहनी छायानी परिइं केडि न मुंकइ । तिसिई आईकुमारि उपाय मांडिउ । आप घोडइ असवार थई वहीआलीइ जाइ. घोडा फेरवइ, वली पाछउ आवइ। इम दिनि दिनि वेला जालवइ, घडी नि घडी प्रहर अंतरालि करइ । वली ते राजाना सुभटनई आवी मिलई । तितिह आईकुमार आपणा मित्र-पांहइ प्रवहण सज्ज करावइ, रतने करीं प्रवहण पूरावइ। परमेश्वरनी प्रतिमा ते पणि चडावी। वली घोडानइ मिसिइ वहीयालीइ घोडा फेरवतां पांच सइं सुभट केडिइ मूँकी आगणि प्रवहणि बहठउ अदृश्य हुउ । पछइ आर्थदेशि आवी, प्रतिमा अभयकुमारनइ मोक्छी, धन सर्व साते क्षेत्रे वेबी, यतिहिंग जेतलइ ऊचरिवा लागउ तेतलइ आकाशि देवता बोली. 'अहो आईकुमार ! तंह जि दीक्षा लिइ छइ ते पडिखि। अजी ताहरइ मोगहली कर्म घणउं छइ। पडिखि। चारित्र म लेसि। नोग-फल भोगवी चारित्र लेजे । तिणि भोजिन स्यं कीजइ जे पेट-माहि रहड नही ?' एहवउँ वचन सांमली अवगणीनइ चारित्र लीघडं ।

ते प्रत्येक-बुद्ध मुनि चारित्र लेई वसंतपुर-नगरनई बाहरि देवकुल छई तिहां आविड । तीणई नगरि धनावह श्रेष्ठिनी धनवती भार्या, तेहनी बेटी बंधुमतीनउ जीव चवी श्रीमती हिसई नामिइं पुत्री हूई । क्रमइं यौवन पामी । अनेरइ दिवसि पांच-सात सखी-सिहत नगरनई परिसरि देवकुल छई तिहां रिमवा लगी । तीणे एकेकउ थांभउ बालस्वभाव-लगई पुरुषपणई वरिउ । तिहां आईंकुमार मुनि प्रतिमाइं कायोत्सिंग रिहउ देखी पूर्वभवना स्नेह-लगी थांभानी भ्रांतिई आईंकुमार जि वरिउ । तिसिइ देवताइ किहेउं, 'भलउ वर वरिउ ।' इम कहइते रतनी बृष्टि कीधी । तिसिइं घनगर्जित देन्त्री श्रीमती बोहतो हूंती पगे वलगो रही । तिसिइ महात्मा उग्रसर्ग सानुकूल देखी, पग मूंकावो, विहार कीधउ । तिवारइ श्रीमतीइ कहिउं जु, 'इणि भिव भर्तार तु तूंह जि, अनेरउ नही ।' पछइ श्रीमती घरि आवी । हिवइ तिहां रतननी बृष्टि कीधी हूंती ते देखी राजा लोभनउ वेलीयउ रतन लेवा आविउ । तिसिइं देवताइं किहउं, 'ए रता सर्व अम्हे कन्यानइ वरगइ दीघां छइ ।' तिसिइं राजा विलवाउ हूंतउ पाछउ गयउ । पछइ ते धन श्रीमती लेई पितानइ घरि आवी । तिसिइं श्रीमतीना वरणा-भणी घणा श्रेष्ठि मांगिवा आवह । पणि श्रीमती कहइ, 'मुझनइ इणि भिव तेह जि पति भरतार, अवर कोई नही ।' तिवारइ श्रिष्ठ कहइ, 'हे विरस ! ते वर किम लाभिसिइं ! तेहनउ स्युं नाम !' तिसिइं श्रीमती कहइ, 'तिहनउं नाम न जाणउं । पणि मेह गाजतइ बीहती थकी जिवारइ ते मुनिनइ पणि बलगी

१. L. पाहंति २. L. वाहिउ

तिवारइं पिंग पद्म दीठउं हूंतु ते अहिनाण छई।' पछह श्रेष्टिइं कहिउ, 'जे के मुनि आवह तेहनई तूं दान दिई अनइ पग जोती रहे।'

पछइ श्रीमतीनइ दान देतां बारमा वरसिन प्रांति ते आईकुमार तिहां आविउ । तिसिंहं श्रीमतीई ओलिख । पछइ धाई महातमानइ पिंग वलगी , 'स्वामिन ! तहीइ मुझनइ तूं भोलवी गयउ, पिंग हिव किमइ जाए ति ?' पछई आईकुमारइ ते देखी देवतानउ वचन मन-माहि आणी, भोगफल जाणी, आईकुमारि श्रीमतीनउं पाणिग्रहण की धउं। इम घरि रहितां त्रीजइ वरिस बेटउ जायउ। जेतलइ नव वरसनउ बेटउ हुउ तेतलइ आईकुमार श्रीमतीनइ कहिवा लगउ, 'दिवइ ताहरइ बेटउ तुझनइ सखाईउ हुउ। हिव हूं दीक्षा लिउं।' पछइ श्रीमतीइ बुद्धिलगी कांतिवउ मांडिउं। तिसिई बालक आवी कहिवा लगउ, 'हे माता! आपणइ ए स्यूं कांतणउ !' तिवारइ माता कहिता लागी, वरस! तुं तु लघु। ताहरु पिता तउ जाइ छइ।' इसिइ पुत्र कहिवा लगउ, 'मात! आपि सूत्र, जिम बाप बांघी राखउं।' ए वात आईकुमार कपटनिद्रामाहि सर्व सांभलइ छइ। पछइ आपणइ मिन निश्चउ की घठ, 'जेतला वड पग पाखती वींटिसिई तेतलां वरस हूं घरि रहिसु।' तिसिई बालक तांतणा लेई बापना पग पाखती तांतणा वीटतउ मानइ कहुइ जउ, 'मइ बाप बांधिउ छइ। किम जासिइ ?' पछइ आईकुमार जउ पग जोइ, तु बार वड बालकि पग-पाखती वीटचा छइ। तेह-भणी बार वरस घरि रहिउ। इम चउ-वीस वरिस घरि रही, रात्रिइ चींतिववा लागउ, 'आगिइ तां मिन करी चारित्र विराधिउं, तेहल्याई अनार्यदेशि ऊपनउ। हिवइ तु मइ कायाइ करी चारित्र विराधिउं, तु हिवइ हूं किम छूटिसु ?' इम विमासी श्रीमतीनइ पूछी, प्रतिज्ञा पूरी। वली मुनिवेष लीधउ।

पछई पृथिवी-माहि विहार करिवा लागड, राजगृहनगर-भणी चालिउ । तिसिइं अंतरालि आपणड सामंत पांच सह चोर परिवरिड देखी पूछइ, 'ए कुम्हे सिउं मांडिउं ?' तिवारइं ते सामंत कहिवा लागड, 'जिवारइ तुम्हे आदनपुर-हूंता चाल्या, तिवारइ अम्हे चोतिवउं— पाछा राजा-कन्हइ जासिउं तु ए राजा मारिसिइं । पछइ तुझ केडिइ अम्हे नीकल्या । पणि तृं अम्हे पामिउ नही । निर्वाह तु हुइ नही । पछइ अम्हे चोरी मांडी । आज अम्हे तृनइ उलखिउ वांदिउ । हिव धर्म देखाडि, जिम अम्हे पडिवजउं ।' पछइ आईकुमार चोर-प्रति कहइ, 'ए संसार-माहि दसे हप्टांते करी मनुष्यनउ जन्म दोहिलउ छइ । वली तिहां धर्मनी सामग्री दोहिली । तेह-भणी प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह-हूंता विरमउ ।' इत्यादि उपदेश सांमली तेह हल्कर्मी जीव पांच सह चोर चोरी मूंकी आई कुमारनइ कहइ, 'आगइ अम्हारइ तृंह जि स्वामी हूंतु । हिवडां पणि तृंह जि स्वामी ।' इम कही चारित्र लेई श्री माहावीरनइ वांदिवा-भणी जेतलई राजगृह द्वकडा आवईं, तेतलड़ अंतरालि गोसालउ मिलिउ । तिसिइ ते साथि वाद करी आई कुमारि ते निरुत्तर कीधउ ।

पश्चइ आई ऋषि हस्तितापसाश्रमि आव्यउ । हिवइ तिहां जे तापस छइ ते इम कहइ, 'घणा जीवना वध-पाहि एक जि मोटा जीवन वध मलउ ।' इसिउं मन-माहि आणी एक मोटउ हाथीउ हिण उछ , एक आणी बांधी मूकिउं छइ लोहने मार-सहस्ते । तिसिइं ते हाथी आई. कुमार आवतउ देखी चींतवइ जउ, 'किमइ ए मुनिनइ हूं बांदउं ?' तिसिइं मुनिना प्रभाव लगी हस्तीनां सर्व बंधन त्रूटां । पछइ हस्ती महातमा-मणी घायउ । लोक हाहारव करिवा लागउ । तेतलइ हस्तो प्रणाम करी ऋषि-आगलि उभउ रहिड । ए स्वरूप देखी सर्व तापस हिष्या

१. A. लागी २. L. पाहुंति

हूंता आईकमुनिनइं प्रणाम करी उपदेस सांभली प्रतिबोधाणा हूंता श्री महावीरना समवसरण-भणी चाल्या । ए वात सांभली राजा श्रेणिक, अभयकुमार सर्व ते मुनिनइ वांदी करी कहिवा लागा जउ, 'महात्मन! ए आश्चर्य गाढउं, जे हाथीनां बंधन छूटां ।' तिवारइं ऋषि कहिवा लागउ, 'ए सर्व सोहिलउं, पणि जे बेटइ सूत्रना तांतणा पग-पालती वीट्या ते त्रोंडी न सक्या ।' पछइ आईकुमारि आपणउ मूल-हूंतउ संबंध कहिउ । सर्व सभा हर्षित हुई । अभय प्रसंखा लागउ । तिसिइ मुनि कहइ, 'तइं जे अनार्यदेशि प्रतिमा मोकली तेइ लगइ तुहे मुझ-नइ कउण कउण उपगार न कीधउ ! अपि तु सर्व कीधउ । अनइं महं जे धर्म उलिखिउ, महं जे चारित्र लीधउं, ए सर्व अभयकुमार ! ताहरउ प्रसाद ।' पछइ राजा श्रेणिक, अभय-कुमार मुनि वांदी आपणइ आपणइ स्थानिक गया । आई क्ऋषि समवसरणि आवी सम्यग् चारित्र पाली मोक्षनु भाजन हुउ ।

पत्थावि 'ते पयावो खिप्पं गच्छंति अमरभुवणाई' –हिव जे सामान्य जीव चारित्र-हूंता पाड़ीई तेहन्त स्युं कहिवउं १ जेहनइ परमेस्वरनइ हाथि दीक्षा हुई तेह इ विषए पाड़या ॥ इति श्री खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिनइ आदेसि वा० मेरुपुंदरगणिना विरचित श्री शीछोप-देशमालाबालाविबोधि श्री आर्दकऋषि कथा समाप्ता ॥ १४ ॥

华

पइ-दिवसं दसदस-बोहगो वि सिरि-वीरनाह-सीसो वि । सेणीय-सुड वि सत्तो वेसाए नंदिसेण-मुणी ॥३१

व्याख्या :- प्रति-दिवस=दिवस प्रति दस-दस जीवनइ प्रतिबोधनउ देणहार, श्री महावीरनउ शिष्य, श्रिणिकनउ पुत्र नंदिषेण ऋषि एहवउ इ वेशानइ घरि बार वरस रहिउ। ते मावार्थ कथा- हुंतउ जाणिवउ। हिवइ ते नंदिषेणनी पूर्वभव-सहित कथा कहीइ -

[१५. नंदिषेणनी कथा]

कुणिहि एकणि देसि को एक ब्राह्मणइ याग करिवा मांडिउ । पछइ ते यज्ञपाटकनी रक्षा-भणी काई एक दास राखिउ । पणि ते दास जिनधर्म-वासित छइ । तीणइ ब्राह्मणनइ कहिउं, 'हूं तउ चीतवउं, जउ तुम्हारइ याग करतां अन्नादिक जे कांई ऊगर इ, ते मुझनई जउ दिउ तउ रहउं।' पछइ तिणि बाम्हणिइं पतगरिउं। तिसिइ तिणि ब्राह्मणि जे विद्रांस, जे वेदना भणणहार, जे यागिकियानइ विषइ कुशल छइ, ते तेडचा मधुवर्कादिक योग्य। तेह-पाहि हवन-विधि करावीइ, अतिथि जिमाडीइ शालि, दालि, मोदके करी। इम जिमाडतां जि कांई प्रामुक आहार ऊगरइ ते दास लहइ । पछइ ते दास जे मुसाधु-चारित्रीया तेहनइ आगणा भाग-माहि दान दिइ। अन्नगान-चस्त्रादिक यथा-योगि अवसरिइ दीधा पछी वाँदीनइ वली कहइ, 'बली अनुप्रह करिज्यो।' पछइ ते दास आयुनइ क्षयि मरी देवलोकि देव ऊपनु। तिहाना सुख भोगवी प्रापुक-दाननां फड़-लगी राजा श्री श्रेणिकनइ घरि नंदिषेण एहवइ नामि पुत्र हुउ। क्रमिइ यौवनावस्था पामी। तिसिइ राजाइ नंदिषेणनइ पांचसइ कन्या परिणावी।

इसिइ प्रस्तावि गर्जेंद्र एक पांच सई हस्तिनीइ परिवरिउ सल्लकी-वन-माहि क्रीडा करइ। तिसिइं हाथोइ मन-माहि चीतिवर्ड, 'रखे कोई नवउ हस्ती जन्मीइ जे मुझनइ' हणीनइ यूथनउ नायक हुइ।' तेह-भणी जे जे हस्तिनी पुत्र जन्मइ ते ते विणासइ। इसि ते यागनछ

१. P. L. मझनइ K मोनइ

करणहार ब्राह्मणनउ जीव मरी हाथिणीनी कृत्विह अवतरिउ तेणइ हाथिणीइ 'चीतिविउं, 'जेतला मइं पुत्र जिण्या, तेतला इणि हाथीइ मार्या । तु हिव हूं कीणइ कइ उपाय करी ए गर्भ राखाउं ?' पछई तिणी हाथणीइ माया मांडी, पिग खोडी हुइ । हाथीइ जाणिंउ—एहनउं पग दुखइ छइ । पछई एक दिन अंतरालि करी हाथीनइ मिल्ड, वि दिन, त्रिण्णि दिन करी—इम हाथीनइ वेसास ऊपजाविउ । ईणी स्त्रीए कउण कउण न वंचीइ ? इम प्रसवनइ समइ तृणनउ पूलउ मान्यइ करी हाथिणी तापसनइ आश्रम आवी । तापसनइ पगे लागी आपणउ माव जणाविउ । तापसे जाणिउं जउ—ए अम्हारइ शरणइ आवी । पछइ आस्वासना देइ कहिउं, 'वित्त ! सुखंड निर्मय थकी रहि' । इसिइं हाथिणीइ पुत्र जायउ । ते पुत्र आश्रम मूकी हाथिणी यूथमाहि गइ । पछइ तापसे ते हाथीउ पालिउ । एक एक दिननइ अंतरालि हाथिणी दूषपान करावी जाइ । इम करतां मउडइ मउडइ हाथीउ वािचा लागउ । पछइ जिम तापस ब्रक्षनइ सीचइ, तिम ते हाथीउ सुंडि पाणी भरी झाडनइ सीचइ । पछइ तेहनइ सेचनक ए नाम तापसि दीघंउ । सात हाथ ऊचउ, त्रिण्णि हाथ पहुलउ, लघु-गाविड, पिंगल-नेत्र, सप्तांग-सुन्दर, च्यारि सई चऊआलिसे लक्षणे संयुक्त, मद्रजाती, मदोन्मत्त — एहवउ हाथीउ हुउ ।

तिणि समइ पिता हस्ती आपणइ जुथि परिवरिउ नदीनइ तिट पाणी पीवा-भणी आविउ । तिसिई सेचनक पणि तिहां आगइ पाणी पीतउ हूं तउ । तिणि आवतु देखी रीस-लगइ सबलगणि यूथनउ अधिगति हाथी हणी आप यूथनउ नायक हुउ। पछइ सेचनिक मातानु पूर्विलंड संबंध जाणी मन-माहि चींतिवड, 'जिम हूं ए आश्रम-माहि छानंड राखिड, तिम मुझ ऊगरि कोइ हस्तिनो पुत्र राखिस्यई । जिम मई पिता विगासिउ,तिम मुझनई पणि कोई विणासिसिई । तेह-भणी ए आश्रम भांजरं।' एहवरं विमासी सेचनक हस्ती आवो वृक्ष पाडिवा लागउ, तापसनां घर भांजिवा लागउ। पछइ तापसे जई राजा श्रेणिकनई कहिउं, 'वन-माहि सर्व-लक्षण-सम्पूर्ण हाथीउ एक आव्यउ छइ।' ए वात सांभली च रुग-बल-सहित राजा वत-माहि आवी, अनेक पास सज्ज करो, हाथीउ बांघी नगर-माहि महा आलानस्तम्म छ तिहा आणी बांधिउ । पछ हाथीनउ पराक्रम सर्व भागउ । आंखि मीची रहइ । तिसिइ ते तापस हाथी-समीपि आवी कहिवा लागा, 'तइं जउ अम्हारा आश्रम मांजां, तु त्ंजोइ-न ईणइ स्तंभि बांधिउ। अम्हे तूंनइ लालिउ-पालिउ, अम्हनइ ज तूं आपणउ न हूउ, तु ए फल भोगवि ।' तिवारइं हस्तीइ चौतविउं, 'हूं जे बंधाणउ, ते ए तापसनउ प्रमाण।' पछइ रीस ऊपनी । स्तम्भ उन्मूली, बन्धन त्रोडी, वली आश्रमि आवी उटज-वृक्ष सर्व भांजिवा लागउ । तेतलइ राजा श्रेणिक तारसना आश्रम राखिवा-भणी हाथीयानई झालिवा-भणी गजारूढ हुंतउ वन-माहि आविउ । पणि हाथीनइ कोई झाली न सकइ । तिसिंह श्रेणिकनउ पुत्र नंदिषेण कुमार तिहां आविउ । तिसिइ भवांतरनउ संबंध देखी जातीरमर्ण ज्ञान ऊपनइ नंदिषेणनइ वसि हाथीउ हुए । पछइ नंदिषेणई हाथोउ नगर-माहि आणी आलानस्तंभि बांधिउ । पछइ राजाइ सर्वे लक्षण संपूर्ण जाणी सेचनक पट्टहस्ती कीघउ ।

अन्यदा श्री महावीर राजग्रह-नगरि गुणवीलइ चैत्य आवी समववर्या । तिसिइ राजा श्रेणिक सांतःपुर पुत्र-पौत्र-परिवरिंउ स्वामीनइ वांदी आगल्जि बइठउ । जगन्नाथइ धर्मोपदेश दीघउ ।

१. K मां 'पछई.....ऊपजाविउ ।' एटलो पाठ नथी.

ते उपदेश सांभरी श्रेणिकि सम्यक्त्व लीघउ, अभयकुमारादिके श्रावकनउ धर्म आदरिङं । पछंड सपरिवार आपणइ घरि आविउ । तिसिइं नंदिषेण पितानइ प्रणाम करी कहिवा लागउ, 'स्वामिन! एतला दिन तुम्हे लालिउ-पालिउ, परिणाविउ ! हिवइ श्री महावीर-समीपि जई दीक्षा लेस्।' पछइ मातापित ए समझाविउ तुहइ बलारकारि समोसरणि जई दीक्षा लेवा लागउ। तेतलइ आकाशि देवताए वाणी बोली ज3, 'भोगहली कर्म भोगन्या पाखइ नही छूटइ। दीक्षा म लेसि । घर रही भोग-कर्म भोगित ।' तिसिइं नंदिषेग साहस-लगी कड्इ, 'कर्म माहर'ड सिखं करि-सिइ ?' एहवउं साहस करी दीक्षा लीघा । जगन्नाथइ पणि कहिउं तुही कहइ, 'हाथीनइ दांत सामुहा हुई पणि प्टइ न हुई ।' पछइ महा तिप करी डील शोषिवा लागउ । जेतलइ भोगनी इक्रा ऊपजइ, तेतलइ रूधीनइ प्रेतवन-माहि जई आतापना करइ, पणि निवर्तेइ नही । पछः मर-णांत उपाय चोतवइ, पणि मरइ नहीं । पछइ कुंडिनपुरि नगरि छठनइ पारण**इ एकाकी** वेश्या-नइ घरि जई धर्मलाम कहिउ । तैतलइ पणि गणिका कहइ, 'अम्हारइ धर्मलाम न जोईइ, द्रव्यलाभ जोईइ ।' तिसिइ नंदिषेणि नेव दूतउ तृणउ एक काढी नांखिउं । तेतलई बार कोडि सवर्णनी राशि पडी । पछइ नंदिषेण जावा लागउ । तेतलई धाई पगे वलगी इसिउं कहइ, 'स्वामिन! हिव किमइ जावा लहिसिउ १ ए धनराशि भोगवउ ।' पछइ तेहनइ वचिन भोगः हली कर्मनइ उदिय देवतानउ वचन चोंबारी, जाणतउ इ हूंतउ तेहनइ घरि रहिउ । पणि 'दिन प्रति दसन्दस जीवनइं प्रतिबेभ्धउं तु भोजन कहं, जहीइ न प्रतिबोधउं तहीइ है दीक्षा लेउं? -एहवड अभिग्रह लेई नंदिषेण ते वेश्यानइ घरि रहिउ, भोग पंचविध भोगवइ । हिवइ दिन प्रति दस-दस जीव प्रतिबोधी स्वामी-कन्हलि मोकलइ । इम घणउ काल गिउ । आपणइ धर्म स्वउ पालइ । इम एक दिनि नव जीव प्रतिबोध्या, दसमउ टाक-देशनउ जीव आविउ । तेह-नइ घणउ समझावइ, पणि समझइ नहीं । तेतल्ड रसवती नीपनी । वेश्याई दासि-हाथि कहाविउ. 'स्वामी! रसवती ताढ़ी हुई छइ, तुम्हें आवउ।' तेतलइ नंदिषेणइ कहिउं, 'नव जीव प्रति-बोध्या, पणि दसमउ जीव थाकइ ।' इसिइ कर्म क्षय गयउ । तिसिइ वेश्याइ हासा लगी कहिउं, 'स्वामी ! आज दसमा जीव तुम्हे जि ह्या, दीक्षा लिउ ।' इणि वचनि श्रेणिकपुत्र नंदिषेण श्री महावीर-समीपि जई, आलोचना लेई, चारित्र आदरी, दुःसह परीसह सही, देवलोकनां सुख-न इ भाजन हूउ । तु जो उ, विषय एइवा इ सत्पुरुषनइ विडंबना ऊपजावइ, तु अनेरानउ सिउं कहिवड ! ॥ इति नंदिषेण-कथा संपूर्णा ॥ १५ ॥

वली विषयनइ दुर्जयपणउं देखाइतउ कहइ--

जड-नंदणो महप्पा जिण-भाया वयधरो चरम-देहो । रहनेमी राइमई(१ इइ) रायमइं कासि ही विसया ॥ ३२

ठ्याख्याः - यादववश-मंडन, समुद्रविजय-नंदन, महात्मा, उपशांत-चित्त, जिन श्री नेमिनाथनउ लघु भाता, वतनउ घरणहार, चरमदेह=तीणइ जि भिव मोश्च जासिइ, एहवउ इ रथनेमि षउ राजीमती-ऊपरि राग करइ, तु ए विषयनइ ही=इसिइ खेदिइं धिग्=धिक्कार हु । जीणइ ए इंद्रीने विकारे एहवउ रथनेमि विकारपणउं पमाडिउं, तु ते विषय किम जीपाइ १ ते भावार्थ कथा-हंतु जाणिवउं ।

हिवइ ते रथनेमिनी कथा कहीइ -

[१६. रथनेमिनी कथा]

द्वारिका-नगरीइ श्री नेमीश्वरि राजीमती परिहरी, जिवारइ श्रीगिरिनारि जई दीक्षा लीधी, तिवारइ पाछिल रथनेमि राजीमतीनइ विषइ अनुरक्त हूंतउ खादिम, स्वादिम, वस्त्र, अलंकार इत्यादि राजीमतीनइ मोकलइ । पणि राजीमती तु सरल स्वभाव-लगइ जाणइ जउ – मुझनइ देवर-भणी ^बबोलबांह दिइ छइ। इम एकदा प्रस्तावि रथनेमिइ राजीमती-आगलि कहिउं, 'नेमिनाथइ तु दीक्षा लीधी अनइ अजी तूं तु कूं आरी छइ, मुझ साथिइं पाणिग्रहण करि ।' तिसिइं राजीमतीइं रथ-नेमिनड एहवड ^२मनोरथ देखी रथनेमिना पतिबोध-भणी खीर, खांड, घी जिमी, पछइ मयणहल-नड गंध लेई, तत्काल स्वर्णना-थाल ऊपरि ते आहार विमेड । पछइ रथनेिम तेडीनइ कहिउं जड, 'ए आ**हार जि**मिइ ।' ईएाइ वचनि क्रोध•लगइ रथनेमि कहिवा लागउ, 'हे सुभगि ! हुं किसिउं स्वान-पाहिइं³ अधिकउं हुउ, जे विमेउ आहार जिमुं ?' तिसिइ राजीमती कहइ, 'तुम्हारउ वडड भाई श्री नेमिनाथ, तीणइ आठ भव-^४तांई माहरउ अंगीकार करी, नवमइ भवि हूं त्यजी, तु हूं वम्या आहार सरीखी छउं, किम तुम्हे माहरउ अंगीकार करिसिउ ! जोउ नइ, हाथीइ चडी रासिमि किम चडीइ ? अमृतपान करी विषनंउ पान कउण करई ? सुवर्ण मूंकी काच-कथीर कडण पहिरइ ? तिम नेमिकुमार मूंकी अनेरानी कडण वांछा करइ ?' इत्यादि हण्टांते करी २थ-नेमि प्रतिबोधिउ । तिसिइं श्री नेमिनाथनइ श्री गिरिनारि—ऊपरि केवल-ज्ञान ऊपनउं । पछइ राजी-मतीइ स्वामीनइ ज्ञान ऊपनउं सांभली, राजीमती नेमिनाथ-कन्हइ जई दीक्षा लीधी । रथनेमिडं पणि चारित्र लीघंउं । इम एकदा प्रस्तावि विहार करतां वरसालई श्री नेमिनाथ गिरिन।रि आवी समोसिरिया। रथनेमि पणि स्वामी साथिइं आविउ । पछइ श्रो गिरिनारिनी गुफा-माहि जई काउ-सगा करी ध्यान-संलीन हुंतु, तप करिवा लागउ ।

पहवइ प्रस्तावि वर्षाकाल-समइ राजीमती परमेश्वरनइ वांदिवा-भणी पर्वति चिडवा लागी । तेतलई मेह आविउ, राजीमतीनां सर्व वस्त्र भीनां । पछइ राजीमती निवरं जाणी तेह जि गुफा-माहि पइटी । तिहां अन्धकार-लगइ रथनेमि माहि न दीठउ । पछइ निवरं जाणी राजी-मतीइं आपणा अंगनां सर्व वस्त्र ऊतारी विरलां घात्यां । तिसिइं रथनेमि गुफा-माहि निराबरण राजीमती देखी कामांघ हूंतउ मिन चींतविवा लागउ, 'माहरउ जन्म सफल तु, जउ हुं एहनउ अंगीकार करउं ।' पछइ रथनेमि आगलि आवी राजीमतीनइ आपणउ अभिप्राय जणाविउ । तेतलइ राजीमती तत्काल वस्त्र पहिरी रथनेमिना प्रतिबोध-भणी कहिवा लागी, 'भो महानुभाव ! यहस्थावस्थाइं जु मईं तूं नादरिउ, तुं हिव जोइ-न, चारित्र लीधइ किम तूं आदरिसुं ? पणि रथनेमि ! आपणइ हीयइ विमासि, तू केणइं कुलि ऊपनु छइ ! कहिनउ पुत्र ? कहिनउ भाइ ! पिता तउ समुद्रविजय, माता तउ सिवादेवी, भाई तु श्री नेमिनाथ, कुल तु अंधकृष्टिणानुं । अनइ हूं तु भोजगरायनइ वंसि ऊपनी । तु आपणपानइं एहवउं अधम-कर्म करिवा नावइ । पाधरा जे गंधननइ कुलि ऊपना सर्प, ते ही विमउं विष प्राणनइ त्यागिइं पाछउं न लईं । तु तुं किसिउं साप-पाहिइ अधम छइ, जे कउण भोग वली वांछुइ ? श्री दसवैकालिक सिद्धांत-माहि कहिउं—

१ K. बोलावइ छइ २ K. मनोगत भाव जाणी रथ०। ३. K पाहंति ४. K लगइ ५. L. K जाणी

पक्लंदे जलियं जोइं धूमकेडं दुरासयं ।
नेच्छंति वंतयं भोतुं कुले जाया अगंधणे ॥१
धिरत्थु ते जसो-कामी जो तं जीविय-कारणा ॥
वतं इच्छिस आवेडं सेअं ते मरणं भवे ॥२
अहं च भोगरायस्स तं च सि अंधगविष्हणा ॥
मा कुले गंधणा होमो संजमं निहुओ चर ॥३
जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छिस नारीओ ।
वायाविद्धो व्य हृढो अष्टिअप्पा भिष्ससिस ॥४

भो महापुरुष ! दोहिलंड मनुष्य-भव पामी, वली चारित्र तिहां दोहिलंड पामी, असार काम-भोगनी वांछाइं जन्म कांइ हारइ ! बाटी-वडइ अरहट कांइ वेचइ ! कउडीईं कांजि कोंडि कांइ हारिइ ! अनइ विशेषि महासतीनइ व्रत-भंगि नरगगति पामीइ । यतः—

> चेईय-दृव्य-विणासे रिसि-घाए पवयणस्स उड्डाहे । संजय-चडत्थ-भंगे मूलग्गी बोहिलाभस्स ॥

तेह-भणी अहो उत्तम पुरुष ! धीरपणउं आदरी सूधउं चारित्र पालि ।' एहवां अमृत-रस-सरीखां वचन सांभली रथनेमी मन-माहि चींतवइ, 'ए राजीमती स्त्रीइ हुंती धन्य, अनइ हूं पुरुष हूंतउ अधम जे एहवी वांछा करउं । अथवा जात्यरत्ननउं मूल कउण जाणइ ? तु हिवइ एह जि राजीमती मुझनइ गुरुणी , एह जि सगी, एह जि मित्र, जीणइ हुं नरकरूप कुआ-माहि पडत उराखिउ।' इत्यादि घणा उपदेस मन-माहि आणी, श्रीनेमिनायना चरण-समोपि आवी, आपणा पाप आलोई, निंदी, गरहो, च्यारि वर्ष-सइनइं प्रांति एक वरस छन्नस्थाणउं पाली, पछइ केवलज्ञान पामिउं। पांच-सइ-वरस नताई एवंकारइ नवसइं एक वरस एतलउं सर्व आयु पाली, रथनेमि मोक्ष पहुतउ।। इति श्री रथनेमि-कथा समाप्ता।। १६।।

तु जोड, एहवड उत्तम चरम-सरीरी रथनेमि तेही विषए पराभविड, तु बोजा जीवनी कडण वात १

मयण-पवणेण जइ तारिसा वि सुरसेल-निच्चला चलिआ । ता पक्क-पत्त-सरिसाण इयर-सत्ताण का वत्ता ।।३३

व्याख्या:- मदन=कंदर्प, पवन=वायु तिणि करी सुरशैल=मेरुपर्वत सरीखा छइ जे निश्वल= धीर पुरुष आर्द्रकुमार, नंदिषेण, रथनेमि प्रश्वति महामुनि तेहवा इ जु चलाव्या, तु बापडा अपर जीव पाना पान सरीखा मदन-वायइ कांपतां सन्मार्ग मूंकइ, वृक्ष-हूंता खडहडी पडइ, तेहनी कडण बात ? तेहनइ पडतां बार कांई न लागइ । यतः-

> वायुना यत्र नीयन्ते कुञ्झराः षष्टिहायनाः । गावस्तत्र न गण्यन्ते मशकानां च का कथा ।।

हिवइ कंदर्पनइ जीपी न सकीइ ते कहइ-

जिप्पंति सुहेणं चिय हरि-करि-सप्पाइणो महाकूरा । इक्कं चिय दुज्जेओ कामो कय-सिवसुह-विरामो ॥३४

१. L. पाळ । २. L.A. मां 'एह जि सगी' नथी. ३. K. जेणीइ ४.K.लगइ

व्याख्या:— महाक्र्=दुष्ट हिंसक जीव हरि=सिंह, करि=हस्ती-साप-प्रमुख सर्व जीव सुखिइं जीपीइ=विश कीजइ, पणि एक कंदर्प जि दुर्जे:=जे जीपी न सकीइ । पणि ते कंदर्प केहवउ छइ ? — 'कय-सिवसुह-विरामो'=कीषां मोक्षसुखनइ अंतराय छइ=मोक्षसुख पामिवा न दिइ । हवइ जे एहवा कंदर्पनइ जीपइ तेहनइ माहरउ प्रणाम ।

ते कहइ---

तिहुयण-जगडण-उब्भड-प्याव-प्यडो वि विसम-सर-वीरी । जेहिं जिओ लील ए नमी नमी ताण धीराण ॥३५

ह्याख्या:— जीणइ महात्माए त्रैहोक्यनइ जगडण=पीडणहार, उब्भट=प्रचंड प्रताप, तिणि करी विख्यात एहवउ विषमसर=कंदर्पहर वीर=सुभट एकांगवीर जीणे भारयवंते जीतउ छइ तेहनइ नमस्कार हु । त्रैहोक्य-माहि यश शीलवंत जि नउ विस्तरइ ।

निय-सील-बहुल-घणसार-परिमलेणं असेस-भुवणयलं । सरहिज्जइ जेहि इमं नमो नमो ताण पुरिसाणं ॥३६

व्याख्याः— निज=आपणउं शील=मन, वचन, काय त्रि-करण-सुद्ध, बहुल, सीलनतरूप उ-ज्जबल, घनसार=कपूर जस-रूपीइ, परिमल=वासि करी, असेस=समस्त पृथ्वीमंडल सुगंध कीजइ जीणइ पुरुषे ते सत्पुरुषनइ नमस्कार हु ।

वली शील पालतां दोहिलूं ते कहइ-

रमणी-कडक्ख-विक्खेव-तिक्ख बाणेहि सील-सन्नाहो । जेसि गड न भेर्य नमो नमो ताण सुहडाणं ॥३७

व्याख्याः— ते पुरुषनडं शील-सन्नाह=ब्रह्मचर्यस्य कवच, रमणी=स्री, तेहना कटाक्ष-बाण तीला, तेहे करी शील-सन्नाह भेदाणउ नहीं जेह सुभटनड, तेहनइं नमस्कार करिया योग्य । वली एहं जि दृष्टांतिइं करी दृढइ—

> निय-धूआ नियल्वावहत्थियासेस-सुंदरी-वग्गा । घण-सोहग्ग-निरुवम-पेम्मा छावन्न-रुइ-रम्मा ॥३८ जर-जञ्जर-थेरी इव परिहरिआ जेण नेमिनाहेणं । बंभवय-धारीणं पढमोदाहरणमेस जए ॥३९ (युग्मं)

व्याख्याः— नृप=राजा श्री उग्रसेन, तेह्नी बेटी राजीमती, निज=आपणइं रूपिइं करी, जीती=निर्जणी, सकल रंभा-तिलोत्तमादि देवसुंदरी=देवांगनाना समूह छइ। वली केह्वी ! 'घणसोहग्ग'=घणउं सौभाग्य, तिणि करी सहित छइ। वली केह्वी ! निरुवमपेम्मा=उपमान्तीत नव भवनउ प्रेम=स्नेह जे साथइ बांधिउ छइ। अनइ वली लावण्य-सहित सरीरनी रुचि= कांति, तिणि करी रम्य=मनोहारिणी। एहवी इ राजीमती जीणइ श्री नेमिकुमारि हेलाइं परिहरी= रयजी ! किह्नी रीतिइं ! 'जर-जडजर०'=जरा कहीइ वृद्धपणउ तिणि करी जाजरउं, इंद्रियनी निवलाईइ करी वली पिलत तिणि करी दीला हूया छइ अंगना अवयत एहवी जे वृद्धा स्त्रो, तेहन्नइ जिम पंचवीस वरसनु पुरुष पिहरइ, तिम श्री नेमिनाथि राजीमती परिहरी। एहवा ब्रह्मव्रत-धारी श्री नेमिनाथ, तेहनूं पहिलउं उदाहरण जाणिवउं। एतलइं गाथानउ अर्थ हूउ। हिव विस्तर अर्थ कथा-दूंतउ जाणिवउ। ते नेमिचरित्र नवभवगर्भित संक्षेपइं करी कहीइ—

[१७. नवभव-गर्भित नेमि-चरित्र]

जंबूदीपि भरतक्षेत्रि अचलपुर नगर। तिहां विक्रम राजा राज्य करइ। तेहनइं ग्रहांगणि धारिगो भार्या, सकर सोने गुणे करो अलंकृता। अन्यदा रात्रिनइ समइ निद्रा-माहि सहकार-नउ वृक्ष एक दीठउ। पणि वली कोई एक दिन्य पुरुष आवी घारणोनइ इसिउं कहइ जड, 'ताहरई आंगणइ सांप्रत ए वृक्ष वावंड छउं। वली केतलइ कालि अनेथि वाविसु। इम ए वृक्ष नव वार वावीसिइं अनइ एहनां फल उत्कृष्टां दिनि दिनि वाधतां होसिइं।' इसिइ घारणी जागी। प्रभाति राजानइ सडणानी वात कहीं। पछइ सुपनपाठके कहिंडं, 'तुम्हारइ पुत्रनी प्राप्ति होसिइं। पणि नव वारनड अर्थे जाणी न सकीइ। ए वात तु ज्ञानी जाणइ।' पछइ धारिणी गर्भ घरती पूरे मासे भलइ दिवसि पुत्र जायउ। पछइ राजाइं दस दिवस पुत्र-जन्मना उत्सव करी घन एहवंड नाम दीधंड। पछइ बालक वाधतड वाधतड यीवनावस्थाइं आविड।

एहवइ प्रस्तावि कुसुमपुरि नगरि, राजा सिंह विमलाराणी सहित सुखिइं रहतां, धनवती पह्वइं नामि पुत्री जाई । ते पणि धनवती वाधती वाधती सकल कला अभ्यसती यौवनावस्थाइं आवी । इम एकदा उद्यान-वन-माहि कीडा-भणी गई, तिहां धनवतीई कीडा करतां कोई एक पुरुष हाथि पाटी लीधइ दोठउ । तिसिइं धनवतीई ते पुरुष-कन्हिल बलात्कारि पाटी लीधी । पछइ तिणि पाटीइ लिखिउं छइ जे रूप ते बोई पुरुष-प्रति कहिवा लागी जउँ, 'ए रूप कहिनउ आश्चर्य-कारक ते कहइ !' तिवारइ तिणि पुरुषिइं कहिउं, 'अचलपुर नगरनउ अधिपति विक्रमराजानउ पुत्र धन, तेंहनउं ए रूप ।' पछइ ते धननउं एइ रूप देखी रोमांच अंगि क्यनउ । वली-वली रूप-सामहउं जोती मदनने बाणे पीडी हुंती कमिल्नी सखा प्रति कहइ, 'एहवउं रूप मई कहीई दीठउं नहीं । ए रूप जोतां मुझनइ जे आनंद ऊपजइ छइ ते परमेश्वर जाणइ ।' पछइ कमिलनी सखी साथिइं धनवती घरि आवी, पणि बोल्ड नहीं, चालइ नहां, सुइ नहीं । एहवउं स्वरूप देखी कमिलनी पूछइ, 'हे सिल ! ए सिउं जे त् बोल्ड नहीं ! मुझ आगिल तु ताहरइ काई गोप्य नथी ।' तुहइ धनवती बोल्ड नहीं । पछइ कमिलनीई कहिउं, 'जाणिउं, ते धन जे चित्रि लिखिउ दीठउ, तेहनउं ध्यान करइ छइ रात्रिदिवस ।' इणई वचनि धनवतीई नीचउं माथउं कीधउं । पछइ कमिलनी कहइ, 'सिल ! घीरपणउं आणि ।'

तिवार पछी घनवती मा-कन्हइ आवी । तिसिइं माई सालंकार सामरण करी पिता-समीपि मोकली । पुत्री देखी पितानइ वरनी चिंता ऊपनी । तेतल्रइ पुण्यना योग-लगइ विक्रमराजा-नउ दूत राजकाज-भणो आविउ । ते जेतल्रइ राजकाजनी वात कही ऊभउ रहिउ, तेतल्रइ वली राजाई पूछिउ, 'दूत ! कांई कउतिग दीठउं पृथ्वी-माहि ?' तेतल्रइ दूत प्रणाम करी किहिशा लागउ, 'राजन ! राजा विक्रमनउ पुत्र धन अनइ ताहरी पुत्री धनवती ए बिहुंना संयोग जउ मिल्रइ तु एतला उपरांत कांइ कुतिग नथी ।' तिवारइं राजा कहिशा लागउ, 'अहो दूत ! तई माहरा मननी वात जाणी । जु ए वात कही तु हिवइ ए वात सफल करि ।' पछइ ए वात सखीना मुख-इतु धनवतीई सांभली मिन हर्ष धरइ। तिसिई दूत-नई राजाई कुंकुम अणावी लेख लिखी दीधउ । पछइ दूति जई अचलपुरि राजा विक्रमनई ए

१. K. क्रीडानइं. २. K. जइ

वात कही जड, 'घन अनइ धनवतीनइं ए संयोग मेलड । आगइ तुम्हारइ स्नेह छइ। विशेष तु धनवतीनइं संयोगि स्नेह गाढेरड वाधिसिइ।' पछइ राजाइं ए वात पिडवजी, लेख लिखी, तेह जि दूत पाछउ चलाविउ। तेतलइ धनकुमार पोलिइं बइटड देखी दूति प्रणाम करी सर्व वृत्तांत किहेड। पछइ धनकुमारि पणि धनवती-भणी आपणड मुत्तांफलनड हार अनइ लेख ते दूत-हाथि छानड दीघड। पछइ दूति सिंहराजानइं आवी सर्व बात कही संतोष ऊपजाविउ। पछइ दूतिई प्रछन्न धनवतीनइं लेख अनइ मोतीनड हार दीघड। धनवतीई लेख बांची हार आपणइ गलइ घातिड, मननइ कहइ, 'धनकुमारि मुझनइ ए संचकार दीघड।' पछइ दूतनई 'आपार-संतोषि दान देई विसर्जिड।

पछइ सिंहराज।इं आपणउ प्रधान सज्ज करी अनेक हस्ती-तुरंगम-धन-कनक-मणि-माणिक्य-मुक्ताफल- सहित धनवती स्वयंवरा चलावी । मार्ग उल्लंघी क्रमिइं अचलपुरि आन्या । पछइ भ-लइ दिवसि पा.णेग्रहनउ उत्सव हुउ ! आपणपउं कृतार्थपणउं मानता महा रुद्धिनइ विस्तारि घरि आव्या । सुख अनुभवता एकदा प्रस्तावि राजा विक्रम धन-धनवतीई परिवरिउ गर्जेद्रि बइसी जेतल्रइ वन-माहि गयउ, तेतल्रइ तिहां चतुर्ज्ञानी श्री वसुंधराचार्य वन-माहि देखी राजा विक्रम पणि सपरिवार तिहां वांदिवा आविउ । उपदेस सांभली देसनानई प्रांति राजा विक्रम ज्ञानी-क्रन्हड पूछइ, 'स्वामिन ! घन जहीइ गमि आविउ, तहीइ मातानइ सउणा माहि आवी एक पुष्प इ-सिउं कहइ, 'एकवार आंबउ आंगणइ वावउं छउं, वली आठ वार वावीसिइ ' इम जे कहिउं, तेहनउ कउण विशेष ?' ज्ञानी कहइ, 'ए नव भवनउं स्वरूप सूचविउं।' पछइ राजादिक सह आपणइ आपणइ घरि आविउ । अन्यदा धन-धनवती उद्यानवन-माहि आव्या । तिहां एक म-हात्मा मूर्छोइ अचेत पडिउ देखी सीतल जल-वायुने योगे सचेत की घउ । पछइ ते महात्मा कन्हइ धर्मोपदेस सामली, घरि तेडी, दूध वहिराविउं। मास-दिवस राखी महात्मा-कन्हलि पूछइ, 'तुम्हे अचेत थई कांइ पडिया हूंता ?' तिसिइ महात्मा कहइ, 'संसार-हूंतउ थाकउ, तेह-भणी पर डिउ परमार्थ इतु । द्रव्य-इतु वात सांभलउ । नामि करी हूं मुनिचंद्र । संघात एक आवतउ हुंतउ ते साथि आवतां वाट-हूंतउ भूलउ । तृषाक्रांत इहां आवी पडिउ । ति वार-पछी तुम्हे जे उपचार कीधउ तिणि हूं सचेत हूउ । हिव तुम्हे गृहीधर्म, द्वादशव्रत-मूल सम्यक्त्व पडिवजउ ।' पछइ धन-धनवतीइ ते महात्मा समीपि सम्यक्तव लीधउं । पछइ विक्रमराजाई आपणउं राज ध-नक्रमारनइ देई चारित्र लीघर्ड । पछइ केतलड काल राज भोगवी घनवतीनड पुत्र जयंत, तेहनइ राज देइ, धन-धनवतीइ दीक्षा लेई, केतलंड काल आचार्यपद भोगवी, प्रांत-कालि मास-दिवस-सीम अणराण पाली, धन-धनवती मरी सौधर्मइ देवलोकि इंद्र-सामानिक देव हया ।

हसिइ वैताट्यपर्वति उत्तर श्रेणिइ स्र्तेजपुरि, स्र-नामा विद्याधर, विद्युन्मती भायी, तेहनी कृष्टिइ धननउ जीव देवलोकतु च्यवी ऊपनउ । पूरे दिवसे पुत्रनउ जन्म हूउ । नाम चित्रगति दीध । हिव ते वाधतउ वाधतउ संपूर्ण कला अभ्यसइ । इसिइ ईणइ वैतादिय दक्षण-श्रेणिइं अनंगसिंह राजा, शशिधमा भार्या, तेहनी कृष्टिइं सौधमें देवलोक-इतु धनवतीनउ जीव चवी, रत्नवती एहवइ नामिइं, घणा पुत्र-ऊपरि पुत्री हुई, संपूर्ण गुण-सहित वाधती वाधती यौत्रावस्थाई आवो । तिसिइ राजाइ पुत्रीनइ वर जोतां नैमित्तिक पूछिउं । तिसिइं

१ L. P. अपारि संतोषि, K. पारितोषिक दान.

नैमित्तिक कहइ, 'राजन ! सांमछि । जहीइ झुझ करतां ताहरा हाथ हूंनू खांडउं जे लेसिई आह नेरीश्वरि जेहाई माथई फूरुनी दृष्टि होसिई, ते ताहरी पुत्रीनउ पति मर्जार होसिइ।' ए बार सांनत्री राजाई नैमित्तक दानि करी संतोषिउ।

इसिइं भरतक्षेत्रि चक्रपुरि, राजा सुग्रीव, तेहनउ वि भार्या छइ, एक यशिश्वनी, बीजी भद्रा । ते बिहुनई सुमित्र अनइ पद्म एहवइ नामि बि पुत्र हूया । भद्रानु पुत्र पद्म यशिश्वनीन उपुत्र सुमित्र । हिव भद्रा चींतवइ, 'सुमित्र-थिकां माहरा पुत्रनह राज नहीं हुइ।' तेह-भणी भद्राइ सुमित्रनइ विष दीघउं। सुमित्र आकुलउ हुउ, तेतल्इ राजा तिहां आविउ । अनेक मंत्रतंत्र कीधा, पणि गुण न ऊपजइ । तिसिई लोके वात प्रकट कीधी जड, ' मद्राइं सुमेत्रनइ विष दीघडं ।' ए वात सांभली भद्रा नाठी । राजा सुमित्रनइ धर्मोषध कराविवा लागउ । वली सुमित्रना गुण चींतवी चींतवी रोवा लागउ। तिसिइ कउतिगीयाल चित्रगति विमानि बइठउ ते नगर-ऊपरि आविउ । नगरना लोक दु:खी देखी तिहां आवी लोकना मुख-इतु वात जाणी। जेतलइ मंत्र गुणी पाणीइ सुमित्र छांटिउ, तेतु-लइ सुमित्रनं विष कतरिउं । सुमित्र बइठउ हुउ । लोकना वृंद देखी कहइ, 'एवडा लोक सुझ-पाखती कांइ मिल्या छइ ?' तिसिइं राजाइं विष-प्रदान भद्राइं जिम दीधउं अनइ चित्रगृतिहं जिम विष वास्टिउं इत्यादि सर्भे वृत्तांत कहिउं । तिसिइं सुमित्र ऊठी विनयपूर्वक चित्रगतिनइ कहइ, 'तई जे उपगार की घउ, तीणइं ताहरउं कुल जाणिउं। परं तथापि आपणउं कुल प्रका-सउ ।' इसिइ चित्रगतिनइ से नकइ सर्व वात कहो । पछइ सुमित्रिइ चित्रगतिनइ भोजनादिक घणड विनय साचिवि । इसिइ चित्रगति चालिवा लागड । तिसिइ सुमित्र कहइ, 'हे मित्र ! सुयशा नामिइ केवली इहां आवणहार छइं ते वांदी पछइ घरि पहचिज्यो ।'

तिसिइं केवली आविड । राजादिक सर्व लाक वांदिवा गया । केवली उपदेस देवा लागउ । तिसिइ चिनाति गुहनइ वांदी सम्यक्त पडिवजइ । तिसिइं सुप्रीव गुहनइ वांदी पृछिवा लागउ जउ, 'भद्रा सुमित्रनइ विष देई किहां गई ?' तु केवली कहइ, 'नासता चोरे झालो । सर्व वल्ल आभरण लेई पालि-माहि लेइ गया । तिहां विजारा आव्या, तेहनइ हाथि भद्रा वेची । वली ते विणवारा हूंती नाठी । वन-माहि द्विइं दाधी । पछई मरी, पहिल्इ नरिंग गई । तिहां-हूंती तिर्यंच-माहि भमी, चंडालनइ घर भार्या हुई । तिहां सडिकनइ संबिधइं मरी, वली त्रीजइ नरिंग गई । इत्यादि अनंत दुक्ल पामिसिइ ।' इत्यादि उपदेस सांभली वैराग्य-लगइ सुप्रीव-राजाइ दीक्षा लीधी, सुमित्रनइ राज्य दीघउं । चित्रगति आपणइ नगरि आविड । पछइ सुमित्रइ ते पद्मभाईनइ केतलांएक गाम दीघां । पणि तु ही रीसाणउ हुंतउ नीकली गयउ ।

एहवइ प्रस्तावि अनंगसिंहनउ पुत्र कमल नामिइं विद्याधर, सुमित्रनी बहिन कलिंगराजानी भार्या अपहरी । तिसिइं सुमित्रनी प्रीते मिन आणी, चित्रगतिइं कमल विद्याधर-साधइं संग्राम मांडिउं । वेटानइ सखायित अनंगसिंह आविउ । तु ही तिहां चित्रगतिइं रणांगणि सर्व द्यास्त्र नीटालियां । तिसिइं रत्नवतीनउ पिता देवतादत्त खड्ग लेई वहरी चित्रगति-प्रतिइं कहइ, 'ओर ! नासि नासि, नहीतिर ईणइ खांडइ ताहरउ मस्तक-छेद थासिइ।' तिसिइं चित्रगति

¹ L. Pu. ०गति प्रति, २. L. नीटन्यां P नीटन्या.

हसीनइ कहिया लागउ, 'अरे ! तइ न सांमलिउं जउ – कायरना हाथनउं दास्त्र वीरनइं मंडन हुइ १' इसिउं कहितउ जि चितरानी परिइं ऊल्ली, चित्रगितइं अंघकार विकुर्वी तेहना हाथनउं खांडउं लीघउं । अनइ सुमित्रनी बहिन पणि लीघी । क्षणांतरि जउ जोइ, तु न ते खांडउं, न ते स्त्री । पछइ क्षण एक विषाद करी ते ज्ञानीनउं वचन चीतारिउं—'जे ताहरउ खांडउं लेसिइं, ते पुत्रीनइ मर्तार होसिइ'। पछइ हर्ष घरतउ चीतवइ, 'हिवइ ते खडूगनउ हरणहार मइ किम जाणीसिइं १ वली तां एक अहिनाण देहरइं कुसुमबृष्टिनउं छइ ।' तिसिइं चित्रगित सुमित्रनी बहिन अखंड—शील लेई आविउ ।

तिसिइं सुमित्र भगिनीनइ विरहइ पुत्रनइ राज देई आपणपे चारित्र लीघउं। नव पूर्व किंचित् न्यून सुमित्रिइं भण्या । तिसिइं सुमित्र गुरुनी अनुज्ञा पामी विहार करतउ मगध-गाम-बाहरि काउसिंग रहिउ । तिसिंइ उरमाई पद्म जे पूर्विइं रीस-लगइ बाहरि नीकलिउ हूंतउ, तीणई ते मुनि दीठउ । तेतलइ वयर जागिउ । तेणइ पद्मि आकर्णांत बाण मूंकी महात्मा हीइ तिम वीधिड, जिम ते पद्म नरिंग गयंड । ए भाव पछइ ते रुषि चींतवइ, 'ए अपराघ माहरड, जें मई एहनइ राज नापिउं ।' वली आपणपे सर्व-जीव-साखिइं 'मिच्छामि दुक्कड' देतउ मरीनइं ब्रह्म- देवलोकि देव हूउ । पद्म तिहां-हूंतउ जातउ सापिई डसिउ। पछइ मरी सातमी नरक-पृथ्वीइ गयउ । सुमित्रनउं मरण जाणी चित्रगति असमाधि करतउ नंदीश्वरि यात्रा-भणी गयउ । तिहां रत्नवती-सहित अनंगसिंह, बीजा इ विद्याधर, देवता, सर्व तीर्थयात्रा-भणी मिल्या छइं। तिसिईं चित्रगति शाश्वतां तीर्थनी पूजा करी, भावस्तुति भणी वीतरागनां स्तवन कढिवा लागउ। तिसिइं सुमित्र ब्रह्मलोक-हूंतउ आवी चित्रगति-ऊपरि कुसुमनी दृष्टि कीघी । पछइ अनंगसिंह ते फूलनी चृष्टि देखी खांडानउ हरणहार जाणिउ, अनइ पुत्रीनड वर पणि एह जि एहवड निश्वय करो, मनि हर्षे आणिउ । तेतलइ रत्नवतीइ चित्रगति दृष्टिइं दीठउ । भवांतरनउ स्नेह जागिउ । पछइ पिताई िहां जि लग्न लेई पुत्री रत्नवती चित्रगतिनइ परिणावी । जिम सोना नइ हीरानउ संयोग मिलिउ सोभइ, तिम रत्नवती नइ चित्रगति शोभिवा लागां। पछइ घणउ काल गृहस्थावास पाली, रत्नवतीनु पुत्र पुरंदरनइ राज देई आपणपे चारित्र लीघउं । पछइ वगउ काल चारित्र पाली माहेंद्र-देवलोकि देवतापणंउ पाम्यां।

इति श्री शीलोपदेशमालानइ बालावबोधि श्री नेमिच रित्र च्यारिभवनउं वर्णन कहिउ ॥

हिवइ इसिइं प्रस्तावि, पश्चिम-विदेहि, पद्मविजयि, सिंहपुर नगरि, हरिनंदी राजा अनइ प्रिय-दर्शना भार्या । तेहनी कृंखिइं माहेंद्र-देवलोक-इत चवी अपराजित-पुत्रपणइ अवतरित्र । हिव ते मडडइं मडडइं वाधतां सर्व कला अभ्यसी । इम एकदा महुतानउ पुत्र विमलबोध अनइ अप-राजित कुमार बेहूं मित्र घोडइ चडी विह्यालिइं घोडा फेरिवा लागा । तिसिइं तिणे दुष्ट घोडे बेहूं महा अरण्य माहि लीधा । जेतलई बेहूं मित्र घोडा-थका उत्तरइ, तेतलई ते बेहूं घोडा पड्या । पछुइ राजकुमार अनइ प्रधानपुत्र तलावि पाणी पीई, सुत्था थई, कहिवा लागा, 'आपणपे आग्इ देशांतरनी मनसा करतां, हिव ते सफले करीइ । पितानउ वियोग सहसिउं, पणि पृथ्वीनां कउ-तिग जोईइ ।' पछइ बेहूँ नवनवां कउतिग जोतां जावा लागा ।

१. L, वीतरागनी B. वानरनी २. Pu. करां

तेतलिइं 'राखि' 'राखि' करतउ कोई एक पुरुष जतउ आवी कुमारनइ सरणइ पइठउ । तेतलइं कुमारि कहिउं, 'म बीहि'। एतलइ 'हणि' 'हणि', 'मारि' 'मारि' करतां राजाना पुरुष आवी कहइ, 'ए चोर । ईणइं धणा लोक 'मुस्या छइ, अम्हे तु मारिसिउं।' तिसिइं कुमार कहिवा लागउ, 'इंद्र जउ आपणपइ आवइ, तु ही एहनइ हूं नापउं ।' तिसिइं ते जाण कुमारनई हणवा ऊठया । तेतलई कुमार साहमु थयउ । सर्व नाठा । पछई राजानई ज़ई वात कही । तिसिई सुकोसल-राजाइं आपणंउं घणउं सैन्य मोकलिउं । ते ही कुमारि भांजिउं । पछइं राजा आपणपइं आविउ । झुझ करतां सुके शल राजाइं आपणा मित्रनर पुत्र कुमार ओलखी युद्ध निवारितं । पछइं अपराजितनइं आपणइ घरि लेई आवित । राजाइं कुमारनइं आपणी बेटी कनकमाला परिणावी । कुमार केतलाएक दिन तिहां रही, देसांतरनां कउतिग जोवा-भणी, राजानइ अणकहिइं, रात्रिइं बेहू चाल्या । मार्ग उल्लंघतां नगर ढुकडी एक कालिकादेवी छइ, तेहना भुवन-मांहिं जेतलइं आन्या, तेतलइं कुमारि ६दन सांभलिउं। पछइ खड़्ग हाथि लेई शब्द-केडिइ जि नीकलिउ | तिसिइ तिहां एक आगिनउ कुड, ते समीपि स्त्री एक, पुरुष एक खङ्ग हस्ति, देखी कुमार कहइ, 'अरे दुरात्मन! ए स्त्रो मूिक, नहीं तु झुझ करि।' तिसिइं विद्याधर अनइ कुमार झुझ करतां विद्याधर हारिउ । पछइं कुमारिं ते रत्नमालानंउ पाणिग्रहण कीषउं । केतलउ काल तिहां रही पृथ्वी-मांहिं परिभ्रमण करतां कंडनपुरि आन्या । तिहां केवलज्ञानी देखी, भाव-सहित केवली वांदी, उपदेस सांभली, पूछिवा लागा, 'स्वामिन ! अम्हे भव्य, कि अभव्य ?' तिसइं केवली कहइ, 'तुम्हें भव्य छउ, कुमार ! सांभलि, जिणि कारणि ए पांचमा भव-इंतउ नवम भवि तूं श्री नेमि-नामा तीर्थेकर थाएसि | अनइ ए मंत्री पुत्र ताहरइ पहिलंड गणघर थासिइ | ' ए वात सांमली बेह हर्ष घरता प्रथ्वी-मांहिं कउतिग जोई छई ।

इतिइं आनंदपुरि, जितसन्नु-राजा, धारणी प्रिया, तेह्नी कृखिइ माहेन्द्र-देवलोक-इतु रत्नवतीनउ जीव चवी, प्रीतीमती नामि पुत्री हुई । अनुक्रमिइं वाधती, सकल शास्त्र भणी, यौवनावस्थाइं आवी । तिसिइं पिता-आगिल प्रतिज्ञा कीधी, 'जे मुझनइ विद्याइं करी जीपिसिइ, ते माहरउँ पित भर्तार होसिइ ।' एहवी प्रतिज्ञा जाणी पिताइं स्वयंवरा-मंडप मंडाविउ । तिहां सकल राजा भूचर खेचर तेडाव्या, अनइ सर्व तिहां आव्या । इतिइं मित्र-सिहत अपराजित कुमार पिण आविउ । तिणि मिन एहवउं चींतिवउं जड, 'रखे अम्हनइ कोई ओलखइं'। तेह-भणी मुखि गुटिका द्याती रूपनउ परावर्त्त कीधउ । तिसिइं प्रीतिमती कन्या हाथि वरमाला धरी, आगिल प्रतिहारिणी सर्व राजाना अवदात प्रगट करती, सभा-माहिं आवी । तेतलइं सर्व राजा तेहनइ रूपि मोहिआ हूता स्तमनी परि हुआ । तिसिइं प्रीतिमतीई प्रश्नोत्तर मांडया । पिण वलतउ उत्तर कोई न दिइ । तिवारइं लोके किहउं, 'विधात्राइं एहनइं सरीखउ वर वीसारिउ ।' पछइ राजा सचित हुउ, 'एतले राजाए मिले जु कन्यानउं मन न मानिउं, तु हिव सिउं कीजिसईं श इसिइ हिरिनंदन (?) अपराजितकुमार चींतवइ, 'स्त्री-साथिइं वाद करतां सोमइ नही, पिण तथापि कांई आपण्य पराक्रम देखाडीइ ।' पछइ कुमारि पूतलीनइ माथइ हाथ देई पूतली बोलावी। पूतली कन्या-प्रति कहइ, 'कुण गुक ? कुण देव ?' इत्यादि पृच्छा-उत्तर करतां राजकन्याइ हारिउं । तिसिइं

१. L. छ्स्या २. Pu.K. मारहर

पूनलीइ कहीउं जउ, 'वरमाला माहरा स्वामीनइ गलइ घाति ।' तिसिइं कन्याइं पूर्व-भवना स्नेह-लगइ जे कुमार कापडीनइ वेषिइ छइ, तेहनइ कंठि वरमाला घाती । ते देखी सर्व राज-कुमार रीसाणा हूंता, हथीआर लेई झूझबा लगा। तिसिइं एकलउ कुमार झूझिवा तिम लगउ-जिम सर्व राजकुमार भागा। तिसिइं सोमप्रभ माउलउ अपराजितनइ ओलखी कहिवा लागउ, जउ, 'घणे दिहाडे आजनू दीठउ। भमरानी रीतिइं तुम्हे कांई भमउछउ ? मातापिता तुम्हारी अस-माधि घणी करइं छइं ।' सोमप्रभिइं बीजा सर्व राजा समझाव्या। पछइ स्वामाविक रूप करी, भलइ लिन पाणिग्रहण कीघउं। अनइ बली जितशतुराजाइं आगणा मुंहतानी बेटी विमलबोधनइ देवरावी। केतलउ काल तिहां रिहया। तिसिइं कुमारनी मुधि जाणी, हिदनंदनराजाइं आपणउ प्रधान कीर्तिराज मोकली, अपराजित तेडाविउ। पछइ कुमारइं खेचरी-भूचरी सर्व स्त्री परिणी हूंती ते एकठी करी, स्वमुरानइं पूछी, तिहां-हूंतउ चालिउ। थोडे दिहाडे सिहपुरि नगरि आवी मातापिता प्रणम्या। पछइ हरिनंदन-राजाइं पुत्रनइ राज देइ आपणपे दीक्षा लीघी। चारित्र पाली, मोक्ष पहुतउ। पछइ अपराजित राजा विमलबोध महुता-सहित मुखिइं राज पालतां, अवसर जाणीं, अपराजिति आपणा पद्म-पुत्रनइ राज देई, स-कलत्र चारित्र लीघउं। केतलउ काल चारित्र पाली, प्रांत-समइ अणसण लेई, आरण-देवलोकि ईंद्र-सामानिक हउ।

इसिइ ईणइ द्वीपि हस्तिनागपुरि, श्रीषेण राजा, श्रीमती भार्या, तेहनी कृष्टिइ अपराजितनउ जीव, इग्यारमा देवलोकतु चवी, शंख-स्वप्न-सृचित हूंतउ अवतरिउ । पूरे दिवसे पुत्र जायउ । शंख एहवउं नाम एउणानइ अनुसारि दीघउं । इसिइं विमलबोधनउ जीव पणि सुबुद्धि महुता नइ घरि मितिप्रभ एहवइ नामिइं पुत्र हुउ । एहवइ प्रस्तावि देसनो सीमना लोक राजानइ आवी पुकार करइं जउ, 'स्वामी ! विशाल-शृंगि ह्यंगिर समर नामा पल्लीपितइं सर्व धन अम्हारां लूटी लीधां । अम्हे तु वसी न सकउं ।' पछइ राजाइं प्रयाण-दुका देवरावी । जेतलइ राजा चालिवा लागउ, तेतलइ शंखकुमार राजानइं प्रणमी कहइ,'स्वामो ! कीडी-ऊपरि तुम्हारी सो कटको ?' पछइ राजाइं कुमारनइ आदेश दीघउ ।

तिसिइं शलकुमार सर्व कटक एकठउं करी पालिनइ सीमा-सेढइ गयउ । तेतल्रइ पल्ली-पतिइं शंल आवतउ जाणी झूझ करिवउं मांडिउं। तिसिइं शंलकुमारि तिम किमइ युद्ध कीघउं, जिम पल्लीपतिइं गल्डइ कुहाडउ करी शंलकुमारनइ शरणि आविउ। पछइ जे जेहनी वस्तु हूंती, ते तेहनी देवरावी। दुर्ग आपणइ विस करी, शंलकुमार पाछउ वल्डिउ।

तिसिइं अंतरालि आवतां, रात्रि सुखिनद्राइं सूतां, एक स्त्रीनंउं स्दन सांभली, कुमार स्त्री-समीपि आवी पूछइ, 'हे स्त्री ! तुझनइ कउण दुक्ख ?' तिसिइं स्त्री कहइ, 'अंगरेशिं चंपानगरी, जितारि राजा, कीर्तिमती प्रिया, तेहनी पुत्री यशोमती जेतलइ यौवनावस्थाइं आवी, तेतलइ श्रीषेणराजानु पुत्र शंखकुमार, तेहना गुण सांभली यशोमती अनुराग धरवा लागी । ते वात राजाईं पणि सांभली । पछइ श्रीषेणराजा-भणो हस्तिनागपुरि संबंध करित्रा-भणी जण मोकल्या । तेतलइं मणिशेखर-विद्याधरिंं, जे आगइ कन्या मांगी हूंती, तीणइ ए वात जाणी यशो-मती आगहरी । तेहनी बांहिइ वज्ञगी हूं इहां-ताईं आवी । तिसिइं तिणि पापीइं बलात्कारि हाथ

१. K इहांलगइ.

विछोडी हूं इहां मूंकी । हिवइं हूं तेहनी धाविमाता, ते मुझ-पाख इ किम रहिसिइं ?' ए वात सांमली कुनार कहइ, 'म रोइ, धीरपण आदिर । हूं हिवडां ते खेचरनइ हणी, कन्या पाछो वाल अं छउ।' इम कही सूर्यनइ उदिय विशालशील शृंग-पर्वतनी गुफानइ बारणइ जेतल आवइ, तेतल कुमारीनइ प्रार्थना करतड विद्याधर देखी, शंख कुमार खड़्ग काढी विद्याधर प्रति कहइ, 'और पानी, परस्त्रीना पापन अल आज देखाडिसु।' तिसिइं विद्याधर धनुष लेई सामुहु ऊठिंड । तेतल कुमारिइं हाथ-हूंतु धनुष ऊदाली पाट्इं तिम किमइं आहणिड, जिम दृक्ष मुंइं पड़इ तिम ते मुंइं पड़िड । पछइ कहिवा लागड, 'आज पछइ हूं ताहरड सेवक । पणि तिम करड जिम एक वार देव वांदिवा-भणी आवड ।'

पछइ कुमारि ए वात पडिवजी। हस्तिनागपुरि आपणउ वृत्तांत जणावी, धाविमाता कन्या-सहित अणावी, अनेक खेचरे परिवरिया वैतादय पर्वति आन्या। तिहां यशोमतो-सहित शंख-कुमार शास्वतां चैत्य बांदी, पूजी, पछइ मणिशेखरि विद्याधिर कुमार कनकपुरि आणीउ। वस्त्र-आभरणे बहुमानी, अनेक विद्याधरनो पुत्री सहित, यशोमतीइं अलंकृत कुमार, श्री जिता-रिराजाइं चंपानगरीइ अणाविउ। तिहां शंखकुमारि महारुद्धिनइ विस्तारि पाणिग्रहण कीघउं। वली श्री वासुपूज्यनी यात्रा करी, स्वसुरानइ पूछी हस्तिनागपुरि आविउ।

तिसिइं श्रीषेणराजाइं शंखकुमारनइ राज देई, आपणपे चारित्र लेई, केवलज्ञान पामी, भवि-कंजननइ उपदेस देतां, हस्तिनागपुरि आज्या । तेतल्डं शंखराजा अंतपुर-सहित आविउ । तिहां श्रोषेण केवलीना मुखनु उपदेस सांमली, वैराग्य ऊपनइ, संसारनु असारपणंउ चींतवतड शंखराजा केवली-समीपि पूळइ, 'हे स्वामी ! यशोमती-साथिइं एवडुं जे स्तेह, ते कांइ !' केवली कहई, 'पहिल्ड धननइ भवि एह जि धनवती प्रिया ताहरई हूंती । पछइ पहिल्डं देवलोकि संबंध । वली चित्रगति-रत्नवती । पछइ माहेंद्र-देवलोकि । वली प्रीतिमती-अपराजित । वली आरण-देवलोकि सातमइ भवि । सांप्रत शंख-यशोमती । वली इहां हूंता अपराजित विमानि देव । वली नवमइ भवि तुं नेमिनाथ होइसि अनइ ए राजीमती होसिइ । एह-भणी तुम्ह बिहुनइ पूर्वभवनउ स्तेह छइ ।' इत्यादि पूर्व संबंध सांमली पुंडरीक पुत्रनइ राज देई, यशोमती प्रिया-सहित श्री शंखराजा चारित्र लेई, वीस-स्थानकादि तप करी, तीर्थंकर नाम-कर्म निकाचित बांधिउं । पछइ अणसण लेई, आराधना करी, मरण पामी, अपराजित-विमानि बेहु देवता हुआ ।

इसिइं जंबूदीपि भरतक्षेत्रि सोरीपुरि नर्गार, समुद्रविजय राजा, शिवादेवी राणी, तेहनी कृखिइं कार्तिक विद बारसिनी रात्रिइ चित्रा-नक्षत्र-माहि कन्याराशिइं शंखनउ जीव अपराजित-विमानतु चवी, त्रिहुं ज्ञानि सहित, चऊद सउणे सूचित, परमेश्वरिइं अवतार लीघउ। माता जाग्या पढ़ी भत्तार-प्रति सउणानु फल पूछिउं। तिसिइं समुद्रविजय कहइ, 'ए सउणानइ अनुसारि पुत्र होसिइ।' तु ही नैमित्तिक पूछिया। नैमित्तिके विचारीनइ किहउं, 'तुम्हारउ पुत्र बावीसमउ तीर्थं कर होनिसइ।' ए वात सांभली शिवादेवी हर्षी हूंती गर्भे घरिवा लागी। तिसिइं इंद्रनउ आसन कंप हुउ। पछइ इंद्रि अवधि-ज्ञानिइं करी बावीसमउ जिन जाणी, प्रणाम करी शक्त-स्तव मणी यथा-स्थानि पहुतउ। परमेश्वरनइ अवतारि राजानइ मंडार कोठार सहू धनि करी वाध्यां। गर्भनइ प्रमाण बंदीवाण सर्व मूकाणा।

१. L. व्पणडं जाणी शंख ..

पछइ मातानइं जे जे डोहला ऊपजइं ते ते सर्व इंद्रादिक देव पूरवइ । इम करतां 'सार्काष्ट [दिन] नव मसवाडा हूया । इसिइ श्रावण सुदि पांचमी दिनि चित्रा नक्षत्र-माहि स्वामीनउ जन्म जाणी, अव-स्वापिनी विद्या देई, पांचे रूपे करी परमेश्वरनइ मेर-पर्वति लेई आविउ । तिहां अति-पांडु कंबल-शिला-ऊपरि योजन-मुख कलसे करी परमेश्वरनइ जन्म-महोत्सव करी, पूजी अर्ची, अत्रस्वापिनी विद्या अपहरी, स्वामी माता-समीपि मूक्या । देवताए सुवर्ण-रत्ननी वृष्टि कीघी । पछइ परमेश्वरनइं अंगूटइ अमृत संचारिउं । इंद्र परमेश्वरनइं वांदी, खमावी नंदीश्वरि पहुतउ । इसिइ प्रभातनउ समउ हुउ । सूर्य ऊगिउ । जउ माता जागइ, तु पुत्र सालंकार, सामरण देखइ । तेतलइ दासीइं राजानइ वधामणी दीधी । पछइ राजाइं पुत्रनइ जन्मि पारितोषिक दान देई, सर्व बंदीवाण मू कावी महा महोत्सव कीघउ । पछइ छट्ठि दिनि छट्ठी कीघी । बारमइ दिहाडइ सर्व कुटुंब जिमाडी, अरिष्ट विलय गयां गर्भनइ प्रमाणि ते-मणी अरिष्टनेमि नाम दीघउं । पछइ पंच-प्रकारि धात्रीए पालीतउ मोटउ हुउ । स्वामी मनोरथने सए वाघिवा लागउ ।

इसिइ जरासिंध दूत मोकली समुद्रविजय-राजानइ कहाविउं जु, 'वैतादय-पर्वत-समीपि सिंहपुरि सिंहरथ राजानइ बांधि जि को आणिसिइ तेहनइ हुं जीवयशा बेटी अनइ मनोवांछित नगर आपिसु।' तेतलइ वसुदेव प्रणाम करी कहइ, 'ए काजु हूं करिसु।' तिसिइं समुद्रविजयि कहिउं, 'ए अवसर ताहरउ नही।' तु ही वसुदेव रहइ नही। पछइ वसुदेव चलाविउ। तिहां सिंहरथ पणि सामहु आविउ। युद्ध हुउं। वसुदेवनइ कंस सारथी हुई बइठउ छइ। तिसिइ वसुदेवि सिंहरथनउं कटक भांजी, सिहरथराय पाडी, कंस-पाहइ बंधावी, आपणइ नगरि पाछउ आविउ। तेतलई समुद्रविजयइ वसुदेवनइ एकांति बइसारीनइ कहिउं जउ, 'क्रोष्टिक-नैमित्तिक इसिउं कहिउं छइ—जे जीवयशानउं पाणिग्रहण करिविइं, तेहना कुलनउ क्षय होसिइं। हिवइ तूं ते उपाय चींतिव जं कंसनइ माथइ ए पवाडउ घाती, आप सुली था।' पछइ वसुदेव जरासिधु-कन्हइ जई कंसनइ जीवयशा देवरावी, मथुरानगरी पणि दीधी। इत्यादि बहु वक्तव्य छइ।

नारायणि जिवारइ कंस हणिउ, तिवारइ जीवयशा जलांजलि न दिइ । पछइ जरासिघइ ए बात सांभली दूत मोकलिउ । तीणइ ते दूत अवगणी यादवे क्रोष्टिक पूछिउ, तिवारइ किहवा लागड, 'त्रिखंड-भोक्ता कृष्ण-राम होसिइं। पणि पश्चिम-दिसिइं श्री विध्यगिरि-सन्मुख समुद्र छइ तिहां जई रहउ । नारायणनी प्रिया सत्यभामा वि पुत्र प्रसविदं । तिहां तुम्हे नगरी बसाविज्यो ।' पछइ सर्व यादव सोरीपुर-हूंता नीकल्या सात कुल कोडि साथइं, अनइ उपसेन इग्यार कुल कोडि साथ नीकली, पंथ अवगाही, विध्य पर्वत-हकड़ा जेतलइ आव्या, तेतलइ काल-महाकाल-प्रमुख जरासिधुना पांच सइ पुत्र वाहरइ आव्या । तिसिइं यादवकुलनी अधिष्टायकाई त्रिण्णि चिहि रची डोकरीनइ रूपिइं रोवा बइटी । तिसिइं कालि-महाकालि पूछिउं, 'तुं कांइ रोइ ?' ते कहइ, 'तुम्हारइ भए बीहता यादव सर्व आगि-माहि पइटा ।' ए बात सांभली काल-महाकाल कुमर पणि आगि-माहि पइटा । ए बात यादवे सांभली। पछइ अइमुत्तउ पूछिउ जु, 'हिव किम कीजिसिइ ?' तिवारइ कहिवा लागउ, 'जेइनइ कुलि एक महापुरुष हुइ, ते कुल गंजाइ नही । पछइ त्रिण्ण महापुरुष तुम्हारे कुले, तुम्हे कांइ बीहउ ?'

१. K नवमास अनइ साढा आठ दिन हूआ ।

इसिइ सोरठदेस-माहि आवतां सत्यभामाइं वि पुत्र प्रसन्या, भानु अनइ भामर एहवइ नामि । पछइ कृष्णि तिहां त्रिण्णि उपवास करी सुस्थित लवणाधिप आराधिउ । पछइ प्रत्यक्ष हुइ, पंचयज्ञ नामा शंख देई कृष्ण-प्रति कहइ, 'स्यूं करउं ?' पछइ कृष्णि कहिउं, 'नगरनइ टाम आपि ।' पछइ संतुष्ट 'हुंतइ नवबारही नगरी करी दीधी । अदार हाथ ऊंचउं गढ, बार हाथ पहुलउ, नव हाथ उंडी पाखती खाई, एहवउ खाई-सहित गढ करी दीधउ । माहि अनेक आवास करी दीधा । पछइ वासुदेवनइ काजि अदार भूमिकानु आवास करी दीधउ । बीजां सर्व घर एक रात्रि-माहि धनदि कीधां । पछइ तिहां द्वारवतीई कृष्णनइ राज्याभिषेक कीधउ ।

इसिइ श्री नेमिकुमार त्रिहुं ज्ञाने सिहत रामित रिमवा लागउ । यादव सर्व नवनवी रामित खेलावइं । इम बाल्यावस्था अतिक्रमि श्री नेमिकुमार यौवनावस्थाइं आज्या । वज्र-ऋषभ-नाराच-संहनन-सिहत दस धनुष ऊंचा एहवाइ नेमिकुमार विषय-थकी विमुख हूया ।

इसिइं विणिजारा रतनकंबल लेई आव्या । पणि थोडिउ लाम देखी राजगृह नगिर गया । तिहां जीवयशानइ देखाडियां । मूल करतां किहिउ, 'अधलाख कांबलनउं मूल ।' तिवारइं ते विणिजारा कहां, 'अम्हनइं द्वारवती नगरीइं लाख द्रव्य देता हूंता । पणि अम्हे न वेच्यां । तिवारइ जीवयशा पूछइ, 'ते द्वारावती नगरी किहां छइ ?' तिवारइं विणिजारे किहिउं, 'धनद-यक्षनी स्थापी द्वारावती धनधान्ये करी भरित-पूरित छइ, अनइ राजा कृष्ण राज करइ छइ ।' ए वात सांभली भूताधिष्ठित पुरुषनी परिइ रोती हूंती पिता-कन्हिल जई किहिवा लागी जड, 'माहरउ वइरी अजी जीवइ छइ ।' ए वात सांभली त्रिखंड-भोक्ता जरासिधु किहिवा लागउ, 'हे वित्त ! सुस्ती था, माहरउं की घउं जोइ।' पछइ प्रयाण-मंभा देवरावी, सहदेवादिक पुत्रना सइं, दुर्योधन-शिद्युपाला-दिक राजाने सहस्रे वारीतउ, अपशुकने निवागीतउ हूंतउ, जरासिधु पश्चिम दिसिइं चालिउ।

तिसिइं नारद-ऋषी रणांगणनइ कुतिगियाल हूंतल जरासिधुनइ कहइ, 'तूं कृष्ण साथि पुहची नहीं सकइ।' इम रीस ऊपजावी। पछइ कृष्ण-समीपि आवी कहिलं, 'जरासिधु आवइ छइ, तूं सज्ज था।' ए वात सांमली नारायण(१ण) हूंकारल मूंकी पहहल वजाविलं। पछइ दसइ दशारनां कटक सज्ज हूयां। अऊठ कोडि पुत्र सन्नाह पहिरवा लागा। तिसिइ उप्रसेन पणि आपणा कटक मेली आविल्ड। महासेन सांतन राजादिकनां, पांचइ पांडवनी पत्नीना सुसरानां, एतलां सर्व कटक आवी मिल्यां। मले सुकने, अनेक वाजित्र वाजते, कृष्ण रथि बइसी चालिल्ड। क्रोष्टिक-नैमित्तिक सहूर्त दीधलं। इम कृष्ण सैन्य मेली जेतलह सीमइ आवइ, तेतलइ जरासिधु सामहु आवी चक्रव्यूहपणइ आपणलं कटक राखिलं। सहस्र-आरा एहवलं चक्र, तीणइ आकारि एकणि-एकणि आरइ सहस्र-सहस्र राजा, वि सहस्र रथ, सल हाथी, पांच सहस्र अध, सोल सहस्र पायक, पांच सहस्र राजा चक्रनइ मुखि। कौरव गांधार राजानां कटक केडिइं, आपणवई पुंठिइ रहिड। ए वात सांमली कृष्ण पणि गुरुडल्यूहिइं उतरिल । तिहां पंचास-लाख कुमर गुरुडल्यूहनई मुखि रहियां। गोविंद-बलिभद्र माथइ रह्या। कटक सर्व बिहुं पासे रहियां। इसिइं ए वात अवधिनइं बलिइं इंद्रिइं जाणी, आपणव रथ अन्ह मानुल सारथी, आपणड सन्नाह अनइ सर्व शिरु निमकुमार-भणी मोकल्यां।

१ K संतुष्ट हूइ हुंतइ Pu. L संतुष्ट वर्त्तमान. २. Pu. दशोदशनां कटक. ३. K मां आ प्रमाणे पाठ छे-पांच पांडव जिमणइं पासइं रहिया । बीजा डाबइं पासइं रहिया । कटक.....

इसिइं बेहू दल मिण्डं, सुमट किलकलारव करइं, हाथिए गुडि ढलइं, घोडे पालर पड़डं, सुमट सनाह पहिंदं, माहोमाहि वरणी वरइं। हाथीउ हाथीआ साथिइं, घोडु घोडा साथिइं, रथ रथिइं, पायक पायकइं, मथाइत मथाइतिइं, सींगणीउ सींगणीया साथिइं, अनेक सल्लक्ष्वावल्ड-भल्ड-तोमर-नाराचे करी माहोमाहि झुझ करतां आकास धूलिइं छायउं। लोहीनी नदी बहिवा लागी। सुभट पडिवा लागा। खड़ ने झात्कारे आकासि उद्योत होइवा लागउ। सींगिणिने टणरकारे आकाश गाजी रहिउ। एहवी आरेणि होतां नारद आकासि नाचत्उ, बिहु दलनइ घरिम देतां जि, गदाई करी जरासिंधुई राम तिम हणिउ, जिम मुखि लोही नांखतउ पडिउ, केसव बाणे करी तिम ढांकिउ, जिम देखइ कोई नही। यादवनउं सर्व सैन्य मागउं। जरा-विद्यानइ बिल सर्व कटक अचेत हुउं।

तिसिइ मातुल सारथी श्री नेभिकुमार-प्रतिइं कहइ, 'स्वामी ! यद्यपि तुम्हे निरोह निरहं-कार छउ, कहिनी करणवार न करड, पणि तथापि ए यादव निर्वेस जाता उद्धरउ । आपणउ पराक्रम देखाडउ।' इस किह हूंतई, श्री नेमिनाथइ धनुष हाथि लेई जरासिधना कटकनी ध्वजा सर्व कापी, सर्व शस्त्र छेद्यां । तिहां संखेसरउ पार्श्वनाथ प्रगट कीघउ । तेहना पखाल-नइ जिल जरा-विद्या गई । यदव सर्व पाछा वस्या । तेतलई जरासिंधु बोलिवा लागउ, 'ओरे गोपाल ! माहरउ जमाई हणी तूं पश्चिम समुद्रई नासी गयउ सीयालनी परि, त आज तझनइ हणी जीवयशा-गंहि जलांजिल देवराविसु ।' इणिइं वचिन कृष्ण बोलिवा लागउ, 'तुउ वहिलंड था । ताहरा मायवापनइ साथिईं तूझनई मेलिसु । इम कहतां बेहू झूझ करतां. ते शस्त्र नहीं, ते विद्या नहीं, जे तिहां प्रयुंजी नहीं । इम झूझ करतां, जरासिंधुनां सर्व शस्त्र खूटां । तिसिइं जरासिधु राजाईं चक्र-रत्न स्मरिउं, तेतलइ ज्वालामाला कराल करतउँ चक्र आविउं। तिसिई नारायण भणो मूंकिउं । हीयइ जेतलइ लागउं, तेतलइ कृष्णना भाग्य-लगइ हाथि आवि बइटउं । नारायणि चक वलत् मूंकी जरासिंधु हणिउ । तिहां देवताए जयजयारव कीषउ. नवमं वासुदेव एहवी उद्घोषणा कीधी, कुसुमनी दृष्टि कीधी । पछइ मातुल सारथी आप-णइ ठामि पहतु । त्रिलंड साधी नारायण द्वारवतीई आविउ । संख १ लङ्ग २ धन्छ ३ चक ४ वनमाला ५ कौस्तुभमणि ६ गदा ७ - ए सात रतने सहित नारायण राज्य करिवा लागउ । अनइ श्री नेमिकुमार विषय-विमुख-हुंतु सुखिइं रहइ ।

इसिइ सांब-पज्न विद्याधरनी, राजानी पुत्रीए परिवरिया वन-माहि कीडा करता देखी, श्री समुद्रविजय शिवादेवी श्री नेमिकुमार-प्रतिइं कहइ, 'वत्स ! तु गुणे करी संपूर्ण योवनवह आविउ हूंतु इ जे स्त्रीनंउ पाणिग्रहण नहीं करतउ, तिणि करी अम्हे महा दुहवण आणउं छउं । जिम भलउं इ माणिक्य हेम-विण न सोभइ, तिम स्त्री-विण तूं सोभतउ नथी । तेह-भणी एक वार परिण, जिम अम्हे वहू लोचने देखं ।' ए वात सांभली नेमिकुमार कहइ, 'आम तात ! ए स्त्रीना वसंग्रह परमार्थवृत्तिइं दुखदायक छइ । तेह-भणी माहरउं मन नहीं ।'

इसिइ यशोमतीनउ जीव अपराजीत-विमान-तु चिवी, उप्रसेननी मार्या धारणी, तेहनी कृष्विइं अवतरी, राजीमती एहवइ नामि पुत्री हुईं। ऋमिइं वाधती वाधती यौवनावस्थाइं आवी।

इसिइं नेमिकुमार आयुधशाला-माहि फिरता फिरता आन्या। तिहां सारंग धनुष, पंचयज्ञ संख देखी हाथि लेवा लागा। तेतलइ रखवाले कहिउं, 'स्वामि! न वाइवउं, परहुं छउ।

१. K बिहुं २. K परिग्रह, Pu. संसर्ग ३. L पंचजन्य.

किंतु ए शंख नारायण टाली कोई हाथि लेई न सकई ।' तिसिइं श्री नेमिकुमारिइं पंचयत्त शंखें लेई, राखतां विचालइं मुखि करी वायउ । तेहनइ नादिइं रखवाला अचेत हुई भुइं पडिया । द्वारवती-मुड गढ पणि कांपिवा लागुड । नारायण संखनड नाद सांभली ससंभ्रांत चउ पखेर जोइवा लागुड । 'ए' किसिडं आश्चर्य ?' वली मन-माहि चिंतविवा लागुड, 'बीजा खंड-हूंतड बीजड नारायण आविड कि स्यूं ?' तेतलइं पाहरीए जई कहिडं, 'स्वामी ! श्री नेमिकुमार आण्या हुंता । तीणे राखतां विचालइं शंख लेई वायउ ।' ए वात सांभली नारायण बीहिवा लागुड, 'जिम दांतिई कष्टिइं करी मोदक मांजइ अनइ जीभ हेलाई लाभ लिइ, तिम मई त्रिण्ण सई साठि संग्राम करी त्रिण्ह खंड साध्यां, पणि नेमिकुमार हेलाई राज लेसिई ।' इसिडं चीतवी नारायण आप आयुषशाला-माहि आविड । मन-माहि बीहतड नेमि प्रति कहइ, 'बांघव ! ए संख तुम्हे पूरिड ?' नेमिकुमारिइं कहिडं, 'हा, ए संख मई पूरिड ।'

तिसिईं नारायण कहइ, 'आवउ, आज आपणपे आपणउं बल जेईइ।' इम किहिइं बेहू मालाखाडइ आव्या। तेतलई नेमिकुमार नारायण प्रतिईं कहइ, बांबव! माहोमाहि आपणपे झूझतां सोभइ नहीं। पणि एक एकनी बांह नेमात्री जोईइ, अनइ बलिमद्र साखीउं कीजइ।' इणिईं ववनि नारायणि बांह लांबी कीवी। तिसिईं नेमिनाथिईं जिम कमलनाल नमावीइ, तिम नारायणनी बांह नमावी। पछइ नेमिकुमारिईं आपणी बांह लांबी कीबी, तेतलई नारायण सर्व बलिई करी विलगड, बानरनी परिइं हीचिवा लागड, पणि लगारइ नमावी न सकइ। तिसिईं हिर किहिवा लागड, 'धन्य अम्हार्ड कुल, जिहां एहचा महा बलवंत पुरुष छई।' वली बलदेव-प्रतिईं कहइ हिर जड, 'एहवडं बल आज चक्रवर्ति-माहि नथी, तु ए कांइ छइ खंड साधइ नहीं?' ए वात सांमली बलिमद्र नारायणना मननी भ्रांति ऊतारिवा-भणी कहइ, 'बांचव! एहनइ जि बलिईं आपण राज्य भोगवीइ छइ। तुझनइ किसिडं बीस-रिडं, जहीई जरासिंधु साथिई झूझ करतां जराविद्या ऊतारी ? अनइ वन्नी नैमित्तिक किहिडं छइ, ए बावीसमंड तीर्थं कर होसिई। राज तु नरकनंड कारण छइ, तेह-भणी एहनइ राजनी मनसा नथी। ए बाल-ब्रह्मचारी।' ए वात सांमली गोविंद हरखिंड अंतःपुर-माहि आवं। किहिवा लागड जड, 'नेमिकुमारनइ अंतःपुर-माहि आवतां आडी लाकडी न देवी।' बली रुक्मणी-सत्यभामानइ कहिड, 'तुम्हे आपणा देवर आवर्जिंड्यो।'

पछइ नेमिकुमार एकलंड इ अंतःपुर-माहि जाइ-आवइ। एहवइ शिवादेवी कहइ नारायणप्रतिहं जड, 'तुम्हे नेमिकुमारनइ मनावड, जिम अम्हे एक वार वीवाहनंड उत्सव देखाउं।' पछइ
नारायग-प्रमुख सर्व यादव मनावहं, पणि नेमिकुमार मानइ नही। इिंद एकदा वन-माहि खड़ीखलीइं झीलतां, पाणिप्रहण बलात्कारिइं मनाव्या श्री नेमिकुमार। तेतलहं नारायणि उप्रसेनराजानइ घरि जई राजीमती मागी, कोष्टुिक तेडो लग्न अजोआविउं। तिसिइं क्रोष्टुिक कहइ,
'हिरनइ शयनि वीवाह जुगतंड नही।' तेतलह नारायण कहइ, 'हूं तु साक्षातकारि छउं, तु ए दोष
नही।' वली नेमिनाय तु अपधूत छई, पहिंडतां वार नहीं लगई।' तु नैमित्तिक कहइ, 'श्रावण
सुदि छठिइं लगन छइ।' ए वात सांमली उप्रसेन-समुद्दिजप वीवाहनी सामग्री करिवा लगा। 1

१. Pu. ए सिउ. २. Pu. कि सउं. ३. K नमाडी ४. Pu. जोनराविउं।

बिहुने घरे जवारा वान्या । पापड-वडीना मुहूर्त कीधां । बिहुने घरे गीत गाईइ । तोरण वंदर-वालि मंडावी । समग्र सामग्री हुई । लग्न द्वकडइ आविइ, श्री नेमिनाथनइ सिंहासनि बइसारी, गीते गाइते स्नान-मज्जन-पीठीना आचार करी, पारिणेत वस्त्र पहिरान्यां । तिसिइं उग्रसेन-राजानइ घरि पणि कन्यानइ स्नान-मज्जन-विधि करी, गीते गाइते । राजीमती आपणपउं धन्य मानती भवांतरनउ पति पामी, रात्री सुखिइं अतिक्रमावी ।

इसिइं प्रभातनइ समइ सूर्यनइ उदिय श्री नेमिकुमारनइ स्नान विलेपन सर्व आभरण पहिरावो, मस्तिक छत्र घरावि, बिहुं पासे चमर ढालीते, लूग ऊतारीते, गीत गाइते, गोविंदा-दिक सर्व यादव आगिल चालते, रिथइं आकही पिग पिग दान दीजते जेतलइ उपसेनना घर दूकडउ तोरण-समीपि नेमिकुमार आविउ, तेतलइ राजीमती उदार स्फार शृंगार करी सखी प्रतिइं कहइ, 'हे सखि! जोइ ए श्री नेमिकुमार आवइ छइ' इम कहती गउखे बइठो राजीमती वली बली जोवा लागी । तेतलइ जिमणउं लोचन, जिमणउ खवउ फुरिकिवा लागउ । ए स्वरूप देखी सखी-प्रति कहइ, 'हे सखि! नेमिकुमारनउ मेलापक दीसइ नही ।'

तिसिइं जलचर-थलचर-खचरादिक सर्व जीव गउरव-भणी आण्या छइ तेहनउ विलाप देखी जाणतउ इ नेमिकुमार सारथी कन्हइ पूछइ, 'किह-न, ए प्राणी किहनइ हेित दुःखी कीजइ छई ?' तिसिइं सारथी कहइ, 'स्वामी ! तुम्हारा गउरव-भणी ए जीव आण्या छइ।' ए वात सांभली रथ पाछउ वालिउ। जीव सर्व मूकान्या। यादव सर्व आडा हूया, पणि स्वामी कहइ, 'जिहां एवडा जीवनउ विणास, तिहां केहउं सुख?'

तिसिई माजाप विलाप करतां कहइ, 'वच्छ ! एक बार पाणिग्रहण करि । पछइ जिम मेलि आवइ तिम करे । एक वार बोल मानि । तिसिइं नेमिकुमार कहइ, 'हूं ए जीवनड वध देखी विरतउ हुउ । तुम्हारइ रथनेमि-प्रमुख घणा पुत्र छई । ते तुम्हारा मनोरथ प्रविध । पणि हं चारित्र लिउं छउं।' ए सांभली मातापिता विलाप करतां कड़ई, 'जिम पस्-उपरि दया कीधी, तिम अम्ह-ऊपरि दया कांइ न करइ ?" पछइ ए वात सांभछी राजीमती विलाप करिवा लागी, 'हे प्राणनाथ ! हे स्वामिन ! आठ भवनउ नेह पाली, नवमइ भवि तं नीठर कांइ हुउ, कहि-न ?' इम विलाप करती घणइ किष्ट राखी । तिसिइ सखी कहड़. 'ए जड गयड, तु वली घणा इ क्षत्रीय-कुमार छइ।' तिवारइ वलतउँ राजलि कहइ, 'ज़ किम्हई नेमिनाथइ पाणिप्रहण न की धर्ड, तु ही माहरइ एह जि गुह, एह जि स्वामी । जे गीत एहनइ ते मुझन हा ' तेतल्हं लोकांतिक देव आवी कहइ, 'स्वामी ! दीक्षान समय हुउ छह ।' तिसिइं स्वामी सांवत्सरिक दान देई, स्नान करी, सिबिकाइ बहसी, इंद्र माथड छत्र धरइ, बिहुं पासे चमर ढलइ, देवतानो कोडिइ परवरिउ, मनुष्यने सहस्ने, यादवने समूहे, वाजि-त्रने लाखे वाजते, पिंग पिंग दान दीजते, श्री गिरिनारि सहस्राम्रवन-माहि स्वामी शिविका-त ऊतरी, सर्व आभरण मूंकी, छठ ता करी, त्रिणिसइं वरस घरि रही, चित्रा नक्षत्रि, श्रावण सदि छउडे. पूर्वीह्न स्वामीइ चारित्र लीघउं, सहस्र क्षत्रियकुमार साथि । पछइं राम, कृष्ण, पांडवादिक सह वांदी वांदी नगर-माहि अन्या । बीजइ दिनि स्वामी वरदत्त ब्राह्मणनइ घरि परमानि करी पारणं कीधं । तिहां देवताए पुष्पवृष्टि, रत्नवृष्टि, स्वर्णवृष्टि कीधी । देवदुंदुभिनं नाद हुउ ।

१. Pu. वांनरवाला २. Pu. मेल.

पछइं स्वामी चउपन दिन छन्नस्थपणइ विहार करतां, उपसर्ग सहितां रेवतकाचिल सह-साम्रवन-मा हे वेडसबुक्ष-तलइ, अष्टम तिष, आसोज विद अमावसनइ दिनि, पूर्वीह्नि, वित्रा-नक्षत्रि केवलज्ञान ऊपनउं । तेतलई इंदनउं आसन कांपिउं । अवधि-बलिइं जाणी, इंद्र तिहां आवो, समवसरण कीधउं । स्वामी तिहां सिंहासनि बइसी धर्मोपदेश देवा लागा । तेतलइ उद्यान-पालिक जई कृष्णनइ वधामणी दीधी। तेहनइ बार कोडि रूपानी वधामणी आपी। तिवारह कृष्ण आपणपे सपरिवार, सांत:पुर, सनागरीकलोक वांदिवा आविड। तिहां स्वामीनंड रपदेस सांभिलिया लाग । तेतलई वरदत्त-प्रमुख वि सहस्र राजकुमार अनइ घणी कन्याए परिवरि राजीमतीइ महा महोत्सवपूर्वक चारित्र लीघउं । एहवइ राजमतीनउ अति अनुराग देखी कृष्ण स्वामी-कन्हिल पूछइ, 'हे भगवन ! तुम्ह-ऊपरि एवडउ स्नेह ते कांइ ?' तिवारइं धनदत्त-धन हैव-विमल्बोधनं स्वरूप कहिउं अनइ आठ भवना स्नेहनउं कारण कहिउं। वरदत्त-प्रमुख इग्पार गणघानी स्थापना कीघी। दस दसार, उपसेन, पज्न, रामादिके सम्पक्तव पडिवजिउं। सिवा, रोहणी, देवकी, रुक्मिणी-प्रमुखे श्रावकपणउं पडिवाजेउं । इम चतुर्विध संघनी स्थापना करो । बीजो पोरसिइं गणधरे धर्मोपदेश दीधड, तेतलइं कृष्णि एक पायउ विले आणिउं, तेरुनड अर्घ देवतार लोघडं, अर्घ राजलोक्ते लीघडं। यक्ष गोमेघ द्विमुख नरवाहन स्थापिउ, अनइ सिंह्यान।रूढ कृष्मांडी देवता शासननी रखवालि कीघो । अढार सहस्र महातमानइ दीक्षा दीघी अनई चउआलीस सहस्र महासतीनइ दीक्षा दीघी । श्रावक एक लाख ^उइस्गह-त्तरि सहस्र, श्राविका त्रिण्णि लाख छत्रीस सहस्स गुणवंति – इत्यादि संघ प्रतिबोधी, एक सहस्र वर्ष आऊखरं पाली, पांच सइ छत्रीस सिउं श्री गिरिनारि पादपोपगम अणसण लेई. आसाद द्युदि आठिम, चित्रा नक्षत्रि, स्वामीनइ निर्वाण हुउं । राजीमती पणि मोक्षि पहुती, अनइ पर-मेश्वरना माबाप चउथइ देवलोकि पहुता । हिवइ देवनाए गोशीर्घ-चंदने चिहि करी, स्वामीनउ अंग प्रज्वालि**उं,** विह्निकुमार देवताए विह्न की घी, वायु-कुमार देवताए वायु की घउ, मेघकुमारे अग्नि उपशमावी । तिसिई इंद्रिइ दाढ लीघी, अस्थि देवताए लीघां, वस्र राजाए लीघां, राख सर्व लोके लीघी । पछइ निर्वाण भूमिकाई नेमिनाथनई, इंद्रि मंडर कीघउ । पछइ सघला देव ते ठाम वांदी, पूजी नंदीश्वरि पहुता ।

इति शीलोपदेशमाला-बालाविबोधे श्री नेमि-चरित्र नव-भव-संबंधि च्यारि प्रस्ताव कीधा ॥१७‡। बस्ती सील पालवानी दृढिमा देखाडतउ कहइ—

सिरि-मल्लि-नेमि-पमुहा साहीण-सिवा वि बंभ-वयलीणा। जइ ता किमण्ण-जीवा सिढिला संसारवसगा वि ॥४०

ठ्याख्या:— जेह भगवंतनइ स्वाधीन शिव-भावीं मोक्षपद, मोक्षगामी छइ एहवा श्री मिं नेमि-प्रमुख ब्रह्मतत्तइ विषइ लीन छंइ, पाणिग्रहण परिहरी ब्रह्मचर्य पालवानइ काजि लीन कत्त्वर छई। कांइ शील पालइ? मोक्ष-भणी। ते मोक्षि जाइवानउ तिणिही जि भाव निश्च छइ। जाणइ छइ जउ-अम्हे इणिइ जि भवि मोक्ष जासिउं। तीणे जु ब्रह्मव्रत पालिउं, पाणिग्रहण न कीचउं, विषयमुख विमुख थया। तउ अनेरा जे जीव संसार-सागर-माहि बूडा छई, जेहनइ मोक्ष दु:प्राप छइ, ते जीव मोक्ष-मुख साघवा-भणी कांइ निरुद्यम ? तेहे जीवे मोक्ष-मुख वांछने कील जि पालिवउं, मिक्षनाथनी परि। हिव ते मिक्षनाथनउ चरित्र कहीइ—

१. L. Pu. प्रमृति. २. Pu. पोथउ ३. P. उगणहुत्तरि K. ओगणउत्तरि.

[१८. श्री मिछिनाथ-चरित्र]

श्री जंबूद्रीप-माहि सिल्हावती-विजयि वीतशोका नगरी । तिहां बल एहवइ नामि राजा राज्य करइ । घारणी भार्या । तेहनउ पुत्र महाबल । तेह जिवारई योवनावस्थाई आविउ, तिवारइ पांच सई राजानी कन्या परणाविउ ।

हिवइ तेहनइ नगर-माहि छ मित्र छईं। वैश्रमण १ अभिचंद्र २ घरण ३ पूरण ४ वसु ५ अचल ६ – ए छ मित्र साथि कीडा विनोद करतां काल जाइ। अनेक वाचे, तलावि, वाडी एहे मित्रे परवरिउ महाबल हीडइ। एतलइ एकदा उद्यान-विन बलराजा गयउ। तिहां ज्ञानी आचार्य देखी राजा वांदइ। आचार्य घर्मोग्देश दिइ। राजा ते उपदेश सांभली चींतिवा लगउ, 'अजी राज घरिवानइ कोई समर्थ पुत्र नहीं, जेहनइ राज देई हुं दीक्षा लिउं।' इम चींतवतु वली पूछइ, 'स्वामिन! ए चिंता कांइ ऊपनी ?' तिसिइं ज्ञानी कहइ, 'जिवारईं कमें सबल हुइ, तिवारइं ए चिंता ऊपजइ। जिवारइं जीव सबल, तिवारइ चिंता कपजइ। इम राजाई विचार सांभली तिहां जि चारित्र लीघउं। पछइ प्रधाने मिली महा-बलनइ राज दीधउं। महाबल छए मित्रे परविच राजलीला भोगवइ।

इम काल जातइं राजानइं घरि कमलावती राणीइं सर्व-लक्षण पुत्र जन्मिउ । महा विस्तारि पुत्र-जन्म-उत्सव करी बलभद्र नाम दीघउ । मउडइ मउडइ वाघतां सर्व कला अभ्यसी । तिसिइं योवनावस्थाइ आविइ युवराज पदवी दीघी । अपणि धर्म-जि-नइ विषइ उद्यमपर हुउ । दान, शील, नप, भावना भावतउ श्री वीर-गुरु-समीि छ मित्र-साथि महाबलि दीधा लेघी । पछइ सातइ महात्मा सर्वतोभद्र. सिंइनिक्रीडितादि तिप करी कमें क्षरावता पारगउं करइं । पणि महाबल तपनइ प्रांति पारणउं न करइ माया-लगी । इम महाबलि स्नी-कमें ऊपार्जिंउ । मोहनउं विश्वति जोउ । एवडइ महाबिल माया-लगाइ स्नीगगउं पामेउ । पछइ वीस-स्थानक महाबिल सेव्यां, नीर्थेकर-नाम-कमें ऊगर्जिउं । चउरासी पूरव लक्ष आयु पाली, सतई मुनि वैवयंति विमानि अनुत्तर सुर, तेत्रीस सागरोपमनइ आऊखइ हुआ ।

इसिइं जंब् द्रीपि, दक्षिण भरति, विदेह-देशि, मिथिला नगरीइं कुंभ नामा भूपित प्रभावती राणी-सिहत सुखिइं काल अतिक्रमावइ । इसिइं महाबलन उनिव वेजयंत-विमान-तउ चिवी, कागुण शुदि चउथिनी रातिइं प्रभावती राणीनी कुखिइं अवतार लीघउ । तिहां चऊद सउणा स्वामीन इ अवतार देखी, नैमित्तिकना मुख-तु स्वामीन अवतार जाणी, गर्भ पालती, पूरे दिवसे मागशिर सुदि एकादशीन इदिनि, सर्वलक्षणसंपूर्ण पुत्र प्रसविउ । तिसिइं क्षण एक नारकीन एणि सुख उत्पन । इसिइं छप्पन्न दिसि-कुमारिकाए आपणउ आपणउ अधिकार सूतिकर्मन किष्य । तेतल इंद्रना आसन कांप्यां, शाश्वती घांट सुन्नोषा वागी । तेहन इनादि चउसि इंद्र मिल्या । तत्काल इंद्रन आदेशि लाख जोयणन उपाणक निमान किष्यं । माहि मणिनी पीठिका, पांच सइं योजन ऊंचउं विमान, तिहां इंद्र आपणपे बइठउ । देवता सर्व मेर्स्पर्वति पहुता । इंद्र आपणि स्वामीनी मातान अवस्वापिनी विद्या देई, करसंपुटि जिनन लेई, प्रतिछंद रूप मूंकी, पांच कल्याणक समकाल हुई तेह-भणी पांच रूप करी नइ, पांडु कंबल-सिका-ऊपरि जगनाथन आपणइं उतसींग धरी बइठउ । तीर्थोदक आणी योजन-मुख कलसे स्तान अच्युतादिक इंद्र कीषउं । पछुइ गंध-काषायक वस्त्रे अंग लूही, बावन चंदने अंगि विलेव

१. K पुत्रीनु जन्म हूड.

कीषडं। पछइ कुंडल-मुकुटादिक सर्व आभरण पहिरावी, आरती मंगलीकादिक विधि करी, आराध खनावी, स्वामी करसंपुटि लेई, अवस्वापिनी विद्या अपहरी। माता-समीपि आवी, पट्ट-क्लयुगल उसीसइ मूंकी,वली रत्न-खचित दडउ एक ऊपरी बांधी, पुरंदर इंद्रनइ आदेशि धनद यिश्व बार कोडि सुवर्ण रत्ननी वृष्टि कीधी। पछई इंद्रइ एहवी उद्घोषणा करावी जु, 'जे को परमेश्वरनी माता-ऊपरि पाइउं चींतिविसिइ, तेहनई इंद्र वज्रइ करी अर्जुन-मंजरीनी परिइं मस्तक विखंड करिसिइं।' एहवी घोषणा करी, अंग्ठइं अमृत संचारी, पांच धात्री मूंकी, प्रणाम करी इंद्र नंदीश्वरि पहुतउ।

तेतलइ माता जागी । आगलि सालंकार, साभरण पुत्र देखी हर्षी हुंती कुंभराजानइ वधामणी देवरावी । पछइ राजाइं तेहनइं जीवाविध दान देई जन्म-महोत्सव महा विस्तारि कराविउ । बंदि-मोक्ष कराव्या । मान-उन्मान प्रमाण वधार्यां। क्रमिइं छठी कीधी। इग्यारमइ दिवसि सर्व कुटुंब जिमाडी, सर्व कुटुंबनइ वस्त्र, आभरण, अलंकार देई, कुसुममालानउ डोहलउ ऊपनउ हूंतउ तेह-भणी श्री मिलल ए नाम दीध । प्राक्तन कर्मना योग-लगइ स्त्री-वेद हुउ । श्री मिलल यौवनावस्थाइ आव्या, पंचवीस धनुष उच्चैस्तर, त्रिंहु ज्ञाने विराजमान ।

इसिंह ईणइ भरतक्षेत्रिंहं साकेत-पत्तिन, वैजयंत-तु अवतरी अचलिमत्रनउ जीव प्रतिबुद्धि एहवइ नामि राजा हुउ । तेहनइ पद्मावती एहवइ नामि प्रिया । अन्यदा नागनी यात्रा-भणी प्रिया-सिंहत जु पहुचइ, तु आगलि पृष्यनउ में मुहुर अनइ पृष्यनउ मंडप देखी, प्रिया सिंहत वली वली जोइ प्रसंसिवा लागउ जु – एहवी वस्तु आजनइ कालि न दीसइ । एतलइ सुबुद्धि सुहुतई कहिउं, 'बहुरता वसुंघरा, स्वामी ! जेहवी कुंभराजानइ घरि मलीकुमारिका छइ एहवी त्रिभुवन-माहि अनेरी स्त्री नथी ।' ए नाम सांभली भवांतरना स्नेहनइ प्रमाणि आपणउ दूत कुंभराजा-भणी वरणानइ काजि चलाविउ ॥१

पहनद घरणनउ जीन नेजयंत निमान इन्नु चिनी पृष्टचंपाइ चंद्रछायाभिघ राजा हुउ । तेह-नइ नयसार नामा श्रेष्ठि जिनधर्मनइ निषद निश्चल । नाणिजनइ हेति प्रनहणि चिडिउ । तिसिइ मिथ्याखी देनता एक तेहना धर्मनी निश्चलता जोना-भणी समुद्र कल्लोलमालाइं करी आकलउ कीघउ । प्रनहण बूडिना लागउं । तेतलइ देनता प्रगट थई कहइ, 'जु जिनधर्म मूकइ अनइ मूझ-नइ आदरइ तु प्रनहण राखउं ।' इणि नचनि तिलतुममात्र डोलइ नही । तेतलइ देनता प्रगट थई कहिना लागउ, 'अहो ! ताहरी प्रसंसा इंद्र करतउ देखी मइ मच्छर-लगइ ताहरी प्रसंसा सामही न सकी । तेह-भणी मइ परीक्षा कीधी ।' इम कही च्यारि कुंडल रतना देई देनता अहद्य हुउ । पछइ नयसार कुनल-क्षेमि समुद्र ऊतरी मिथिलानगरीइ आनीउ । कुंभराजानइ नि कुंडल दीधां । तेतलइ मल्लीकुमारी तिहां आनी हुंती । राजाइ ते कुंडल कुमरीनइ दीधां । पछइ नयसार कियाणा सर्व नेनी चंगाइ आनिउ । तिहां चंद्रच्छाय-राजानइ मिलिउ । तेहनइ नि कुंडल दीधां । तेतलइं राजाइं पूछिउं, 'नि कुंडल किहां लाधां ?' तिनारइं नयसार कहइ, 'मइ नि कुंडल मल्लीकुमरीनइ दीधां । पणि ते मल्लीकुमारीनउ रूप जे दोठउ ते एकणि मुखि कहिउं न जाइ । ए बात सामळी भवांतरना स्नेह-लगइ दूत नरणा-भणी मोकलिउ ।।२

K पुत्री. २. P. मुइर, K. मुकुर.

इसिइं पूरणनउ जीव वैजयंत-तउ चिवी श्रावस्तीइ स्वमी नामा राजा हुउ । घारणी नामि प्रिया । अन्यदा अपणी पुत्रीनउं रूप देखी राजा कुंचकी-प्रति कहइ, जेहवउं माहरी पुत्रीनउं रूससंगदा, तेहवूं अनेथि नयो।' तेतलइं कुंचकी कहइ, 'स्वामिन! ए गर्व म करउ । जिणि कारणि मि थेलानगरीई कुंभराजानी पुत्री मल्लीकुमरी रूप से सीभाग्ये करी सुंदर छइ। एहवी देव लोकि पण न दीसइ। ए बात सांमली वरणानइ काजि कुंभराजा समीपि दूत मोकलिउ पूर्व स्नेहल्लाइं ॥३

इसिइं वसुनउ जीव पणि वैजयंत इ चित्री वाणारसी-नगरीइ शंख नामा राजा हुउ । एत-लइ मल्लीनां कुंडल काननां भागां। ते सोनारनइ दीघां समारिवा-भणी। पणि सोनार कहइ, 'स्वामिन! ए देवतादत्त मइं समराइ नही।' तिसिइं राजाइं रोस-लगइ नगरी-हूंतउ कादिउ। ते सोनार रीसाणउ वाणारसीइं आवी राजानइ मिल्डिउ। राजाइं देसनां आश्चर्य-कउतिग पूछ्यां। तिणि सोनारइ मल्लीकुमरीनां रूपनी वात जेतलइं कही, तेतलइ पूर्वभवना स्नेह-लगइ वरणा भणी दूत मोकलिउ।।४

पहचड़ वैश्रमणनउ जीव वैजयंत तु चित्री हस्तिनागपुरि अदीनशत्रु राजा हुउ । एकदा मल्लीनउ सहोदर मल्लकुमार, तीणइ चित्रगर पहि चित्रसाली चीतरावा मांडी । हिव ते चित्रगर-माहि एक चित्रगरनइ देवतानउ वर छइ । एक अंगनउ प्रदेश देखी सर्व अंगनउ रूप लिखह । इसिइ गउन्नइ अंतरालि मल्लीकुमरीना पगनउ अंगूठउ दीठउ । पछइ तिणि चित्रगरि मल्लीकुमरीनउं रूप जेहवउं हूतं, तेहवउं संपूर्ण रूप लिखिउं। एहवइ मल्ल-कुमार चित्रशाली-माहि आविउ । तिहां मल्ली देखी पाछउ वलिउ । तेतलइ भात्रीइ सम्यग् जोई नइ कहिउं, 'वत्स! ए तउ चित्रगत मल्लीनउं रूग छइ । साक्षात्कारि नथी।' पछइ मल्ल रीसाणइ ते चित्रगरनउ हाथ छेदी देस-हूंतउ काढिउ। ते चित्रगर फिरतउ फिरतउ हस्तिनागपुरि अदीनशत्रु-राजा-आगलि आवी मल्लीनी वात कही। तेतलइ पूर्वभवना स्नेह-लगइ वरणानइ काजि दूत एक मोक्लिउ।।५

एतलइ वली अभिचंद्रन अवि वैजयंत-तु चवी कांपिर्यपुरि जितशत्रु राजा हूउ । इसिइ मल्लीकुमरी-साथि को एक पाखंडनी घमेन उवाद करतां ऊतर नावइ । तेतलइ ते बाहरि काढो । पछइ रीसाणी कांपिर्यनगरइ जितशत्रु राजा-आगिल मल्लीन उंरूप वर्णविउं। तिणि राजाइ अनुरागना वश-लगी दूत मोकलि उवरण नइ काजि ।।६

इसिइ श्री-मिछी पणि अविधिह करी भवांतरना मित्र पूर्वस्नेह्न कारण जाणी ते प्रतिबो-धवा-मणी आगणा घर-पमीति अशोकवन-माहि रत्नमय पीठ कराविउं। तिहां सुवर्णमपी पूतली एक करावी। ऊपरि वली ढांकणउं कराविउं। पणि पूतली माहि पोली की धी छह। हिवह जे डाहा छई, तेही इम जाणइं जु ए जीवती पूतली छह। वली पाखती जाली सहित घर कराविउं। बारणा छ जुनुआं कर व्यां। पूतली-पाछिल भीतिइं छिद्र राखिउं। सर्व आहारनी पोली ते पोली पूतली-माहि मूकावोइ। प्तलीनइ तालूइ आहार मूंकी ऊपरि सोनानउं ढांकणउं दीजइ। सर्व आभरण पहिरावीइ। इसिइं छह राजाना दूत, जे जुनुआ आव्या हुंता, ते कुंभराजाइं पाछा वाल्या। पछइ छह राजा रोसाणा हूंता आपणां आपणां सर्व सैन्य टेई तिहां आव्या। मिथिलानगरो वीटी। कुंभराजा आकुलउ हूउ। तेतलइ मल्लीकुमरीइ आपणी बुद्धि करी कुंभराजाइं कहिउं. 'तात! आज रातिईं एकेकउ जुजुउ राजा तेडावउ।' पछइ कुंभराजाइं

Ģ

र. L. पाहंति । २. Pu. आहार नीपाई ते पूतली ।

छइ राजा ज्ज़्आ तेडिया। तिसिइं राजा छए बारणे जुज़ुआ जुज़ुआ पहुठा। पणि एक-एक-नइ जाणता नथी। ते प्रतिमा देखी हिर्षित हूंता साक्षात् मछीकुमरी जाणी जेतलई माथइ हाथ लगाडिइ तेतलई ढांकणडं 'अलगडं हूउं। तिसिइं माहि-थको दुर्गिध ऊछ्ली। तिसिइं तिम किमइ जिम नाक ढांकी अलगा नासिवा लगा। तेतलई मिल्लिनाथि ते राजा बोलाव्या, 'अहो! जउ सोनानी पृतलीई एवडउ दुर्गिध, तु हूं मलमूबनुं थानक, माहरइ विषइं एवडउ स्युं कृडउं व्यामोह? ए विषयमुख विषयाय छइ, ए विषय-लगी संसार-माहि जीव भमइ छइ?। श्री-मिल्डिनाथि भवांतरना स्नेह लगी तिम किमइ प्रतिबोध्या जिम ते छइ राजानइ जातीस्मरण ऊपनउं। पछइ छई राजा कहइं, 'अम्हनइ दीक्षा दिउ।' तेतलई मिल्हिनाथ कहइ, 'मुझनइ जिवारइ केवलज्ञान ऊपजिसिइं, तिवारइं तुम्हनई चारित्रनी प्राप्ति होसिइं।' ए वात सांमली छइ राजा प्रतिबोध्या हूंता नमस्कार करी मिल्लिनाथनई खमावी आपणे आपणे स्थानके पहुता।

तिवार पछी सउ वरस जन्म-इतु बउलिइ हूंतइ लोकांतिक देवताए आवी दीक्षानु काल कहिउ । तिसिई वन-माहि कं केल्लि-तरु-तल्ह, शिवका-तु ऊतरी, सर्व आभरण मूंको, अष्टम-तिप दीक्षा लोधी । सामायक-सूत्र ऊचर्यां । पछइ मन-पर्याय ज्ञान ऊपनउं । तिणइ जि दिनि केवलज्ञान ऊपनउं । इंद्रनउं आसन कांपिउ । तिसिई अवधिनइ योगिई इंद्र आवी केवल-महिमा कीघउं । समोसरण कीघउं । तिहां श्री-मिल्लिनाथ धर्मीपदेश देवा लागा , सर्व भाषाइ जिम सर्व जीव समझइं । तीणी देसनाइं प्रतिबुद्ध तीणे छए राजाए दीक्षा लीधी । श्री-कुंभराजाइं श्रावक[न]उ धर्म पडिचिज ं । तिहां स्वामोना मुख-इतु त्रिपदी पामी अठावीसे गणधरे चऊद पूर्व नवा कीधा । पउण पहुर-पछी गणधरे पादपीठि बइसी देसना दीधी । तेतल्ड कुम्भराजाइं कलमशालिनउ शाटउ(?) आणिउ । वाजित्र वाजते तेहनउं अर्ध देवता लिइं, अर्ध सर्व राजादिक लिइं । कणमात्र मुद्दं न पडइ । ते जि-को एक कण लिइ, तेहनइ पूर्विला रोग सर्व जाइं अनइ नवा छमास-तांइ न ऊपजइं । बीजइं दिनि परमान्नि करी विश्वसेननइ घरि श्री-मिल्लिनाथनइ पारणउं हूउं । पंच दिव्य हूयां ।

पछइ स्वामी पृथ्वी-माहि भठ्यजीवनइ प्रतिबोध देतां, पंचावन सहस्र वर्ष आयु पाली, पांच सइ साधु सर्व सहित, समेत-शिखरि, मास-दीह अणसण पाली, फागुण शुदि चारसि दिनि, भरणी नक्षित्रि, स्वामी मोक्षि पुहता । इंद्रादिक देव पणि महामहोत्सव करी नंदीश्वरि पहुता ।

तु अहो भविको ! जिम श्री-मल्लिनाथइ शील पालिउ, तिम तुम्हे पालउ ।

इति श्री-खरतरगच्छि श्री-जिनचंद्रसूरिशिष्य वा० मेहसुंदरगणि विरचित श्री-शीलोपदेश-माला-बालाविबोधइ श्री-मल्लिचरित्र संपूर्ण ॥१८॥

जे जीव मल्लि-नेमिनी परिइं अदृष्ट-कामभीग ब्रह्मब्रत पालइ ते आश्चर्य कांइ नहीं, परं जे विषय सेवी अनइ शील पालइ ते धन्य । इहां दृष्टांत-पूर्वक कहइ —

सो जयउ थूलभद्दो अच्छेरयकारि चरिय-परिअरीओ । जस्सञ्जिव बंभवए जयम्मि वज्जेइ जयढक्का ॥४१

च्याख्याः -श्री-आर्य-विजयसंभ्तिन उशिष्य श्री-स्थ्लिभद्र जयवंत हु । ते किसिउ छइ १ अछेरय=आश्वर्यकारींउ चरित्र तिणि करो पिरक्तिल्सिहित एहवा जे श्री-स्थूलभद्रनउ ब्रह्मव्रत-पालनरूप यशपडह जगत्रय-माहि आज-लगइ वाजइ छइ । अनइ वजी अनेक युग-सीम वाजिसिइ । कंदर्परूप महामल्ल जीपि वइरी जगढक श=जगमेरी वाजइ छइ≔ितदांस एकांगि वीरपणइ वर्णवीइं । इति गाथार्थः । भावार्थ कथा-हूंतउ जाणिवउ -

१. Pu परहुं पडिड, K. अलगडं थयडं ।

[१९ स्थूलभद्र-चरित्र]

ईणइ भरतक्षेत्रि पाडलीपुर-नगरि नंद राजा, शकडाल महुतउ, तहनी भार्या लक्ष्मीवती । तहना वि पुत्र-एक श्री-स्थूलभद्र, बीजउ सिरीउ। हिवइ जे सिरीउ, ते नंद्राजानउ अंगोलगु, अनइ स्थूलभद्र, ते पूर्व-गुण्य-लगइ पितानइ प्रसादि उपकोशा वेश्या तेहनइ घरि बार वरस रहिउ। इसिई ब्राह्मण वरहचि नामा महा विद्वांस कवीश्वर, ते सदाइ राजानइ अठोत्तर-सउ नवे कान्ये करी स्तवइ। अनइ नंद राजा शकडाल महुता सामहुं जोइ। पणि शकडाल मिथ्यात्वी-भणी प्रसंसा न करइ। इम करतां घणा दिवस गया। न नंदराजा दान दिइ न प्रधान वर्णवइ। इसिई वरहचिई चीतंविड, 'जां शकडालनी भार्या नहो आवर्जं तां महुतउ दान देवा नही दिइं, कांई प्रवाहिई सर्व विश्व स्त्रीनंउ बाहिउं भमइ छइ।' इम चीतवी वरहचिई लक्ष्मी तिम आवर्जी जिम शकडालिइं पतगरिउं। प्रभाति राजा नंद सभा-माहि आवी बइठउ तेतल्ड वरहचि आविड। तिहां अठोत्तर सउ कान्ये राजानी स्तुति कीधी। राजाई प्रधान सामहुं जोयंउ। तेतलई प्रधानि स्त्रीनइ वचिनई कहिउं जु, 'ए कान्य मलां छइं।' पछई राजाई संतुष्ट वर्तमान अठोत्तर सउ दीनार देवराव्या। इम बीजइ दिनि पंडित अठोत्तर सउ कान्ये करी वर्णवइ अनइ राजा प्रधान-पाहिति अठोत्तर सउ दीनार देवराव्य। इम वीजइ दिनि पंडित अठोत्तर सउ कान्ये करी वर्णवइ अनइ राजा प्रधान-पाहिति अठोत्तर सउ दीनार देवराव्य। इम वीजइ दिनि पंडित अठोत्तर सउ कान्ये करी वर्णवइ अनइ राजा प्रधान-पाहिति अठोत्तर सउ दीनार देवरावइ। इम घणा दिन गया।

अन्यदा महुतइं चीतंविउं, 'ए मिथ्यात्वनी वृद्धि मुझ थकी हुई।' पछइ प्रधान राजा प्रतिइं कहइ, 'स्वामी! ए काव्य जूतां। जउ न मानउ तउ माहरी पुत्रीनइ आवह छइ, पूछउ। तुम्हनइ प्रभाति प्रत्यय देखाडिसु।' पछइ जक्खा १ जम्खिदिन्ना २ भूता ३ भूतिदेन्ना ४ सेणा ५ वेणा ६ रेणा ७ ए सात पुत्री मुहुतानी। तिहां पहली एक- उसंधूई, बीजी बि- अंधूई, त्रीजी ति- अंधूई – इम सातइ सात- अंधूई। ते राजभविन आणी, परीअछि बंधावी, माहि राखी। तेतलइ विद्धांस आविउ, काव्य कहियां। जक्खाइ जेतलइ एक वार सांमल्या तेतलइ जक्खाई राजा देखतां पाठ दीघउ। इम साते पुत्रीए अनुक्रमिइ पाठ दीघउ। ए वात जाणी राजाई दान वर्रुचिनइ निषेधांबिउ। राजा प्रधान प्रति कहइ, 'तिहि जि वर्णव्यां तु मई दान दीघउं।'

पछइ वरहिच पंडित गंगानइ ति कपटयंत्र मांडी प्रभाति लोक देखतां कहई, 'हे मात! जु राजा दान न दिइ तु मात तू दिइ ।' इम कही जेतलइ पाणी-माहि यंत्र-ऊपिर पग आहणह तेतलह अठोत्तर सउ दीनारनी गांठडी बाहरि पडई । ते गांठडी सर्व लोक देखता लिइ । इम सघले वात प्रसिद्ध हुई । कांई सुप्रयुक्त पांखंडइ कउण कउण विप्रतारीइ नही ! हिवई ए बात राजा आगलि पणि कुणिह एकि कही, 'स्वामी! गंगा अठोत्तर सउ दीनार दिइ छइ ।' राजाई ए बात साची मानी, कांइ राजा बलद पाणी ए जिम वालीई तिम वलई । इसिई शकडाल प्रणाम करी कहइ, 'स्वामित! प्रभात समइ आपणपे जईइ ।' ए बात राजाई पिडवजी । तिसिई संध्याई महुतइ जण मोकली वरहिच पंडितनी मूंकी छानी गांठडी आणावी। पछइ प्रभाति राजानइ संघाति लेई नदीनइ कांठइ आव्या। तेतलइ वरहिचई राजा देखतां नदीना अठोत्तर सउ काव्य करी स्तवी, गंगानइ प्रार्थेइ, 'माता! राजा नापइ, तूं आपि'। इम कही पग यंत्र -ऊपिर आहण्णह। पणि जे सुहुतइ कपट करी ग्रंथि लीधी तेह-भणी कांई न पडइ। इम वार वार पग आहणता लोक देखतां जि शकडालइ आपणी बगल-हूंती गांठडी काढी राजानइ हाथि आपी, कहिवा

१. A. लाछलदे । २. K. आवडइ । ३. L. K. संथी ।

लागउ, 'स्वामी ! ए पालंड आगइ मइ जाणिउं हूतउ, पणि आज मइ तुम्हनइ कहिउं।' पछइ वररुचिनी माम गइ। गांठडी वररुचिनइ दीधी। राजा घरि आविउ।

िवइ वरस्चि सापनी परिइ शकडालना छिद्र जोइ । इम अन्यदा राजाना घर द्वकडी नेसाल मांडी। तिहां मुहताना घरनी दासो एक पंडितिइं आवर्जी। ते-कन्हिल मुहुतानी सर्व वात पूलतां अनेरह दिश्डह महुंतानइ घरि सिरोआनड वीवाह मंडाविड। आपण इघरि जिमाडिवा भणी छत्रीसइ कारखाना करावोइ। छत्र, चामर, जरिह, जीणसाल, वाजित्र नवा नीपजाइ छहं। एहव इवरस्वि पंडित अवसर लही, सूखडीइं बालक आवर्जी, एक श्लोक बालकनइ मुखि ऊवरावइ—

न वेत्ति लोको मूढो यत्छकडालः करिष्यति । हत्वा नंदं नृपं राज्ये श्रीयकं स्थापयिष्यति ॥

ए श्लोक बालक होडतां फिरतां मुख्यि ऊचरइ । तिसिई ए श्लोक राजाइ गउखि बइठा सांभव्यउ । आपणा जण मोकल्या । शकडाल मुहताना घरनउ चरित्र जोआवी, माने चींतवह, 'जे बात बालक ऊचरइ ते अलीक न हुइ । अनइ जउ मइ घर जोआविउं तु साबी वात दीठी।' पछइ राजा मन-माहि डंस राखी रहिउ। प्रभाति महुतउ राजानइ जेतलइ प्रणाम करइ तेतल्ड राजा ऊपराठउ हुउ । ए वात देखी शक्तडाउ घरि आत्री, सिरीउ तेडो, कहिब छ।गउ, 'बरस ! सांप्रत कुणिहि कि अलीक बोली राजा सकोप कीघड । तु आज आपगइ कुलि उत्पात दोसइ छइ। पणि जु हूं मरउं तु उत्पात टलई। ते-भणी प्रभाति हुं राजा-समीपि जई जेतलइ प्रणाम करं तेतलई तूं मस्तक-छेद करे। ए वात सांमली सिरीउ कहइ, 'तात! ए वात मह न चालइ।' तिवारइ शकडाल कहइ, 'एक वृद्ध मुझनइ हणी आपणउं कुल ऊधरि। हूं तालपुट बिष खांड छउं। तूं पवाडउ लेजे। इम मोटइ कष्टि समझावी, राज समीवि आवी, जेतलइं प्रणान करइ तेतलई वली राजा ऊपराठउ हूउ। तिसिई शकडालि विष मुखि घातिउं, तेतलई सिरीइ खांडइ करी पिताना मस्तकनउ छेर कीघउ। राजा 'हा हा' कि तउ सिरीआनई कहइ, 'ए तइं सिउं की घंउं?' तेतलइ सिरीउ कहइ, 'स्वामी! तोणइ सोनइ सिउं की जइ जीणइं कान भूटइ ११ ए वात सांभली राजा तूठ्छ, प्रधाननी मुद्रा देवा लागउ । तेतलइ सिरीइ किंदुई. ैमाहरउ वडउ बांधव थूळमद वेदयान्इ घरे छइ, ते उरय नइ अस्त जाणताउ नथी। वेदयानइ श्वरि बार कोडी सुवर्ण विलसी। एहवउ थूलभद्र तेंडावि मुद्रा दिंड। 'पछइ राजाइं ते थूलभद्र तेडाविड, पितानड मरण कहिडं अनइ कहिडं, 'राजमुद्रा लिउ।' तिसिइं यूलमद कहइ. 'विमासउं।' पछइ राजाइं कहिउं, 'आशोकवन माहि जई विमासि।' पछइ थूलमद चींतवई-'तां संसारनंड स्वरूप अति असार जे पिता मूंड मईं न जाणिंड। तु हिवह ईणह अधिकारि सरिउं। ' इम विमासी 'करेमिमंते' अरिहंत-सिद्ध-साखि जेतलई ऊचरइ, माथइ छोच करई, तेतलंड देवताए वेस दीघउ। ते पहिरी राजा-समीपि आवि धर्मलाम कही नइ नीकलिया लागउ। तेतलइ राजाई कहिउं, 'ए सिउं?' तिवारइ मुनिइ कहिउं, 'इम जि विमाधिउं।' पछइ यूलमें नीकलिंड । राजाइ जण मोकल्या, 'जोउ किहां जाइ?' तेतलई जिम अंतिजनउ पाउंड परिहरीई तिम वेश्यावाडउ परिहरी श्री-संभूतिविजय आचार्य-समीपि दीक्षा लीधी । इसिइ राजाई सिंगैआनई प्रधान-मुद्दा दोधी । सिरीउ घरि आबी विमासइ, 'ए तां सर्व विश्वसित वरह चेनउं कीधउं। त पितानउ वयर किम वालीसिइ ?' इम विमासी कोशानइ घरि आवे थुलभद्रनी कथा मांडी। जिम टंकणखारि सुवर्ण गल्ड तिम सिरीयानइ वचनि कोशानउ मन मेदिउं। तिसिइं सिरीउ

कहइ, 'जे थूलभद्र घर छांडइ ते वररुचिनउ विलिसता । तु ए वयर ताहरइ सानि घि वलइ।' इम कहइ कोशा हसीनइ कहइ, 'ते किम?' सिरीउ कहइ, 'ताहरी बहिन साथि वररुचिनइ संबंध छइ । अनइ ते-पाहि तेहनइ मदिरापान करावीइ ।' ए वात तीणइ पडिवजी । पछइ सिरीउ घरि आविउ। हिवइ वररुचि अनइ राजा सदाइ एकइ आसिन बहुठा वात करह। इम एकदा सिरीइ अवसर लड़ी राजा वीनविंड 'स्वामित! मंडारि तेवडां घन नहीं।' तिसिइ राजा कहइ, 'जां लगइ शगडाल हंतउ तां लगइ वांक कांई न हुंतउ।' तिवारई सिरीउ कहइ, 'स्वामी! ते ैमद्यपानी वररुचि ब्राह्मणि फोकट बालकनइ मुखि श्लोक भणावी तुम्हार्डं मन विप्रतारिङ ।' राजा कहड़, 'ते वरुचि बांभण, किम मद्यपीइ ?' तिसिइं सिरोड कहड़, 'स्वामी! प्रभाति ए कड-तिग देखाडीसिई ।' पछइ माली एक आपणउ विश्वासी तेडी तेहनइ सीखवी सिरीउ प्रभाति सभा-माहि आविउ । वररुचि पणि आविउ । सामंत मंडलोक सर्व आव्या । तेतलइ मालीइ कमल आणी राजादिक लोकनइ आप्यां, अनइ ^भमयणहल-भावित जे छइ कमल ते वरुचिनइ पणि हाथि दीघउ । सह को कमल सूंघिवा लागा। तिवारंइ वररुचि पणि ते कमल सूंघिउं। ते मयणहल-परिमलनइ प्रमाणि वरहिवन इ वमन हुउ । तिसिइं सभा-हूंतउ नीकल्डिउ । पणि मिदरा गंधावा लागी जे कोशानी बहिनिइ पाई हुंती। ते वात राजादिक सघले लोके जाणी। पछइ वररुचि तातउँ कथीर पीधुउं, शोधि होवा भणी । मरण पामिउ । इम सिरीइ वयर वालिउं। पछइ सिरीइ सतांग राज्य आक्रमिउ । सर्व मुद्राइं प्रधानपद भोगवइ ।

एहवइ श्री-थूलमद्र द्वाद्यांगी मणी गुरु-समीपि रहइ । इसि वर्षांकाल आव्यउ । त्रिहुं महारमाए गुरु वीनव्या । एक कहइ, 'च्यारे मास उपवास करी, सीह-गुफानइ द्वारि ऊभउ काउसगा करिसु ।' बीजउ साधु कहइ, 'हष्टीविष सापनइ विलन्द द्वारि, च्यारि मास उपवास करी काउस्सगा करिसु'। त्रीजउ साधु कहइ, 'कूआ—ऊपरि अधविचि काष्ट छइ, तिहां च्यारि मास काउसिंग रहिसु ।' तिसिइ गुरे श्रुतज्ञाननइ बलि जाणी आदेस दीघउ । तेतलह यूल-भद्र पणि गुरुनइ कहइ , 'हूं कोशानइ घरि छइ रस जिमतउ, चित्रशाली—माहि च्यारि मास रहिसु ।' इसिइ संभूतिविजय गुरे योग्यता इंद्रिय-जयन। जाणी आदेश दीघउ । पहिला त्रिण्णि महारमा आपणइ आपणइ टामि जई काउस्सिंग रहिया । यूलभद्र कोशानइ घरि जई धर्मलाम कही, कोशानी चित्रशाली मांगी थूलभद्र चडमांसि रहिउ । तिहां छ रसमइ आहार विहराविउ । पछइ वेश्या नवा नवा वेस पहिरी नव नवे हावभाव-कटाक्ष-क्षेपे वचन-विलासे नव नवे श्रुंगारे श्री थूलभद्रनइ खलभलावइ । पणि लगारइ क्षोभ न पामइ। जिम जातिग्रुद्ध हीरउ लोहि भेदीइ नहीं तिम थूलभद्र न भेदीइ । पछइ कोशा आवी पगे लगगी, 'स्वामिन ! पूर्व-परिचय-लगइ मइ अपराध कीघउ । हिवइ ते अपराध खमउ ।' पछइ थूलभद्रइ तिम ते प्रतिबोधी जिम श्रावकुं धर्म आदिरेउ अनइ अभिग्रह लीघउ – राजरत्त पुरुष टाली अनेरा पुरुषनउ नेम ।

इसिइ वरसालउ संपूर्ण अतिक्रमिउ। तिणिण महारमा आपणा आपणा अभिग्रह पूरी जेतलई गुरु-समीपि आन्या तेतलई गुरु कांइ एक आसन-इतु ऊठी, 'दुक्करकारक आवउ' इसिउं कहिउं। तेतलई थूलभद्र आविउ। तेहनइ गुरु ऊठी बहुमान देइ, 'दुक्कर-दुक्करकारक आवउ।'

१. K वरुचि ब्राम्हणि मद्यपानिइं । २. Pu. L. मीडहल, K. मीणहल ।

इणि वचिन महात्मा चींतवह, 'ए मुहुताना पुत्र-भणी बहुमान दिइं गुरु ।' ते त्रिण्णि 'हिव आवतह वरसालिइ अम्हे पणि अभिग्रह लेखिउं।' इम अमर्ष हीआ-माहि वहता आठ मास मोटइ कष्टिइ गमाडचा। तेतलइं वरसालउ आविउ। सिंहगुफावासी महात्माइ गुरु वीनन्या, 'भगवन! वेश्यानइ घरि च्यारि मास हूं रहिसु । तप नियम करिसु ।' तिसिइ गुरे ज्ञानोपयोगिइं जाणी कहिउं, 'तइं ए अभिग्रह नहीं पलिइं।' इम कहतां वारतां विचालइ सिंहगुफावासीइं अभिग्रह लेई, थूलभद्रनी स्पर्धा वहतउ उपकोशानइ घरि पहुतउ। तिणि जाणिउं जु, 'ए थूलभद्रनी तुडिइं आविउ छइ।'

पछइ उदार स्फार श्रंगार करी, महात्मा-समीपि आवी, हावभाव तिम करिवा मांडचा जिम क्षण एक-माहि महातमा चूकउ । तपिक्रया सर्व मूंकी। तिसिइ उपकोशा कहइ, 'धन आणि ।' महात्मा कहइ. 'धन मुझ-कन्हिल नथो ।' तु उपकोशा कहइ, 'नेपाल देखि जा, तिहां नेपाल देशनड देशांतरीनइ एक रत्नकंबल आपइ छइ, ते रत्नकंबल सवा-लाख लहइ।' पछइ ते महात्मा कामनं वाहिउ वरसतइ मेघि नेपालदेस-भणी चालिउ । पंथ अवगाही नेपालदेसना राजानइ मिली, रतनकंबल लही, वांस एक-माहि गोपवी, पाछउ वालिउ। पणि मन-माहि उपकोशानइ ध्याइ । इम आवतां पालि माहि सूडानइं वचिनईं महात्मा भीले शाली खडलिउ । पणि कांड न देखह । तिसिइं मूकी दोध । तेतलइ वली सूड उ कहइ 'लाख जाइ, लाख जाइ ।' इसि कह(? हि)इ वली महात्माना मुख-प्रमुख सर्व जोयां, पणि कांई न देखइ। तेतलइ पल्लोपति कहइ. 'अहो महात्मा! अम्हे ताहरउं काइं न लिउं। पणि कहि, सूडउ साचउ कि कृडड ?' तिवारई महात्माइ कहिउं, 'ए वांसनी लाकडी-माहि सवा-लाखनउ रत्नकंबल छइ ।' पछइ सत्य वचन-लगइ महात्मा मुंकिउ । हिवइ ते मुनि पंथ अवगाही, उपक्रोशानइ घरि आविउ । तेतलइ उपकोशा पग घोती हुंती । तिसिइ महात्माइ ते रत्नकंबल आणि आगिल मृंकिउं। एहवड वेश्याइ ते कंबल लेई. पग छही, खाल-माहि चांपिउं । तिवारइ मुनि कहइ, 'एहवउ बहम्लय कंबल हेलाई कादम-माहि तइ कांइ घातिउं ?' तिवारई कोशा कहइ, 'ए कांबलानी केही वात छइ ? जोइ-न. तई चारित्र-रत्न हेलाई माहरइ विषइ किम गमाडिउं छइ ? कहि-न अल्प सखनइ का जिंह अनंत सुख कांइ हारई ?' इत्यादि प्रतिबोध सांभ ही वैराग्य-लग्रह कहिवा लाग्छ. 'हे सुभगि ! तइं हूं ^४भूल उतारिउ । हिव हूं गुरु कन्हिल जई आलोयण लिउं छउं । तुझन इ धर्मलाम हु।' तिसिइ उनकोशा पिंग लागी कहइ, 'एतलउ अपराघ मइं तुम्हारा प्रतिबोध-भणी कीधउ । ते तुम्हे खमज्यो ।' पछइ गुरु-समिपि आवी, पाप आलोई, तप तिपवा लागउ।

इसिइ एकदा राजाइं सार्थवाह एक आविउ हूंतउ तेहनइ कोशा दीधी। हिवह ते कोशा सार्थवाह-आगिल सदा यूलमद्रना गुग वर्णवह। ते गुगवर्णन देखो यूलमद्र-साथिइं मन ऊतारिवा-भणी सार्थवाह एकणि बाणि करी, सूतउ हूंतउ, आंबानी लूंबी छेदी, बाणिइं बाण सांधी, कोशानि हाथि लूंबि आपइ। आपणउ कुसलपणउं देखाडी, कोशाना मुख सामहउं जोह। तेतलइ कोशा पणि सरिसवनउ थाल भरी, फूले ढांकी, ऊरि सूई मूंकि, नाविवा लागी। पणि सूईइ पग वीधागउ नही, अनइ फूल पणि खिस्यां नही। एहवउ स्वरूप देखी सार्थवाह संतुष्ट वर्तमान कहई, 'मागि, स्यू आपउं?' तिवारइं कोशा कहइ, 'मई सिउं देखाडिउं जे तुं रीझिउं?' जड

१. \overline{P} सिवाय 'भीले' नथी.। २. P_u . बेलिउ L. खालिउ P. झालिउ.। ३. K. हेलाइं इम कांइं खालि घालिउ । ४. P. L. K भलउ । ५. P_u . 'रिषउ' सुधारीने 'हरिषउ,' L. P. रंजिउ ।

दुक्कर वस्तु जोईइ तु थूलभद्रनी, जीणइ बार कोडि धन मुझ साथिई मोगवी नइ हेलाई हूं परिहरी, एहवउ शोल पालिउं।' इत्यादि श्री-थूलभद्रना गुण वर्णवतां, ते सार्थवाह प्रतिबोध पामी दीक्षा लीधी। कोशा वली आपणई अभिग्रहि रही।

इसिइं बार-वरसी दुकाल पिडिंड । तिणि साधु-संघ महा-किष्टइं दुकाल ऊतिरेड । पिण महात्मानइ गुणवानइ अभावि सिद्धांत वीसरिया । पछई श्री-संघ पाडलीपुरि नगिर सर्व एकठड मिलिंड । जेहनइ जि कांइ मुखि आवतडं हूंतड सर्व एकठडं करतां इग्यार अंग पूरां कीघां । पिण पूर्वनो विद्या जोईइ, तेइ-भणी भद्रवाहु स्वामि-समीपि, तेडिवा-भणी वि महात्मा मोकल्या । तिसिइ भद्रवाहु-स्वामि कहइ, 'मइ तु महाप्राण ध्यान मांडिउं छइ । तिणि करी मइ नहीं अवाइ।' पछइ महातमा पाछा आव्या। वश्री संघिइं पूर्वना उद्धार-भणी वि महात्मा मोकली कहाविउं, 'जि को संघनइ न मानइ तेहनइ सिउ दंड ?' गुरु कहइ, 'तेहनइं संघ बाहिर कीजइ।' इम किहइं, महात्मा कहईं, 'तु तुम्हे जि संघ बाहिर थासिउ।' इणि वचिन ससंभ्रांत श्री-भद्रवाहु-स्वामि किहवा लागा, 'संघनउ बोल माथा ऊपरि। पणि जु संघ मुझ ऊपरि कृपा करइ तु महात्मा प्रज्ञावंत जि को हुइ ते मोकल्य । तेहनई हूं सात वाचना देसु । इम संघनइ प्रसादिइं माहरउं काब सीझइ अनइ महात्मा पणि भण्या जाइं।' इणि वचिन संघिइं यूलभद्र-प्रमुख पांच सइं महात्मा भणिवा मोकल्या । तिहां भद्रवाहु स्वामि-कन्हइ भणिवा लागा।

इम केतलई कालि महात्मा भणतां भणतां ऊभगा। सर्वे पाछा आग्या। एकलंड यूलभद्र तिहां रहिउ भणइ । इम भणतां भणतां दस पूर्व भण्या । तेतलडं श्री थूलभद्रनी बहिन दीक्षा लेईनड वांदिवा आवी । गुरुनइ पूछइ, 'भगवन ! थूलभद्र किहां ?' तिसिद्धं गुरे किहउं, 'देवकुल-माहि सज्झाय गुणि छइ ।' पछइ महासती भाई वांदिवा तिहां आवी। तेतलइ थूलभद्रिइं विद्यानइं बलिइं सिंहनउ रूप कीध्उं । महासती सीह देखी पाछी नाठी। तिहां जई गुरुनइ कहइ, 'भाईनइ कुशल नहीं।' तिसिइं गुरे उपयोग देई जोईनइ कहिउं, 'जाउ वांदर । कुसल छइ ।' पछइ महासती हर्षी हंती भाईनइ वांदी आगलि बहठी। तिसिइ थूलभद्र पूछड़े, 'सिरीउ किहां ?' तिवारइ महासती कहइ, "अम्ह साथिइं दीक्षा लीघी। पणि लगारइं भूख्यउ रही न सकइ। एकासणउं पणि न करह। इम करतां पज्रसण आविउं । पछइ महासतीए सिरीयाभाईनइ पोरिसि करावी, पोरिसि पहती. साढ पोरिसि करावी । इम करतां सांस झालवी । पछइ मह(सतीए कहिउं, 'हिवइ राति पडी, प्रभाति पारणंडं करे ।' इम अर्धरात्रि वडलिइं आकलंड हूउ । तिहां आराधनापूर्वक मरण पामिउ । प्रभाति ऋषि-घातना पाप-लगइ महासती पारणउं न करइ । इसिइ संघ मिलिउ । सर्व वात संघ-आगलि कही । संधिइं वलतउ किहंड, 'तुम्हनइ पाप न लागइ। कांइ तेहनइ तारवा-भणी तुम्हे उद्यम कीघउ ।' तुहइ महासती न मानइ, इसिउं कहइ, 'जउ बीतराग मैखि करी कहई त् पारणंड करंड ।' पछइ सर्व मंघ काउमिंग रहिउ । तिहां शासन-देवता आवी कहइ, 'कडण काज ?' तिसिइं संघ कहइ, 'श्री-सीमंघर-स्वामिनइ प्छी आवड-'महासतीनइ पाप लागउं कि ना ?' तेतलइ शासन-देवता कहइ संघनइ, 'तुम्हे काउस गा रहउ, जिम हूं पूछी आवछं।' महासनी कहइ, 'अम्हे आपणइ मुखि पूछिसिउं ।' पछइ शासन देवताइ करसंपुटि महासतीनइ लेई श्री-सीमंघर स्वामि-कन्हइ आणी। तिहां महासतीइ वांदीनइ पूछिउं। तिसिइं स्वामी कहइ. 'त निर्दोषि ।' पछ इस्वामीइ शासन-देवता देखता चूलिका आपी । शासन-देवता यक्षा महा-

१. K, श्रीमुखिइं । २. Pu. नर्दोषइ ।

सतीनइ भरतक्षेत्रि लेई आबी। तिहां संघनइ चूलिका आपी, श्री-सीमंघरस्वामिनउ वचन कहिउं। पछइ पारणउं सघले कीघउं।'' इत्यादि वात कही महासती उपाश्रयि पहुती।

इसिइ थूलमद्र वाचना-मणी आचार्य-समीपि आविड । तेतल्इ गुरे कहिउं, 'जा, तूं योग्य नही ।' तिवारइं जउ जोइ तु दिक्षा-दिन आरंभी, आपणउ अपराध न देखइ। पणि एक अगराध जे गुरुनइ अणकहइ सीहनउं रूप कीधउं, ते टाली अनेरउ अपराध नही । पछइ गुरुने पणे लागो अपणउ अगराध खमावइ, 'स्वामिन! ए आराध खमाउ। वली अपराध नहीं करउं।' गुरु कहइ, 'हिवइ तूंहनइ च चना नहीं दिउं।' पछइ सर्व संघ मेली, गुरुनी रीस उपसमाविवा-मणी, पणे लागी रहिउ। तुहइ गुरुनी रीस उपसमइ नहीं। आचार्य कहइ 'अजी तह समुद्र-माहि एक विंदु मणिउं छुइ, अनइ ते ही निद्या जरी नहीं, तु आगिलि विद्या किम जिरिसइ?, पणि जउ संघ वली वली कहइ छइ, तु सूत्रगठ कराविसु। पणि अर्थ नहीं कहउं।' पछइ थूलमदनइ च्यारि पूर्व छेहिलां सुत्र-तु मणावी कहिउं, 'आज पछइ तूं दस जि पूर्व शिष्यनइ भणावे, पणि च्यारि म मणावेसि।'

पछइ श्री-थूलमद्र चउद-पूर्व घर आचार्य-पदवी लही, एकणि नगरि मित्रनइ घरि आविड । तेतल मित्रना मार्या साम्ही ऊठी, पणि दालिद लगइ कांइ मगति करी न सकइ । तिसिइं थूलमदि पृछिंड, 'ते सोम मित्र किहां गयउ ?' तिसिइं स्त्री कहइ, 'घननी आधाइं देशांतरि गयउ छइ।' एहवइ जुना घर-माहि थांमउ एक देखी एनल बोल कहिउ, 'ए इम अनइ ते तिम। कहउ ए वातन उकिम ?' इसिउं कही आचार्य उपाश्रिय आव्या। पछइ मित्र घरि आविड। स्त्रीइं आचार्यना वचन कहियां। थांमउ देखाडिउ। पछइ सीमिईं ते थांमउ ऊखेडी, भूमि खणी, सवा लाख द्रव्य काढिउं। इम श्री-थूलमदनां घणां अवदात छई। इम मित्रकन जननइ प्रतिबोध देई, प्रांति अणसण लेई स्वर्गि गया।

इति श्री खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरी विजयि वा० मेरुसुंदरगणिना विरचितं श्री स्थ्लभद्र-चरित्रं समाप्तं ॥१९॥

हिवइ जे लोभ देखाडिइं शील-हूंता न चूकइ ते कहइ-तं नमह वयरसामिं सयंवरा रयणकोडि-सुसमिदी। अवगणिया जेण तिणं व सिट्ठि धूआ पवरस्त्रा॥ ४२

व्याख्याः न ते श्रीवयरस्वामिनइ नमउ। जिणि भगवंति सयंवरि आवी रूपवंति स्त्री, रत्नकोडि तिणि करि सहित एहवी, धनसंचय श्रेष्टि तेहनी रुक्मिणी बेटी, अनुरागसहित आवी हूंती, जुरा तुगती परिइं आगगी=गरिइरी। ते जिम लोभि न गया तिम बीजे महापुरुषे स्त्री देखी लोभी न जाड्वउं।

हिव ते वयरस्वामिनी कथा कहीइ--

[२०. वज्रस्वामिनी कथा]

इंगई भरतार्छि, अवंतीदेशि, तुंबवण संनिवेशि, व्यवहारीयानु पुत्र धनगिरि वसइ, पणि महा धर्मवंत । क्रिमेइं योवनात्रस्थाइ आविउ । तेतल्लइ मानापिताए कन्या मागी धनगिरीनइ कीधइ । तिसिइ धनगिरि कन्याना पितानइ कहइ, 'तुम्हे कांई कन्या द्यंड छउ ? हूं तु दीक्षा लेसु ।' इसिइ धनपालनी बेटी नामिइं सुनंदा ते कहइ 'धनगिरि टाली पाणिग्रहण अनेथि न करउं ।' पछुड्

१. K. सोमिल । २. L. सोमिले ।

अणई छतइ ति पिताई धनगिरि परिणाविउ । पणि थोडा दिन घरे रहिउ । तेतलह पुण्यवंत जीव एक देवलोक-तु चिवी सुनंदानी कृतवह ऊपनउ । तेतलह धनगिरिइं दीक्षा लीधी श्री-सीहगिरि आचार्य समीपि । पछइ पत्नीनउ भाई आर्यसमित महात्मा धनगिरिनइ सहाच्याइ हुउ । थोडे दिहाडे श्रुत सर्व भणिउ । इसिई सुनंदा गर्भ घरती पूरे दिवसे पुत्र जिन्मउ सर्वलक्षण संपूर्ण । जन्म-कालि स्त्री गीत गाइं, उत्सव करइं, पणि मुखि कहइं, 'आज बालकनउ पिता दीक्षा न लिअत तु जन्म-महोत्सव विस्तारि करत । स्त्रीइं भलीइं स्यूं चालइ ?' ए वात बालक सांभली चींतबइ, 'दीक्षानं नाम मह किहाइ सांभलिउं छइ ।' इम ईहापोह करतां जातीस्मरण ऊपनउं, पूर्व भव दीठउ । पछइ बालक चोंतवइ, 'माहरा गुणरूप जउ ए देखसिइ तु माता दीक्षा लेवा नही दिइ ।' इम विमासी बालक रोवा लागउ । रात्रि नइ दिवस रोतउ जि रहइ । राखिउ इ रहइ नही । पछइ माता ऊभगी कहइ, 'जिम ताहरज बाप गयउ, तिम तृ पणि जा ।' इम कहतां छ मास गया ।

तेतलइ घनगिरि श्री-सीहगिरि आचार्यं साथि आर्यसमित सहित आव्या । पछइ धनगिरि गुरुनइ वांदीनइ कहइ,'स्वामिन ! जउ आज्ञा हुइ तु संसारीयां वंदावी आवउं।' पछइ आर्य-समित सिहत धनगिरि जेतलई गुरुनई प्रणाम करी नीकलिउ, तेतलई गुरे कांई सउण विचारीनइ कहिउं. 'आज तुम्हनइ मोटउ लाभ होसिइ। तुम्हे सचित्त अचित्तनउ निषेध म करिज्यो। पछइ 'तह ति' करी सुनंदानइ घरि जई धनगिरि 'धर्म-लाभ' कहिउ । तेतल्रइ सखीइ जि कहिउं, 'हे बहिनि ! धनगिरि आविउ छइ । तूं कहिती बेटउ बापनइ आपिसु, तु आपि । ' सुनंदा पणि ऊमगी हूंती धनगिरिनइ कहइ, 'आपणड पुत्र लिइ। जिम तूं गयउ तिम पुत्र लेई जा।' पछइ धनगिरिइं साखीया कीघा, मतउं लिखाविउ । पछइ सुनंदा बिहुं हाथे पुत्रनइ लेई कहिवा लागी, 'एतलउ काल मइ पालिउ, हिवइ तूं पालि ।' इम कही पुत्र दीघउ । वली धनगिरिइ कहिउं, 'हिवडां तू रभसपणइ आपइ छइ, पणि पछइ उरता करेति।' सुनंदा कहइ, 'माहरइ खप नथी।' इम कही बालक भोली-माहि मुंकिउ, तेतलइ शेतउ रहिउ। पछइ बेह्र महातमा पोसालइ आव्या। तेतलइ गुरु साम्हा आवी कहिवा लागा, 'झोली भारे छइ, अम्हनइ आपि । तूं वीसामड लिइ।' पछइ धनगिरिई गुरुनइ झोली आपी । ते-माहि ते बालक-रत्न देखी गुरु कहइ, 'माहि किसिउं वज्र छइ, जे एवडड भार ?' इम कही वली बालकना मुख सामहुं जोई कहिवा लागा, 'ए बालक मोटड युगप्रधान होसिइ। ए यत्नइ करी राखिजो ।' तिहां वज्रसार एहवउं नाम दीधउं। पछइ बालक महासतीनइ समोपिउ, कहिउं, 'रूडी परिइं राखिज्यो ।' महासतीए सिज्यातर श्राविकानइ भलाविउ । ते स्त्री बालकनइ धवारइ, पालइ, लालइ, नानाविध क्रीडा करावइ । एक स्नान करावड. एक आंखि आंजइ. एक स्तन्यपान करावइ। इम सर्व आपणी आपणी भक्ति करतां ते वयर-बालक तिम किमइ बोलइ चालइ, जिम सर्व संघ प्रमोद पामइ । हिव सुनंदा ते वयर-बालकनइ देखी लोभ-लगी श्राविका-प्रतिइ कहइ, 'ए तु माहरु पुत्र, मुझनइ आपउ ।' पछइ श्राविका कहइ, 'ए गुरुनी थापणि छइ, अम्हे नही आपउं ।' इणि वचनि सुनंदा शाखा-पतित वानरीनी परिइं निरास हुई। तुहइ पुत्रना स्नेह-लगइ किवारई किवारई आवीनइ धवारई, किवारइ आप-णड उत्संगि धरइ ।

१. Pu. वज्रकुमार ।

इसिइ अचलपुरनइ समीपि नदी एक बिहुं भागे थई। ते-माहि बेट एक छइ। तिहां तापस वसइं । तेह-माहि एक तापस पादलेप-विद्या जाणइ । ते सर्व तापसनइ पिंग पादलेप करी छोक देखतां जि पिंग करी नदी ऊतरइ। लोकनइ महा विस्मय ऊपजइ। पछइ घणा लोक ताप-सनी महिमा देखी भगत थया। पछइ ते लोक श्रावकनई कहई, 'तम्हारइ शासिन कोई एह-वड छइ कि ना ?' तिसिईं श्रावक अणबोल्या रहइं। इम करतां अन्यदा प्रस्तावि वयरस्वामिना माउला श्री-आर्यसिमत आचार्य तिहां आव्या । श्रावक सर्व वांदिवा आव्या । गुरे पूछिउं, 'समाधि छइ ?' तिसिइ श्रावक कहईं, 'आज-कालि तापसनी महिमा अधिकी छइ। तिणि करी तापसना भक्त जे छइं, ते श्रावकनइ हसईं छईं।' पछुइ गुरे ज्ञानबलिइं तापसनउ पादलेप जाणी जे सम्यक्त्वधारी श्रावक हूंता, ते तेड्या । कहिउं, 'आज तुम्हे पारणंउ करवा-भर्णा तापसनइ घरि तेंडउ।' पछइ श्रावक प्रभाति जई तापस निहुंतरिआ | लोके जाणिउं— तापसे श्रावक पालट्या। पछइ सर्व छोके परवर्या तापस श्रावकनइ घरि आव्या । तेतलइ श्रावके दूध आणी झांबडा लेई ताप**सना पग** घोवा मांड्या I तिम किमइ जेहवां पुष्करनां पत्र हुई तेहवा कीघा I पछइं चंदनइं करी लिप्या । इम करता तापसनां मुख स्याम हुआं । भोजन वीसरी गया । पछई मोजननइ अंति सर्व तापस लोके परिवर्यों नदीनइ कांटइ आव्या । ते तापस पादलेप-पाखइ पाणी-माहि बूडिवा लागा । तेतल्इ लोकनां सहश्र हाथि ताली देता कहइं, 'एतला दिन अम्हे लेपनइ बलिइ भोलवी वंच्या ।' तिसिइ नगरनउ राजा तिहां आविउ । तेतलई गुरु पणि तिहां आन्या । ते तापसनी अपभ्राजना देखी सर्व लोक देखतां नदीनइ कहिउं, 'अम्हे पेलइ पारि जासिउं। त्ं मारः मूिक । इम कहतां नदी बि-खंड हुई। राजा, तापस, गुरु सर्व पेलइ पारि आव्या । तिहां तापसे एवडी गुरुनी शक्ति देखी दीक्षा लीघी । तेहनई केडइ जे के हूया, तेह-नइ ब्रह्मद्वीपी साखा नाम हुउं।

इसिइं वयर-बालक त्रिहुं वरसनउ हुउ । तेतलइ धनगिरि-प्रमुख साधु तुंबबण-संनिवेसि आव्या । । तेतलइ सुनंदा आवी कहइ, 'माहरी थापणि आपउ ।' तिसइं धनगिरि कहइ, 'ए वात हिव म कहेसि । तहीई तां ग्वाही साखीआ कीधा छइं । हिवह तं मागती लाजइ नहीं ?' सुनंदा कहइ, 'आपणी वस्तु मागतां सी लाज ? हूं माहरु पुत्र लेसु ।' इम विवाद करतां राजभवनि जई सकल श्रीसंघ धनगिरि सहू जिमणइ पासइ राजानई बइटां । अनइ सुनंदानउ पक्ष तु राजानइ डावइ पासइ बइटउ । भोजराजा बिहुं पक्षना वचन सांभली कहिउं, 'ए विवाद मह न भाजइ, पणि जेहनउ तेडिउ बालक आवइ ते लेवा लहइ ।' ए बात बिहुं पासे मानी । तेतलइ सुनंदा कहइ, 'पहिलंड हूं बालकनइ तेडिसु ।' इम कही सूखडी, खेलणा, चित्रगत पाटी, साकर, टोपरां, खारिक इत्यादि सूखडी लेई सुनंदा कहइ, 'वत्सं! एक वार आवि । ए सर्व तं लिइ। वली घणी सूखडी देसु ।' इणि वचनि वयर चींतवइ, 'यदापि माता लोपी न जोईइ, पणि हिवडां जउ मानइ मानिसु, तु संघनी अवहीलना होसिइ।' इम चींतवी माता सामहुं न जोयउं। तेतलइ धनगिरि श्रीसंघ देखतां रजोहरण हाथि लेई कहिउ, 'बालक! अमहारइ तु ए धमध्वज ओघउ छइ। जउ वांछा हुइ, तु आवि।' तेतलइ वयर-बालक उत्ताला करी आघइ विलगत । सकल श्रीसंघनइमनि उत्साह उपनज । तेतलइ सुनंदा करा विलाद वयर-बालक उत्ताला करी आघइ विलगत । पहिलउ तां माईइ दीक्षा लीधी । पछइ मरतारि

१. L एक कन्यापूर्ण, Pu. कन्यावर्ण । २. K. तापसनु । ३. K. तेहनु बालक हुई । ४. Pu. लेषणी ।

दीक्षा लीघी । पछइ वली पुत्रिइं दीक्षा लीघी । तु हिवइ हूं घरि रही स्युं करउं ? मुझनइ पणि दीक्षा दिउ । विल्र श्री-सीहिगिरि-सूचिनइ पादमूलि दीक्षा लीघी । पदानुसारिणी-प्रज्ञाई श्री-वयर पालणइ पउढिइ महासतीना मुख-इतु इंग्यार अंग अणाव्यां ।

अन्यदा गुरु वयर-बालक आठ वरसनंउ संघाति लेई अवंती-भणी चाल्या । तेतल्रह अंतरालि मेघ आविउ । ते अपकायना निषेध-भणी यक्षनः भवनि रह्या । तेतलः भवांतरी मित्र देवता वयरनी परीक्षा-भणो मंद वृष्टि विकुर्वी, संघात एकनी रचना करी, देवता श्रावकनइ वेषि आवी आचार्य वीनन्या, 'स्वामिन! वयर-बालक विहरवा मोकलउ।' गुरे जेतलइ मोकलिंड, तेतलइ अंतरालि मेघ आन्यउ । वली मेघ संहरिउ। वली गुरुनइ आदेशिइं वयर आप बीजी वार आवस्सही करी नीकलिउ। जिहां संघात छइ तिहां जउ आवइ, तु एक जूनउ तृणानउ छापरउं देखइ। तेह-तलइ अनेक शालि-दालि-कोहलानां व्यंजन देखी वयर-बालक चींतवड द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावनइं मेलिइं, 'ते द्रव्य जे शालि रांघी छइ, ते तु हिवडां नीपनी न हइ । क्षेत्र जउ जोईइ तु ए वाट ऊजेणीनी-इहां एतली सामग्री किहां ? काल जउ जोईइ तु कोहला-नउ ए काल नही । भाव जड जोईइ तु देणहार श्रावक आंखि मेघोनमेष नथी करतां । तु इम जाणीई छइ, ए देवता घटइ । तु देवतानु पिंड महातमानइ न कल्पइ। ' इम चींतवी जेतलइ पाछउ वलइ तेतलइ देवता पंगे लागी, खमावी, वैक्रियलब्धि देई अहरय हुआ। ए वात सांभली गुरु चमत्करिया। वली तेह जिं जुंभक देवता वणिक रूपि जेष्ठ-मासि वृतपूर वयरनइ देवा लागो । तिहां पणि देवपिंड जाणो पाछउ वलिउ। तेतलइ देवता प्रकट हुई आकाशगामिनी विद्या देई अदृश्य हुआ । इम वयर-बालक जे जे महातमा सिद्धांत भणइ ते ते सर्व सिद्धांत जलोनी परिइ संब्रहइ ।

इम एकदा गुरु बहिर्भूमिकाइं पहुता। वयर- बालक एकलउ पोसालइ चींतवइ। तेतलई बालक-स्वमाव-लगइ उपिघ सर्व आप पालती मूंकी, वाचना देवा लागउ। तेतलइ गुरु आन्या। तिहां बालकनी वाणी सांमली बारणइ छाना रहीनइ सांमलइ तु इग्यारइ अंग बालकनई मुहडइ अस्खिलत आवडतां जाण्यां। मिन हर्ज्या। पछइ गुरे संवल कीघउ। तेतलइ वयरि उपिघ सर्व जुजूई मूकी गुरुना पग पूंजिवा सामहउ आन्यउ। गुरे पछइ महात्मानइ जणाविवा-भणी आसन्न एक गाम छइ तिहां भणी चालिवा लगा। तेतलइ महातमा आवी कहई, 'भगवन! अम्हनइ वाचना कडण देसिइ?' तिसिइं गुरे कहिउं, 'ए वयर-बालक तुम्हनइ वाचना देसिइ।' इम 'तहित्त' करी मानिउं। पछइ प्रमाति बइसणउं वयरनइ मांडिउं। तिहां बइसारी वाचना मांगी। तेतलइ वयर विधिवत् वाचना देवा लगउ। जे शिष्य परीछता नहीं, ते-हू परीछिवा लगग। जे गुरु मासे वाचना देता, ते वइर एकइ दिनि दिइ। तिसिइ महात्माए चींतिविउं, 'जइ गुरु मउडेरा आवइ, तु अम्हारइ भणवुं वारु चालइ।' इम करतां गुरु आन्या। महात्मा पूछ्या जु, 'वाचना चालइ छइ ?' तिसिइ महात्मा सर्व गुरुनइ वीनवइं, 'स्वामिन! ए जंगम सरस्वती-मंडार। एतला दिन अम्हे न जाणिउं। जे अम्हे अवज्ञा कीघी, ते खमउ।' पछइ गुरे कहिउं, 'तुम्हनइ जणाविवा कि भणि अम्हे चाल्या हुता।'

पछइ वाचनाचार्यपद देई महात्मा भणाविवानु आदेस दीधउ । आचार-कल्प वयरनइ गुरु भणावइ । जेतलउ गुरुनइ दृष्टिवाद आवतड हूंतड, तेतलउ सर्व वयरनइ भणाविउ । पछइ गुरु दसपुरि आन्या । तिहां वयरनइ कहइ, 'वत्स! दसपूर्वधर श्री-भद्रगुप्तसूरि अवंतीइं छइ । ते-कन्हिल तेहवउ कोइ शिष्य नथी, जे पूर्वनी विद्या लिइ। ते-भणी त्ं ऊजेणीइ जई दस पूर्व पूरा भणि। जिवारई दस पूर्व पूरा थासिइं, तिवारिइं शासन-देवता सांनिधि करिसिइ।' ए वात श्री-वयरिइं पिडवजी, ऊजेणि-भणी चालिड, पंथ अवगाही सांझइ ऊजेणीइ आविउ। प्रभाति गुक्नइ वांदिसिइ एहवइ। पाछिली रात्रिइं श्रो-भद्रगुप्तसूरि सउणउं देखइ जु, 'कोई परहुणड आवी, अम्हारा हाथ-हूंतउ खीरनउ पेंडगह लेई पीई, तृति पत्मी।' इसिउं मुहणउं सद्झाय करतां महात्मा-प्रतिइं गुरु कहइ जु, 'आज कोई आपणइ परहुणउ आविसिइ, ते अम्हारी सर्व विद्या लेसिइ।' इम वात करतां प्रभाति श्री-वयरस्वामि आव्या। गुक्नइ वांदी आगलि बईटा। तेतलइ गुरे अति बहुमानपूर्वक संयमनइ विषयि कुसल पृछिउं। वली पूछिउं, 'श्री-सीहिगिरि-सूरिना चरण-कमल मूंकी ईहां किम आव्या! तेतलइ वयर विनयपूर्वक कहइ, 'श्री-गुरे तुम्ह समीपि दश पूर्व भिणवा-भणी मोकलिउ छउं। ते पूर्व तुम्ह कन्हइ छइं, अनेथि नथी। एह भणी प्रसाद करी मुझनइ भणावउ।' पछइ वयर गुक्नइ प्रसादिइं, सिद्ध-सारस्वत-चूर्णनइ प्रमाणिइं दस इ पूर्व थोड़ा काल-माहि भण्या। पछइ श्री-भद्रगुप्त-सूरिनइ आदेसिइ दस पूर्वनी अनुज्ञा पामी, दशपुर आवी श्री-गुरु प्रणम्या। तिसिइं श्री-सीहिगिरि-सूरि वयरनइ संतुष्ट-वर्तमान आचार्यपद देई गणनी अनुज्ञा दीधी। तिणि अवसरि जुंभक-देवताए महा-महोत्सव कीघउ, आकासि-इंतु कुसुमनी बृष्टि कीधी। श्री-सीहिगिरि-सूरि चारित्र पाली अणसण-पूर्वक मरण पामी स्वर्गनइ भाजन हुआ।

हिन्द श्री-नयरस्वामि पांच सइ माहारमाए परिवर्या जिहां विहार करइ, तिहां तिहां श्रावक संघ नवनवा महोत्सव करइं । इसिइं श्री-वयरस्वामिनी महासती पाडलीपुरि नगरि धनश्रेष्टिनी यानसालाई आवी रही । तिसिइं ते विवहारीआनी पुत्री रिवमणो महासती-कन्हइ मणइ, महासती-कन्हइ बइसइ । तिसिइं महासती श्री-वयरना गुण वर्णवह । रूप-लावण्य विद्या वर्णवतां रिवमणी-वइ अनुराग वयरस्वामि-ऊगरि हूउ । पछइ प्रतिज्ञा करइ, 'मुझनइ इणि भवि वयर जि भरतार ।' तिवारइ महासती कहइ, 'ते तु नीराग निस्पृही, काम हूंता विरतां छहं । तेह ऊपरि ए मनसा म करेसि ।' पछइ सिक्मणी कहइ, 'हिवइ तां वयरना पग शरणि।' ते रिक्मणी-वइ चित्ति वज्रलेपनो परिइं वयरनउं नाम रिहंडं ।

अन्यदा पाडलीपुरि श्री-वयरस्वामि विहार करता आव्या । तिहां नगरना लोक सर्व वांदिवा गया । राजा पणि वांदिवा आविउ । तिसिइ गुरे विद्यानइ बलिइं आपणंड रूप सउ महातमानइ विषइ कीघंड । पांच पांच महातमाए संघाडउ कीघंड अनइ संघाडइ संघाडइ वयरस्वामि जुजुआ हीसइ । तिवारइं लोक, राजा सहू विस्मयापन्न, महातमानइ पूळ्ड, 'तुम्ह-माहि श्री-वयरस्वामि कडण ?' तिवारइ महातमा कहइं, 'जेहनइ महांत तेज, ते जाणिज्यो वयरस्वामि ।' इम सर्व महातमा आव्या । पणि अजी ओलखी कोई न सकइ । तेतल्ड वयरस्वामि विद्याबल्डिं अपूर्व रूप करी नगरनइ परसर आवी धर्मापदेस देवा माडिउ । तिसिइ राजादिक लोके गुरु ओलख्या । सघले वांद्या । पछइ धर्मनउ उपदेश सांमली सहू आपणइ आपणइ स्थानिक पहुता । पछइ अंतेउरीए ते आचार्यनो कासंपदा सांमली, राजानइ कही गुरुनई वांदिवा आवी । तिसिइ राकेवणी पितानइ कहइ, 'तात ! ए वयरस्वामि आविउ छइ, अनइ मह तु एहवी प्रतिज्ञा कीघी छइ जउ, इणि भवि वयर भरतार । तेह-भणी चालउ जोई आवीइ । तात ! ए तु देशांतरी छइ । उठी अनेथि जासिइ । पछइ मुझनइ आगि जि शरणि हुसिइ ।' ए वात सांमली धनश्रेष्ठ स्विमणीनइ साथिइं सउ कोडि धन लेई, अनेक वस्न-अलंकार

१. Pu.पडघलु, K.पडघु । २. Pu. K. देवड ।

सँघातिई लेई श्री-वयर-समीपि आविउ । तेतलई श्री-वयरि स्त्रीना चित्तनउ क्षोम निवर्त्ता-विवा-भणी सामान्य रूप की घउ । तिवारई सर्व लोक कहिवा लागा, 'एवडा अतिशय, एवडी विद्या, पणि विधात्राई रूप न कीधउं।' तेतलइ भगतना चित्तनई हर्ष ऊ।जाविवा भणी वसी स्वाभाविक रूप की थंड । पछइ धर्मीपदेश श्री-वयरस्वामिइं दी घउ । इसिइ धन मन-माहि चींतवइ, 'माहरी पुत्री धन्य, जीणइ एहवइ ए स्थान के अनुराग की घउ छइ।' इम कन्यानइ दानिइ, वरनइ ध्यानिइ गुरुनी देशना धन न सांभल्ड । तिसिइ देसनःनइ अंति धन गुरुनइ बीनवइ, 'स्वामिन ! ए रुक्मिणी पुत्री तुम्हारा गुण रुमरती एतला दिन रही, पणि हिवइ पाणिग्रहण करी मनोरथ सफल करउ । नहीं तु अग्नि-सरण करिसिइ । एहनइ घणाइ वर आन्या, पणि ताहरइ सोभाग्यइ करी रुक्मिणोइ सर्व वरनउ निषेध कीधउ । तेह-भणी हाथ- मेल्हावणेइ सउ कोडि धन हूं आपिसु। पणि हिनइ पाणिग्रहण करि।' तिनारइ नयरस्वामि कहइ, 'अहो धन! कल्प-वृक्ष मंकि एरंडड कडण आश्रइ ? चिंतामणि परिहरी काच कडण लिइ ? तिम चारित्र परिहरी धन अनइ कन्या कउण आदरइ १ ए भोग विष-समान, जेह-लगइ चिहुं गतिना दुक्त पामीइ। ए तु धन अनइ स्त्री नरगनउ कारण । अनइ जे चारित्र, ते मोक्षनउ कारण । जउ एहनउ अनुराग साचउ छइ, तु चारित्र लिउ, जेह-लगइ अनंत सुख पामीइ।' इत्यादि श्री-वयरना वचन सांभलो रुक्मिणोइ चारित्र लीधंड साचंड सनेह पालिवा-भणी। तिम घणे श्रावके दीक्षा लीधी। इसिइ श्री-वयरस्व।मिनइ जुंभक-देवताए आकाशगामिनी बिद्या दीघी। ते विद्यानइ बलिइं वयर अगंजनीय हुउ ।

इम श्री-वयरस्वामि विहार करतां, प्रतिवोध देतां, मुखिइं रहष्टं छइं । इसिइं बार-विरसी दुकाल पिंड । माता बेटान वेसास न करह, पिता पुत्रनह न वीससह । एहवह दुकालि श्री-सिघइं गुरु वीनव्या, 'स्वामिन ! हाथीइ चड्यां जड स्वान भतदं, तु किम सोभइ ? तिम तुम्ह सरीखा गुरु, अनह श्री-संघ दुकालि दुखो थाइ ए वात शोभती नथी ।' पछइ श्री-वयरस्वामि चक्रवर्तिनी परिइं पट विस्तारी, संघ सर्व बइसारी, विचि आपणपे बइठा । विद्या स्मरी हूंकारड जेतलइ मूकिड, तेतलइ पट आकाशि चालिड । तिसिइ दत्त नामा ब्राह्मण शय्यातर कण मांगिवा भणी गयड हूंतड । एहवइ श्री-वयर आकासि जाता देखी ऊंचइ सादि कहिवा लागड, 'एता दिन शय्यातर हुंतड, दिव साहम्मी थाउं छउं । मुझनइ कांइ मूंकड छड ? ए वचन सांभली श्री-वयरिइं दया—लग्र ते-हू पटि बइसारिड । पछइ पवनवेगि पट चालिड ।

ते पट श्री-संघनइ विस्मय ऊपजावतां—माहेश्वरि पुरि श्री-वयरस्वामि आव्या । तिहां बौद्धभक्त राजा राज्य करइ । तेहनइ मिली श्री-संघ सुभिश्च-भणी तीणइ देसि रहिउ । तिहां जैन अनइ बौद्ध एकडा रहितां स्पर्धा ऊपाजेवा लागी । जैनती पूजा-महिमा देखी बौद्धे राजा वीनविड, 'राजन् ! ए जे जैन आव्या, ते तु सर्व फूल लोई जाई । आपणइ देहरइ काई फूल लावइं नहीं। तेह-भणी माली वारीई।' पछइ राजाई सर्व माली तेडीनइ कहिउं जु, 'शावकन कह फूल मापिजो ।' पछइ सहगा ई फूल सोनानइ मूखि नापइ । तिवारइ शावक पंचवर्ण रतन, कपूर, कस्तूरीए करी पूजा करई । पणि जेहवी फूलनी पूजा करतां लागइ, तेहवी इच्छा अण्युद्ध- चतई, अनेक उपाय शावक चींतवहं । पणि उपाय छहइं नहीं । इम उपाय चींतवतां विज्ञसण

१. P. मेलावणीइ २. Pu. P. पजुसरण ।

आविउं। तिवारइं संधिइं वयरस्वामी वीनन्या, 'स्वामी! कारिमे कुसुमे पूजानु हुई न पहचइ। तु स्वामि ! तुम्ह सरीला गुरु, अनइ संघनी इच्छा न पहुचई, तु ए वात साची-घरि रत्नमय दीवा बलइं, अनइ अंधारडं पराभवइ । तेह-भणी संघनु हर्ष पूरउ, जिम 'पज्रसण सरंग हुइ ।' पछइ श्री-वयरस्वामि प्रभावना अंग-फल जाणी आकाशगामिनी—विद्यानइ बलिइं माहेश्वरी-नगरीइ आन्या । विद्विदेवनइ आरामविन धनगिरिनउ जे छइ मित्र तिडतामिध माली, ते-समीपि आन्या। तिणाइ मित्रनउ पुत्र देखी भक्तिपूर्वक वांदी कहिवा लागउ, 'कांइ काजु हुइ ते कहुउ।' तिवारइ गुरु कहई, 'संघनु काज एक मोटउं छइ, तेह-भणो हूं फूल लेवा आविउ छउं।' तिवारइ माली कहइ, 'ईणी वाडीइ वीस लाख फूल दिन प्रतिइं ऊतरइं । जेतलां जोईइ तेतलां लेई पहुचउ ।' तिवारइ गुरे कहिउं, वीस लाख फूल मजूद करि, जेतलइ हूं आगलि जई आवउं।' इम कही आपणि क्षुद्र हिमवंति पहुता । तिहां शाश्वतां चैत्य वांदी "पद्मद्रहि आव्या । तिहां श्री-लक्ष्मी राजहंसि बइठी । बिहं हाथे कमल । भमरे रुणझुणाट करती, एक कमल हाथि लेई, व्यझदेवनी पूजा-भणी चाली । तेतलइ वयरस्वामि दीठा । लक्ष्मी प्रणाम करी कहइ, 'कमल बोईइ तेतलां तुम्हे लिउ।' तिहां लक्ष कमल लक्ष्मीइं दोधां । पछइ गुरु विह्निदेवनी वाडीइ आवी रत्नहेममय, देवतानी परिइं विमान विकुर्वी वीस लाख फूल माहि मूंक्यां । एक लक्ष कमल माहि मूंकी आप माहि बहुठा । जुंमक देवतानु जेतलह स्मरण कीघडं, तेतलह देवता आन्या । ते देवताने बूंदे पर-वरिया अनेक वाजित्र वाजते, घांटना सई रणझणाट करते, अनेक ध्वज लहलहते, आकाशि आविवा लागा । तेतलई बौद्धे चींतविउं, 'ए विमान अम्हारह देहरह आवह छइ।' तेह-भणी राजादिक लोक सर्व मिली देहरानइ बारणइ ऊभा रह्या जोइ छई। तेतलइ विमान ते देहरउ परिहरी जैन प्रासादि आविउं। माहि श्री-वयरस्वामि अनेक देवताने वृंदे परिवर्या विमान तु ऊतरी. परमेश्वरनइ प्रणाम करी, संघनइ कहइ, 'पजूसण-ऊपरि फूल तु आव्या छई। तुम्हे आपणी इच्छा पूरवउ ।' पछइ श्रावक-संघ आपणी भिक्तइं टोडर लेई लेई वीतरागनइ पूजई । एहवी महिमा श्री-जिनशासननी देखी राजादिक सर्व लोक जैनमक्त हुआ।

पछड़ श्री-वयरस्वामि दक्षिण देशि आव्या। तिहां वली बार-वरसी दुकाल ऊपनड जाणी, महातमा सर्व सीदाता देखी, विद्यानइ बिल अन्न आणी करी ऊद्धरिवा लागा। एतलइ श्री-वयरस्वामिनइ श्लेष्मा ऊपनड। तिसिइं महातमाए सृंि आणी आपी। गुरे प्रासुक देखी केतलीएक लीधी। गांठीड एक भोजननइ अंति लेवा-भणी कानि मूं की छांडिउ। वार कीधी, पणि गांठीड वोसरी गयउ। वली सज्झाय करतां संध्याइं प्रतिक्रमण-वेलाइ आलोयणडं आलोयतां ते सृंि कान-हूंती पडी। तिवारइं आपणड प्रमाद जाणी चींतवइ, 'जु मुझनइ एवडड प्रमाद ऊपनड, तु रूडा कारण नहीं। तेह भणी अणसण लीजइ।' एहवइ श्री-वयरस्वामिइं सर्व महातमा तेडी कहिंड, 'ए जे मंत्रपिंड लीजइ छइ ते तु पाप हुइ छइ, अनइ ए तु बार-वरसी दुकाड। तु ए असार सयरनइ कीधइ कडण संयम विराधइ ?' इसिंड विमासी, पछड़ वज्रसेन शिष्य तेडो, गच्छनड भार आपी, कहिंड, 'जिहां लक्ष धननड व्यय करी एक हांडो जिहां चिडिसिइ, तिहां जाणिज्यो सुगाल होसिइ।' ए बात कही, वली महारमानइ कहिंड, चालड, कीणइ एकि पर्वति चढी अणसण लीजइ।' इम कही केतलाएक महातमाए परिवरियां पर्वति चिडवा लागा। तेतलइ

१. Pu. P. पजुसरण २. P. L. पद्मदेवीनई द्रिह आव्या। ३. K. पद्मादेवी पूजा।

चेलउ एक बालक देखी बलात्कारि पर्वत-तलइ मृंकी आप पर्वति आहिशा । तेतलई चेलउ चींतवइ, 'मइ ऊपरि चिड रखे गुरुनइ असमाधि ऊपजइ।' तेह-भणी चेलउ तलइ रही आराध्या अणसण लेई शिला-अपरि काउसगा कीधउ। जिम 'आगई घी वीघरइ, तिम तडकई चेलानउ सयर वीघरिउं। क्षण एक-माहि कर्मनउ क्षय करी स्वर्गनइ भाजन हुउ। तिहां देव-ताए महिमा कीजइ। ते देखी वयरस्वामि महात्मानई कहइ, 'जोड, थोडइ कालि किम आपणपु साधिउं। तु आपणपे आलस कांइ कीजइ?' पछइ सघले महातमाए समकालि आणसण लीघउं। तेतलई मिथ्यात्वी देवता एक आवकनु रूप करी महात्मानई मोदक देखाडइ, पाणी देखाडइ। पछइ श्री-वयरस्वामि चींतवइ, 'ए मिथ्यात्वो देवता महात्माना मन पडावइ। तु अनेथि जई कांज साधीइ।' पछइ श्री-वयरस्वामि दस सहश्र महातमाए परवरिया बीजई पर्वति चडी आपणउं कांज साधीइ।' तहां सम्यग्-हष्टी देवतानु अनुग्रह मागिउ। सुखिइं अणसण पाली सर्व साधु स्वर्गनइ माजन हुआ। तेतलइ देवताए ते वात इंद्र-आगलि कही। तु इंद्र आपणपे जुंमक देवताए परिवरिउ आवी रिथ बहसी, पर्वत-पाखती त्रिण्णि प्रदक्षिणा दीधी। तेह-भणी रथावर्त पर्वतनउं नाम हुउं। तिहां अंत्य-किया करी, स्वर्णमय स्तूप करी, श्री-वयरस्वामिनी प्रतिमा पूजी, इंद्र आपणइ ठामि पहुतु।

इसिइं वज्रसेन सोपारइं बार वरसनइ प्रांति गुक्नी शिख्या हीयइ धरी आविउ । तेतलइ जिनदत्त श्रेष्ठि, ईश्वरी भार्या, तेहना च्यारि पुत्र चंद्र १, उद्देहिक २, नाग ३, विद्याघर ४-इत्यादि कुंदुंवे परवरियां दुकाल जालवइं। पणि अन्न न लाभइं। पछइ एक दिनि लाख द्रव्यनड व्यय करी हांडी एक चडावी, अनइ विष वाटी ढांकणीइ घाति मूकिउं छइ। तिसिइं कुंदुंव तेडी जिण्दत्त कहइ, 'कुमरणइं मरण होसिइं ते पाहइं आराधना अणसण ऊचरी जउ ए विष-लगइ मरीइ, तु दुःख न देखीइ।' इम कही जेतलइं अराधना ऊचरावइ, तेतलइ वज्रसेन आवी 'धर्मलाभ' कहिउ। तिसिइ ईश्वरी ऊठी आपणउं धन्य मानती कहइ, 'भलउं हूउं जे भाग्य-लगइ तुम्हे इहां आव्या। संविभाग करावउ। अजी विष तु नथी घातिउं। ए खीर लेई अम्हन्ह तारउ।' तेतलइं गुरुवचन स्मरी वज्रसेन कहइ, 'तुम्हे म मरउ। प्रभाति सुगाल होसिइ'। इम जेतलइं मरण-हूंता निवर्त्या तेतलइ प्रभातिइ धानना वाहण आव्यां, सुगाल हुउ। तिवारइं श्रेष्ठिने चिहुं वेटे दीक्षा लीधी। च्यारइ समप्र विद्या भण्यो। चिहुंनइ आचार्यपद दीघां। तिहां च्यारि गच्छनी स्थापना कीधी।

तु एहवा श्री-वयरस्वामि छ मास घरि रही, आठमइ वरिस वाचनाचार्य पदवी लही, ४४ वरस व्रतार्याय पाली, ३६ वर्ष आचार्यपद पाली, जिनशासिन महांत प्रभावना करी, धननी कोडिइ जे लोमि न गया ।

श्री-वयरस्वामिचरित्र समाप्त ॥२०॥

हिवइ शीलवंत पुरुष मान्य हुइ, पणि जे स्त्री शीलवती हुइ, ते पणि धूजनीक हुइ-इसिउं दृष्टांतपूर्वक कहइ छइ –

पार्लीत निय-सीलं ठावंति सुद्ध-धम्म-मग्गम्मि । रहनेमि मुणि पि जए सा पुज्जा रायमइ अज्जा ॥४३

१. K. अग्निइं घी वीघराइ २. Pu. इंद्र ३ उद्देहिक ४ नागेन्द्र ५ विद्याधर ४ । A. इंद्र १ चंद्र २ नाग ३ ।

•साख्या: – निज = आपणइ हीलिईं सूघउं शील पालती, अनह रहनेमिनइ उन्मोर्गि पडतां घर्मनइ विषइ स्थापती हूंती एहवी राजीमती महासती जगत्रय-माहि पूजिवा = वांदिवानइ योग्य हुई । श्री-नेमी दीक्षा लेतां श्री-नेमिनउ लघु बांघव रथनेमी प्रार्थना करतउ राजीमतीई प्रति-बोघिउ। इम शोलनइ प्रधानपण्ड राजीमती पूज्य हुई। कथा तु आगइ कही छइ।

हिवइ जे ऋषीश्वर शील पालइं ते धन्य। वली जे गृहस्थ हूंता शील पालइं ते गाढेरा धन्य। ते कहइ —

> ते घन्ना गिहिणो वि हु महरिसि-मुझिम्म जे उदाहरणं । निरुवम सील-वय-रया पावंति पसिद्ध-माहप्पं ॥४४

ठ्याख्या: - खलु = निश्चइं ते गृडी धन्य, जे गृहस्थावासि वसता हूंता सुदर्शन अष्टि प्रमुख-निरुपम शील पालिवानइ विचारि बहाबतनी परीक्षा करतां, महर्षि गरुआ श्री-स्थूलिमदादि मुनि-माहिं हष्टांत जगत्रय-माहि हूआ। शीलनइ महातम्यइ करी महर्षि समान हुआ। ते गृहस्थ किस्या छईं ? प्रसिद्ध=समस्त-लोक विख्यात महातम्य जेहनंड छइ, एहवा ते गृहस्थइ धन्य = वंदनीय हुईं। हिवइ ते शीलवंत गृहस्थनां नाम पूर्वक देखाडीइ छइ—

> सील-प्रभाव-प्रभाविय, सुदंसणं तं सुदंसणं सेट्टिं। कविता-निवदेवीहिं अखोहिअं नमह निच्चं पि ॥४५

च्याख्या:— आपणा सुद्ध शीलनइ प्रभाविइं = महातम्यइं करी, दीपाविउं = उद्योतवंत कींधउं, सुष्ठु=प्रधान दर्शन=सम्यक्त्व अथवा जिनशासन जाण्यउ छइ जेणइ। एहवउ जे श्रेष्टि सुदर्शन श्रावक = ग्रहस्थ-धर्मिइं वर्तमान, मुनीश्वरनी परिइं किंपलनी भार्या किंपला ब्राह्मणी अन्द्रश्वना परिशं किंपलनी भार्या किंपला ब्राह्मणी अन्द्रशानी पट्टराणी अभयादेवी ए बिहुए हावभाव-लोभ-भयादिक अनेक प्रकारि अब्रह्मसेवना भणी क्षोभवीतु इ हूंतउ पणि क्षोभि न गयउ, शील हूंतउ चूकउ नही । मरण आंगमिउं, पणि शील भांजिउं नही । एहवा सुदर्शन श्रेष्टिनइ नमस्हरउ = सदा प्रणाम करउ । एहवां वांदिवा यांग्य हुइं। इति गाथार्थः । विस्तरार्थ कथा हूंतउ जीणिवउ ।

हिवइ ते सुदर्शनश्रेष्ठिनी कथा कहीइ-

[२१ सुदर्शन श्रेष्टिनी कथा]

अंगदेशि चंपानगरीइ दिघवाहन राजा अभया प्राणविल्लमा सहित सुखिई दिवस नीगमइ । हिवह तिणि नगरीइ ऋषभदत्त श्रेष्टि वसइ । तेहनी प्रिया अईदासी जाणवी । तेहनइ सुभग नामा भइसिनउ पालणहार सदाइ गाई—भइंसि वेडि—माहि जई चारइ, पाइ । इम एकदा सांझइ पाछउ विलेउ घर-भणी । तिसिई प्रतिमाइ रहिउ महात्मा एक वस्त्ररहित शीत परीषह सहतउ दीठउ । ते सुभग घरि आविउ । पणि ते महात्मानु कष्ट चींतवतां रात्रि मोटइ किंद्रं गमाडी । प्रभाति सवारइ ऊठो, गाइ—भई सिनइ आगलि करी, जु महात्मा-कन्हिल आवइ, तु अजी ते महातमा काउसिंग जि दीठउ । आहार करिवा लागउ ।

तेतलइं सूर्य उनिड । 'नमो अरिहंताणं' कहतउ ते चारणऋषि काउसगा पारी आकाशी कडिउ । पछह सुभग चींतवह, 'नमो अरिहंताणं' ए आकाशगामिनी विद्या घटइ । पछइ ते रात्रि नई दिवस मन-हूंतउ ए पद न मूंकह । तिसिंह श्रेष्टिहं पूछिंड, 'आजकालि तूं सिउं जपह छइ !' तीणइ कहिउं, 'आकाशगामिनी विद्या जपउं छउं?हि' 'तु मुझनइ कहइ(१हि) ।' तिबारह 'नमो अरिहंताणं' ए पद कहिउं । तिसिइं श्रेष्ठि कहइ, 'बापडा ! एह बगइ अनेक

विद्या सीझह ।' पछह एकदा वर्षाकालि आविह हृतह गाई-मई सि चारिया गयउ । तेतलहं आडी महापूरि नदी आवी. गाई भई सि तरी पहलह पारि गई । सुभग उलिह तटि रहिख चींतवह, 'मुझनह तां आकाशगामिनी विद्या आवडई छह, आज परीक्षा जोखं ।' इम चींतवी ऊंची भूमिकाई चडी 'नमो अरिहंताणं' कही झांप दीधी, तेतलह पाघरउ नदी-माहि पडिउ । तलह खयरनउ खूटउ हृंतउ, तेणइ पेट वं धाणउं । नवकारनइ ध्यानिह मरी अर्हदासीनी कूखिई अवतार लीघउ । ते गर्भनइ प्रमाणि धर्ममय डोहला ऊपनइं, अनह श्रेष्टि सर्व डोहला प्रवहं । इम पूरे दिवसे पुत्र जन्मउ, ते सर्वांग-सुंदर देखी सुदर्शन नाम दीघंउ । मउडइ मउडइ कल्य-वेलिनी परिइं वाधिवा लागउ । सघलीइ कला अभ्यसी, क्रमिइं यौवन पामिउ । पिताइं मनोरमा कन्या परिणाबिउ । पैच प्रकारि विषयसुख अनुभवतां सुगुरुनइ योगि परस्त्रीनउ नेम लीधउ ।

हिव तेह जि नगर-माहि किन्छ नामा पुरोहित वसइ। ते साथिइं सुदर्शननइ प्रीति ऊपनी। अनेक प्रलोक-कथा-विनोद करतां दिवस जाइ । एकदा कपिलनी भार्या कपिलनई पूछइ, 'स्वामिन ! सर्व घरना काम मंकी तम्हे रात्रि-दिन किहां रहुउ छउ?' तिवारइ कपिल कपिलानइ कहइ, 'ऋषभ-दासनउ पुत्र सुदर्शन, ते साथि माहरइ मित्राचार छइ । तेहनी संगति हं मूकी न सकउं। ए वात सांभली कपिला सुदर्शन देखिवा भणी मनसा करइ । एकदा राजानइ आदेसि कपिल ग्रामांतरि गयउ अनइ अवसर लही कपिला सुदर्शननइ घरि आवी । मित्रनी पत्नी-भणी सद-र्शीन बहुमान आगता-स्वागत कीघंड । तेतलइ कपिला सुदर्शननः रूप जोती कामनी वाही इस्या वचन कपटमइ बोलइ, 'अहो सुदर्शन ! तुम्हारा मित्रनइ । शरीरि कांइ असुख छइ । तुम्हे तु पूछवा इ नावउ । प्रीति किसी जे सुखि दुखि नावीइ ?' तिवारइ सुदर्शन मित्रनी प्रीति मन-माहि भरतं कपिलनइ घरि गयं । पूछइ, 'मित्र कहां ?' कपिलाइ कहिं छं, 'निवाइ सृतं छइ।' तिसिइ-घर-माहि आवी पूछिउं, 'किहां छड़?' तु वली कहइ, 'उरडा-माहि छइ ।' सुदर्शन जेतलई उरडा-माहि आवइ तेतलइ कपिलाइ बार दीघां । तिथारइ सुदर्शनइ जाणिउं जु, 'ए स्त्रीना कपट हुई।' मनि चौतवइ, 'स्युं थयउं ? माहरुं मन किसिउं एहनइ पाडिसिइ ? मेरु-पर्वतनी परिइं दृढ छइ। तिसिइ कपिला अनेक हावभाव करती, कामना भाव देखाडती, नवनवा शुंगार करती. आलिंगन देती, अंगोपांग सर्व फरसती, घणाइ बोल बोलइ । पणि जिम महिषनइ शंगि मसानउ रेंक न लागइ, अभन्य नइ जिम जिननउ उपदेश न लागइ, तिम कपिलाना बोल सुदर्शन नइ न लागई । तिहां आपणि काउसिंग रहिउ । वली जु बोलावइ तु कहइ, 'सुमिग ! मुझनइ पुरुषार्थपणुं नथी। जोइ-न ताहरे वचने तो पाषाण भेदीइ, तु मनुष्यनी केही वात ?' इत्यादि वचन सांभली सत्यवचन मन-माहि आणी पछइ बार उघाडी जावा दीधउ। जिम कोई धाडिनइ हाथि चडिउ हुइ अनइ छूटउ हूंतउ नासी जाइ तिम सुदर्शन नासी आपणइ घरि आविउ । पछइ पारकइ घरि एकला जाइवान उनीम लीघउं।

हिवइ एक दिवसि दिधवाहन राजा अंत:पुर-सिहत, राजलोके परिवरित्र, सुदर्शन श्रेष्ठि पणि आगण्ड परिवारिं परव रेउ, बीजाइ समस्त लोक उद्यानविन इंद्र—महोत्सव करिवा-भणी जावा लागा । तिसिंड अभया राणो सुत्वायिन बइठी कपिला-सिहत वन माहि जाती हूंती। एहवइ मागिं सुदर्शननी भर्या मनोरमा पांत्रे पुत्रे परिवरी, रिथ बइठी, पान आरोगती दीठी। तिवारइ किललाई

१ K पांडि छइ, L. Pu एहनइ पांडि छइ। २. Pu डस, L. इंस।

अभया पूछी, 'हे देवि! ए स्त्री इंद्राणी सरीखी पुत्रवती कुण ?' तिवारइं अभयाई कहिउं, 'श्लेष्ठि सुद्र्शननी ए भार्या। एहना पांच इ पुत्र।' तिवारइ किपलाई हसीनइ किहउं, 'नपुंसकनई पि किसिउं पुत्र हुइ ?' तिसिइ अभयाई किहउं, 'ए वात तूं किम जाणइ ?' इम पूछीइ अति स्नेहल्लाइ आपणी प्रछन्न वात कही, अनइ सुद्र्शननउ सर्व चुत्तांत किहउ। तिवारई अभयाराणीई किपला हसी, 'तु तुं एहवीइ चतुरि हूंती पीण ईणइ धूर्ति तू वंची। ते तु परस्त्रीनइ संिग नपुंसक छइ पणि घरि तु नथी। किवारइ गाढाइ डाहा घासई।' इम हसी हुंती रीसाणी किपला कहइ, 'बिहिन! तूं गाढी चतुरि छइ पणि जाणीि इं जउ तु सुद्र्शनइ भोलवेसि।' इणि वचिनाई अभयाराणी अहंकारि चडी प्रतिज्ञा करइ, 'तु हूं जउ एहनइ शील-हूंतउ पाडउं।' इम अभयाई प्रतिज्ञा कीधी, आपणइ घरि आवी, धाविमाता-आगलि आपणी प्रतिज्ञानी वात कही। तिवारइ धाविमाताई किहउं, 'चिंता म करेसि। ए प्रतिज्ञा ताहरी हूं पूरविसु।' इम कही ते धावि सुद्र्शन श्लेष्टिना छल बिलाईनी परिइं जोती रहइ, पणि छल लहइ नही।

इसिइ सुदर्शन, आठिम प्रमुख पर्वतिथिइं पोसह रेडें सूना घर-माहि आवी, काउस्सग्ग करह।

ए स्वरूप तीणी धाविइ जाणिउं। पछइ एक दिनि कीसुदी-महोरसव आविउ। अनइ जिन-शासिन चउमासंउ आविउ। तिसिइ राजा नागरीक-लोके परिवरिउ क्रीडा-भणी वन-माहि जावा लागउ।

इसिइ सुदर्शन राजानइ वीनवी पोसह लेखा-भणी घरि रही, पोसह लेई सूना देवकुल-माहि काउ-सिंग रहिउ। ए वात अभयाराणीइ जाणी, धाविमाता-सहित घरि रही। हिव आगइ सुदर्शन श्रेष्ठि सरीखी काष्टमय प्रतिमा छद्मा-लगइ करावी छइ, तेहनइ अलंकार सुदर्शन सरीखा करावी, पालखीइं बइसारी, प्रतिमा गाजतइ वाजतइ सखीए परिवरी ते धाविमाता पोलिइं लेई नीकली क्रीडा-भणी। तेतलइ पोलीआ ऊठी जोई तु काष्टनी प्रतिमा। वेसास ऊपनइ कोई करणवार न करह।

इसिइ तीणइ कीमुदीनइं दिनि राजा बाहरि गयउ हुंतउ, अनइ धाविमाताई तेह जि सुदर्शन पालखीइ घाती अभयाराणी-समीपि आणिउ । अभया हर्खी ह्रंती अनेक हायभाव करी क्षोमिया लागी। पणि तेहनउ एक रोम मात्र हालइ नहीं। मेरुनी परिष्टं निश्चल देखी अभया त ऊभगी। सदर्शन श्रेष्ठि चारि पुहर काउसग्ग करी रहिउ । तिसिइं अभयाई भय देखाडिया, तुह इ क्षोभ न पामइ। अभयाराणी खिन्नखेद हुई। पणि रोम मात्र भीजिइ नहीं। पछइ प्रभात होवा लागउँ। राजानइं घरि आविवानी वेला हुई । तिसिइं राणी रीसाणी हूंती आपणउं डील आपणीइ विल्री, वस्त्र फाड़ी पोकार करिवा लागी । तेतल्इ पाहुरी गमे गमे घाया । आत्री जु जोइ तु आगिल सदर्शन काउसिंग रहिउ दीठउ । पाह्रीए ते झालिख । तेतलइ राजा आविउ । पूछिउं । तिसिइं अभयाइं कहिउं, 'स्वामी ! ईणइ पापीइ घर-माहि पइसी ईणइ प्रकारि हूं विडंबी ।' तिवारई राकाई चीतविंड, 'जु अमृत-हूंतुं विष ऊठइ तु ए-हुंती ए वात हुई । ए सुदर्शन पुण्यवंत,ए-हंतउं ए कर्म न घटइ।' पछइ राजाइ सुदर्शन पूछिउं, पणि अभयानी दया-लगी कांई न बोलइ। -तिवारइं राजाइं चीतविउं, 'जु ए न बोलइ तु वही ए अन्सई संभावीई ।' इम चींतवी राजा रीसाणंड कोपि चंडिउ, तलार तेडी कहिउं, 'एर्नई विडंबानई सूली दिउ।' तिवारइ ते तलार यमदृत सरीला आवी, जटाई झाली, बाहरी काढी, माथई भद्र करावी, गल्ड कगयरनी माल षाती, रतांजणीनां टीला कादयां, सूपडानां छत्र माथई करी, रासमि चडावी, आगलि डूं डे वाजते, मारवा-भगी चळाविड । 'अंतःपुर-माहि अगराघ क्रीघड तेह-भगो राजखं एड्वड अदेश दीघड' इम लोक-आगलि वात ते तलार कड्डं। ए वात मनोरमाइ सांभली। मनोरमा चोंतवइ, 'चंद्रमा-

हूंता किवारह अंगार पड़इं, पणि ए वात सुद्धेन श्रेष्ठि-हूंती न हुइ ।' पछइ घरनइ देवालइ जई, देव पूजी कहिवा लागी महासती, 'अहो शासनदेवताउ ! ए सुद्धेननइ निःक्कारण जु आल दीधंड छइ तु सानिध्य करिज्यो। नहीं करंड तंउ मुझनई काउसग्ग पारिवानं नीम।' इम कहीं काउसग्ग कीधंड। तेतलई आकासि देवतानी वाणी ऊपनी, 'हे महासति ! म करि चिंता। अम्हे तेहना शोल-लगइ सानिध्य करिसुं।'

इसिइ सुदर्शन गाम-माहि फेरबी, अनेक विडंबना देखाडी, लोकनइ हाहाकार करतां सुदर्शन सूलीइं चडाविउ । तेतलइ शीलना प्रभाव-लगइ सम्यरहाी देवताए आवी, सूली फेडी विहासन कीधं । तेतलइ तलार खांडाना घाय मूकइ, ते घाय फीटी आमरण थाइवा लगा । ए आश्चर्य देखी तलारे राजा समीपि जई वात सर्व कीधी। राजा साश्चर्य गजेंद्रि बइसी नागरीक-लोके परिवरिउ कउतिग लगइ तिहां आविउ । सुदर्शन विहासिन सालंकार साभरण बहठउ देखी हर्षित हूंतउ राजा प्रणाम करी कहइ, 'अहो सत्वनिधि ! तृं आज मइ लोचनई करी दीठउ। मह मूदिइ स्त्रीनइं वचिन एवडी आपदा देखाडो। पणि तुझनइ ते सर्व संपदा थईं। जिम गाई क्षार-जल पीइ पणि दूध दिइ तिवारइ मिष्ट थाइ, जिम समुद्रनइ जलइ नालेरी सीचीईं अनइ आपणइ गुणि करी मिष्ट थाइ, तिम तुझनई अन्हे आपदा कीधी, पणि ताहरा शिलनइ गुणे करो संपदा जि हुइ।' इम राजा सुर्शननइ स्तवी, पूजी, हाथीइ बइसारी नगर-माहि आणी, घरि पहुचाडिउ। तेतलइ सुर्शन देवालइ आवी मनोरमानइ काउसग्ग परावइ। इसिइ राजाइ सर्व चृत्तांत पूछी, वस्त्र-अलंकारे करी बहुमान दे६, आपणउ अपराध खमावी, घरि आवी अभयाराणीनइ देसव-ठउ देवा लागउ। तिसिइ सुर्र्शन आवी पगे लागी, राजानइ मनावी, अभयाराणीनइ अभयदान देवराविउं। इम सुदर्शन जैन धर्मनइ विषइ प्रभावना करी धर्म-ध्यान करइ छइ।

एहवइ अभयाइ मननी संकाइ बीहती गलइ पाशी देई प्राण छांड्या । अनइ अभयानी धाविमाता नाती पाडलीपुरि देवदत्ता वेश्यानइ घरि आवी रही । जिणि कारणि एहवा कामना करणहारनई एहवां जि ठाम हुई । हिवइ ते धावि सुद्शेनना शोलनी प्रवंता देवदत्ता गणिका-आगिल करइ । इतिइ सुद्शेन संसार-हूंतउ विरक्त, दीक्षा लेई विहार करतउ पाडलीपुरि आविउ । तिहां अभयानी धाविइं ओळि विउ । पछइ धावि कपट-श्राविका थई, पारणानइ मिसिइं देवदत्तानइ घरि लेई आवी । तिहां बारणउं दीघडं । देवदत्ताइं ते सुनि घणउं कर्शिउ, पणि ध्यान-हूंतउ चूकउ नहो । तिसिइ सांझइ आपहणी मूंकिउ । पछइ सुद्शेन विरक्त हूंतउ वन-माहि जई प्रतिमाइ रहिउ मसाण-भूमिकाइं । हिवइ अभया मरीनइ व्यंतरी हुई ते तिहां आवी । वयर पोषती अनेक उपसर्ग करतां शुमध्याननइं बलिइं केवलहान पामिउ । तेतलइ देवताए केवल-महिमा कीधउ । सहश्रवत्र कमल रची देवताए विचिइ बइसारिउ । धर्मीपदेश देवा लागउ । द्विचिष धर्म प्रक्रिउ । तिहां घणे लोके यतिधर्म आदरिउ, घणे श्रावक्तउ धर्म आदरिउ । तिहां अभया व्यंतरीइं पणि जैन धर्म आदरिउ । अनि वली देवदत्ताइ, धाविमाताइ श्रावक्तउ धर्म आदिरउ ।

इम सुदर्शननउं चरित्र सांभली अहो भविको ! शील जि पालउ, जिम हेलाई मोक्ष-सुख पामउ । इति शीलोपदेशमाला-बालाविबोधि श्री. सुदर्शन-श्रेष्टि-कथा समाप्ता ॥२१

हिवइ जे श्रावक शील पालई तेहनुं स्युं कहीईं ? पणि चोर हूंता शील पालई ते धन्य । तेह जि कहइ-

जो अन्नायरओ वि हु निव-भज्जा-पत्थिओ वि न हु खुद्धो । सील-निअमाणुकूलो स वंकचूलो गिही जयड ।।४६

व्याख्या: — ते वंक्रचूल राजपुत्र जपवंतउ हुई। छइ जे केहवउ १ अन्याइं पर-द्रव्यनउ हरणहार अनइ न्य=राजानी भार्याइ प्रार्थिक हूंतउ पणि क्षोभिउ नहीं। वली केहवउ छइ १ 'शोल-भंग करिवानउ नीम, राजपरनो माता समान।' इसिउ अभिग्रह पालिवा भणी अनुकूल = साव-घान छइ। इति गाथार्थः। विशेष कथा-हूंतउ जाणिवउं। हिवइ ते वंकच्लनी कथा कहीइ-

[२२. वंकचूल-कथा]

रथन्पुर नगर, तिहां विमलयरा राजा, सुमंगला पट्टगणी, तेहनी कृत्विइ वंकच्ल पुत्र, वंकच्ला पुत्री हुई । क्रिमें योवनवस्थाई आग्या । अवसिर राजानी पुत्री रोहणी कोई एक कुमरनइ परिणावी, पणि वंकच्ला लहुडपण-लगइ विभवा हुइ । इसिइ राजा उरमाई माई लघु, तेहनइ राज देवानी मनसा करवा लगउ । तिवारइ वंकच्लिइं ते वात सांसही न सकी । तेह-भणी राजानइ अणकहिंई जि वंकच्ल नोकलिवा लगउ । तेतलइ भाईना स्नेह लगइ वंकच्ला पणि नीकली । पछइ वंकच्लूल पंथ अवगाहतइ पालि-माहि आविउ । तिशां भीले आकारेंगित-चेष्टाई राजकुमार जाणी, प्रणाम करी, आविवानउं कारण पूल्जिं । पछइ कुमारि सर्व वृत्तांत कहिउं । पछइ ते सर्व भील प्रणाम करी कहई, 'स्वामिन! अम्हारइ स्वामी हूंतउ ते परोक्ष हुउ । हिवा स्वामी दुम्हे थाउ ।' इम कही अभिषेक कीषउ । पछइ पालिनउ अधिपति वंकच्ला हुउ ।

इसिइं श्री चन्द्रयशसूरि पृथ्वी-माहि विहार करतां, अनेक जोवनइं प्रतिबोध देतां आवइ छह। एहवह वरसालउ आविउ। तिहां धुरि आविउ आसाढ, अंतर गण संबाढ, काटीइं लोह, श्रांमतणा निरोह, छासि खाटी थाइ, माटी व्याइ, पाणी मांमलीइ, गउड़ी गूजरी वर्ण सांमल इं, रात्रि अंधारी, लवह तिमरी, ऊगतउ स्वच्छ, पश्चिम दिसिइ मच्छ, दिसि अंधार घोर, नाचई पंचविध मोर, पहिलउ सूसूआट, लोकनउ कूक् आट, विसमी छांट, भूमि कलहाट, परनाल ख रहलई, नेत्र तडत-उई, खोलडां खडहडं, क्यारा गाहीइं, दंताल वाहीइं, वणसती वस्तु राखीइं, भीजता घरि आवीइं-एहवउ वर्षाकाल आविउ जाणी आचार्य पालि माहि आव्या। तिहां वंकचूल-कन्हइ उपाश्रय मागिउ। तिवारइ वंकचूल कहइ, 'जउ धमेनउ उपदेस कहिनइ न दिउ तु रहउ। काइं अम्हा-रइ तु चोरी-वंब-दोह-पालइ निर्वाह न व्याइ। चोरी जि अम्हारइ आजीविका। तेह-भणी तुम्हे धमेंकथा न कहिवी।' पछइ आचार्य वचन मानिउं। तिहां च्यारि मास धमेंध्यान करतां, संयम पालतां, सुखह रही, वंकचूलनइ कही वर्षांकालनइ प्रांति चालिवा लागा।

तेतलह वंकचूल खहु सखायत करी गुरुनह संप्रेडिवा-मणी आपणी सीम तांई आविउ। पछह गुरुनह कहिंड, 'एतला आघो पारकी सीम, मह अवाह नहीं। तेतलह गुरु पारकी सीम-माहि ऊमा रहीं वंकचूलनह कहह, 'अहो क्षत्रिय कुमार ! हिव कांई धम कहीं है।' तिवारह वंकचूल कहह, 'जुकांह महं पलह ते कहउ।' गुरु कहई, जिवारहं जीव-वध करइ तिवारह सात पग पाछउ उसरो घाउ देज्ये। एक ए नीम १, बीजड जे फलनड नाम न जाणह ते फल म खाएसि २, त्रीजड राजानी पहराज्ञी मातासमान गणिजे ३, चउथउ क्यूग-मांसनड नीम ४।' ए च्यारि नीम गुरे दीधा। वंकचूल 'तह त्ति' करी नीम पडिवज्या। गुरे विहार कींधड।

१. Pu. L. क्षोभिउ नहीं चूकउ नहीं । २. राग । ३. K. हुई ।

वंकचूळ घरि आवी कुणिहि गामि हेरू करी, सर्व भील एकटा मेलो, घाडइ चालिड । तेतल स्तीणह गामि सुद्धि हुई ते गाम ऊचिल । वंकचूल तिहां गयउ पणि ठाल उपिड भी। पछ ह सर्व भील पाला बिलया। भूख्या तरस्या बन एक-माहि जह केई सुता, केई बहटा, केई बनफल सोधिवा लगा। इसिइ विधनइ बृक्षि फल लगां देखी सघले ते फल लेई वंकचूल आगिल आणी मूंक्यां। तिवारइं वंकचूल पूछइ, 'एइनउ सिउं नाम ?' ते कहई, 'अम्हे न जाण हें तिवार गुरू-दत्त नीम 'चीति आविइ कहइ, 'जां एहनउ नाम न कहउ ता मुझनई खाइवा नीम छह'। पछ ह सेवक कहई, 'स्वामी! नीम पछ पालिख्यो। आज भूख्या, सिउं नीम ?' तुहइ वंकचूल न मानइ। पछइ सर्व सेवक एकांति जई सर्व फल खाई सूता। एक सेवक भिन्त-लगइ चींतवई, 'आज आपण इस्वामी भूखिउ तु हूं किम फल मुखि घात हैं ?' तेह-भणी ते रहिउ। रात्रि प्रहर एक गई तेतल इं कुमार ऊठी सेवकन इकहइ, 'ए सर्व ऊठाडि, जिम घरि जईइ।' जेतल इसेवक ऊठाडइ तेतल इदेख ह, सिउं? सघला इप्राण-हूं ता मूकाणा। आवी वंकचूलन इकहिउं, 'ए तु सर्व मूआ दीसई छई।'

तेतल इंवकचूल सेवकना मरणनं दुक्ल अनइ आपण उनीम फलिउं ते हर्ष धरत उ लड्ग लर्ड्ड घरि आविउ । एहवइ घरना कमाड दीघां दीठां । कमाड नह छिद्रि माहि जोइ तु भायाँ पुरुष-सिहत सूती दीठी । रोस ऊपनीइ, खड्ग काढी, उपरि चडी घर-माहि आविउ । बिहु नह एक इ खांडिइ करी हिणिसु इम चीतवी जेतल इ घाय मूक इ तेतल इं नीम चीति आविउ । पछ सात पग पाछ उ उसरिउ । तेतल इ खांड उ भारविट लाग उं, खटकु हुउ । बहिन वंकचूला जागी हुंती कह इ, 'जीवउ वंकचूल ।' एहवउ बिहन ने उभेल खांड साती पूछिता लाग उ, 'हे बिहिन ! पुरुषन इ वेषि तृं कांइ सूती ?' तेतल इ बिहन बोली, 'सांमलि भाइ । जिलार ह् वं धाड इ चिड तिवार केडिइ पेखणीया आव्या । उसर मांडिउ । मह बीतविउं—ज इम कहीं सह वंकचूल घरि नयो तु ए अनेथि जई कहिस इ 'पालि सुनी छ इ।' इम कहीं रखे कोई आवी ल्सई, तेह-भणी ताहरां बस्त्र पिहरी सभा-माहि राति हुं जई बइटी । बडी वार तिहां बइसी दान देई, पेखणीआ विसर्यो । असूर-लगह उतावली ईण इ कि वेसिइ भउनाई-कन्हल आवी सूती ।' इम सांमली वंकचूल कह इ, 'ते गुरु धन्य जीणे मुझन इ एहवा नीम दीघा । मुझनई वि नीम तु फल्या । एकिण नीमि तां जीवतु ऊगरिउ जे अजाणिउ फल न खाध उं। बीज इ नीमि आज तां बहिननी हत्या अनइ परनीनी हत्या-हूं तउ छूटिउ । ए महातमा आप नइ परनइ तारक छ इ। महं तां महारमानी भगति लगारह न की हो ।'

इम वात करतां केतला एक दिन पालि माहि रही विमासिउं, 'मील तु सर्व मूआ | हिवइ रखे मुझनइ कोई हणइ ।' एह-भणी पालि मूं की ऊजेणीइं आवी कोई एक श्रेष्टिनइ घरि बहिन नइ भार्यों मूं की, आपण चोरी करिवा लगाउ | इम करतां घणा दिन गया | एकदा प्रस्तावि चींतवइ, 'जे बापडां दूबला नीठ रुली पेट भरइं छई तेहना घन लेतां मुझनइ महा पाप लगाइ छइ । पणि जउ चोरो कीजइ तु राजानइ घरि भली, काई कइ डील दीजइ कइ अधिक धननी राशि आणीइ ।' इम चींतवी वरसालइ गोह एक मोटी झाली सीखवो । पछइ तेहनइ पूंछि विलगी रात्रिनइ समइ राजानइ घरि चोरीइ पइठउ । एहवइ राजा राणीनइ माहोमाहि प्रेम-स्नेह-कलइ ऊवनउ । राजा रीसावी अनेथि घर-माहि जई नष्ट-चर्याइ राणीनां कउतिग जोइ छइ ।

१. Pu चीतविड K. संभारिड । २. K. साद ।

इसिइं वंकच्ल गोहनइ प्रयोगिइ जिहां राणी छइ तिहां आविउ । राणीइ वंकचूल दीठउ । ते वंकचूलतुं रूप देखी राणी व्यामोही हुंती प्रार्थना करिया लागी, 'अहो पुरुष ! ऊकरडउ खगां जिम रत्नराशिनी प्राप्ति सुबदायक तिम त्ं आज चोरीई पइठउ अनइ माहरी प्राप्ति तुझ-नइ हुई । तु इम जाणीइ देव तुझनइ तुठउ । पणि कहिनइ तूं कउण ?' वंकचूल कहइ, 'हुं चोर ।' 'तुं स्या-भणी आविउ छइ ?' ते कहइ, 'हूं मणि-रत्न-धन लेवा-भणो आविउ छउं ।' तिसिइं राणी कहइ, 'जु माहरी वात मानइ तु ताहरा मनोरथ पूरवउं ।' वंकचूल पूछइ, 'सुभिण ! तूं कउण ?' ते कहिइ, 'हूं राजानी पट्टराणी । जेहनइं तूसउं तेहनइं राज आपउं, जेहनइ रूसउं तेहनउ जीव लिउं ।' तु वंकचूल कहइ, 'तूं तु माहरी' माता, इणि कारणि शास्त्र इम बोलिइ छइ—

राजपरनी गुरोपरनी मित्रपरनी तथैव च । परनीमाता स्वमाता च पंचैते मातरः स्मृताः ॥१

वली राणी कहइ, 'माहर्ड वचन मानि ।' वंकचूल कहइ, 'तु तू माता । ए वात न हुइ ।' तु राणी कहइ, 'हिवइ माहरउं कीघउं जोए।' पछइ राणीइ आपणा वस्त्र फाडचां, अंग विलूरी पोकार कीघड, 'अहो सुभटो ! घाउ घाउ । माहि कोई चौर पारदारिक पइठड ।' तेतलह सभट 'हणि हणि' 'मारि मारि' करतां घाया । हिवइ राजाई बारणइ ऊमां ए वात सांमली आश्चर्यमइ हुउ छइ। एहवइ सुभट जे बारणइ आव्या तेहनइ राजाई कहिउं, 'एहनई कोइ घाउ म देज्यो, प्रमाति साही मुझ कन्हइ आणिज्यो ।' पछइ तलार घर-माहि आन्या । राणीइ कहिउं, 'ए ते पारदारिक। झालउ, बांघउ, मारउ।' पछइ तलारे वंकचूल झाली राखी मूंकिउ। हिवइ राजा स्त्रीना चरित्र मन-माहि विचारइ, 'जोउ एहनइ एवडउं तोछडपणउं।' अनइ वं हचूहना गुण स्मरइ, 'जोउनइ एवडाई वचन कह्यां, पणि लगारइ मन मेदिउं नहीं। तु कोई ए उत्तम पुरुष छइ। ' प्रमाति राजा सभा-माहि आवी बहैठउ, चोर अणावी पूछिउं, 'तूं कउण ? स्या-भणी आब्यड ?' वंकचूल कहइ, 'हूं चारी-भणी आबिड हूंतड पणि राणीइ दीठड ! राणी बीहतीई पोकार कीघउ अनइ हूं झलाणउ।' राजाइं चींतिवउं, 'एहनी धीरिमा जोउ – आपणउ दोष लीघउ, पणि राणीनउ दोष लगारइ मनि नाणिउ । तु ए माहरइ पुत्रनइ ठामि । इम चींतवी राजाई वंकचूढनी परीक्षा-भणी कहिउं, 'ए राणीनइ तूं लिइ, मइ तुझनइ आपी ।' तिवारइ वंकचूल कहर, 'ए माहरी माता ।' पछइ राजा रीसाणउ तलारनइ कहरू, 'जाउ सूलीइं दिउ, दुर्मरिणहं मारिज्यो । तु ही वंकचूल राणीनइ पडिवजइ नहीं। तिसिइ तलार वंकचूल नइ लेई नीकल्या । सूली-समीपि आणिउ तु ही न मानइ।

पछइ राजाइं वंकचूलनउ सत्त्व जाणी, पुत्रपणइ पिडवजी, युवराज-पदवी दीधी। वंकचूलइ बिह्न-भार्या तेडावी। वारू सात भूमिनउ आवास दीधउ। तिहां आपणा कुटुंब-सिहत सुख भोग-वइ। मन-माहि चींतवइ वली जउ, 'एकवार गुरु मिलई तु जन्म सकल थाइ।' इम विमासतां अनेरइ दिवसि गुरु आव्या। भावपूर्वक वंकचूल तिहां जई गुरुनइ प्रणाम करइ। गुरु पणि धर्म-उपदेश दिइं। पछइ वंकचूलिइं श्री-सम्यक्त्व पिडविजिउं, गीतार्थ श्रावक हुउ।

इतिइ ऊजेणी-समीपि सालिग्राम । तिहां जिनदास श्रावक । ते साथि वंकचूलनइ मित्रा-चार हुउ । इसिइ भीम नामा चरड देसनइ संतापइ । तेहनी राव लोके आवी किथी। तेतलइ राजाई प्रयाण-भंभा देवरावी । राजा आपणि नीकलिउ । एहवइ वंकचूल राजानइ प्रणाम करी कहइ, 'स्वामी ! कीडी-ऊपरि तुम्हारी सी कटकी ? ए वित् हूं करिसु ।' पछइ राजाई

१. K. मांहरइ ।

वंकचूल चलाविउ । वंकचूलइ तिहां जई भीम पछीपति साथिइ महायुद्ध करी बांधिउ। पणि बांधतां वंकचूलनइ प्रहार गाढा लागा । वंकचूल जय पामी घरि पाछड आविड, पणि घाड रूसाइ नहीं। पछइ वैद्य तेडी राजाई कहिउं 'ए किम साजउ थाइ?' तिवारइ वैद्य कहइ, 'जड कागमांस लिइ तु गुण हुइ।' पछइ वं कचूल कहइ, 'मुझनइ कागमांसनउ जावज्जीव नीम छइ।' तिवारइ राजा कहइ, 'वच्छ ! जीवन्तरो भद्र−शतानि पश्यति । एकवार लिइ, पछइ वली नीम पाले ।' तिवारइ कुमार कहइ, 'वरि माहरा प्राण जाउ, पणि कागमांस न लिउं।' तिवारइ राजाई सेवक पूछ्या, 'एहनइ को मित्र छइ ?' सेवके कहिउं, 'स्वामी! शालिग्राम-वास्तव्य जिनदास एहनइ परम मित्र छइ ।' तिवारइ राजाई जिनदास तेडाविउ । ते मार्गि आवतां जिनदासि बि स्त्री रुदन करती दीठी, पृछिउं, 'कांई रुदन करउ ?' तेतलइ देवांगना कहइं, 'ए वंकचूल कागमांत लेसिइ, तु 'अम्हारइ पति भर्तार न हुइ । तूं तु एहनउ मित्र छइ जु अम्हनइ दया करइ। तु कागमांस लेवा म देजे।' ए वचन जिनदास पडिवजी वंकचूल-समीपि आविउ । राजाइ कहिउं, 'वंकचूल मनावउ ।' जिनदासि आवी वंकचूलनी नाडि जोई। राजा-प्रत्यक्ष कहिवा लागउ, 'एहनइ हिवइ धर्म जि ऊषघ करावउ । विलंब म करउ ।' पछइ आरा-धनापूर्वक अगसण लेवरावी दुकृतनी गरिहा, सुकृतनी अनुमोदना करावतां, नवकार गुणावतां दिवंगत हुउ । वंकचूल मरी बारमइ देवलोकि देवता हुउ । वंकचूलना ऊर्ध्व कार्य करी, जिनदास जउ पाछउ आवह तु देवांगना तिम जि रुदन करती देखी पूछई, 'हिव काई रोउ? मइं तुम्हारइं वचिन कागमांसनु परिहार कराविउ ।' तिवारइं देवांगना कहइं, 'तइ तिम निर्जराविउ जिम वंकचूल मरी बारमइ देवलोकि गयउ । अम्हारी आम निराम हुई ।'

तु जोड एहवड वंकचूरु जे देवभव पामइ ते शीलनड माहारम्य । इति श्री-वंकचूलनड चरित्र समाप्त ॥२२॥

एतलइ गृद्स्थ जे शीलवंत पुरुष हुआ तेहनी स्तुति कही । हिव जे स्त्री शीलवंत हुई ते कहइ—

अक्लिक्य-सील-विमना महिला धवलेइ तिन्नि वि कुलाई । इह—परलोएस तहा जसमसमसुहं च पावेइ ।।४७

व्याख्या: -अस्बिलित = खंडना-रिहत शील पालवई करी जे विमल = निर्मल छा महिला = स्त्री एहवी त्रिष्टुं कुलनई घउलाइ = निर्मल करइ, पिता-माता अनइ सुसराना गोत्रादिक प्रगट करइ, त्रिंदुं गोत्रना पूर्वजनइ अजुयालह । किसिउं स्त्री एकला कुल जि नइ अजुआलइ ! ना, इह गोत्र=सर्वविश्व-माहि पण महाजस पामइ । वली परलोकि शील पालिवानइ प्रमाणिई यश = कीर्ति, असमसुख = असामान्य सौख्य- बार देवलोक नव प्रैवेयक, सर्वार्थेसिद्धि, मोक्षनां अनंत सुख-ते पण लइइ । वली शीलवंत महासतीनी स्तुति कहइ-

जा निय-कंत मुत्तुं सुविणे वि न ईहए नरं अन्ते । आबाल-बंभयारीणं सा रिसीणं पि थवणिङ्जा ॥४८

ठयाख्या:— जे स्त्री निज = आपणड, कांत = वल्लम मूंकी, सउणा इ माहि अनेरउ = पर-पुरुष मिन-वचिन करी वांछ इ नहीं, आजन्म मन-वचन-कायनी छुद्धिई जे भर्तार जि नई ध्याइ ते महासती, आवाल-ब्रह्मवारिणी स्त्री, तेहनइ महर्षि = महान्त ऋषीश्वर तेह इ स्त्रवई, महातमा इ ते स्त्रीना शीलगुण वर्णवई । बिहुं गाहनड अर्थ हूउ।

१. K.अम्हारइ भतरि कुण हुसीइ ? I

हिवइ कुलवधू अनइ दुश्चारिणीनउ अंतर कहइ-

पर-पुरिस-सेविणीओ कुल-रमणीओ हवंति जइ लोए। ता बेसा-दासीणं पढमा रेहा कुलवहूसु ॥४९

व्याख्या :-जड किमइ कुलवधू परपुरुषनी सेवा करई तड लोक-माहि जे वेश्या-दासी, जे सदाइ परपुरुषनी सेवा करई, तेहनई पणि कुलवधूनई धुरि पहिलो रेखा हुई जोईइ । बिहुंनई अंतर किसिंड ? जे वेश्या ते परपुरुषनो सेवा करती रहई अनइ जे कुलवधू ते परपुरुषनी बांछा इ न करई । इणइ करणि कुलवधूई परपुरुषनड संग सर्वथा वर्षिवड ।

तुच्छा वि रमणि-जाई पसंसणिज्जा सुरासुर-नराण । विहिया महासईहिं काहिंचिय विमल सीलाहिं ॥५०

व्याख्या :-अति तोछडी=अगंभीर, निंद्य इसी जे स्त्रीतणी जाति ते जाति किणिही एक लाख कोडि माहि एकि कुणिइं स्त्रीइं महासतीइं विमल शीलनइ पालिवइ करी देवदानवनइ प्रशंसनीय=वर्णनीय कीघी।पणि प्राहइ स्त्रीनी जाति तोछडी=निंद्य सर्व विश्व-माहि कही। घणे प्रकारे निंद्य स्त्रीनी तुच्छ जाति हुइ । अथ कुणि कुणि शील पालिवइ करी स्त्रीनी जाति प्रशंसनीय कीघी ? ते दृष्टांत-पूर्वक कहइ—

निय सील-महामंतेण पबल-जलणं जलं कुणंतीए । सीलुग्घोसण-पडहो अन्ज वि रुणझुणइ सीयाए ॥५१

व्याख्या:—निज=आपणउं शील पालिवा तणउं घोसणरूप जे पडह =वाजित्र ते अजी=आज-देशिम, जगत्रय-माहि रणद्युणायमान= प्रसिद्ध छइ। आज-सीम समस्त- लोक ऋषि इम कहं इ-जउ-शीताना शीलनइ प्रमाणिइं अग्निकुंड फीटी जलनउ कुंड पद्मसरोवर समान हुउ। यदाकालि श्री-रामदेविइं दशकंघर रावण हणिउ, शीता पाछी लोघी, तिवारइ शीलमंगनी शंका फेडिवा-भणी सुर, असुर, मनुष्य समक्ष खयरना अंगार भरी खाई, तेह-माहि शीता-गहिइं घीज कराविउं। जिम शीताइ खाई-माहि झांप दोघी तिम शीलनइ प्रमाणिइं अंगार फाटो पाणी थयंउ, विचालइ कर्णिका हुई, ते ऊपरि शीता जई बहटी। तिहां देवदेवतां जयजयारव करता शीलनु महिमा वखाणिवा लागा। इत्यादि गाथानउ अर्थ हुउ। विस्तरार्थ कथाहूंतउ जाणिवंड । ते शीता चरित्र आगलि कहीसिइ। वली शील पालिवानउ महिमा विशेष कहइ—

> चालिण-धरिय-जलाए संघ-मुहुग्घाडणं कयं जीए । चंपा-दारुग्घाडण-मिसेण नंदर सुभद्दा सा ॥५२

ठ्याख्या :-शिलनई प्रमाणिई, काचा सुत्रनइ तांतणई बांधी चालणीइ करी क्आ-माहि-थिकउं पाणी काढी, देवताए दीघा छइ जे चंपानगरीनां च्यारि बारणां, तेह-माहि त्रिणि बारणा पाणीसिउं छांटी ऊघाड्यां । वली एक बारणउं अणऊघाडिउं राखी कहिउं, 'बाउ को स्त्री शुद्ध सोलवंत हुई ते बार ऊघाडिज्यो ।' इणि प्रकारिई पोलिना बार ऊघाडिवई करी जिणि संघनउं मुख्त ऊघाडिउं, जिनशासन दीपाविउं, प्रभावना कीघी ते सुभद्रा स्त्री चिरकाल सीम नांदउ । गाथानउ अर्थ हुठ । विशेष कथा-हूंतउ जाणिवउ । ते कथा कहीइ-

१.Pu.L. कुणहि २. K.-लगइ

[२३. शील-ऊपरि सती सुभद्रानी कथा]

वसंतपुरि नगरि जितशत्रु राजा राज करह । तिणि नगरि जिनदास श्रावक वसह । तेहनी वल्लभा जिनमित शीलवती । तेहनी सुभद्रा एहवइ नामि पुत्रि शीलादिक गुणे करी विराज-मान, वाधती वाधती अनेक विद्याभ्यास करती यौवनावस्थाइ आवी । ते मिथ्यात्वनउ नाम न सांभल्ड ।

इसिइ अन्यदा चंपानगरी न्वास्तव्य बुद्धदासाभिष्ठ श्रेष्ठि व्यवसायनइ हेति वसंतपुरि आविड, पणि बौद्धधमनइ विषयि ते विशारद छइ। ते बुद्धदासे अन्यदा जिनदासनइ घरि आविड किसिइ वाणिज्यनइ हेते। तेतलइ सुभद्रा सालंकार, साभरण तिहां आवी। तिणि बुद्धदासि दीठी। हिवइ तेहनइ रूपइ व्यामोहिउ हूंतउ लोकना मुख-तु जिनधमनउ सर्व संबंध जाणी कपट-श्रावक हुउ। भाव-पालइ सर्व म् शत्मानइ बांदइ, उपदेस सांभलइ। पर्युपास्ति करतां साधु-संसर्ग-लगइ सम्यक्त्वनो इन्ति ऊ ति। जिम चापानइ गंधि तिल भाव्या हूंता सुगंध थाई, चांपेल कहिवाई, तिम ते जिनधम-बासित हुउ। पछइ श्री-वीतरागनी पूजा-वंदना-आवश्यकादि धर्म निरंतर करइ। रतनइ लाभि कडण प्रमाद करइ अपि तु न कोई। हिवइ जिनदास पणि बुद्धदासना विनी-तादि गुणे रंजिड हूंतउ योग्य वर देखी आपणी पुत्री तेहनई दीधी। भलइ मुहूर्ति, भलइ दिवसि, महा-ऋदिनइ विस्तारि, पाणिग्रहण कराविउं। पछइ महा आनंद ऊपनउ।

हिव बुद्धदास सुभद्रा-सहित सुखिइ युगलीयानी परिइं सुख अनुभवतां, अन्यदा बुद्धदास चीतवइ, 'मइं तु घणउं घन ऊगार्जिउं। हिवइ पिता-समीपि जई कुटुंबनइ मिलउं।' इम चींतवी सुसरानइ किहवा लागउ जु, 'तुम्हे कहउ तु हूं चालउं। पितानइ मिल्या घणा दिन हूया।' तिवारइ जिनदास श्रेष्ठि कहइ, 'वच्छ ! ए वात तु जुगती, जे तुम्हे पितानइ मिलिवा चालउ। उत्तमनउ ए आचार छइ। पणि विरोष एक छइ ते सांभलउ। तुम्हारइ जे मातापिता, ते बीजइ घर्मि अनइ जे सुभद्रा, ते तु जिनघर्मि। तु इम किम निर्वाह थासिइं?' तिवारइ बुद्धदास कहइ, 'हूं तिहां गया पछी पितानइं प्रणमी, सुभद्रानइ जुइ घरि राखिसु।' इम कहिउं तिवारइ जिनदासि वचन मानिउं। पुत्रीनइं सर्व सीख दीधी। तिहां-थिकु बुद्धदास चालिउ। पंथ अवगाही चंपा आविउ। सुभद्रा जुइ घरि राखी, आप पितानइ प्रणमी, धन सर्व आणी पितानइ दीघउं। मातापिता पूछइं, 'वहू किहां !' बुद्धदास कहइ, 'मइ जुइ घरि राखी छइ।' पछइ सुभद्रा ऊपरि सास्-नणंद वयर वहइ जिनधर्म-भणी। हिवइ ते छिद्र चोती रहुई अनइ सुभद्रा केवलउ जिनधर्म पालती सुखिइं रहुइ।

इम करतां एकदा माहात्मा एक भात-पाणीनइ हेति मध्याह्न-समइ विहरवा आविउ । तेतल्ड् बुद्धदासनइ सुमद्रानी सासू कहइ, 'वत्स ! ए सुभद्रा कुशीलि, सदाइ महात्मा-साथि भावइ तिम हसइ, बोल्ड् ।' तिवारइ बुद्धश्व कहइ, 'हे मात ! सोनइ किवारइ मल बइसइ, पणि ए-माहि कुशीलवण उं नही ।' वर्जी सुमद्रानी सासू नणंद मिस जोती रहइं । एहवइ ते महात्मा मध्याइ-समिय घर-माहि विहरवा आविउ । हिन्द तेहनइ सुभद्रा प्रासुक भात-पाणी विहरावइ छइ । एहवइ सुभद्रा जु महात्मा-सामहूं जोइ, तु सिउं देखइ ? तु वायनउं ऊडिउं तृणउं एक महातमानी आंखि-माहि पइठउं, पणि ते डोलनइ विषइ निस्पृही हूंतउ कादइ नही, अनइ कदावइ पणि नही । एहवउं देखी मिक्षा देतां जि कलाघवपणइ करी, जीभइ करी आंखिनउं तृणउं कादिउं । पणि

१. प्रतोमां बारंबार 'बुद्धिदास' पाठ मळे छे. २. P. लघुलाघवी कलाइ करी, K. লাঘৰ-লगায় ।

१०

काढतां सीमंतनड सिंदूर महात्मानइ माथइ लागड। महात्मा निस्पृही, तें सिंदूर परह्डं ने कींबंड। हिवइ सुभद्रानइ मनि कपट तु कांई नहीं। इसिइ सुभद्रानी सासूइ ए सर्व आचरण देखा बुद्धदीस तेंडी कहिंड, 'ताहरा घरना आचरण जोइ। एतला दिन न तूं मानतु, पणि आज जोई। अजी ते महात्मानइ माथइ सिंदूर छह। पछइ बुद्धदास ते सिंदूर देखी पतीजिछ।

हिनइ बुद्धदास ते दिनस-लगइ निरतं हुउ चींतन् ह, 'एहनी इ सुमद्रा जल दिण आचारि हुइ तु कहिनइ दूषण दीजह ?' अनइ सुभद्रा पणि निस्नेह भर्तार देखी मनि चींतन्ह, 'कारिमा मंबंध जु साचा मणीई, तु किसल ते साचा थाई ? पणि असमाधि एह जि एक, जे जिनशासिन आकस्मिक ए अपनाद ऊपनल । तु हिन कालस्मग तहीई पारंल, जहीई ए अपनाद टलइ ।' इम चींतनी, देनपूजा करी आगलि कभी रही कहइ, 'आहो शासन-देनताल ! मुझनइ ए अपनाद ऊपनल छइ, तु हिन कालसग हुं तहीई पारिसु, जहीई माहरल ए अपनाद उतारिसु ।' इम कही कालसगा जेतलई लीधलं, तेतलई शीलनइ प्रमाणिई शासन-देनता आनी कहिना लागी, 'निर्देस ! ताहरइ सिन्वई, ताहरइ शीलिई हूं इहां आनी । हिन्द जि काई ताहरइ कथनीय छइ, ते किह, जिम हूं करलं ।' तेतलई सुभद्रा कालसगा पारी, प्रणाम करी कहिना लागी, 'मात ! ए जिनशासननइ निषद कलंक कपनलं छइ ते परहल किर ।' तेतलई शासनदेनता कहइ, 'निर्देश ! असमाधि म करेसि । प्रभाति तिम करिसु, जिम ताहरलं कलंक कतरिसिइ, अनइ नली जिनशासिन प्रभावना होसिइ ।' इम कही देनता अहस्य हुई ।

इम करतां रात्रि विहाणी । इसिइ सूर्यनइ उदिय नगरनी पोलि पोलीया नघाडाई, पणि कघडाइ नही । गाई, वाळ्कया, मइंसि, घोडा—सहू इ तृषाक्रांत बारणइ आवी कमां रिह्यां । इसिइ राजानइ सुद्धि हुई । राजा आपणपे आविउ । घण अणाव्या, पणि किमाड हालई नही अनइ माजई नही । राजा पणि खेद पामिउ । पछइ राजाई स्नान करी धूपना कुडछा हाथि लेई किहिवा लागउ, 'जि को देव-दानव कुपिउ छइ, ते आकाशि आवी, प्रगट थई वात कहउ । अम्हे तउ जाणउं कांइ नही ।' इणि वचिन आकाशि देवतानी वाणी हुई, कहिउं, 'जि को महासती हुइ, ते काचइ तांतणइ चालणी बांधी कुआ-माहि थी पाणी काखी, किमाड त्रिण्णि वार पाणीई करी छांटइ, तु किमाड कघडाई ।' पछइ राजाइ सर्व स्त्री तेडावी, चालणी अणावी काचइ तांतणइ बंधावी। पणि किहनइ बांधतां घटाइ, किहनइ बांध्या पछी हाथि लेतां बूटइ, किहनइ कुआ-कांठई त्रूटइ, पणि कुआ-माहि किहनइ कीघइ चालणी न पइसइ । इम सर्व स्त्री विलखी हूई। पछइ राजाइ पडहउ वजाविउ । पणि पडहउ कोई छनइ नहीं। लोक, राजा आकुल-व्याकुल वया, पणि पोलि कघडाइ नहीं। सघली इ स्त्रीनी परीक्षा जोई ।

तिसिइं सुमद्रा मधुर-स्विर सासू-प्रति कहइ, 'मात ! जउ आदेश दिउ, तु एकवारे हुं पणि विनोद जोडं ।' तिवारइं सासू हसीनइ कहइ, 'आगइ ताहरउं शील जाणिउं । हियइ वली कांइ लोक-माहि विग्चा है जु एतली स्त्रीए पोलि नथी ऊघड़ी, तु तई किम ऊघड़िसिइ १ पणि ताहरइ जिनधिम पाखंड निघणा दीसई ।' तिवारई सुभद्रा कहइ, 'मात ! तउ हियइ मद्द पणि पांचनई आचारि आपणी परीक्षा कीजिसिइ ।' इम कही स्नान करी, निर्मेल वस्त्र पहिरी, सुभद्रा घर-हूंती नीकली । तिसिई सासू, नणंद सर्व वारई, पणि बलात्कारि जिहां राजादिक लोक ऊमा रहिया छई, तिहां आवी । पछइ बुद्धदास उदासीन हूंतउ तिहां आविउ । सासू, सुसरा सर्व तिहां आव्या ।

[🤾] K. इणइ अनाचारि प्रवर्त्तह ।

तेतलइ सुमद्राइं काचा तांउणा लेई चालणी बांधी । सर्व लोक देखतां ते चालणी कूआ-माहि धाती, माहि-थिकउ पाणी काढिउ । पणि एक बिंदु पाछउं न पडिउं । इम पाणी कूआ-बाहरि काढी राजा-आगिल ऊभी रही । तेतलइ राजादिक सर्व लोक जियजयारव करवा लागा । 'विस्त ! ए नगरिनी पोलि तिह जि उघिडिसिइ ।' इम कहतां मंत्रि, सामंत, भूगल, पौरलोक सर्व सुमद्रा-साथि हुआ । सुमद्रा पणि भद्रहस्तीनी गतिइं चालती, वीतराग हीआ-माहि घरती, नवकार ऊचरती, ते महासती पोलिनइ बारणइ आवी, सर्व-साखि कहिवा लागी, 'जउ मइ बुद्धदास टाली इणि भिव मन-वचन-कायाई करी अनेरउ पुरुष चींतिवउ हुइ, तु पोलि म ऊघडिज्यों । अनइ जउ परपुष्य न चींतिवउ हुइ, तु पोलि ऊघडिज्यों । अनइ जउ परपुष्य न चींतिवउ हुइ, तु पोलि उघडिज्यों । वित्त इस सास्-नणंद देखतां त्रिण्णि पोलि ऊघडी । हिवइ चउथी पोलि राखी, वली कहिउं, 'जि को बीजी इ सती हुइ, ते चउथी पोलि उघाडिज्यो ।' इम कही गाजतइ-वाजतइ सुमद्रा सघले देहरे चैत्य-परवाडि करी, राजादिक लोके परिवरी घरि आवी । इसिइं सास्, स्वसुरउ, भर्तार आवी आपणउ अपराध खमावी कहइं, 'अम्हे वरास्यां । धन्य जिनश्यमन, जिहां एवडु महिमा छइ।' पछइ राजा आपणइ घरि गयउ । हिवइ बुद्धदास जिनधर्म-ऊपरि सादर हुउ । पछइ केतलउ काल वर्षहरूथ-धर्म पाली, अवसरि चारित्र पाली, सुगतिनइ भाजन हूओ ।

इति श्री-शीले:पदेशमाला-बालावबोधे सुमद्रा-कथा समाप्ता ।।२३।।

निअ-सील-रक्खणत्थं तणं व रण्जं पि परिहरंतीए । सयल-सईणं मज्झे इह रेहा मयणरेहाए ॥५२

ठ्याख्याः-निज=आपणउं शील राखिवा-भणी तृणानी परिइं राजनां सुख परिहरीआं जिणि ते मदनरेखा महासती इहां=पृथ्वीमाहि समस्त सतीनइ धुरि पहिली रेखा हुई । इम संखेपिइ गाथानु अर्थ हुउ । विस्तरइं अर्थ कथा-हूंतु जाणिवउ । हिव ते मदनरेखानी कथा कहीइ −

(२४. मदनरेखा सतीनी कथा)

अवंतिदेशि सुदर्शन नगर । तिहां राजा मणिरथ राज करइ, अनइ युगबाहु युवराज-पदवी भोगवइ । तेहनइ मदनरेखा एहवइ नामिई भार्या हुई । ते सदनरेखा आपणां धर्मकरम करती सुखिई काल गमाडि । अन्यदा मणिरथराजाई मदनरेखानउं रूप दीठउं । व्यामोहिउ थिकड मदनरेखा-मणी वस्त्र, आभरण, अलंकार, सुखर्डी मोकलइ। अनइ मदनरेखा जेठना मोकल्या-भणी हर्षित-थिको लिइ । इम केतलाएक दिवस अतिक्रम्या ।

इसिइं मणिरथराजाइं दूती मोकली | तिणिइ दूतीइं आवी मदनरेखानइ राजानउ अभिप्राय किहिउ जु, 'हे सुभिग ! जे दिवस-लगइ राजाइ तूं दिठी, ते दिवस-लगइ राजा ताहरइ विषइ सानुगग हुउ | हिवइ राजा कहइ छइ, "माहरउ बोल मानि अनइ राजाती घणीआणी तूं था।" इत्यादि वचन सामली मदनरेखा कहइ, 'जे सत्पुरुष छई, ते तउ परस्त्रीनउ नाम लेता संकाई, पछइ वांछा किम करई ! तु जोइ-न राजा पितानइ ठामि । जे वधू—ऊपिर अनुराग करइ, ते किसिउं लाज नथी अथवा ए

१. 'ख्रय जयारव...पौर होक सर्व ' सुधी पाठ K मां नथी.

२. 'इम कहतां...पोलि ऊघडउ ।' पाठ Pu. मां नथी । ३. Pu. जिन धर्म पाली, K. जिन धर्म पाली गृहस्थावासि ।

बात जु ऊपनी मिन, तु प्रकासी कांइ ?' इम दासी निभेछी हूंती पाछी आवी । राजानइ सर्वे द्वृत्तांत कहिउ । राजा मिणरथ चींतवइ, 'जां लगइ ए भाई बीवइ, तां लगइ ए मुझनइ नहीं आदरइ । तेह-भणी पहिल्डं तां युगबाहु मारिवानउ उपाय चींतवीइ ।' इम विमासतां, चोरनी परिदं छिद्र जीतां वसंतऋतु आविउ । उद्यानविन सर्वे वनस्पती मउरी । एहवइ वनपालि आवी राजा बीनविड, 'स्वामी ! वनस्पती मउरी । ' ए वात सांमली राजा सहर्षे हुउ ।

तिसिइं युगबाहु मदनरेखा सहित वन-माहि गयउ। सघलउ दिवस वसंतकीडा करी, केलिना घर-माहि जई जेतलइ निद्रा करइ, तेतलइ मणिरथ राजाइं अवसर जाणी, छल लही, थोडइ परवारि परवरिउ, निर्देयपणइं शस्त्र लेई, वन-माहि आविउ। तेतलइ युगबाहुना सेवक ऊभा हुआ। मणिरथ कहइ, 'भाई किहां ? आपणइ तु चउ-पखेर वयर छइ, एह-भणी एकलउ माई देखी हूं तेडिवा आविउ छउं।' तिसिइ सेवक कहइं, 'ए केलिहरा-माहि छइ। ' पछइ राजा खद्दग लेई केलिहरा-माहि पइसी, कुलधम, यश, द्या लोपी, खद्गि करी युगबाहु हणिउ। एहवइ मदनरेखा पोकार करती जागी, विलाप करिवा लागी। तेतलइं पाहरी गमे गमे जाग्या हुंता घाई सर्व एकठा मिल्या। पछइ राजाइं कहिउं, 'माईनइ हूं जगाडतउ हुंतउ अनइ वरांसइ खांडउ हाथ-हुंतु पडिउं। ' इम कही राजा घरि आविउ।

पछइ मदनरेखा युगबाहूना काननइ मूलि आवी कहइ, 'रखे तुम्हे राजा-ऊपि वयर चींतवउ। ए सर्व तुम्हारा भवांतरीक कर्म-लगइ ए वात आवी घटी। हिवइ जउ तुम्हे लगारह काचउ थाएसिउ, तु परलोक-हूंतउ चूिकसिउ। एह-भणी मननइ समाघि आणु। श्रीवीतरागनउ शरण कह। ममता मूंकु। किहना कुढ़ंब १ केहना भाई १ केहना घर १ सघला इं जीव साथिई मित्राचार पडिवजउ। अरिहंत-देव-सुसाधु-गुरु-जिन-प्रणीत धर्म एह जि पडिवजउ। आपणा पाप आलोउ, निंदु।सिद्ध-साखि जि कांई पुण्य कीघउ हुइ, तेहनी अनुमोदु। महामंत्र नवकार स्मरु। कांइ जु नवकार गुणतां प्राण जाई, तु जीव मोक्ष पामइ। कदापि मोक्ष न पामइ, तुहइ विमानना सुख पामइ। पांच अणुत्रत, त्रिण्णि गुणत्रत, च्यारि शिक्षात्रत—इम बार वत आदरउ। तुम्हारइ मित्र, पुत्र, कलत्र कोई शरण नही, एक जि जिन-धर्म शरण। वली ए मनुष्यमवनी सामग्री दोहिली छंद, तेह-भणी हिवडां प्रमाद म किर्णयो। एहवा मदनरेखानां वचन सांमली कोप उपशमिउ। संवेगरंग-पूरिउ हूंतउ मरी ब्रह्म-देवलोकि देवता हुउ। इसिइं सिती मदनरेखा, पुत्र चंद्रयश, बीजा इसर्व परिवार विलाप करतां देखी चींतवइ जु, 'हूं गर्भि हूंती विलय कांइ न गई, जे माहरउ' रूप एवडा अनर्थनई हेति हुउं १ जे युगबाहु विनाश पामइ, तेहनउं मूल हू थई, जिम सूकडिना वृक्षनइ परिमल विणास ऊपजावइ। तु हिव ए वांत तां इम हुई, पणि मह आपणउ शील किम राखीसिइ ते उपाय चींतवउं।'

पछइ कांइ एक मन-माहि ध्याई, सर्व पुत्रादिक तृणनी परिइं परिहरो, सघलानी दृष्टि वंची, रात्रिनइ समइ नाठी । पूर्वदिशिइं जाती, गर्भ घरती, संसारनी असारता चांतवती, पगे डाभनी पीड सहती अटवी-माहि पइठी । तिसिइं रात्रि अतिकमी । पंथ अवगाहतां मध्याह-समइ तलावि आवी पाणी पीधउं, फलफूल आस्वाद्यां, त्रिषा-बुभुक्ष्या उपशमावी, संध्यानइ समइ सागार पच्चलाण पच्चक्ली, वेलिना घर-माहि सूती नवकार स्मरती । इसिइं रात्रिइं सिंह बोलइ महा भयंकर वन-माहि । तिहां सर्वांग-सुंदर पुत्र प्रसविउ, जिम पूर्व दिशि सूर्येनइ प्रसवइ । पछइ तलावि आवी, पाणीइ करी सर्व शरीर घोई, बालकरतन कंबलिइ वीटी, हाथि भतारमा नामनी मुद्रिका

धाती, हर्ष धरती वेलिना घर-माहि बालकनइ मूकी, आपणपइ तलाति पाणी पीवा-भणी जेतल**इ** आवइ, तेतलइ पाणी-माहि-थिकउ जलहस्ती नीकलिउ। तिणि मयणरेखा अपहरी आकाशि ऊलाली।

तेतलइ नंदीश्वरि यात्रा-भणी विद्याधरेश्वर जातउ हूंतउ, तिणी मदनरेखा पडती झाली, कामनउ वाहिउ छेई चालिउ । तेतलइ मदनरेखा विलाप करती कहइ, 'हे बांघव ! मुझनइ मूकि, जिणि कारणि काननवन-माहि जातमात्र बालक मूंकिउ छइ, तेहनइ स्वापद खाईसिइं। वली स्तन्यपान-पाखड़ बालक मरिसिइ। तेह-भणी कृपा करि मुझनइ तिहां मुकि अथवा ते बालक इहां आणि ।' तिवारइ विद्याधर कहइ, 'ए वात हूं तु करउं, जु मुझनइ मानइ, भर्तापणइ पडिवनइ । एक ए रूढं हुउं, जे तीणइ हाथीइ तूं ऊलाली अनइ मइ पड़ती ऋाली । नहीतरि मरण हुउ हुतउं । हिव एक बोल माहरउ मानि । जिणि कारणि हुं मणिचुड विद्याधर-चक्रवर्त्तिनउ पुत्र मणिप्रभ विद्याधर एहवइ नामिइ, पितानइ प्रणाम करिवा जातउ हुंतउ एहवइ मइ तूं दीठी । हिव तूं मुझनइ पडिवजी, विद्याधरनो स्वामिनी था । वही ताहरइ जे पुत्रनो आर्ति छइ, तेहनी वात सांभिल । मिथिला-नगरीनउ अधिपति श्री-पद्मरथ राजा वक्र-शिक्षित घाडइ अवहरिउ, वन-माहि आविउ हुंतउ। तिणि ते बालक रोतउ सांभलो तिहां आवी बालक लोघउ सर्वाग-सुंद्र देखी। पछह आपणि घरि लेई भार्या पुष्पमाला, तेहनइ पुत्र मानोनइ आभिउ। कहिउ, ''आपणइ एह जि पुत्र ।" इम कही सुलिइं ते पुत्रनइ पालइ छइ । ए बात मुझनइ प्रज्ञिनिवाइ कडी । हिव ए विखवाद मृंकि । मुझनइ आदरि । तिवारइं मदनरेखा विषाद करती मन-माहि चींतवइ, 'एतला दिवस-ताइ मइं आपणउं शील राखिउं, पणि हिव किम कीजिसिंह ? कउण उपाय चींतवीसिइ ? शील त सही पालिड जोईइ अनइ ए त स्मराती। त कांई कालक्षेप करडं। तेह-भणी कहइ. 'हे महाभाग ! पहिलं मुझनइ नंदीश्वरि यात्रा करावि । पछइ जिम कहेसि, तिम करिसु ।' तिवारइ संतष्ट वर्तमान मानिउ।

पछइ मदनरेखानइ नंदीश्वरि यात्रा छेई चालिउ। क्रिमइ नंदीश्वरि आव्यउ। बावन चैत्यदेव नमस्करिया। तेतलइ मणिचूड मुनि चतुर्ज्ञानी तिहां आविउ। तिणि मणिप्रिम आपणउ पिता आविउ बाणी, प्रदक्षिणा देई, आगलि बहुठउ। तिसिइ पिताइ तिम काई उपदेश दीधउ, तेहवउ काई संसारनुं असारपणउं देखाडिउं, जिम मणिप्रम ऊठी मदनरेखानई बहिनपणई पडिवजी खमाविवा लागउ, 'बहिन! हूं वरांसिउं। हिवइ मह मननउं कुटिलगणउं मूंकिउं।' पछइ ज्ञानी-महारमा-कन्हइ पुत्रनउ सर्व वृत्तांत पूछिउ। ज्ञानीइ मूल-हूंतउ आरंभी सर्व वृत्तांत पुत्रनइ कहिउ। तिहां मणिप्रिम परदारनउ नीम लीधउ।

इसिइ आकास-इतु ऊतरी देवता एक महा रिद्धिनइ विस्तारि, मदनरेखा—पाखती त्रिण्णि प्रदक्षिणा देई , प्रणाम कीधडं । पछद मुनिनइ प्रणाम कीधडं । एहवड असमंजस स्वरूप देखी मणिप्रम देवता-प्रति कहह, 'अहो देवेंद्र ! चतुर्ज्ञानी उल्लंघोनइ पहिलडं स्त्रीनइ प्रणाम करइ, तु तुझनइ सिउं कहीइ ?' इम उलंभइ दीधइ वलतउ जेतलइं देवता बोलइ, तेतलइ चारण-श्रमण महारमा बोलिड, 'वत्स ! उलंभड म दइ । ए तु कृतज्ञ , उत्तम, जिणि कारणि ईणी मदनरेखाइ युगबाहु भरतारनइ जिवारइं खड़्गि करी आहणिड वेदनाग्रस्त दीठड, तिवारइ एहनइ तेहवा कांई उपदेश दीधा, जे उपदेशनइ प्रमाणिइ मरी पांचमइ देवलोकइ देवता हुउ । पछइ

१. P. कामार्च छइ।

अनि श्वित श्वित श्वित वार्य गुरुन आचार साचवत ए मदनरेख! महासतीन प्रणम । ते ए आचार — इहां दोष कांई नहीं। जिणि कारणि अणगार अथवा जि को जेहन इउपदेश दिइ, ते तेहन शुरु। इहां संदेह कांई नहीं। ईणी मदनरेखाइ प्रांतकालि भर्तारन सम्यक्त देतां कउण कउण वस्तु न दोधी ? अपि तु सर्व दीघंडं। 'ए वात सांभली विद्याघर देवतान खमान । तेतल देवता मदनरेखान कहई , 'किह, सिउं करडं तुझन ?' तिसि मदनरेखा कहई, 'मुझन मिथिलानगरी लेई मूकि , जिहां ते लघु पुत्र छह।' तेतल देवता श्वण एक-माहि तिहां लिखां। तिहां निम अनइ मिल्तिनाथ प्रणम्या महा-प्रासादि। पछ विष्वी-कन्ह जई धमं सांभलिवा लागी। एहवइ देवताए कहिंड, 'आवड, जिम पुत्र देखाड वें ।' तिवार मदनरेखा कहई, 'माहरइ पुत्रिइं सिउं की जह ? केता पुत्र आगई हुआ छह। हिवई मुझन चारित्र शरण।' पछ देवता महासतीन प्रणाम करी आपणि टामि पहुत । मदनरेखाई दीक्षा लीधी।

हिवई श्री-पद्मरथराजाइ ते पुत्र घरि पालतां वइरी सर्व नमान्या, तेह-भणी 'निम' ए नाम दीघउं बालकनइ । क्रिमइं बालक वाधतउ योवनावस्थाइं आविउ । तिसिइं पिताइं एक सउ आठ कन्या परिणावो । महांत योग्य जाणी पिताइं आपणउं राज दीघउं । पछइ आपणपे पद्मरथराजाइं दीक्षा लोघी । क्रिमइ मोक्ष(?) पहुतु ।

हिवइ मणिरथ युगवाहु बांधवनइ हणी घारे आविउ, रात्रिइं क्षपंद खांधउ मरण पामी चड्यो नरग-पृथ्वीइ गयउ। पछइ प्रधान मिली युगवाहुन पुत्र चंद्रयशकुमार, तेहनइ राज दींधंउ। ते राज आपणउं सुखिइ पालिवा लागउ। इसिइं निमराजानउ पट्टहस्ती श्वेत, मद्रजातीय, आलानस्तंम उन्मूली, वंध्याचल स्मरतउ नीकलिउ। तेतलइ मागिं जातां चंद्रयशराजाना जण, तीणे झालिउ। पछइ ए वात चरना मुख-इतु निमराजाइ जाणी, दूत मोकली हाथीउ मंगाविउ। तिवारइ दूत-प्रतिइ चंद्रयश-राजाइ कहिउं, 'निमराजा नीतिनउ जाण नही। कांई परहस्त-गत वस्तु फोकट किम लाभइ? ए वस्तु जेहनइ हाथि चडी, ते तेह जिनी। 'इम कही दूत अवगणी विसर्जिउ। तिणि दूति आवी निमराजानइ कहिउं, 'तिहां तु तुझनई को न मानइ।' पछइ निम प्रयाण-मंभा देवरावी, सर्व-सैन्य मेली नीकलिउ। तिसिई वली दूत एक मोकली कहाविउं जु, 'हाथीउ आपि, नहीतिर हूं आवउं छउं।'

इसिइं चंद्रयश राजा पणि चतुरंग दल मेली साम्ह नीकलिया लाग । तेतल श्र अपशकुन हूआ । प्रधाने वारी राखिज । पछइ नगर जि माहि कटक मेली रहिउ । तिसिइ निम आवी गढ वीटिउ । सदा युद्ध हूइ, ढीकुली-यंत्र वह इं, घणा सुभट रिण रह इं, वास्त्रित्र वाज इं, कायर भाज इं, सुभट गाज इं । तिसिइ महासती इं ए वात सांभली, मन-माहि चींतव इं, 'ए बेहू सगा भाई छईं, पणि घणा लोक नउ क्षय करिस इं।' एह-भणी आर्या पूछी, आपण उ कृतांत कहीं, निमराजा-कन्ह इं महासती आवी । निमइं पणि विनय-प्रतिपत्ति की धी, कांइ जे स्नेह ते जाइ नहीं । पछइ महासती कहिया लागी, 'अहो राजेन्द्र! लक्ष्मी समुद्रना कल्लोल नी परिइं चाल छइ । तु निमराजन ! ए असार संसार देखी एवडुं जे इद्धा कर छ छ , ते नरग जिन्द होते । अन इं वली विरोध सांभलि । वडा भाई साथिई इद्धा करिया युगत उं नहीं।' तिवार इं निम आश्रर्यम इं वचन सांभली कह इं, 'हे महासति! कडण वड बांधव ?' महासती कह इं, 'एह जि चंद्रयश राजा ताहर उ बांधव ।' निमराजा वह तर्ज कह इं, 'किम ?' तिवार इं सती कह इं, 'एह जि चंद्रयश राजा ताहर उ बांधव ।' निमराजा वह तर्ज कह इं, 'किम ?' तिवार इं सती कह इं, 'एह जि चंद्रयश राजा ताहर उ बांधव ।' निमराजा वह तर्ज कह इं, 'किम ?' तिवार इं

१. K. पहुचाडी । २. K. L. पवत्तिणि-कन्हइ । ३. Pu. L. देवरावउं ।

४. P. L. सर्पना इंस लगइ मरण । ५. K. सर्वत्र 'चंद्रयशा' नाम आपे छे ।

महासतीह सर्व वृत्तांत-संबंध, जिम युगवाहु हणिउ, जिम निम पद्मरथइ राजाई लीधउ-इत्यादि सर्व वृत्तांत कही, पछइ मुद्रिकारक उललाविउं। रत्नकंबलनउ वृत्तांत पणि पुष्पमाला-इंतु जणावी रोष गमाडिउ। पणि निमराजा अहंकार न मूंकइ। कहइ, 'हूं किम नमी दिउं? हिव लोकमाहि शोभा न पामउं।' पछइ महासती चंद्रयश-कन्हइ गई। सघले उलली। सर्व अंत-धुरी पगे लागी। तिहां चंद्रयशराजाई माता उलली, सघलउ वृत्तांत मा-कन्हइ प्छिउ। कहिडं, 'ते गर्भ किहां?' तिसिई महासती कहइ, 'जे निम आविउ छइ, ते ताहरउ भाई।' ए वात सांमली, वयर मूंकी, सर्व ऋदिनइ विस्तारि भाईनइ मिलिवा-मणी सामुहु आविउ। तेतलइ निम पणि भाई आवतउ देखी सामुहु आविउ। बेहू भाई मिल्या, चंद्रमा नइ सूर्यनी परिइं शोभिक्षा लागा। ते बेहूं नगर-माहि आव्या। महा हर्ष ऊपनउ।

इसिइ चंद्रयश राजा कहइ, 'आत! सुणइ(१णि), घणा दिवस-लगइ माहरी मनसा दीक्षा छेवा ऊपरि हूती। पणि राजनइ योग्य कोई नही। हिवई बांधव! ए राज तूं लिइ। मुझनइ दीक्षा छेवा दिइ, जिम आपणड मनोरथ सफल करडं।' इम कहो निमनइ राज देई चंद्रयशि दीक्षा लीधी। आपणड काज साधिउं। पछइ निमराजाई बेहू राज आपणइ वसि करी अखंड राज पालिया लागड।

देखा, पणि उपदामह नहीं । पछह स्किडिना लेप भणी राणी सवली स्किड विस्ता बहुठा । तिसिह प्रधान आवी राजा-कन्हइ पूछह, 'स्वामी ! समाधि छह ? 'राजा कहइ, 'ए जे स्किड वसता वल्यना खटका हुई छई, ते महा मुझनइ असुखद्ग्यक छई ।' पछइ प्रधानि आवी सर्व राणीना वल्य जतराच्यां । एक एक वल्य मंगिरिक भणी राखिउं। स्किड वसाइ छइ । एहवइ राजाइ कहिछं, 'हिवडां समाधि छह । खटका काई नथी हूंता ?' प्रधान कहइ, 'एक जि वल्य राखिउं छई, तिणि करी खटका नथी हूंता ।' राजा चींतवइ, 'जिहां घणा संबंध, तिहां घणा कर्म-बंध ।' पछइ चारित्रावरणी कर्मनइ क्षिय एहवी बुद्धि जगनी, 'जोउ, जां घणां वल्य हूंतां, तां खटका थाता हूंता । हिवडां एकलां वल्य कांइ नथी वाजतां । तिम ए संसार-माहि घणा कुंडब, घणी राजऋदि, तां कर्मबंध । जिवारइं जीव एकलउ, तिवारइ सुखी । जिम एकणि हाथि ताली न वाजइ, तिम एकलां कर्मबंध न हुइ।' इम मिन विमासी वला विमासइ, 'जु ए वेदना उपदामसिइ, तु हूं दीक्षा लेसु ।' इसिउं चींतवी जेतलइ स्तूतु, तेतलइ निद्रा आवी, समाधि ऊपनी । तिसिइ सउणा-माहि मेठपर्वत-ऊपरि श्वेतगजारूढ आपणपउं देखी जागिउ । जाग्या पछी सर्व कुटुंबनी ममता मूंकी प्रभाति दीक्षा लीधी ।

पहनइं इंद्र अविधनइं बिल्डं राजाना चरित्रनु सत्त्व देखी परीक्षा-भणी ब्राह्मणनइ वेशि आवीनइ कहुइ, 'अहो निम ! तूं दीक्षा लिइ छइ, पणि पाछइ मिथिला-नगरीइं आणि लागी छइ। तुं पाछउ विल ।' वलतूं निम कहइ, 'मिथिला दाझतइ माहरउं कांई नथी दाझतउ ।' वली इंद्र कहइ, 'जड चारित्र लेले, तु पहिलडं पुत्रनइं कांजि गढ-मढ-मंदिर करावि, पछइ चारित्र लेजे।' तिवारइं निम कहइ, 'धर तु वाट-माहि न करावीइ । जिहां शाश्वतं ठाम हुइ, तिहां करावीइ ।' इत्यादि वचने निमनी द्रितमा देखी, इंद्र प्रत्यक्ष हुई, प्रणाम करी कहइ, 'अहो ! तूं धन्य, जे तहं एहवी बुद्धि आणी ।' पछइ आपणड अपराध खमावी, इंद्र आपणइ ठामि पहुतउ । अनइ निम आपणउं चारित्र पाली कार्य साधिउं । हिन मदनरेखा महासती पणि आपणउं शील पाली उत्तम पहुं साधिउं ।

इति मदनरेखा महासती कथा समाप्ता ॥२४॥

जिम मदनरेखाइ शीलरक्षा-भणी तृणानी परिइं राजऋद्धि परिहरी, शील पालिउं, तिम अनेरीइ स्त्रीए इम जि शील पालिवउं । ते दृष्टांत-पूर्वेक कहइ —

> नंदड सीलाणंदिय-जणविंदा सुंदरी महाभागा। अंजणसुंदरि-नमयासुंदरि-रइसुंदरीओ य ॥५५

न्याख्याः— ते सुंदरी महासती १, अंजणासुं री २, नर्मदासुंदरी ३, रितसुंदरी ४ – ए च्यारिष्ट्र महासती चिरकाल-सीम नांदउ । ते किसी छइ १ जीणि शींलि गुणि करी हर्षांच्यां सर्व-जन≔लोकना खूंद =समूह छइं । वली किसी छइ १ महाभागा = महा भाग्यवंत ते कहीइ जेहनइ आजन्म-मर-णांत-सीम एक इ अपवाद नथी हुउ । एतलउ गाथार्थ थयउ । विशेष अर्थ कथा-हुंतउ जाणिवउ । तिहां पहिलां सुंदरीनी कथा कहीइ —

(२५. सती सुंदरीनुं दृष्टांत)

इणी अवसर्पिणीइ श्री-आदिनाथ, नाभिराजानु पुत्र, विनोता-नगरीइ राज करइ । सुमंगला-सुनंदा ए बि भार्या सहित सुखिइं काल अतिक्रमावइ ।

अन्यदा सुमंगलाइं चऊद सउणां दीठां । पछइ तिणि जई ऋषमदेवनइ कहिउं । स्वामी कहुइ , 'ताहरी कृष्णिइं चक्रवर्ति होसिइ।' ए वात सांमली गर्भ वहतां सार्घाष्ट नव मास गया। पछइ भरत नइ ब्राह्मी युगल सुमंगलाइ प्रसविउं । तिसिइ वली सुनंदाइ पणि बाहुबिल नइ सुंदरी युगल प्रसविउं । पछइ वली सुमंगलाइं ऊगणपंचास पुत्र-युगल प्रसव्यां। जिम गज वन-माहि वाधइ, तिम सउ पुत्र वाधिवा लागा। मोटा हूआ। यूथनाथनी परिइं स्वामी पुत्रे वीटिया रहृइं। तिहां सउ शिल्प स्वामीइं लोकना व्यवहार-भणी प्रकट कीधां। भरतनई बहुत्तरि कला भणावी, तिम बीजाइ पुत्रनई बहुत्तरि कला सीखवी। कांइं सुपात्रि शालिना बीजनी परिइं शतधा विद्या वाधइ। पछइ बली बाहुबिलनइ पुरुष, स्त्री, हस्ती, अश्वनां लक्षण संपूर्ण सीखव्यां, अनइ अदारइ लिप ब्राह्मीनइ सीखवी। सुंदरीनइ पणि गणितादि विद्या सीखवी। इसिइ कल्पष्टक्ष पणि फलादि देता रिह्या। युगलियां सीदावा लागां। एहवइ अग्नि-धर्म प्रकट थयउ।

इस एकदा युगलियां श्रीऋषमदेवनइ राज्याभिषेक करिवानी वांछाइ गंगाइ पाणी लेवा गया छई। एहवड स्वामीनइ राज्याभिषेकन्त समय जाणी, इंद्रइ आवी स्वामीनइ राज्याभिषेक करी, सोनानी कांव लेई आगलि ऊभउ रिउं। इसिइ युगलियां आव्यां। स्वामी सालंकार, साभरण देखी विनय-लगइ पाणी पग-ऊपरि नामिउं। तिहां इंद्र तूठउ। पछइ विनीतानगरी कीशी। नवी राज्यस्थित सर्व स्वामीइ कीशी। पछइ स्वामी संशार सुख-विमुख हूंता, भोगफल-कर्मनइ क्षयि लोकांतिक देव आवी दीक्षानु समय बोलइ जु, 'स्वामी! धर्मतीर्थ प्रवर्तावठ।' तेतलइ स्वामी ज्ञानिइं करी दीक्षानु समय जाणी, भरत चक्रवर्तिनइ मूलगू राज्य दीघउं, अनइ बहुलीदेसनु राज्य बाहुबलिनइ दीघउं। बीजा इ पुत्रनइं एकेकउ देस विहिचो दीघउ। पछइ स्वामीइ दीक्षा लीशी। आर्थ-अनार्थ देसि स्वामी विहार करता वरसमइ दिनि श्री-श्रेयांसनइ घरि पहिलउं पारणउं इश्चरिस करी कीशउं। तिहां-थिकउ दान-धर्म विस्तरिउ। देवताए साढीजार कोडि सुवर्णनी दृष्टि कीशी। हिवइ स्वामी छद्मस्थावस्थाइं सर्व देसि विहार करता, एक सहश्र वर्षनइ अतिक्रमि, अयोध्यानइ परिसरि, पुरिमतालपुरि, दाकटमुख- उद्यानविन, ऋषभनाथनइ अष्टम-तिप न्यग्रेष दृक्ष-तलइ फागुण वदी इग्यारसिइं केवलज्ञान ऊपनउं। देवताए समवसरण कीघउं। तिहां इंद्रादिक देवताए केवल-मिहमा कीषठ।

१. К आंतरइ

इसिइ भरत चक्कवित सभा-माहि बइठउ छइ, तेतलइ यमक-समिक विहुं पुरुषे आवी सभा-माहि भरतनइ वधामणी दीधी, कहइं, 'स्वामी! श्री ऋषभदेवनइ केवल ऊपनं ।' तेतलइ बिली बीजइ वधामणी दीधी, कहइं, 'स्वामी! आयुधशाला-माहि चकररन ऊपनं छइ।' पछइ ए बेहूं वात सांमली भरत चौंतिविवा लागउ, 'तां चक्करत्ननो पूजा संसारनइ हेति छइ, अनइ जे स्वामीनइ ज्ञाननी उत्पत्ति ते तुमोक्षनइ हेति।' इम विमासीनइ भरत श्रीऋषभदेवन नइ बादिवा-भणी सपरिवार सेनासिहत नीकलिउ। पछइ तिहां पूर्वद्वारि समवसरण माहि आवी, त्रिणिण प्रदक्षिणा देई स्वामीनइ बांदी, यथायुक्तिइं भरत बइठउ।

हिवइ स्वामी सर्व भाषाइ सर्व जीवनइं उपदेश दिइं जु, 'संसार-ल्पीया क्षारसमुद्र-माहि जरा-व्याधि-दुर्गति का नक-चके संक(१व)लित तिहां प्राणीनइ किसिउं सुख छइ १ पणि तिहांइ केएक जीव सुरस्थलनइ परिइं सुख पामइं । तु चतुर्गतिक संसार-दुक्ख-रूप-माहि विचरतां मोक्षती
वांछा कीजइ ते यित्नइं करिवउं ।' इत्यादि उपदेश सांमली पांच सइ पुत्र भरतना दीक्षा लेवा
लागा । सात सइ पोतरा पणि दीक्षा लेवा लागा । तिवारइं भरति ब्राह्मीनइ आदेश दीघउ ।
ब्राह्मीइ पणि दीक्षा लीघी । सुधाकुंड पामी कुण अमृतपान न करइ १ अपि तु सहु इ करइं ।
तिसिइ बाहूबलिइं पणि सुंदरीनइ अनुमति दीघी, 'जा, चारित्र व्यइ ।' तेतलइ भरति सुंदरी
दीक्षा लेती राखी। पछइ स्वामीनइ पहिली श्राविका हुई । हिवइ सुंदरीनउं सुंदर रूप देखी
स्त्री-रत्ननी वांछाइ सुंदरी राखो मूंकी । भरतइ पणि श्रावकन इ धम पडिविज । पछइ चकररतनी पूजा करिवा-मगी मरत आ पुवशाला-माहि गयउ । तिहां प्रदक्षिणा देई, चकररननइ नमी,
अष्टाहिका महोत्सव करी, भरत दिग्विजय-भणी चालिउ । तेतलइ सोल सहश्र यक्ष सेवा
करवा लागा ।

हिव भरत छइ खंड साधि छइ एहवइ वली चक्रास्त १, खड्गरस्त २, छत्रस्त ३, दंडरस्त ४-ए च्यारि रस्त आयुधशाला-माहि ऊपनां। पणि च्यारिह एकेंद्री जाणिवां। हिवइ काणिणीरस्त ५, चर्मरस्त ६ अनइ मणिरस्त ७-ए त्रिण्णिइ लक्ष्मीनइ घरि पाम्यां। सेनापित ८, गृहपित ९, पुरोहित १०, वार्धिक ११-ए च्यारि रस्त विनितानगरिइ हुआं। गजरस्त १२, अश्वरस्त १३ वैतादय-मूलि पाम्यां। वली स्त्रीरस्त १४ ए विद्याधर-श्रेणिइं ऊपनंउं। इम चऊद-इ रस्त ऊपनां। हिवइ भरत साठि सहस्र वर्ष लगइ सघलइ दिघण्विजय करो पाछउ आविउ। पछइ भरत चक्रवर्ति विनीता-नगरीइ आवी बार वरस-लगई राज्याभिषेक कराविउ। एह-वइ सुंदरीइ सांमलिउं, 'जे स्त्री-रस्त हुइ ते छट्टी नरग-पृथ्वीइं जाइ।' ए वात सांमली सुंदरी मिन अपार दुक्ल धरिवा लागी, 'धिग् माहरा स्थनइ, जे स्थ-लगी नरिक जाइसु। तु तिणि रूपि, स्त्री-रस्तनी पदवीइ किसिउं करिवउं छइ जेह-लगइ नरग पामीइ १' इम चींतवी साठि सहश्र वर्ष-लगई सुंदरीई आंविल कीचां। पणि तिप करी सूकी लाकडी-सरीखी हुई।

एहवइ भरत चक्रवर्ति छइ खंड साधी घरि अंतःपुर-माहि आविउ। इतिइ सुंदरी दूबली दीठी। सुआर पूछ्या, 'कहु रे! माहरइ घरि किसिउं धान न हुंतु ? किं वा खादिम न हुंतां ? किं वा स्वादिम न हुंतां ? अथवा कोई कृपण मंडारी हूंतउ, जे देतउ कांई नहीं ? किं वा वस्त्र अलंकार पहुनतां न हुंतां ? अथवा मूं जावतां एहनइ कुण दूहवइ छइ ? किं वा

११

कांई रोग छइ ? अथवा काइ वैद्य न हुंतड ? अथवा ऊषध माहरइ घरि लामतां न हुंतां ? अथवा ए धुरि-लगइ किसिड ं दूबली जि छइ ?' इम किहइ हुंतई अधिकारी छइ तीणइ प्रणाम करी भरतनइ किहिड, 'स्वामी ! जे दिवस-लगइ तुम्हे दिग्विजय-भणी चाल्या, ते दिवस-लगइ स्त्री-रतनपणानी अणवांछाई साठि सहस्र वर्ष-सीम कर्मना क्षय-भणी आंबिल कीषां ।' हिव ए वात सांभली भरत पश्चात्ताप करतड सुंदरी-समोपि आवी पूछइ, 'किह-न, तूं दीक्षा लेणहारि छइ ?' तिवारई सुंदरीइ किहिड, 'हा।' तिसिई भरत किहवा लागड, 'मई जे तुझनइ चारित्र लेतां विन्न कीषडं ते खिम । काई घन्य ते, जे चारित्र पालइ। अनइ एक हुं 'अभागीड छडं, जे विषयनड वाहिड चारित्र न लिउं। तु तुं चालि, जिम परमेश्वर-समीपि जई दीक्षा तुझनइ देवरावडं।'

इसिइ त्रैलोक्यनउ नायक विहार करतउ अष्टापिद आवी समोसिरिउ। देवतानी कोडि तिहां मिली। तेतलइ भरतनइ कुणिह एकिण आवी वधामणी दीधी जु, 'स्वामी अष्टापिद समोसर्या।' पछई तेहनइ भरित साढी बार कोडि सुवर्णना आपी वधामणा-भणी। तिसिइं सुंदरी कहई, 'हे भरत! माहरा मनोरथ फिलया, जे स्वामी आव्या। हिवइ हूं दीक्षा लिउं।' तिसिइं भरत सपिरवार, सनागरिक स्वामीनइ वांदिवा चालिउ। तिहां स्वामीइं धर्मी पदेश दीधा । पछई भरित सुंदरीनइ दीक्षा-महोत्सव कराविउ। तिवारइं सुंदरी साथिइं घणी स्त्रीए दीक्षा लीधी। सुंदरी महा हर्ष धरती कहई, 'स्वामी! धन्य ते, जे ताहरउ मार्ग आदरइ।' इम कहती सुंदरी महासती-माहि आवी बइठी। अनइ भरत वांदी अयोध्याई पहुतउ। हिवइ सुंदरी निर्मल चारित्र पाली, घातिया कर्मनउ क्षय करी, मोक्षि पहुती। इम संक्षेपिइं सुंदरीनउ दृष्टांत कहिउं।।२५॥

हिवइ अंजणासुंदरीनउ दृष्टांत कहीइ-

[२६. अंजनासुंद्री-दृष्टांत]

ईणइ जंबूद्वीपि वैताढ्य-पर्वति प्रह्लादनपुर नगर । तिहां प्रह्लादन नामइं राजा, पद्मावती राणी । तेह्नउ पुत्र पवनंजय एहवइ नामिइं छइ । हिवइ तेह्नइ ऋषभदत्त एहवइ नामि मित्र । ते साथिइं क्रीडा-विनोद करतां मित्र-सहित सुखिइं काल गमाडइ ।

इसिइ तीणइ जि वैताळा-पर्वति अंजनपुर नगर । तिहां अंजनकेतु राजा, अंजनावती राणी । तेहनी पुत्री अंजनासुन्दरी पणि महा रूपवती, गुणवती, भणती-गुणती सर्व कलानइ पारि पहुती । ए वात सघले राजानइ देशि प्रसरी जु-'आजनइ कालि एइवउं रूप-लावण्य अनेथि नथी ।' पछइ सघले राजाए आपणाठ आपणाउ प्रधान अनइ आपणां आपणां रूपनां पट मोकल्यां । हिवइ राजा सर्व पट जोइ, पणि एकु-इ रुचइ नहीं । ईसिइं पवनंजयकुमारनउ पट आणिउ । ते देखी अनेरा सर्व कुमारना पट नांखी, ते रूप जीवा लागउ । राजा पछइ अंजनासुंदरी अनइ पवनंजयना रूपनइ सरीखा-इ देखो प्रधान प्रकिउ, 'जोइ-न, सरीवां रूप छइं ।' तिवारइं प्रधान कहिवा लागउ, 'स्वामी ! रूप जोतां तु देवदत्त-कुमारनउ रूप अधिकउं छइ । पणि केवलीइ कहिउं छइ जड, अदारमइ वरिस मुक्तिगामी होसिइं । एह-भणो ते अल्य-आयु जाणी ए संबंध रहउ । पवनंजयनउ संबंध करउ ।'

१. K. प्रमादी छउं। २. K. L. Pu. रायतने पसरी।

हिवइ अन्यदा नंदीश्विर शाश्वतां चैत्य वांदिवा-भणी विद्याधरनां सहश्र मिल्या छइं । तिहां अंजनपुरनं अधिपति पणि आविउ छइ । तिसिइं प्रहूलादन-राजानं पुत्र पवनंजय देखी, योग्य जाणी अंजनासुंदरी कन्या दीधी। तेतलई नैमित्तिकि लग्न दीधंउं। पछइ बेहूं राजा आपणे आपणे घरे आवि विवाहनी सामग्री कोधी। अंजनकेतु-राजाई महाऋदिनई विस्तारि सामग्री करी श्री-प्रहूलादन-राजा-भणी लग्न-पत्रिका मोकली। हिव प्रहूलादन-राजाई पणि सर्व कुढुंब तेडी जान चलावी। कांई पुत्रनई काजिई कहिनई उत्साह न ऊपजई !

इसिइ ऋषभदत्त पवनंजयकुमारनइ कहइ, 'हे मित्र ! आपणी मैत्रीनउ स्तेह भाजतउ दोइस छइ।' तिवारइ कुमार कहइ, 'मित्र ! चालि, कउतिग जोई अविह, कन्या केहवी छइ। कांइं स्तेह भाजिसिइ ? चाल तउ, ए वात जोईइ।' पछइ बेहू मित्र विमानि बहसी प्रच्छन्त रात्रिइं सुसुरानइ घरि अंधकहर-पट पहिरो आव्या। जिहां अंजनासुंद्री सखीइं परिवरी वात करह छइ, तिहां आव्या। तिसिइ एक सखी कहिवा लागी, 'हे अंजनासुंद्री ! जे ताहरइं कीघइं वर जोयउ हूंतउ, तेहनई आऊखउं थोडउं। ते नात्रउं तउ रहिउं। अथवा वली तीणइ नात्रइं सिउं कीजई, जीणइ वियोग हुई ?' तिसिइ अंजनासुंद्री कहइ, 'हे सखि! थोडी-इ अमृतनो छटा किहां लाभइ ? ते देवदत्तकुमार किहां मुक्तिगामी ?' ए वचन सांभली पवनंजयकुमार सिहनी परिइ कोपारण-लोचन हूंतउ खड्ग लेई मारिवा ऊठिउ। तेतलइ ऋषभदित्त हाथ-हूंतउ खांडउं ऊदाली लीघउं, 'हिवडां ए कोपनउ कउण अवसर ? भला मनुष्यनइ ए वात युगती नही। एक वली आपणपे पारकइ घरि आव्या, विल रात्रि, अनइ ए अणपरिणी पारकी स्त्रो कहिराइ।' इसिउं कही खांडउं पाछउं घताविउं। पणि कुमार मिन दूहवाणउ। पछुइ विरतउ हूंतउ घरि पाछउ आविउ।

तिसिइ अनेक हाथी, घोडा, रथ, पायक मेली पिताइ जान चलावी । गण्या दिन-परिक वाटइ अनेक दान दीजइ, गीत गाईइ, मुहासिणि कुमारन लूण ऊतारई । कुमार ते स्वपरू देखी मित्रनइ कहइ, 'ए आरंभ युगतं नथी । ए वीवाह दुर्जननी गोष्ठिनी परिइं मुझनइ रुवतं नथी।' हिवइ ए वात माताई सांभली । माता आवी पुत्रनइ कहइ, 'वरस ! तई सामान्य लोकनी आशा पूरवी। पछइ मातानइ निरास काई करई ! एक वार मंडाणि विवाह करिवा दिह ।' इसिई वली राजाई वात सांभली। राजा आवी कुमारनइ कहइ, 'ए सिउं इसांमली छइ, लाजनउ कारण ! अम्हारउं कीघउं काज किहां ढीलउं न हुइ । अम्ह जीवतां ते अनेरउ कउण छइ, जे ए कन्यानइ परिणिसिइ !' इम सरोघ बोलतउ राजा कुमारनइ सर्व आमरण पहिरावइ । पछइ हाथोइ बहसारी माथइ छत्र घराविउं। बिहुं पासे चमर ढिलवा लागा, मुहासिणी गीत गावा लागी। या वक्तइ पिंग पिंग दान दीजई। पिंग कुमार हीया-माहि गृह कोप घरतउ तंबोल लेवा लागउ। आगलि सर्व जानीया हुआ। वर चउरी-माहि आविउ। तिहां अंजनामंदुदरी-पवनंजयकुमारनइ पाणिग्रहण हुउं। दान, भोजन, सन्मान सर्व अंजनकेतु-राजाई कीघां। जिवारई कुमार परिणी घरि आविउ, तिवारइं प्रहूलादन-राजाइं सर्व जानी-लोकनइं दान देई संतोष्यां हुतां विसर्वा। आपणे आपणे घरे गया।

हिव अंजनामुंद्री कुलाचार पालती आपणे गुणे करी सर्व कुटुंबनइ संतोषद्र। पणि भवांतरना कर्भ-लगइ पवनंजयकुमार अंजनामुंद्री-सामहुं दृष्टि-मात्रइं न जोइ। परण्या-पछी बोलावी नही। अंजनासुंदरी उत्तम कुलवंतो, शीलवंती, परम मिक्तई करो देवतानी परिई भर्तारनइ आराघइ, अनइ श्री-वीतरागनउ धर्म एकचित्ति पालइ छइ ।

इसिइ रावण लंका धिपित प्रतिवासुदेव-साथि युद्ध करवा-भणी कटक मेलणहार हूं तई झूझनइ सखायत-भणी प्रहूलादन-राजानइ तेड उं मोकिल उं। तिसिई प्रहूलादन राजा रणनइ कडितिगीयाल हूं तड जयढका देवराविवा लागड। तेतलई कुमार ए वात सांभली पितानइ कहइ, 'मइ पुत्र दें तुमहे झूझिवा जाउ, ते शोभइ नहीं।' इम कही कुमारि बीड उं झालिउं। पितानइ प्रणमी, मातानइ प्रणम करिवा-भणि आविउ। एहवइ अंजनासुंदरी सासूनइ घरि आवी ऊम्मण-दूमणी थांभइ उठींगी ऊभी रही। तिसिइ कुमार माताने पगे लागड। माताई आसीस दीधी, शिक्षा देई पुत्र विसर्जिड। हिवई अंजनासुंदरी थांभइ वलगी पूतलीनी रीतिइ रही, पणि पवनं-अयइ लगारइ दृष्टि न दीधी। पछइ अंजनासुंदरी शून्य वित्तइ आंखिइ अश्रुपात करती घरि आवी।

हिवह कुमार चाली, पहिलह प्रयाणह मानस-सरोवरनह कांठह ऊतरिउ। तिहां रात्रिहं पर्येति पंली आंकद करतां देखी मित्र-कन्हह कुमार पूछइ, 'ए पंलीया स्या-भणी पुकारहं छई ?' तिवारह मित्र कहइ, 'देव ! ए चक्रवाक-चक्रवाकी, रात्रिनं वियोग तिणि करी विलाप करहं छई !' इसिइ अंजनासुंदरीनं अंतराय-कर्म क्षयि गण्डं । एहवइ पवनंजय चीतवह, 'जोड, जे पाधरा पंलीया, तेहनह एवडां विरह छई ! अनह महं तां अंजनासुंदरी बार वरस-माहि बोलावी नथी ! पाणिप्रहण कींधा पछी हृष्टि-मात्रहं जोई नथी । तु तेहनं कडण हाल ?' तिवारह मित्र बलंतु कहइ, 'एतला दिननं विरह तह तां मित्र नाणिउ।' तिवारहं पवनंजय कहइ, 'मित्र ! हुं पाछंड जई मिली आविष्ठ । हिव मह विरह सहिवातं नथी।' पछइ पवनंजय रात्रिनह समझ नीकली पाछंड घरि आविउ। बारणह ऊभड रही माहि चरित्र जोवा लागं । देखह तु अंजना असमाधि करह छह। तेतलह पवनंजिय बार ऊघडाविडं, तिहां अंजनासुंदरी आदरी। तहीं अंजनासुंदरी ऋतुस्नाता हुंती । तिणि अंजनाई कहिंद, 'स्वामी! कदाचित् संतानप्राप्ति हुसिइ, तु सास्-सुसरा विकल्प धरिसिइं।' पवनंजिय आपणी मुद्रिका नामांकित दीधी। आप वली कटक-माहि गयंड।

हिवइ अंजनासुंदरी चींतवइ, 'तां अंतराय-कर्म क्षिय गयउ, जे भर्तारनउ बहुमान लाघउं।' इसिइं त्रीजइ मासि गर्भ प्रगट थयउ। सासू मिन चींतवइ, 'वहू तां असती हुईं।' ए वात सुसरइ पणि जाणी। पछइ गर्भ जिम जिम वाघइ तिम तिम अंजनानइ मिन हर्ष ऊपजइ। अनइ कलंक पणि लोक-माहि वाधिवा लागउ। इम गर्भ वाधतइ सासू-सुसरे पूछिउं, 'ए सिउं?' तिवारइ ते मुद्रिकाररन देखाङिउं, तुइइ न मानइ। तिसिइ मास पांचनउ गर्भ थयउ। पछइ सुसरउ मिन चींतवइ, 'भर्तारि तां कदापि स्पर्शमात्र नथी कीधउ, जे एहनइ गर्भ हूउ। तु निश्चई ए दुश्चारिणी अनइ असती।' इम चींतवी घर-बाहरि काढी।

पछइ बापना घर-भणी चाली । एकाकिनी वाटइ चालती चींतवइ, 'वली तां ए कर्म उद्य आविउं । तउ रे जीव ! सिंह ।' इम एक दासी सिंहत अंजनासु दरो मार्गि चालती बली चींतवइ, 'माता-पितानइ घरि जातां शोभइ नहीं ।' तेह-भणी वन-माहि आवी । आपणउं

१. K. छतइ तुम्हे ।

शील राखती, कंदमूल आहार लेती, नीझरणना पाणी पीती, किहां एक वन-निकुंज-माहि पुत्र प्रसिव्द सूर्य समान । ते वन-माहि अंजनास दरीना शीलरूप शस्त्रनइ प्रमाणई सीह, वाघ, चित्रक, शगाल, चोर एक-इ द्वकडा आवी न सकई। इसिई एकदा पाणी जोवा भणी दासी मोकली । तिणि दार्स इ आवी अंजनासुंदरी बीनवी जड, 'स्वामिनि ! पर्वतना शुंग-उपरि एक महात्मा काउस्सिग ऊभउ रहिंड छड़ ।' ए वात सांभली अंजनानइ तृषा-बुभुक्षा वीसरी गई । पछइ अंजना क-बाल नइ लेई महारमा-समीपि आवी, भक्तिपूर्वक त्रिण्णि प्रदक्षिणा देई मुनि वांदिउ । तेतलइ मुनि कायोत्सर्ग पारो धर्मलाभ दीधउ । अंजना आगलि बइटी । मुनि उनदेश दिइ, 'हे महाभागि! ए तसार-माहि जीवनइ एक धर्म जि शरण छइ । संयोग नइ वियोग कर्म-जिलगइ हइं । जे जीव परनइ दूषण दिइ, ते सर्व फोक । जां जीव कर्म भोगवइ नहीं, तां-लगइ जीव छूटइ नहीं।' इत्यादि धर्मीपदेश सांभली, वैराग्यरंग ऊपनइ अरिहंतनउ धर्म सांभली अभिग्रह-सहित श्री-सम्य-क्ल लीघउं । पछइ ते महारमा अतिशयवंत जाणी अंजना पूछइ, 'स्वामिन ! केहा कर्म-लगइ मुझनइ ए दुक्ख ऊपनंड ?' मुनि कहइ, 'हे भद्रि ! को-एक व्यवहारीउ, तेहनइ घरि तूं वल्लभा हुंती । अनइ जे ताहरइ बीजी सउकि, ते जिनधर्मि करी वासित । अभिग्रह लीघउ-वितरागनी प्रतिमा तेहनइ पूजी फूल-धूप करी जिमउं ।' अन्यदा मिध्यात्वाभिनिवेश - लगइ [तइं] प्रतिमा बार प्रहर ऊकरडा-माहि गोपवी राखी, अनइ ते सउकि श्राविका देव पूज्या-पाखड जिमड नहीं। इस बार पहुर भूखी रही। पछइ तई दया-लगइ ऊकरडा-माहि-थकउं बिंब काढी दोधंड । ते कर्मन उप विपाक, जे तुझनइ भर्तार-साथि बार वरसन उवियोग हुउ।' वली पतिव्रता कहिवा लागी हाथ जोडीनइ, 'स्वामिन! माहरइ केडइ ए दासी कर्म भोगवड ते कांड?' मिन कहर, 'जिवारह तर्रं प्रतिमा गोपवी, तिवारहं ईणि कहिउं, ''ए अजी उघाडी दीसह छह ।" पछइ तई विशेषत ढांकी । ते कर्म-लगइ ए पणि तुझ केडिइ दुक्ल पामइ छइ ।' ए वात सांभली सविस्मय हूंती अंखनासुंदरी चींतवह, 'तां सघले-इ कर्म-बि-नइ प्रधानपणउं, जे दुक्ख-सख पामीइ।' पछडे ते महासती सत्त्व अबलंबी पर्वतनइ शिखरि रही।

एहवइ तेहनड माउल्ख सूर्यंकेतु-नामा विद्याघर नंदीश्वरि यात्रा करी पाछउ घर-मणी बलिउ, तेतल्ड ऋषिनइ प्रमाणि विमान खिलेउं । कांइ जिणि कारणि तीर्थनइ लांधिवई विमान खलीइ (१)। तिसिइ सूर्यकेतु विमान-हूंतउ ऊतरी, ते मुनि वांदी आपणपुं घन्य मानिवा लागउ। तिसिइं ते देखी साहिम्मणिनी बुद्धिइ 'वांदूं' इम कहइ, तेतल्ड ते बहिननी बेटो उल्ली। हिर्षित हूंतउ ते-कन्हइ सबं चत्तांत पूछी, अंजनामुद्री बालक-पुत्र-दासी-सिहत विमानि बइसारी, सूर्य केतु चालिउ। तेतल्ड विमाननी घांट वाजिवा लागी। ते घांटमउ नाद सांमली बालक योगीनी पिर्इं ध्यानस्थ रिइंड—बोल्ड नहीं, चाल्ड नहीं। तिसिइं ते बालस्वभाव-लगइ माउलनइ उत्संग-हूंतउ ऊलली विमाननी घांटइ वलगउ। तेतल्ड बालक भुइं पिडंड। इसिइं अंजनामुन्दरी विलाप करती कहइ, अरे देव! पहिलउं तां तेहवउं दुक्ल सिहउं, अनइ हिवडां जे बेटानटं मुख जोती सुख पामती वेतहीनइ सांसही न सिकंडं?' इम विलाप करती देवनइ उल्मा देती, घरन करती कहइ, 'पुत्र निलाइं आफल्डिउ हुसिइ, कि भुइ पिडंड हुसिइ?' तेतल्ड सूर्यकेतु विमान-तु ऊतरी रे. हि. स्लिलंडं। २ Р. ख लीहीइ, L. खलहिइ। ३. К. तेह इ।

जीणइ प्रदेशि बालक पडिउ छइ, तीणइ प्रदेसि आविउ । देखइ, तु अंजनाना शीलनइ प्रमाणि बालक पर्ल्यंकनी परिइं सूतउ छइ , पणि शिला चूर थई बालकनइं प्रहारिइं । पछइ बालकनइ सूर्यंकेतु लेइ, चउ पखेर अंग स्पर्शी, बिहुं हाथ-ऊपरि बइसारी, भाणेजनइ बेटउ आणी दीघउ । पछइ बालक अक्षतअंग देखी माता हर्खी । जिम दालिद्री निधान पामीइ हर्खीइ, तिम माता हर्खी । तिहां पुत्रनइं नाम शिलाचूरण दीघउं । पछइ उत्सव-पूर्वक सूर्यंकेतु घरि लीइ आविउ । घणे दिने सगानइं मिली, तेह-भणी सर्व हर्ल्या ।

हिवह तिहां अंजनासुंदरी दान देती सुखह आपणा दिवस गमाडह छह । इतिह अंजना-सुंदरीनी सघले वात प्रसरी । एहवह पवनंजयकुमार पणि वहणनइ जीपी जितकासी महोत्सव-पूर्वक घरि आविड । वितानह चरण प्रणमी, मातानी आसीस छेतु, मुहासिणीए तिलक(१कि) वधावीते जयजयकार लोकनां वचन सांभलतु, जायानउं मुख जोणहार हूंतउ, घरि आविड । जिम प्रासाद बिंब-विण न शोभह, तिम प्रिया विण घर श्रन्य देखी विरिह करी आकुलउ कुमार हूउ । चित्रशाला झालनी परि मानतड, राजरिद्धि तृण समान गणतउ, विलाप करिवा लागउ, हे कांते ! हे प्राणनाथि ! कहि, तृं किहां गई ? अथवा धाविमाताइ कांइ न राखी ? अथवा प्रधानो ! तुम्हे कालक्षेप करी कांइ न राखी ? हा मातापिताउ ! मुझ आवतां-लगह कांइ न पडिख्या ? तु इम जाणीइ, ते घर-हूंती काल्या पछी स्वापदे खाधी हुसिइ । तु हिवइ ए स्त्री-रत्न किहां पामी-सिइ ?' इम विलाप करतउ पवनंजय नगरनइ परिसरि चिहि रचावी चंदनना काष्टनी । तेतलझं मातापिता आकुल-ज्याकुल हुंता पुत्रनइ समझावई, पणि समझइ नहो । इतिइ ऋषभदत्तिइं आवी मित्रनइ आलिंगी कालक्षेप-भणो त्रिण्णि दिन माग्या । अनइ वली कुमारनइ कहिउं, 'ते शील-नइ प्रमाणि जीवती होसिइ । तेह-भणी हूं प्रतिज्ञा करउं छउं ।' पछइ पवनंजय मित्रना वचनलाइ त्रिण्ण दिवस-ताई पडिख्ड ।

ह्वइ ऋषभदत्त विमानि बइसी अनेक गाम-नगर जोतउ त्रीजइ दिनि सूर्यपुरनइ उद्यानि आविउ । तिहां स्त्रीनो गोष्ठि इसी सांमली जु. 'शिलाचुरण बालक-सरीखउ सोहागी को दीसइ नहीं।' ए नाम सांमली ऋषभदत्त चींतवइ, 'ए अंजनासुदरीनउ पुत्र तेहनउं नाम घटइ।' पल्लइ प्रचलनपणइ सर्व वात सांमली, सूर्यकेतु-राजानी सभाइं जउ आवइ, तु अंजनासुंदरी पुत्र-सहित दीटी । तत्काल उल्ली । पल्लइ अंजनाइ ऋषभदत्त उल्लीउ, लाजी हूंती आसन मूंकी ऊभी थई । तिहां सूर्यकेतुनइ भर्तारना मित्रनउं स्वरूप 'कही आगता-स्वागत कराविउं । एहवइ ऋषभदत्त किहवा लागउ जु, 'अंजनासुंदरीनइ विरिह्न पवनंजयकुमार अग्नि-माहि पइसतउ मइ राखिउ छइ । त्रिण्णि दिन वोल्या छइं । तेह-भणी तुम्हे विलंब म करउ । अंजनानइ चलावउ । हिवइ तुम्हनइ कल्याण हु । तुम्हारउ ए उपगार सय साखे पसरउ ।' पल्लइ सूर्यकेतु जमाईना मित्र-साथिइं अंजनासुंदरी पुत्र-सहित चलावी । ऋषभदत्त विमानि बइसारी घरि छेई आविउ। तेतलइ राजानइ वधामणी दोधी। अनइ पत्रनंजय हिवउ। पवनंजयनइ प्रियानइ आगमिन नवउ जन्म हुउ। पल्लइ प्रह्लादन राजा सगरिवार सामहु आवी अंजनासुन्दरी पुत्र-सिहत नगर-माहि आणी। पवनंजयना पुत्रनइ शिलाचूरण जे नाम हूंतउ, ते पल्लइ वली हन्मंत एहवउं नाम दीधउं। राजाइं पवनंजयनइ राज देइ आपणपे दीक्षा लीधी।

र, P. K. Pu. वधारीते, L. वधारीजते । २. K. जणावी ।

हिवइ पवनंजय राजा राज्य पालइ । अंजनासुंदरी पटराणी कीधी । सुिखं आपणा धर्म साधइं छहं । इसिइ हन्मंत पुत्र मोटउ हुउ । ऊदार्य-धीर्य-गांभीर्यादि गुणे करी विख्यात कुउ ! इसिइ श्रीमुनिसुव्रतनइ तीर्थि कोई आचार्य विहार करता तीणइ नगरि आज्या । राजा पवनं-जय वांदिवा आविउ, अंजनासुन्दरी-सिहत । तिसिइ गुरे भव-निस्तारक धर्मोपदेश दीधउ । तिहां अंजनासुंदरी प्रतिबूझी हुंती पवनंजयनइ कहइ जु, 'मुझनइ दीक्षा लेवा दिउ ।' पणि पवनंजय प्रियानु स्नेह 'परिहरी न सकइ, तेह-भणी आदेस न दिइ । गृही अंजना न रहइ । पछइ अति आग्रह अंजनानउ जाणी हन्मंतनइ राज दीधउं । आपणी प्रिया-सिहत सुगुरु-समीपि दीक्षा लीधी । बेहूं निरतीचार चारित्र पाली देवलोकि पहुता । क्रामइ मोक्ष जासिइं ।

इति श्री अंजनासुंदरी कथा ।।६२।।

883

हिवइ श्रीनमेदानी कथा कहीइ-

[२७. नर्भदासुंदरी-कथा]

एह जि जंबूद्वीप-माहि वर्धमानपुर नगर । तिहां संप्रति-राजा राज्य करइ । तीणइ नगरि ऋषभसेन सार्थवाह वसइ । तेहनी भार्या वीरमती । तेहनइ वि पुत्र—एक सहदेव, बीजउ वीरदास । अनइ ऋषिदत्ता एहवइ नामि पुत्री महा रूपवती । यौवनावस्थाइ आवी तेतलई घणा-इ महर्द्धिक व्यवहारीया मागइं, पणि श्रेष्ठि मिथ्यारवीनइ वाणइ । इसिइ महर्द्धिक रुद्रदत्त नामि विणग-पुत्र वाणिज्य-हेति रूपचंदपुर-हुंतउ तीणइ नगरि आविष्ठ । पणि ते कुबेरदत्त मित्रनइ घरि आवी ऊत-रिउ । अनेक व्यवसाय करइ । आपणा घरनी रीतिइं तिहां रहइ ।

अन्यदा ऋषिदत्ता सलीई परिवरी तिहां मत्तवारणहं बहठी दीठी । हिवह रुद्रदत्त रूपिइं व्यामोहिउ हुंतउ ऋषिदत्तानउं ध्यान धाइ । पछइ ए वात कुबेरदत्त मित्र-आगिल कही । तिवारइं कुबेरदत्त कहइ, 'ए श्रेष्ठि 'जिनधर्मी टाली अनेरा किहनइ नापइ ।' तिवारइं रुद्रदत्त मिध्या-द्वी-इ-थिकउ ऋषिदत्तानइ लोभिइ श्रावकनउ धर्म पिडविजिउ । काई माया-लगइ गाढा-इ विवेकीनां चित्त आवर्जीइं । पछइ ऋषभसेनइ आपणी पुत्री ऋषिदत्ता रुद्रदत्तनइ दीधो । तिहां पाणिग्रहण-महोरमव हुउ । केतलाएक मास जउ अतिकम्या, तु रुद्रदत्त सुसरानइ पूर्छी, प्रिया-सिहत आपणइ नगिर आविउ । तिसिइ रुद्रदत्तनउ पिता वधूनइ आगमिन हर्षिउ । पछइ रुद्रदत्ति जिनधर्म छाडिउ । ऋषिदत्ताई पणि भर्तारना संसर्ग-लगइ जिनधर्म छाडिउ । क्रिमइं महेश्वरदत्त पुत्र तीणइ जिनस । सर्व कला क्रिमइ अभ्यसी मोटउ हुउ ।

इसिइ ऋषिदत्तानउ वडउ बांघव सहदेव भार्या सुंदरी सहित सुखिइ रहइ छइ। एहवइ तिणि सुंदरीइ अपूर्व सुहणउं दीठउं। तेहनइ योगि आधान धरिवा लागी। ऋमिइं गर्भ बृद्धि पाम तइ एहवउ डोहलउ ऊपनउ जाणइ जउ, 'नर्मदा नदो-माहि जई स्नान करउं।' ए वात भर्तार-१. K. छांडी। २. K. परिणावइ नही। ३. K. जिनधर्म वासित टाली अनेरानइंन दिइ।

आगिल कही। पछइ सहदेव संघातनी रचना करी सुंदरीनइ साथि लेई चालिछ। हिवइ नर्मदा-नइ कांठइ आवी, पूजा अर्चा करी, नर्मदा-माहि पइसी, जलकीडा कीषी। पछइ सहदेव व्यवसाय-नइ सुखिइं तिहां नगरीनी स्थापना करी, नर्मदापुर नाम दीषछं। तिहां जिनमंदिर कराविउं सम्य-क्त्व-पिंड पोषिवा-भणी। पछइ सघला-इ व्यवहारीआ आपणा आपणा नगर मूंकी तिहां आवी वस्था। इसिइ पूरे दिवसे पुत्री जन्मी, पणि पुत्र-जन्म-परिइं उत्सव कीघड। नर्मदासुंदरी ए नाम दीषडं। क्रमिइ सघली इ कला अभ्यसी योवनावस्थाइ आवी।

इसिइ नर्मदासुंदरीनउं रूप सांमली ऋषिदत्ताइ चींतिविउं जड, 'माहरा पुत्र महेश्वरदत्त, तेह-नइ हेति ए नर्मदासुंदरी मागीइ। अथवा मुझनइ धिग्धिकार हु, जे मइ जिनधर्म छांडइ हूंतइ हूं कुड़ंबिइं छांडी। जे हूं पर्वतिथिनां नाम-इ न जाणउं, ते माहरा पुत्रनइ किम पुत्री देसीइं(१) १' इम कहती रोवा लागी। तेतलइ रुद्रदत्त आविउ। तिणि प्छिनं, 'तूं असमाधि कांइ करइ १' तिवारइं ऋषिदत्ताइं सर्व वृत्तांत कहिउ।

एहवइ महेश्वरदत्त पुत्र, मा-बापनी वात सांभली कहिवा लागड, 'तात ! मुझनइ तिहां मोकलड, जिम सघला-इ आवर्जी, माउलानी पुत्री परिणी, मानइ हर्ष ऊपजावंड ।' पछइ पिताइं महेश्वरदत्त चलाविड । योडे दिहाडे पंथ अवगाही नर्मदापुरि आविउ । तिहां सहदेवनइं मिलिड । हिवइ महेश्वहदत्त तिम बोलइ, तिम चालइ, जिम सहदेवादिक सहू मिन चमरकरिया । पछइ उत्सीग बइसारी कहिवा लागा, 'वरस ! तह अम्हारां चित्त तिम आवर्जियां, जिम जांगुडी-विद्याइ करी साप विद्य थाइ, तिम अम्हे विद्या कीधा । तु वरस ! मागि । जि कांई मागइ, ते आपडं ।' तिवारइं महेश्वरदत्ति नर्मदासुंदरी मागी । पछइ मातापिताइ आपी । तिहां महेश्वरदत्ति जिनधमें पडिविजंड । सम-रापथ कीधा जु, 'इणि भिव जिनधमें टाली अवर धर्म न करंड ।' पछइ महा-आनंदि, महा-महोत्सवि नर्मदासुंदरीनउं पाणिमहण कीधंड । केतलाएक दिन तिहां रहिउ । हवइ नर्भदासुंदरीइ तिम जिनधमेंना उपदेस दीधा, जिम महेसरदत्त जिनधमेनइ विपयि गाढउ निश्चल हुउ । पछइ केतलेएक दिहाडे सुसरानइं कही, भार्या-सहित महेश्वरदत्ति आवी, मातापितानइ प्रणाम कीधंड । तिसिइं ऋषिदत्ता नर्मदासुंदरीनइ उत्सीग बइसारी कहइ, 'वित्स ! तई तिम चालवंड, जिम मिध्यात्वनउ नाम घर-माहि न रहइ ।' हिवइ महेश्वरदत्त नर्मनासुंदरा सुखिई काल गमाइतां सर्व स्वजननइ मान्य हुयां ।

अन्यदा नर्मदासुन्दरी गर्डाख बहुठी आरीसइ आपणंड मुख जोती, तंबोल खाती, अनेक विभ्रम करती, लीला-लगइ तंबोल गर्डखनइ बारणई नास्तिउ । इसिइ महातमा इक तलइ जातड हूंतड, तेहनइ माथइ तंबोल पडिड । तेतलइ तेणह महातमाइ कहिंड, 'इम जे ऋषिनी आशातना करइ, ते भर्तारनड वियोग पामइ ।' इसिड ते महारमानड सकोप वचन सांभली विषाद-गर नर्मदासुंदरी गर्डख हूंती ऊतरी, महारमाने पगे लागी कहिवा लागी, 'महात्वन् ! हूं वरांसी, जे हूं जिनधमना मर्म जाणती इ हूंती एवडड अविनय की घड । तु हिवइ तुम्हे विश्वनइ वरसल छड, मुझ ऊपरि क्षमा करड । तुम्हे तु वयरी-इ-ऊपरि कोप न करड, पछइ मुझ ऊपरि कोप किम करिसिड ! तथापि मुझ अभागिणी-ऊपरि शाप परहड करड ।' तिसिइ मुनि बोलिड, 'हे विस्ति ! सांभलि, खेद म घरि । जे महारमा हुइ, ते शाप अनइ अनुग्रह न करइ ।

१. K. अतिक्रमतां। २. L. Pu.लांषिउ। ३. K यती।

पणि न जाणंडं, माहरा मुख-हूंतंड एहवंडं वचन किम-हि नीकल्डिंडं ? अथवा लींबनह जे कहु-अपणंडं, ते कोई करह छह ? ते स्वभाविइं जि हुइ ।' इम प्रतिबोधी महात्मा आपणह काजि गयंड । नर्मदासुंदरी पाछी घरि आवी । सुखिइं घरि रहह छह ।

इसिइ अनेरइ दिवसि महेसरदत्त व्यवसाय-भणी जवनद्वीप-भणी चालिवा लागउः। तेतलह नर्मदासुद्री कहइ, 'स्वामी ! हू' पणि साथि आविसु ।' पछइ नर्मदासुद्री संघातिइ चालि । हिनद समुद्र-माहि प्रवहणि बहसी चालतां अर्ध पंथ अवगाहिउ जेतलई, तेतलई रात्रिनइ समइ कुणिहि एकणि गीत गायउं । ते गीत सांभली नर्मदासुदरी स्वरनां लक्षण जाणती हुती भर्तारनइ आश्चर्य ऊपजावती कहिवा लागी, 'स्वामिन ! जे ए गीत गाइ छई, ते सामलइ वर्णि छइ. स्थूल-गणि छइ, कुश-देह छइ, गुद्धदेसि मसउ छइ, शोण-लांछन छइ, बावीस वरसनड छइ, हीयंउ पहुलंड छइ। रे इत्यादि स्त्रीना वचन सांभली महेसरदत्त मन-माहि चींतवइ 'ए नर्मदासुंदरी कुशीलि संभावीइ, अन्यथा एतली वात किम ए जाणइ ? तां हिवइ परीक्षा करउं।' पछड प्रभाति ते पुरुष तेडी, सर्व अहिनाण जाई, मनि निश्चय कीघउ, 'तां सही ए कुशीलि जि ।' पछइ गूढ कोप घरतं चींदवइ, 'एतला दिन हूं इम जाणतं जंड, ए महासती छड़ । पणि तां आज पारखंड दीठंड । तु हिव एहनइ समुद्र-माहि ठेली दिउं । अथवा खड़िंग करी केलिनी परिष्ठं बि-खंड करउं ।' इम जेतलइ चींतवह छइ, तेतलइ अकस्मात निया-मक कुआखंभा - जपरि चडिनइ कहइ, 'अरे लोको ! प्रवहण राखउ, सिंद पाइउ, नांगर मुंकड। रै।क्षसंउ द्वीप आविउ । जलं ईघणनी सामग्री लिउ । इम कही आपणं प्रवहण राखिउ । सर्व संग्रह की घर । इसिइ महेसरदत्त माया-लगइ गूढ कोप घरतर नर्मदासुंदरीनइ वन-माहि छेई गयउ । अनेक तलाव देखाड्यां । वडी वन सर्व देखाडी संध्याई किहां एक वननिकुंज-मोहि जई सतां । तेतलइ पूर्वोपार्जित दुःकर्म-लगइ नर्मदानइ निद्रा आवी । तेतलइ महेसरदत्त नर्मदा सूती जि मूंकीनइ प्रवहणि आविउ । पणि कहि, 'लोको ! नासउ नासउ । कांता राक्षसि खाची । हं नासी आवित । तुम्हे चाल्ड, नहीतरि राक्षस आवी खासिइ ।' तिवारइ बीहतां लोक प्रवहणि चडी चाल्या । पछइ महेसरदत्त चींतवइ, 'मइ बिहू वानां की घां — दुःशालि स्त्री-इ छांडी अनह लोकनउ अपवाद-इ राखिउ । हिनइ क्रमिई यननदीपि आविउ । तिहां घणउ धन उपार्जी आपणइ नगरि आविड , अनई प्रियानउ स्वरूप कहिउं जउ, 'राक्षसइ प्रिया खाधी !' पछह असमाधि करी नर्मदानां प्रेतकार्य कीषां । वली महेसरदत्त नवी वार परणिउ ।

'हिवह नर्मदासुंदरी वन-माहि जिम सती हूंती, तिम जि नवकार कहिती हूंती जागी।पणि अ गिल भर्तार न देखह । तिसिंह नर्मदा भोलपण लगह कहह, 'स्वामी! एहवर्ड हासूं न कीजह ।' तुहह कोई नावह । तेतलइ ऊठी वन-माहि जोवा लगि।, पणि भर्तार न देखह । तिवारई नर्मदा रोहबा लगी। तिणि रोतां जे वननां स्वापद छई, ते ही रोवा लगां। पछह लताना घर-माहि रात्रि रही, पणि रात्रि सउ वर्ष समान हुई । वली प्रभाति वन जोती, ददन करती, पांच दिन अतिकमावी छठह दिनि जिहां प्रवहण हूंतां, तिहां आवी, तु आगि प्रवहण नही । तिवारह गाढेरी निरास-थकी रुदन करती ते मुनिनउ वचन चीति आविउ । पछई योडेरी असमाधि करिवा लगी। इम आपणंड पूर्वोपार्जित कर्म भोगवती, आत्मानह प्रति-

१. K. क्आयंमा । २. L. Pu. राखसउं द्वीप K. राखिस द्वीप ।

१२.

नोध देती, महासतीइ सरोवरि स्नान करी, वन-माहि देव वांदी, फलाहार करीनइ तापसी हुई । पछइ गुफा-माहि माटीनी प्रतिमा करी, मननइ स्थिरता-भणी फले-फूले पूजी, आगिल वईसी सण्झाय करइ। एकाग्र-चित्त दीक्षाना, ध्यानना विषइ तत्पर हूंती रहइ छइ।

इसिइ ते नर्मदानउ पीतरीउ वीरदास बब्बरकूल-भणी जातउ हूं तउ, तीणइ प्रदेशि जिहां नमैदासुंदरी गुफा माहि स्वामीनी स्तुति करइ छइ, तिहां आविउ । पछइ ते स्तुति सांभली वीरदास गुफा-माहि पइठउ । तिसिई साश्चर्यरूप वीरदासि भत्रीजी देखी । कंठि आलिंगी शोक अनइ हर्ष घरतउ पुछिवा लागउ, 'हे वित्स ! तूं एकािकनी इहां कांइ ? अथवा तूं किम आवी इहां ?' इम पूछइ हूंतइ नर्मदाइ आपणउ सर्वे वृत्तांत कहिउ । पछइ वीरदास दैवनई ओलंभा देतउ हृतउ नर्मदासुंदरीनइ संघातिइ लेई बब्बरकूलि आवित । तिसिइं नर्भदासुंदरी वस्त्रना घर-माहि मूकी । पछइ वीरदास मेटि लेई राजानइ मिलिउ । राजाइ बहुमान देई अर्घ दाण मृंकिउ । पछइ वीरदास कियाणां वेचिवा लागउ । तिहां हरिणी नामिई पण्यांगना वसइ। पणि ते प्रवहणी-लोक-कन्हलि सहस्र दीनार लिइ। ते लेवा भणी दासी एक वीरदासनइ ऊतारइ मोकली। तिणि दासीइ नर्मदासंदरी रूपवंत दीठी । तिणिइं जई हरिणीनइं कहिउं जउ, 'एहवडं रूप पृथ्वी-माहि मथी। ए जउ ताहरि घरि आवइ, तु जाणे कल्पवेलि आवी। तीणीई द्रव्यनी कोडि ऊपार्जीड़ ।' पछड़ हरिणीइ धन मागिवानई मिसिइं तेहनउं चरित्र जीवा-भणी वली तेह जि दासी मोकली । तिसिइ वीरदासिई सहस्र दीनार दीधा । तेतलइ पाछी आवी हरिणीनइ कहइ. 'न जाणीइ, ए वीरदासनी बहिनि छइ अथवा सगी छइ ? किंवा दासी छइ ते जाणीइ नहीं।' तिवारइ हरिणी तेहनइ घरि आवी । पछइ वीरदासनइ बलारकारिइ मिषांतर करी आपणइ घरि लेई गई । वीरदास भोलवी हाथनी वीटी नामांकित लीघी । ते लेई यंसी हरिणीइ दासी मोकली नर्मदासुंदरी-कन्हलि, कहिवराविउं जु, 'ए मुद्रिकानइ अहिनाणिइं श्रेष्ठि वीग्दास तुझनइं तेष्ठइ छड़ ।' तिसिइं नर्मदा सरल चित्त-लगी ते दासी-साथिइं गईं । तेतलइ हरिणीइ ते नर्मदासुंदरी भुइहरि लेई घाती । मुद्रिका पाछी आपी । पछइ अखंडनत वीरदोस पाछउ घरि भाविउ । जउ ऊतारइ जोइ, तु नर्मदा न देखइ । पछइ नगर-माहि जोतउ हूंतउ सासंक हरिणी-नइ घरि आवी पूछइ जु, 'नर्मदा किहां ?' तिवारईं ते कपटपंडिता न मानइ, कहइ. . 'हं सिउं जाणउं ?' तिसिइं वीरदास चींतवइ. 'एक कारेली अनइ लींबडइ चडी, एक वेश्या अनइ राजानउं बहुमान । तु ए साथिइं नही पुहुचीइ । एक परदेस, बीजउं जीणइ गोपवी ते किम आपिसिइ १७ इम घणी असमाधि की घी।

पछइ आपणी वस्तु सर्व लेइ, घणउ लाभ ऊपाजीं, पाछउ चालिउ । भरुअच्छि नगरि आविउ । तिहां आव्या-पछी परम मित्र परम श्रावक जिणदास श्रेष्ठि, ते-आगलि वात कही । नर्मदासुंदरीनी सुद्धिनइ हेति बव्बरकूल-भणी आपणइ टामि मित्र मोकलिउ । हिवइ हरिणीइं वीरदास चाल्या पछी नर्मदासुंदरीनइं कहिउं, 'हे सुभिग ! सौभाग्यनउ निधान वेश्यापणउं आदरी यौवननउं फल लिइ ।' ए वचन जेतलइ हरिणी कहिषा लागी, तेतलइ नर्मदाइ कान ढांकी नइ कहिउं, 'ए यात आज पछी म कहेसि । हूं आजन्म सीलनी खंडना नही करउं ।' तिवारइ वेश्या कहइ, 'अम्हारउ जन्म सफल, जे आपणी इच्छाइं विलसउं, भोग भोगवउं ।' तेतलइ नर्मदा कहइ, 'इंणे सुखे मोक्षना सुख कुण हारहं? जां मुझनइ जीवतब्य, तां शील कुण

हरी सकइ ? कदापि मेरुपर्वतनी चूलिका चालइ अनइ कदापि पश्चिमिइं सूर्यं ऊगइ, पणि हुउं शील-मंग न करउं।' पछइ हरिणीइं अनेक दीन बोल बाल्यां, लोभ देखाडिया, पणि तुह-इ न मानइ। तिवारइ हरिणीइ नर्मदानइं पांचसइ नाडी देवरावी। पणि लगारइ ते सतीनउ रोम-मात्र खुभु नहीं, अनइ शील-इ भागउं नहीं।

तिसिइं नर्मदानइ मारतां शीलनइ प्रमाणिई हरिणी वेश्या मूई। पछइ बीजी वेश्या भयभीत हूंती पगे लागी नर्मदानइ मन्।वइ, 'तूं अम्हारइ स्वामिनी था। प्रभुरव-पणइ आपणी इच्छाइ शील पालि।' पछइ नर्मदासुंदरीइ ते वचन मानिउं। इम करतां प्रधानि नर्मदानउं रूप देखी। प्रार्थना करिवा लागउ। पणि मानइ नहीं। तिवारइ प्रधानि राजा-आगलि जई नर्मदाना रूपनी वर्णना कीधी। तेतलइ राजाइं नर्मदासुंदरी-भणा पालखी मोकली। तिसिइं राजाने सेवके जई, महाविस्तारि नर्मदासुंदरी सुखासनि बइसारी, माथइ छत्र घरी चलावी। एहवइ नर्मदासुंदरी शीलनी रक्षा-भणी गहिली हुई। मोटउ एक नगरनउ खाल तेह-माहि ऊलली पडी। पछइ इम कहइ, 'लोको! माहरइ सगरि यक्षकर्दम कहिता स्कडि, कर्पूर, कस्त्री लागी छइ।' इम कहिती सघलाइं लोकनइ कादिव छांटइ, अनइ आपणां वस्त्र फाडइ। वली लोक-साहमी धूलि नांखइ। इसिइं प्रधानिइं राजानइ कहिउं, 'स्वामी! न जाणीइ, छलभेद हुउ कि दृष्टि लागी।' तिसिइं राजाइं मंत्रवादी तेडिया। ते जेतलइ मंत्र गुणी गुणी सरिसव नाखईं, तेतलइं नर्मदासुंदरी ते-साहमा पाषाण तिम नांखिवा लागी, जिम ते मंत्रवादी नासी गया। हिवइ नगर-माहि गहिलीनई परिइं फिरइ, वोतरागनां गीत गाइ।

इसिइं जे जिनदास भरूअच्छि हुंतु आविउ छइ, तीणइ ते नर्मदासुंदरीनइ मुखिइं वीतरागनी गोत सांभवगां। तिवारइ जिनदास आगिल आवी दयापर हूंतड काह्नेवा लागड, 'हे सुभिग ! तुझनइ ए स्युं थयडं १ तूं तु परम आविका जिनभक्त छइ।' तिवारइं नर्मदा कहइ, 'तूं जड जिन-भक्त छइ, तु माहरड स्वरूप एकांति पूछे, पणि लोक देखतां म पूछे सि।' हिवइ अन्यदा गीत गाती वन-माहि जई, देव बांदी, गीत गाई छइ, तिसिइं जिनदास पणि केडइ लागड वन-माहि गयउ। तिहां तेहनइ 'वांतुं 'कही जिणदास पूछिवा लागड, 'तूं कडण १ 'तिवारइ नर्मदा-सुंदरीइ आपणडं स्वरूप सर्व आवक-आगिल कहिउं। तिवारइ जिनदास कहइ, 'विस ! ताहरी मोटी वात। तहं जिम शोल राखिउं, तिम बीजड कोइ राखी न सकइ। हिव हूं ताहरइ की घर अविउं छउं। मरूपछि हूंतड वीरदास-मित्रिइं हूं मोकलिड। तु हिवई तूं खेद म घरेसि। जिम रूडडं हुसिइं तिम हूं करिसुं। पणि आज पछी राजमार्गि जेतला पाणीना घडा आवई, तेतला तूं भांजे।' इम संकेत करी ते बेहू नगर-माहि आव्या।

पछइ नर्मदा पाषाण नांखइ, हांडलां फोडइ, लोकनइ संतापइ । इसिइं नगरनउ राजा नीकलिख ।
तिणि ते गिहली दीठी । तिसिइं जिनदास आगिल ऊभउ हूंतउ । तेहनइ किहउं जउ, 'इणिइं नगर सघलठं वानरीनी परिइं संतापिउं । हिवइ तिम किर, जिम प्रवहणि बइसारी एहनइ परद्वीपि लेई जा, जिम व्याधि ब्रुटई ।' तिवारइ जिनदासि पिडविजिउं । मन-माहि हिर्खिउ। पछइ लोहार तेडी, नर्मदानई पिग अठील घाती, प्रवहणि बइसी वहसी वहसी वहसी नर्माही । पछइ आपण प्रवहणि बइसी चालिउ । मार्गि जातां अठील भांजी, वस्त्र-अभरण पहिरावी, नर्मदापुरि आणी । तिसिइं पिताइं

१. K. करेसि । २. K. ऋयाणां ।

आवी जाणी, सामुहु आन्यउ । पछइ तमैदासुन्दरो मातापितानई कंठि लागी तार-स्वरिहं कदन करिवा लागी । तिसई ऋषभसेनादिक किहवा लागा, 'मलूं हुउं जे, अम्हे बेटी जीवती दीठी । तु आज पुत्रीनइ नवउ जन्म हूउ ।' एह-भणी महा महोत्सव करिवा लागा । जैन-प्रासादि महापूजा-पूर्वक साधर्मिक वारसङ्गदिक कोषां । केतलाएक दिन जिनदास तिहां रही वीरदासनइ पूछी भरूअञ्चि गयउ ।

इसिइ एकदा आर्य महस्तिस्ति दश-पूर्व-घर विहार करतां आन्या नर्मदापुरि । तिवारहं नर्मदासुंदरी माबाप-पीतरीआ-सहित आचार्य-समीपि आवी, प्रणाम करी आगलि बइठी । तेतल्ड श्री-सुहस्तिस्ति धर्मलाभ कही धर्मोपदेश दीघउ । तिवार-पछा देशनानइ अंति वीरदास गुरुनइ प्रणमीनइ पूछिश लागउ, 'स्वामिन ! नर्मदासुंदरीइं भवांति कडण कर्म उपार्जिंड, जे निर्दोष सुसील हुंती इ एवडां कष्ट पाम्यां ?' तिवारइं भगवंत श्रुतनउ उपयोग देई पूर्वभव कहिवा लागा, 'ईणइ पृथ्वीपीठि विध्यगिरि । ते-माहि-थिकी नर्मदा नदी नीकली छह । तेहनी अधिष्ठायिका मिश्वारिवनी देवता एक छइ । तीणइं देवताइं एकदा महारमा एक धर्मचि प्रतिमाइ रहिउ देखी घगा उपसर्ग कीधा । तु-ही धर्मवि महारमा ध्यान-हृंतु न चूक्ड । तिसिंह देवताइं महारमानो क्षमा देखी प्रतिवृक्षी हुंती सम्यक्त्ववंति हुई । हिब ते मरी तुम्हारी पुत्री नर्मदा हुई, अनइ पूर्विला अम्यास-लगी नर्मदा स्नाननड डोहल्ड उत्पन्ड । वली जे महारमानह उपसंध कीधउ हुंतउ तेह-भणी दुक्लिणी हुई।

ए बात सामलो नर्मदाई दीक्षा लीघी । तिसिई जातीस्मरण उपनउं । पछइ चारित्र पालतां बली अवधिज्ञान ऊपनंड । पछइ पवित्तिणि-पद पामी कृववंदपुरि आवी । पणि तप लगी काल-क महं इसदेह हुई छइ। तिहां कुणिहि उलिख नहीं। पछइ नमयासुंदरी पवित्तिणी महा-सतीने वृदे परिवरी ऋषिदत्तानइ घरि आवी । घर्मलाम कहिउ । तिसिइ ऋषिदत्ताई उराश्रय दीघउ । तिहां महासती रही । हिवइ धर्मनं उपदेस महासती सदा दिइ अनइ महेसरदत्त -ऋषिदत्ता उपदेश सांभलइं, पणि एकू ते महासतीनइं ओलखइ नही । इम अन्यदा संत्रेगरंग कपाइवा-भणी महेसरदत्तनई स्वर-लक्षण भणाविउं । तिसिइं स्वर-लक्षण भणिइ इंतइ ते नर्मदा-संदरों स्त्री चित्ति आवी । पछइ पश्चात्ताप करिवा लागउ, 'घिग् घिकार मुझनइ, जे मई एहनी इ सती बन-माहि सूती मू ही । तु हूं दैवई हणिउ । जे स्वरलक्षण-स्नगी रात्रिई गीत गातउ पुरुष तेहना अहिनाण कहियां, पणि महारइ मनि विकल्प ऊपनु । तेह-लगइ मइं निरपराध ते स्त्री वन-माहि मूंकी। तु ते नमयाना कु' है होसिई ?' इम आपणी शोचा करतउ देखी ह्या-लगइ महासती कहइ, ' ते हूं नमयासुंदरी, जे तुझ आगलि नइठी छंड।' तिवारई महेसरदत्त चींतवइ, 'ए किस्उं आश्वर्य ? जोउ, सघले कर्म जि सबल, जिम नचावइ तिम नावीइ। इहां किहन उदोत नहीं। 'पछइ ऊठी महासतीनइ पगे लागिउ। तिहां खमाबी करी वैराग रंग-पूरित हुंतउ श्री-सुर्हितसूरि आवार्य-समीपि जई वत लीघउं । अनइ ऋषिरत्ताई चाकित लीघरं। पछइ बेहूं तप तपी, चारित्र पाली, स्वर्गनइ भाजन हुया। अनइ नमयासंदरी पणि प्रांत-समय जाणी, संलेखनापूर्वक अणसण पाली, देवलोकि पहुती। पछइ वली महाबिदेहि क्षेत्रि ऊपनी, दीक्षा लेई, मोक्ष पहुचिसइ।

इति नमया-सुंदरी कथा ॥२७॥

१ • К. प्रस्ताव

हिवइ रतिसुंदरीनी कथा कहीइ -

[२८. रतिसुंदरी - कथा]

साकेतपुरि नगरि नरकेसरी राजा राज्य करइ । तेहनइ सकल-अंतेउर-मुख्य कमलसुंदरी पट्टराणी छइ। तेहनो पुत्री नामिई करी रितसुंदरी। क्रिमई क्रिमई वाधिवा लागी।

तिसिइं विहार करती अति गुणवंति गुणश्री एहवइ नामिइं पवित्तणी आवी सांमली। तिवारइं रितिमुंदरी सखीए परिवरी वांदीवा गई। तिसिइ गुणश्री महासताइ धर्ममइ उपदेस देवा मांडिउ, 'जिम दालिद्रीनइ चितामणि रत्न दुर्लभ, तिम संसारी जीवनइ मनुष्यनइ जिन्म धर्मनउं अवण दोहिलउं। तिहां इ वली रित्नइ मरिडं निधान हुइ, ते-माहि-थी जिम भाग्यवंत होसिइ, ते सम्यक्त्व-रत्न लेसिइं। इम जाणी सम्यक्त्व लिउ। निर्मलउं तप तपउ। अनइ उज्जलउं शील पालउ, जिम हेलाइं मुक्तिपद पामउ।' ए उपदेस महासतीना मुख-इतु सांभली रिति मुंदरी कहिवा लागी, 'हे महासति! तई मलउ उपदेस दीघउ। आज ज्ञीन-लोचन ऊघाडिउं। तु गृहस्थनइ उचित योग्य धर्म प्रसाद करी मुझनइ दिइ।' पछइ महासतीई सम्यक्त्व दीघउं अनइ वली कहइ, 'विच्छ! शीलरत्न-समान अवर धर्म नही। एह-भणी त् अलंड शीलव्रत पालिजे। पर-पुरुषनउं वर्जन करिजे। कुलांगनानइं शीलनइं प्रभावि अनेक सिद्धि हुई। अनइ परलोकि संसार-माहि पणि दुख दुर्गति न हुई। परंपराइं मुक्ति पणि पामीइ।' इत्यादि उपदेश सांभली रामांचित-गात्र हुंती रितिमुंदरी नीम लेई, महासतीनइ वांदी घरि आवं।।

हिवइ इसिइं नंदनपुरि चंद्रभूति नामिइ राजा राज करइ छइ। अन्यदा साकेतपुरनगर-तु अरिकेसिर राजा, तीणइ राजकाजनइ अधि चंद्रभूतिराय-भणी दूत एक मोकलिउ। हिवइ चंद्र-भूतिइं ते दूत-कन्हिल सर्व देस-देसनउं स्वरूप पूछिउं। तिवारइ तिणि दूति सर्व देसनुं वर्णन करतां विशेष रितसुंदरीना रूपनउं वर्णन कीषउं। तिसिइं चंद्रभूति राजा ते-ऊपरि अनुराग घरतउ, संबंध जोडिवानइं काजिइं आपणउ प्रधान मोकलिउ अरिकेसिर-भूपित-भणी। पछदं राजाइं योग्य संबंध जाणी पुत्रिका दीधी। पछइ मलइ दिवसि राजाइं कन्या नदनपुरि मोकली। जिम लक्ष्मी नारायणनइ सयंवरा आवी, तिम रित दुंदरी ते राजानइ स्वंवरा आवी। तिहां मलइ मुद्दित्त विवाहनउ उत्सव हुउ। सुखिइं रहइं छइं। एहवइ महेन्द्रसिंह राजाइं चंद्र नामा दूत-पाइइं चंद्रभूतिनइं इसिउं कहाविउं जु, 'अहो राजन्द्र! आपणपानइ आगइ एतलउं काल प्राति हुंती, पणि पुत्र ते प्रमाण, जे कुलनइ उद्यातकारक हुइ, अनइ पूर्वजनउ संबंध जे लोपइ नही। हिवइ जउ तूं सगाई राखइ, स्नेह पालइ, तु तइं जे नवी परिणा छइ रित सुदरी ते अम्हनइ मेटइ मोकले। जिम हूं पणि प्रीति चलाविउं जाउं। जिहां प्रीति हुइ तिहां एतलउं काज घणउं न लेखवीइ। 'इत्यादि दूतनां वचन सांमली चंद्रराजा लगारेक हसी-नइ कहिवा लागउ, 'हे दूत! सगा कहिनइ वल्लम न हुइ ? पणि जिणइ कारणि—

परापकारो मैत्री च दाक्षिण्यं प्रियमाषणं । सौद्यीस्यं विनयस्त्यागो सज्जनानां गुणा अमी ॥१॥

१. K. तेहनइ हाथि सम्यक्त्व-रत्न आविसिइ। २ · K. P. अज्ञान लोचन। ३ · K. चंद्रभूपति।

तु अहो दूत! ताहरइ स्वामीइं मुझनइ मलंड कहाविउं। पणि जे कुलोन हुई ते आपणी मर्यादा न मूंकई। तु हिव हूं पणि वलत्ं कहावउं छउं जड - 'त्ं अपणी मार्या शिवादेवी मोकलइ।' तिसिइ दूत कहिवा लागड जड, 'त् माहरा स्वामीनडं वचन लोपेसि तु जाणे तुझ-नइ अनर्थ ऊपजिसिइ। ते महेन्द्रराजानडं कटक तई किम सहवरानिई? तेह-भणी ऊतावलड म बोलि।' इसिई चंद्रराजा रोषारुण-लोचन हूंतड कहिवा लागड, 'अरे दूत! ताहरा स्वामीनडं जाणपणड जाणिउं। ते मलड कुलाचार पालइ छइ, जे पारकी स्त्रीनी वांछा करइ छइ।' तिसिई वलो दूत कहइ, 'अहो राजेन्द्र! माहरड वचन सांमलि। कांइ बुद्धिवंत पुरुषे जीणइ कीणइ उगायई करो आपणड आतमा राखिवड। किसिडं तुझनइ नीतिशास्त्र वीसरी गयउं? यत:—

भरवैर्धनेन ताम्यां तु रक्षणीया हि वल्लमा । दास-द्रव्य कल्बेस्तु रक्षणीयं स्व-जीवितं ॥

इत्यादि वचन दूत बोलतं राजाई गलइ झलावी सभा-बाहरि कढाविड । जिम कृपण इ भीखारी बाहरि काढीइ तिम काढिउ । तिणइ दूतइ जई महेन्द्रसिंहनइ कहिउं । तेतलइ महेन्द्र-सिंह राजा समुद्रनी वेलि जिम कटक लेई आविवा लागउ। तिसिई ए वात सांमली चन्द्रराजा पणि सामहर्डे नीकलिंड । पछइ तिहां बिंहु कटकनइ झुझ होतां चन्द्रराजान रं कटक भागउं। तिसिङ महेन्द्रसिंह राष्ट्रनी परिइं चंद्रराजा जीवतउ बांधी प्रधाननइ आपिउ । तिवारइ हरिणनी परिइं चंदराजानउं कटक नासतां मृगलीनी परिइं रतिसुंदरी झाली । पछइ रतिसुंदरीन इलाभिइ संतुष्ट हंतइ महेन्द्रसिंहिइं चंद्रराजा मूंकिउ । पछइ महेन्द्रसिंह राजा आपणइ नैगरि पाछउ आविउ । तिसि**इ** कामनउ वाहिउ रितसुंदरोनइ कहिवा लागउ, 'हे सुमगि! जे दिवस-लगइ म**इं** तूं दूतना मख इत सांभली ते दिवस-लगइ हं आनंदपूरित हीयइ मनोरथ करतज रहिउ । त हे भद्रि ! एत-लंड आरंभ मई ताहरई का निई की घर्ड । तु हिवह माहरडं वचन मानी राज्यनी स्वामिनी था । तिवारइ रतिसुंदरी चींतिववा लागी, 'ए माहरा रूपनई धिकार हु जे भनीर एवडी आपदा-माहि पांडिड । अनइ वली ए कामी बटाकारि शीलनउं भंग करिसिइ । तु हिवइ मइं किम कीजिसइ ? किम शोल राखोधिइ! अथा। काल-विलंब करडं। ते करतां वर्व बोल मला हुसिइं। इहां शांत कि बचन बोलिंड मेलि आवितिह। इम चींतवी वडां कहिवा लागी 'अहो राजेन्द्र! ए बोलनी थोडी वात छइ ? ताहरउ बोल किम लोपाइ ? पणि काई एक मांगउं ते आणि।' राजा कहर, 'ए सिउं कहिउं ? जु कहि तु आपणड जीव पणि आपडं ।' तिवारइं रतिसुंदरी कहइ, 'ए बातन छं सिउं कहिवउं ? पणि च्यारि मास शील भंग म करेसि।' तिसिइ राजा कहिंबा लागउ, 'ए तु वज्रात-पाहिं अधिकु बोल मागिउ। तु हिवइ मइ ताहरउ च्यारि मासनड बोल मानिड । पछइंतु माहरइ जि हाथि वात छइ।' इम कही राजा गयड।

पछइ रित मुंदरी आंबिलन इ उपवासे करी आपण उंडील शोषती, स्नान-बिलेगन सर्व वर्जा, मडह मडह कुश-देह हुई। मांस-लोही सर्व स्किंवा लागां। एहवह राजाइं ते रित मुंदरी दीठी। चिंतातुर हूंत पुलिवा लाग उ, 'हे सुभिग! तुझन इ काई रोग छह ! अथवा काई दुःख छह! जे तुझन एहवी अवस्था आवी !' तिवार इंरित मुंदरी कहड़ 'हे राजन्! वराग्य-लग महं एहवां अत की कह छह, तिणिह करी माहरी काया विच्छान दी मह छह।' जिम फागुणमासि विच्छाय वन दी सहं, तिम ते विच्छाय दी स्वा लागो। वर्छी कहइ, 'ए इत तां मह

१ K. साहम । २. K स्थानिक गयउ ।

किम्हइ पूरउं कीधउं जाईइ। कांई व्रतनइ मंगि नरकपात हुइ। तिनारइ राजा पूछइ, 'तुझनइ वैराग्य स्यान्छगी ऊपनड १ मोगनइ योग्य एहवउं जे सयर, ते तूं तपरूप अग्निकुंड-माहि कुसुममालानी परिइं कांइ घातइ १ तिवारइं पतिव्रता कहइ, 'अहो राजेन्द्र ! ए सयरनइं तई सिउं वखाणिउं, जे सयर दोषने सए मरिउं छइ १ ए सयर जि वैराग्यनउं कारण । सांमिल, ते केहवउं छइ १ यतः—

वसास्रग्मांसमेदोस्थिपित्तविण्मूत्र×हेष्मिः । स्रवत्येतद्वपुद्वारैः नवभिः पृतिगंधितां ॥१॥

एह्वा डीलनइ वली वली जे विलेपन-स्नान-धूपे करी संस्करीइ, पणि तु ही दुर्गंघि न छांडइ । ए अग्रुचिन-उं निधान छइ । एहवा डीलनइ विषइ कउण मोह करइ ? अपि तु न कोई । कांइ बाहरि दीसतां रूड-उं, माहि तउ एहवां । जिम विषफल मुहि मीठउ लागइ अनइ अंतरंगि विणास अपनावइ ।' इत्यादि घणउ उपदेस रतिसुंदरीइं दीघउ । पणि मगसेलीआ पाषाणनी परिइं राजा मेदीइ नही, मन-माहि चींतवइ, 'ए तां च्यारि मास सर्व बोल कहाउ, पछइ तु माहरइ हाथि वात छइ ।' इम चींतवी राजा कहिवा लागउ, 'तूं कांई असमाधि म करेसि, आपणउ नीम सुखिइं पूर्वि ।' इसिउं कही राजा आपणइ घरि आविउ ! इम करतां जि च्यारि मास गया ।

पक्कर अवधि पहुतीह राजा कहिवा लागउ, 'आज हूं आपणउ मनोरथ पुरवउं।' तिवारहं रति-संदरी कहिवा लागी, 'हे राजन्! सघले आपणउ स्वार्थ जि वाल्हउं।' इसिउं कही वली रतिसंदरी कहिवा लागी, 'आज जि तां मइं सबल खीरनउ आहार लीघउ छइ, तिणि करि माहरउं डील आकलउं थाइ छइ डील फूटइ छइ, सूल आवइ छइ, माथउं द्लाइ छइ।' इम कहती विमीण-हरू खाई वमन कीषडं। तिसिइ राजानइ तेडी कहिउं, 'जोइ-न कृतघन डीलनउं विलसित। एहवउं परमान्न लीघउं हूंतउ, अनइ हिवडां जिम अञ्जितिमइ थयउं, तिम भोजन-समान एक-बार हं दीधी, अनइ हिव तूं माहरी वांछा करइ छइ। ते तु हूं वण्या अन्त-समान हुई छउं। हिव तं ए वांछा करतउ लाजतउ नथी ? परनी ग्रही पराई स्त्रीना अंगीकार समान पृथ्वी-माहि अवर कांई पाप नथी ।' तिवारहं राजा कहइ, 'हे सुंदरि! ए वात सर्व जाणड'। पणि अति-रागना बद्या-लगइ ताहरउं संगम बांछउं।' तिसिइ महासती कहिवा लागी, 'अजी माहरा अंग-नं तझनई सिउं अनुराग छइ ?' वली राजा कहइ, 'ताहरउं डील तिपेइ करी दाघउं छइ, पणि ताहरां जे वि छोचन ते मई न मूंकाई।' तिसिइ रतिसुंदरीइ आपणउं शील राखिया-भणी होचन बेह काढी राजानइ हाथि आप्यां। ए स्वरूप देखी राजा चमत्करिउ हंतउ रित. सुंदरी-ऊपरि राग मूंकी कहिवा लागड, 'हे कुशोदरि ! एहवडं दारुण कष्ट तई मिउं की धडं जे मुसनइ महा दु:खदायक हूउं : ? तिवारई सती कहिवा लागी, 'तुझनइ मुझनइ ऊषघ समान ए बात हुई, जिणि कारणि "ऊषध पीतां कडूउं हुई, पणि परिणामि गुणकारक, तिम हिवडां कष्ट हुउं, पणि आगलि गुणनइ हेति होसिइ।' पछइ रतिसुंदरीइ तिम उपदेस देवा मांडिउ, जिम राजा धर्मनइ विषइ निश्चल हुउ, वैराग्य ऊपनइ रितसुंदरीनइ खमाविवा लागउ। तेतलइ शीलनइ प्रमाणि शासन देवताई बेहू लोचन नवां कीधां। पछइ राजाइं महुंता-साथिइं रतिसुंदरी नंदनपुरि

१. K, करिउं। २. K. नाखइ। ३. P. मयणहरू Pu. मीडहरू । ४. K. राजा पणि अति रागना वश−रूगइ कहइ 'ताहद संगम वांछ्उं।' ५. P. L. Pu. उसह K. उसड ।

मोकली, चंद्रराजानइ कहाविउं जु, 'ए माहरइ बहिन। एहनइ मई सासरवासउ करी मोकली छइ।' पछइ चंद्रराजा शीलधर्मैनउ महातम्य जाणी प्रतिबूधि हूंतउ, अवसरि पुत्रनइ राज देई, रितसुंदरो प्रिया-सहित दोक्षा लेई, चारित्र पाली, बेहू मोक्षि पहुतां।

इति श्री शीलोपदेशमाला-बालाविवोधे रतिसुंदरीनी कथा ॥२८॥

S

इम वली बील-महारम्य-लगइ स्त्रीनां नाम पापक्षयकारक हुई ते कहा -रिसिद्त्ता द्वदंती कमला य कलावई विमलसीला । नामगाहण-जलेण वि कलिमल-पक्खालणं कुणह ॥ ५५

ठयांच्या :- ऋषिदत्ता १, दबदैती २, कमला ३, अनइ कलावती ४— ए ज्यारिइ महासती शीलवंति हूई। पणि ते केहवी छइ १ विमल=निर्मल परीक्षा-सहित शीलगुण जेहनइ छइ। इसी च्यार इ सती। अहो लोको ! तेहनउं नाम-ग्रहण-रूपीइ जल ⇒ पाणीइ करी आपणउं किलमल= अनंता भवनां पापरूप मल, तेहनउं पखालिवउं करड। एतलइ गाथानउ अर्थ इउ। हिव विस्तरार्थ कथा हुंतउ जाणिवउ। तिहां चिहुं सती-माहि पहिलउ ऋषिदत्तानी कथा कहीइ —

[२९. ऋषिदत्ता-कथा]

इणइ मध्यदेशि रथमर्दन नगरि, हेमरथ राजा। तेहनी वल्लभा सुयशा। तेहनु पुत्र कनक-रथकुमार सुलिइ वाघइ छइ। इतिइ काबेरीनगरीइ सुंदरपाणि राजा, तेहनी प्रिया वासुला। तेहनी पुत्री किनपणी यौबनावस्थाई आवी। तिवारई कनकरथकुमारनइ दीघी। पछइ भलइ दिवसि पाणिग्रदण करिवा-भणी पितानु आदेश लही कुमार चालिउ। हिव मागि सीमाल भूपा-लिन वशि करतउ महा एक वन गहन, तेह-माहि आविउ, जिहां सूर्य ऊगिउ न दीसइ। तिसिई कुमारइ पंथ जोवा-भणी गमे गमे जण मोकल्या हुंता, ते आवी कुमारनइ प्रणाम करी कहिवा लागा, 'स्वामी! तुम्हारउ आदेस पामी दूरि भूमिकाइ गया, तेतलइ तलाव एक अपूर्व दीठउं। अम्हे तेहनइ कांठइ आच्या। तिसिई वननइ आंतरइ कन्या एक वृक्षनइ मूलि हींचती दीठी। जेतलइ अम्हे आघेरा आव्या तेतलइ ते दूरि नाठी, जिम काइ उल्ली न सकइ। खेचरीनी परिइ वन-माही लुकी रही। पछइ अम्हे घणू इवन-माहि जोई, पणि किहां इदीठी नही। जिम चित्रकवेलि दालिडी न देखइ, तिम अम्हे ते न दीठी।' ए वात सांमली कुमार सहर्ष हुंतउ तेह जि जणनइ साथिइ लेई तीणइ मार्गिइ कुमार चालिउ।

तिहां पंथ अवगाहतां, यन गहन सोधतां, कुरंगीनी परिइं ते कन्या कुमारि दीठी । तिवारई कुमार चींतवह, 'ए देवांगना मुनिना शाप-लगइ पड़ी घटह । अन्यथा एहवी स्त्री इहां किहां ? जिम मरुमंडिल कल्पवेलि नहीं, तिम ए स्त्री-रत्न पृथ्वी-माहि नहीं।' इम तेहनइ रूषिई मोहिउ हूंतउ कुमार सैन्य-सिहत आघेरउ चालिउ । तेतलई कटकनउ कोलाहल सांमली कन्या नाठी। पछइ कुमारि कटक सघलउं इ तलावनी पालिइ ऊतारिउं। अनइ आपणि कामनउ वाहिउ कन्या जोवा-मणी वन-माहि फिरवा लागउ। पणि कन्यानइ न देखइ। तिसिइ आगिल उत्तुंगनतोरण प्रासाद एक दीठउ। पछइ कुमार चींतवह, 'सही ए कन्या एह-माहि घटइ।' इम चौंतवी ते प्रासाद-माहि कुमार पइठड । तिहां श्री-आदिनाथनी प्रतिमा दीठी। आपणपउं धन्य मानतद

१, K, Pu. उत्तंग ।

प्रणाम करी, वननह फूले करी प्रतिमा पूजी। तेतलइं तापस एक महाइद्ध, मस्तर्क बटा घरतड, कन्यानई साथिई लेई, तिहां आविउ। तिसिंह कन्याई ते कनकरथ देखी चॉतविउं, 'ए इंद्र कि चंद्र कि कंदर्प ?' इम चींतिववा लागी। एनलइ कुमारई प्रतिमा नमस्करी। पछइ तापस मुनिन्ह प्रणाम कींधउं। तिसिंह तापस मुनिह 'चिरं जीव' ए 'आशिषा दीधी, पृछिवा लागड, 'आहो कुमार! ताहरउं कुण कुल ? कुण नाम ? कुण टाम ?' तिवारई कुमारनई बंदीजनिई सर्व कुलजाति प्रकट कींधां। पछइ कुमारिई कन्याना मुख सामहउं जोई तापस पृष्ठिउ, 'ए कडण कन्या? ए कहिनउं देहरउं? अनइ तुम्हे कुण ?' तिवारइ तापस कहिवा लागउ, 'ए कथा मोटी छइ। एह-भणी जेतलई हूं पूजा करी पाछउ आवउं, तां-लगइ पडखउ।' पछइ कुमार वचन पडिवजी, मंदिप आवी बइटउ। तिसिंह ऋषि कन्या-सिहत देवग्रह-माहि कई, देव पूजी पाछउ आविउ। एहवइ वली कन्या-सामुहउं कुमार जोवा लागउ। तेतलइ मुनि कुमारनई संधातिई लेई, प्रासादनइ उत्तरदिसिंइ 'उटज एक छइ, तेह-माहि लेई आविउ। तिहां कुमारनई पगभीअण देई पहुणागित कींधी।

वछइ तापस वात किह्ना लागड, 'वतस ! इहां मंत्रसंज्ञा नामिइं नगरी हुंती । तिहां श्री हिरिषण राजा, प्रियद्शेना राणी । तेहनड पुत्र अजितसेन एह्यइ नामिइं विख्यात हुउ । हिर्दे अन्यदा वाहीआली-भणी वक्र-शिक्षित तुरंगिम चडी राजा नीकलिंड । तिहां अश्व फेरवतां, घोडइं राजा अपहरी ए वन-माहि लीखड । तिनिइं राजा पणि दक्षत्रणा-लगइ बड़नी डालइं वलगड । घोडड वही आघड गयड । पछइ राजा डाल-इन् ऊतरी तृषाक्रांत हुंतड वन-माहि फिरवा लगउ । तेतलइ तलाव एक दीठडं । तिहां हाथ-मुख घोई पाणी पीधडं । तिसिइं विश्वभृति तापस एक आविड । राजाइं प्रणाम कीधडं । ते तापस कच्छ-महाकच्छनड केडड । तिणि शी-आदिनाथनड आशीर्वाद दीधड ।

पछई राजा अनइ ऋषि माहोमाहि कुशल समाचार पृछ्वा लागा। एहवइ वन-माहि कोलाहल हुउ। आश्रमवासी ऋषि कहइ, 'ए सिउं कोलाहल ?' तिसिइं राजाइ चींतविउं, 'मुझ केडिइ माहरउं कटक आविउं 'घटइ।' इनिइ सर्व सामंते आवी राजा प्रणमिउ। पछइ तापसे मास एक राजा राखिउ। राजा पणि तापसनी सेवा करिवा लागउ। हिवइं राजाइं तिहां उत्तंग-तोरण प्रासाद कराविउ। माहि श्री-आदिनाथनी प्रतिमा मंडावी। पछइ राजा आपणा नगर-मगी चालिया लागउ। एइवइ तापित राजानइं विषापहार मंत्र एक दीघउ। हिव राजा आवी आयणइ नगरि सुखिइं राज पालिया लागउ। इम एकदा सभा-माहि राजानइ बइठे द्वारपालि आवी वी ती कीची, 'स्वामिन्! मंगलावती-तगरोइ प्रियदर्शन राजा. विद्युःप्रभा राणी, तेहनी पुत्री प्रतिमिति। तेहनइ सापनउ डंस हुउ। ते विष बलइ नही। पछइ राजाई अम्हे तुम्ह-समीपि मोकल्या। हिवइ तिम कह, जिम जीवदान इउ।' ए बात सांभठी राजा घडीआ-जोअणी सांदि सज्ज करावी, आपणि तिहां आवी, ऋषिदत्त मंत्र, तेहनइ योगि तरकाल कन्या निर्विष कीची। पछइ पिताई ते कन्या तेह जि राजानई देधी। पाणिग्रहण करी राजा आपणइ घरि आविउ।

हिवइ केतलउ काल राजाई राज पाली, पुत्रनइ राज्य देई, पछइ राजाइ प्रिया-सहित तापसा दीक्षा लीघी, विश्वभूति तापस-समीपि। पछइ वेहू सुद्ध शीलवत पालई छई। इसिइ प्रीतिमतीनई

१. K. ए आशीर्बाद दीधड । २. P. उडीउ एकु । ३. K. प्राहुणाचार कीधड ।

४. K. विना बधी प्रतिओमां 'मंत्रिसंज्ञा' पाठ छे । ५. K. दुसिइ ।

पांचमइ मासि गर्म प्रगट हुउ लजाकारक । तिवारइ राजाइं पूछिउं, 'हे भिद्र ! ए किसिउं !' प्रीतिमती कहइ, 'आगइ माहरइ आधाननउ संभव हूंतउ, पणि मइ जाणिउं—जउ हुं किहसु, तु झतनउ 'अंतराय होसिइ । तेह-भणी मइं न किहउं ।' वली राजा कहइ, 'हिवइ तु सघला इ तापस-माहि आपणपे हल्रुआ पड़िया । तु प्रभाति आपणपे अनेथि जासिउं ।' इम चींतवी 'गालहथा देई वस्तित रात्रि गमाि । तिसिइ प्रभाति जउ जोइ, तु तापस एकू बन-मािह नहीं । तिवारइं बेहु विलखा हुआं । डाबउं-जिमणउं जोवा लागां । तेतलइ तापस एक जातउ दीठउ । एहबइ हरिषेण ते तापसनइ प्रणाम करी पूछिवा लागउ जु, 'ए वन आज स्नउं कांइ दीसइ !' तिवारइं ऋषि कहइ, 'ए तुम्हारउं कुकर्म देखी सर्व तापस गया ।' इसिउ कही तापस गयउ । पछइ हरिषेण विषाद-पर हूंतउ उटज-मािह पइठउ । तिहां आपणां कुकर्मनइ निंदता प्रीतिमतीइ बेटो जाईं। पणि अति रूपवती । तेहनउं ऋषिदत्ता नाम दीघउं । वधामणउं हुउं । तिसिइं माता परोक्ष हुईं । पछइ पिताई पुत्री पाली, आठ वरसनी कीधी । पणि मन-मािह वित्तविउं , 'रखे ए पुत्री रूपवंतीनइ वनेचर, भील, पुलिदादिक उपद्रवइं ।'' एह-भणी तेहनइ पिताइ अहशीकरण अंजन करी मुझनइ दीघउं । हिव ते हूं श्रीषेण दक्षिण्य-लगइ ए कन्यानी सार करडं छउं । पणि मुझनइ कोइ उलखी न सकइ । अहो कुमार ! ते आज हूं तइं उलखिख ।'

इम वात करतां ऋषिदत्ता कुमार सामहंउं जोवा लागी । इसिइ ऋषिदत्ता अनइ कुमार ते बेहूंनई स्नेहनउं कारण जाणी तापस कहइ, 'ए कन्या मइ तुझनइ दीधी।' पछइ कुमारि तहित्त करीं, बचन मानी पाणिप्रहण कीघउ । केतलाएक दिन कुमार ऋषिदत्ता साथि तिहां तापसाश्रमि रहिउ । ऋषिदत्ता पणि कुमारना संसर्ग-लगी वनेचरी फीटी विचक्षण, डाही हूई । एहवइ बेटी- जमाईनइ पूछी ऋषि वैराग्य-पर पंच परमेष्ठि स्मरतउ अग्नि-माहि प्रवेस कीघउ । तिवारई ऋषिदत्ता घणउ विलाप करिवा लागी । तिसिई कुमारिई ऋषिदत्तानि तिम समजावी जिम असमाधि करती रही ।

पश्च कुमार आपणउ कटक लेई ऋषिदत्ता-सहित आपणइ नगरि पाछउ आविउ । राषा-दिक ए स्वरूप देखी विस्मयापन्न ह्या । रथमर्दननगर-माहि उत्सव होइवा लागा । हिव ऋषि-दत्ता भर्तारनइ बहुमान्य हुई, अतिविनय-लगी सासू-सुसरानां चित्त आवर्ष्यो । पछइ राजाइ कुमारनइ युवराष-पदवो दीधी । ऋषिदत्ता-सहित सुखिइ काल अतिक्रमावइ छइ ।

एहवइ काबेरी-नगरीइ सुंदरपाणि राजाइ ए वात सांभली जु, 'पाणिग्रहण-भणी कुमार आव-तड हूंतड अनइ अंतरालि ऋषिनी पुत्री परिणो पाछउ गयउ।' ए वात रुक्मिणीइ पणि सांभली। यौवननउ उत्माद, तेहना गर्व-लगइ उपाय चींतिववा लागी जु, 'कीणइ उपायइ ऋषिदत्तानइ असुल ऊपजइ, तु हूं कुमारनउं पाणिग्रहण करउं।' इम विमासी सुलसा जोगिनी तेडावी। पणि ते केहबी छइ! अनेक मंत्र, तंत्र, यंत्रनी जाणी, छइ कूड-कपटनी खाणि। ते सुलसा योगिनी घणउं आवर्जी, तिवारइ तूठो हूंती कहइ, 'मागि, जि कांई कहइ, ते आपउं।' पछइ रुक्मिणी कहइ, 'ऋषिदत्तानइ कलंक दिइ अनइ कुमार सुझनइ पति दिइ।' ए वात सुलसाइ पडियजी, रथमदंनगगरि आवी, पणि सापिणिनी परिइं दोपडी हूंती नगर-माहि खडी-चापडी करइ। राक्षसीनी परिइं महा दृष्टि तिणि सुलसाइ एकदा महा अंधकार विकुर्विउ। अवस्वापिनी विद्या प्रयुंबी

१. K. व्याघात। २. Pu. गालहथु, K. गाहस्था, L. गलहाथ। ३. K. रात्रि सर्वितपणइ नीगमी। ४. Pu.L. तेइनइं।

एक मनुष्य हणिउ। पछइ कुमारनइ घरि आवी, दुष्टबुद्धिई ऋषिदत्तानउं मुख लोहीइ खरिडें। वलो मांसनउ पोंडउ गांठडीई बांधिउ। हिवइ ऋषिदत्ता सूती हुंती ए वात जाणइ नहीं। एतला बोल करी राक्षमी गई। एहवइ पाडोमी, जेहनउ मनुष्य हणिउ हुंतु ते, जउ जागइ (?) त मनुष्य मारिउ देखी कोलाहल कीघउ। तेतलइ कुमार जागिउ। ते पुरुषनी वात सांभली। प्रियानउं मुख जउ जोइ, तु लोहीइ खरिंड दोठउं । अनइ छेहडइ मांसनउ पींडड दीठड । तिसिइं कुमारना चित्तनइ विषइ शंका ऊपनी, 'किसिउं भई, जिम आगइ राक्षसी सांभलीइ, तिम ए स्त्री दीसइ छइ । तु किसिउं माहरइ ए प्राणवल्लमा राक्षसी छइ ? ए वात संभवइ नही, पणि इहां दीसह छइ।' पछइ कुमारि तत्काल प्रिया जगाडी। जिम सूती ऊठी, तिम जि पूछिया लागड, 'हे देवि ! तूं जउ गोपवइ नहीं, तु हूं तूनइ कांई पूछ उं।' प्रिया कहइ, 'पूछ उं।' तिया-रइं कुमार कहड़, 'हे प्रिये! आज पुरुष एक रात्रिइं मारिउ सांमलिउ। अनइ आज तु ताह-रउं मुख पणि लोहीइ खरडि उं दीसइ छइ । यली मांसपिंड ओसीसइ मूंकिउ छइ। तु कहि-न तूं मुनिपुत्रिका हुई-नइ सांप्रत ए किसिउं राक्षसी थई ? इम जे प्रत्यक्ष देखद, ते किम साचउं न मानइ ?' पछइ ऋषिदत्ता भर्तारनंड एहवंड वचन सांभली बीहती हूंती तरल-लोचन कुमार प्रति कहइ, 'स्वामिन् ! ' लहुडपणइ जउ मह मांसनी स्पृहा की घी हुत, तु आज इच्छा इ अपजत । पणि ता ए वात असंभाव्य दीसइ छइ जे मुखइ करी ऊचराइ नही । पणि तां कुणहि वैरि-लगइ अथवा माहरा पूर्विला कर्म-लगइ ए भाव की घउँ छइ । अनइ जु स्वामीनइ कदाचित् ै अप्रतीति ऊपनी छइ, तु घट-सर्प आणड जिम प्रतीति ऊपनावडं ।' तिसिइ कुमार कृपासागर, विवे ही तेह-प्रतिइं कहइ, 'हे भद्रि ! हूं तु तुझनइ निर्दोष जाणउं छुउं, बीजना चंद्रमानी परिइ ।' इस कहतु पाणीन लोट लेई कुमार आपण हाथि प्रियान मुख घोवा लाग ।

इम सदाइ ते सुलसा रानिइं पुरुषनइ हणी अवस्वापिनी विद्यानइ बल्डि कुमारनइ विरे आवी, ऋषिदत्ता जि सूती छइ तेहनउं सुख लोहोइ खरडी, उसीसइ वली मांसपिंड मूंकी-नइ जाइ। अनइ कुमार सदा प्रियानउ सुख घोइ, पोंडउ बाहिर नंखावइ। इम करतां घणा दिन गया। हिवइ ए वात प्रभातना वायुनी परिइं विस्तरती राजा-आगिल वात गई। पछइ राजाइ प्रधान तेडी कहिउ, 'तुम्ह थकां दिन दिन प्रति एक एक पुरुष कोइ हणइ छइ। तु मउडइ मउडइ बि-बि पुरुष हणासिइ।' तिवारइ प्रधान कहइ, 'अम्हे यस्न घणउ करंड, पणि जाणी न सकीइ। न जाणीइ, नगर-माहि मरगी छइ कि देवता छइ कि योगिणि छइ १ एह-मणी पाखंडी सर्व नगर-बाहिर काढोइ। पछइ शांति होसिइ।' पछइ राजाइ जैन मुनि टाली सर्व दर्शनी काढ्या। एहवइ पापिणी सुलसा राजानइ आवी मिली। एकांत मांगी कहिवा लागी, 'स्वामिन्! आज सउणा-माहि मुझनइ कोई कही गयउ जउ—पाखंडीनइ निरपराध राजा कांई काढइ छइ १ जिम दूध बिलाई पीई जाइ अनइ रीसिइ बालक मारीइ, तिम जे कुमारि वनचारिणी ऋषिदत्ता आणी छइ ए सर्व विलसित तेहनां। अनइ राजा दर्शनीनई काढइ। इम मुझनई कही ते अह-ध्य हुउ। अनइ जड न मानउ तु आज राजा आपणपे जई कउतिग जोउ।' तिवार पछी राजाइ ते सुलसा विसर्जी। तीणी रात्रिई पुत्र आपण-समीपि राखिउ, अनइ ऋषिदत्ता-समीपि राजाइ ते सुलसा विसर्जी। तीणी रात्रिई पुत्र आपण-समीपि राखिउ, अनइ ऋषिदत्ता-समीपि

१. K.L.P. लहुडपण-ळगइ। २. L. Pu. अप्रिति।

हाता चर मूक्यो । एइवइ कुमार चींतवइ, 'आज प्रियानड ऊघाड होसिइ, तु हूं किम करउं ? एकणि दिसि बापनड आदेश प्रमाण कीषड जोईइ, अनइ बोजंड तु प्रियानइ दु:ख ऊपनउं । तु हूं महा-संकट-माहि पडिउ ।'

इसिइ सुलसाइ अवस्वापिनी विद्यानइ बिलई, पूर्विली रीतिई, पुरुष हणी तिम जि ऋषिर त्तानइ कीघंडं। ते स्वरूप प्रभाति राजाने चरे ऋषिदत्ता-समीपि आवी जोयंडं। अनइ तिम जि राजानइ पणि आवी किहेउं। तेतलई राजा पुत्र-ऊपरि रीसाणंड निर्भित्सिंवा लागंड, 'अरे पुत्र! स्त्रीना आचार जाणतंड इ घरि राखह। तु रे पापी! अरे दुराचार! मुझआगलि थी अलगंड जा। जे राखसी, ते तई घरि राखा। माहरइ कुलि तई कलंक चडाविउं।' एहवइ कुमार राजानइ पगे लागी कहइ, 'कोप म करड। ए कोई दुष्ट तेहनउं काम।' तेतलई राखा कोपाटोपि चिडिंड। कहिवा लागंड, 'अरे पुत्र! जु न पतीजइ तु जईनइ जोइ।' पछइ कुमार राजानंड आरेस पामी विच्छाय-वदन हूंतु प्रिया-समीपि आवी किहिवा लागंड, 'हे प्रिये! ए ताहरां गाचीन कर्म उदिय आव्यां। हिव हूं सिउं करंड श तुझनइ राखसीनंड कलंक सुलसा-योगिनीइ चडाविउं। ते आज राजाने चरे तु तेहवी मुखि इधिर-खरडी दीठी। तु हिव न जाणोइ ताहरउं कर्म तुझनइ किम रोलविसिइं।'

इसिइं राजाइं तलारनइ कहिउं, जाउ, ऋषिदत्ता घर-माहि-हूंती जटीए झाली, खांची, बाहरि काढउ । अनइ नगर-माहि फेरवी, प्रेतवन-माहि लेई, ए राखसीनइ हिष्णिया ।' एहवउ राजानउ आदेस लही सर्वे तलार ऋषिदत्ता-समीपि आवी, जटीए झाली, घर-बाहरि कादी। तेतलइ कुमार गल्ड पासउ घातिवा लागउ । तिवारई राजाई बलात्कारि कुमार मरण-इत राखिउ । पछड् कुमार आंखिइ आंसू पाडतु विलाप करिवा लागड । तेतलइ तलारे ऋषिदत्तानइ कानि सूपडां बांध्यां, वली बीलना फल माथइ घात्यां, रासभ आणिउ, माथइ भद्र कराविउं, लींबनां पान नइ ठीकिरानी माल गलइ घाती, मिस मुखि लगाडी, डील चीतराविउं। पछइ रासिभ बइसारी, आगलि डुंडि वाजतई, काहली सीगडां वाजते, ते सती नगर-माहि फेरवी, हाहाकार लोकने कीषाते, नयर-वाहरि जेतल काढी, तेतल मूर्जा आवी, अचेत थई, भूमिइं पडी । तिवारई तहारे जाणिउ-'बिन्हइ वाना हूयां-अम्हनइं स्त्री-हत्या न लागी, अनइ राजानउ पणि प्रमाणि चंडिउ ।' पछइ तलार पाछा वली घरि आन्या । तेतलइ केडिइ ताढउ बायंड, सचेत हुई । चंड-पखेर सामुहंड ओइ, तु निवरं देखह । पछइ रोवा लागी, दैवनइ उढंभा देती, 'हा तात! हे मात! हा प्राणनाथ।' इम कहती, मउडइ मउडइ चालती, वन-भणी नीकली । मन-माहि चीतवइ जु, 'कर्म-आगलि कोई न छूटइ । कीथां कर्म भोगवीई, तउ क्टीई । तेह-भणी हिवडां ए कलंक तुझनइ चडिउं, तु रे जाव ! सिंह । अनइ भतीर पणि महा संकट-माहि पडिउ । तेहनउ कउण हाल होसिइ ? 'इम विलाप करती पाद-चारिणी पिताना आश्रम-भणी चाली । पगे डाभसी खूचई, लोहो वहइ । इम पगे चालती बिहां पिता आगि-माहि पइठउ हूंतउ, ते चिहि-दूकडी आवी, रोती हूंती कहिवा लागी, 'हे बाप ! एक बार त् मुझनइ दर्शन दिइ । आगइ हूं ए तापस-वन-माहि रहिती । हिवइ वली एह जि तपोवन शरण । तु हिव ए वन-माहि शील मई किम पालीसिइ ?' इम विमासतां चीति आविउं जु, 'मुझनइ बापि ऊषधी देखाडी हूंती, जेहनइ प्रमाणि स्त्री पुरुष रूप थाड 代 पछइ ते ऊषघी लेई कानि बांघी । तत्काल ते पुरूष-रूपि हुई । वन-माहि कंद-मूल-फल खाती रहइ । श्रीआदिनाथनी पूजा करइ । तापसउ वेष घरती, ऋषिदत्त नाम घरती, सुखई रहइ छइ।

हिव६ पछिलि कुमार प्रियानं विरह, तिणि करी आकुलंड सून्यचित्त -थकंड रहइ छइ। एहवई सुलसा कृतकृत्य हुंतो रुक्मिणी-समीपि जई सर्व वात कही, रिक्मिणीनइ हर्ष ऊपजाविउ । पछइ चंडिकानइ पूजा-भणो छाग एक हणिड । तिसिइ काबेरीपतिइ रथमर्दन नगरि हेमरथ राजा-भणी दूत एक मोकलिंड । पछइ दूत तिहां आवी राजानइ कहइ, 'कडग कारण जे पुत्र तुम्हारड पाणिग्रहण-भणी नाविउ ? हिव आपगउ पुत्र रुक्मिणी कन्याना पाणिग्रहण-भणी ईचलावउ । सगाई की बी जि हूइ।' ए वचन सांभली राजाइ दूत बहु मानी, एकांति पुत्र-समीपि आवी इसिउं कहइ, 'वरस ! आन कालि तूं विच्छाय-वदन कांइं दीसइ ? सूना घरनी परिइं ऊपण-दूमणड कांह्रं ? तु त् वच्छ ! पूर्व -दुःकर्म -लगइ जि कांई कष्ट पडिंउ हुइ, ते फेडि। धीर पुरुष वली सर्व कर्मनई विषइ उद्यम करइ । तु हिवई तूं माहरइ वचनि काबेरीपतिनी पुत्रीनउं पाणिग्रहण करी माहरू मन संतोषि ।' पछइ कुमार पितानी आज्ञा अणलोपतं सैन्य-सहित वली पाणिग्रहण-भणी चालिउ । हिवइ मार्ग उलंघतउ, ऋषिदत्तानड ध्यान घरतउ ते पूर्व-परिचित त्योवन पामिउं। ते देखी मित्रनइ कहइ, ए ते त्योवन, ए ते देहरउ, ए ते सरोवर, ए ते वृक्ष, जिहां मई स्नेहपूर्वक ऋषिदत्ता परिणी । तु जोइ-न, ते ऋषिदत्ता-विण आज मुझनइ सर्व दु:खरूप प्रतिभासइ छइ । तु अरे दैव ! तइं ए सिउं कोघउं ?' इम असमाधि करतउ श्री-आदिनाथनइ प्रासादि आविउ । तेतलई जिमणउ स्रोचन फरिकवा लागउ । तिसिइ कुमार मिन चींतवइ, जे असमाधि करउं, ते फोक, कांइ प्रिया भावइ तिहां जीवइ छइ। अथवा ए देहरउं आगइ रुलियामणउं छइ । ' इम चींतबतउ जेतलइ देवकुल-माहि चउ-पखेर जोइ छइ, एहवइ ते ऋषिदत्त तापस फलफूल लेई कुमारनइ आप्यां । कुमार पणि प्रियाना रुनेह-लगी महा आनंद धरिवा लागड । तेतलइ ऋषिदत्त मुनि मन-माहि चीतवइ, ए कुमारना आकार ते दीसइ, जे रुक्मिणीना पाणिग्रहण-भणी चालिउ । तु हूं आपणपंउ प्रगट करउं । पणि हिवडां प्रस्ताव नहीं । पछइ कुमार देव पूजीनइ ऋषिदत्त तापसनइ साथि लेई, कटक-माहि आणी वस्त्र, असन, पान. खादिम-स्वादिमे करी घणी भक्ति कीघी । पछइ पूछिवा लागउ, 'केतला दिवस-लगइ तुम्हे ईणइ आश्रमि रहउ छउ ? ते तुम्हे आपणउ वृत्तांत कहउ ।'

तिवारइ मुनि कहइ, 'आगइ ईणइ आश्रमि हरिषेण मुनि हूंत । तेहनी पुत्री ऋषिदत्ता कन्या । तेहनूं पाणिग्रहण कोई राजपुत्र इहां आवी करी गयउ । एहवइ ऋषि जमाई-पुत्रीनइं पूछी आगि-माहि पइसी प्राण छांड्या । अनइं हुं पृथ्वी भमी भमी इहां आविउ । मुझनइ इहां रिहतां वरस पांच हुआं । अहो कुमार ! ताहरइ दर्शनि ते वरस आज सफल हुआं ।' कुमार कहइ, 'आहो मुनि ! सानन्दपणइ तुझनइ देखी दृष्टि तृप्ति नहीं पामती, जिम थल घटइ पाणीइ तृप्ति न पामइ ।' पछइ ऋषि कहइ, 'मुझनइ पणि तुझ देखी हृष्ट ऊपजइ छइ ।' कुमार कहइ, 'आहो मुनि ! ताहरइ स्नेहि माहरउ चित्त बांधिउ छइ, पणि मुझनइ आगित जावं छइ । एह-भणी तृ मुझ साथि आवि । अनइ वलतां तृं ईणइ आश्रमि रहे ।' तिवारइ मुनि कहइ, 'आहो कुमार ! मुझनइ आग्रह न करिवउ ! जिणि कारणि राजानु संसर्ग ऋषिनइ दूषणपाय छइ ।' इणि वचिन कुमारि गाढेरउ आग्रह करी ऋषिदत्त-मुनि संघाति चलाविउ । पछइ कुमार नई ऋषिदत्त चालतां, मार्गि अनेक गोष्ठि करतां, नवनवा विनोद जोतां, थानिक थानिक रिहतां, नवनवा श्लोक सुभाषित बालतां, काबेरीनगरीइं आव्या । एहवइ वधामणीइ जई काबेरीपित वधाविउ, कहिउं, 'स्वामिन् ! हेमरथराजानउ पुत्र कनकरथ आविउ ।' तिसई राजाई तेह-नई

पइसारउ कराविउ । नगर-माहि अनेक तिलयां तोरण, वंदरवालि बंघावी । पछ्ड भलड़ लिन कुपारि रुक्मिणीनउ पाणिग्रहण कीघंउ । कुमार केतलाएक दिवस तिहां रहिउ ।

अन्यथा वेसास ऊपनइ हिम्मणीइ कुमार पूछिंड, 'हे स्वामिन् ! जे ऋषिदत्ता पहिली परिणी हुंती ते केहवी हुंता, जेणीइ अहल्यानी परिइं ताहरउं चित्त रंजिविडं हुंतडं ?' इम किह्इ हुंतइ कुमार आखिइं आंसू पाइतड गद्गद्-स्वरिइं किह्वा लागड, 'जेतली विश्व-माहि स्त्री छइं, तेतली हूं तेहनी पग-धूलि-समान गणूं। तेहनइ विरहइं तां मह ताहरउं पाणिग्रहण कीघंड । जिम मानसरोवरनं नीर आस्वादी मनुष्य महमं इळनडं क्षार-जल किम आस्वादइ ! तिम ताहरड संबंध जाणिवड !' ए वात सांमली हिक्मणी रीसाणी हूंती पूर्विली आपणी सर्व वात किह्वा लागी, 'ए तां मह जि ऋषिदत्ता ताहरा मन-हूंती ऊतारी । सुलसा योगिनी मोकलीनइ महं कलंक चडावाविड !' इत्यादि वचन सांमली ऋषिदत्तमुनि मन-माहि चोंतवइ, 'तां भरतारना मन-हूंतड माहरडं कलंक ऊतरिडं !' इम कुमार पणि ते हक्मणिनां वचन सांमली रोषाहण-लोचन हूंतड ते हिम्मणोनई तर्जिवा लागड। जिम दहींनइ मांडि द्युनीनइ बोंटिइं द्युनी हाकी काढीई, तिम ते काढी। 'ओर पापिणो ! तई ता हूं केवडा संकट-माहि घातिड ! तु हिव हूं आपणा जीवनई काई हित करउं, जिणि कारणि मई लोकद्य-विरुद्ध नरकनई हेतु आचरण आचरिंड !' इम कही नगरनइ परसरि कुमारि चिहि करावी। आपणि काष्ट-भक्षण करवा लागड।

एहवइ काबेरीपति तिहां आवी कुमारनइ हाथि झाली निवारिया लागड । समस्त लोक पणि अश्रुपात करता वारिवा लागा । तु ही कुमार रहइ नही । इसिइ ऋषिदत्त-मुन तिहां आवी कुमारतह कहइ, 'अहो कुमार ! स्रोनइ की घइ एवड उं सिउं मां डिउं ? अनइ मूआ इ पछी को कहिनइ न मिलइ । एह-भणी जीवतां अजी किहां-इ-थकी तुझनइ बल्लभा मिलिसइ ।' तिवारई कुमार कहइ, 'अहो ऋषि ! तई तां बालकनी परिइं हूं अमेलिववा मां डिउ । हिवइ एक वार मुझनइ मिरवा दइ, जिम विरहन उं दुःख भाजइ।' ऋषे कहइ, 'ताहरइ सिवई सही ताहरी भार्या जीवइ छइ ।' ए वात सांभली कुमार कहइ, 'तई प्रिया किहां दीठी, किहां सांमली ?' तिवारइ मुनि कहइ, 'हूं ज्ञानि करी जाण उं छ उं, जु ताहरी बल्लभा मुखिई जीवइ छइ ।' [कुमार कहइ] 'तु ऋषि ! कहिन्न किम ही ते प्रिया आवइ ?' बलतुं ऋषि कहइ, 'मुझनइ जु मोकलइ, तु सही आण उं।' तिवारइ कुमार कहइ, 'तुं सम करि, जिम मुझनइ प्रतीत(शति) ऊपजइ।' वली ऋषि कहइ, 'जु हूं आण उं, तु मुझनइ सिउं आपइ ?' कुमार कहइ, 'हूं आपण उं आरमा आप उं।' तिवारई मुनि हसीनइ कहइ, 'तुं आपण उ आरमा आपणकहहिल राखि, पणि प्रस्तावि काई माग उं, तेहनी ना म कहेसि।' ते वचन कुमारि पडिविज ।

पछइ ते तापस-मुनि परीयछि माहि पइटउ । लोक घणा कउितगीयाल मिल्या छइं नगरीना । इसिइं आकाशवाणी हूई जु, 'सतीना सत्व, तप, ध्यान पृथ्वी-माहि जयवंता छइं ।' इसिउ कहतां हाथि फूलनी माल घरता देवता आकासि आव्या । तिसिइ जिम करसणी मेघ-सामुहउं जोइ, तिम सहू ऋषदत्तानी वाट जोवा लागा । लोकनइं सर्व काम वीसरी गयां । एहवइ कुमारि ते ऋषिदत्ता दीठी । पणि ते केहवी छई ? जिम अग्नि-हूंतउ नीकलिउ सोनउं दीपइ, तिम ते दीप्तिमंत, उपपात-शय्य नी परिइं सुरांगना सरीखी प्रकट हुई । प्रसन्तमुख ऋषिदत्ता जिवारइं आवी, तिवारइ सर्व देव, दानव, मानव पतिव्रतानई 'जय जय', जय जय' शब्द ऊचरतां आकाशि

१. P. विना: घणइ पाणीइ। २. K. लेखवडं छउं। ३. P भोलिवड Pu. भोलविवड।

कुसुमनी बृष्टि करिवा लागा । तिवारइ ऋषिदत्ता आपणइ रूपि करी किनमणीनइ दासी-समान करती ऊभी रही, देखी लोक सर्व कुमारनइ प्रसंसइ । कावेरीपति पणि जमाईनइ जीवितव्य देखी हिष्डि । जिम चंद्रमा देखी समुद्र उल्लास पामइ, तिम तीणइ पामिउ । पछइ कावेरोपितंइ कुमारनइ ऋषिदत्ता गर्जेंद्रि बईसारो, महा ऋद्धिनइ विस्तारि आपणइ घरि आणी, गौरवपणइ स्नानादिक कराविउं । पछइ योगिनी अणावी कान-नाशिका छेदी, घणी विडंबना देखाडी, देस-हूंती बाहरि काढी । पछइ कावेरीपतिइं आपणी बेटी गाढी निर्भें छी, कुमार केतलाएक दिवस तिहां राखिउ ।

अन्यदा कुमार ऋषिदत्ता-नइ कहइ, 'हे प्रिये! तुझ-केडिइं ताहरी सुद्धि-मणी मह ऋषि एक मोकलिउ हुंत, ते अजी नावइ । तेहनी असमाधि मुझनइ गाढी छइ ।' तिवारइं ऋषि-दत्ता हसीनइ कहइ, 'स्वामी! ए विषाद म करि। ऊषधीना योग-लगइ ए सर्व मइं जि कीघंडे। पणि हिवइ माहरउ वर आपि, तइं जे बोलिउ हुंतउ।' कुमार कहइ, 'मागि।' ऋषि-दत्ता कहइ, 'जिम मुझनइ 'लेखइ, तिम जि किमणीनइं गणि।' कुमार कहइ, 'जोउ एहनउ विवेक, एहनी दया जोउ।' इम कही ते वात कुमारिइ मानी। तेतलइं ऋषिदत्ता किमणी अणावी। भरतारनइ पगे लगाडी। पछइ कुमार सुसरानइ मोकलावी, विद्धं स्त्रीए परिवरिउ, सैन्य-सहित आपणइ नगरि आविउ। पिताइ महा-विस्तारि प्रवेशोत्सव कीघउ। पछइ राजाइं ए स्वरूप जाणी ऋषिदत्तानइ आपणउ अपराध खमावीनइ कहइ, 'ए ऋषिदत्ता सती-सिरो-मणि।' इम कही मानिवा लागउ।

हिव अन्यदा कनकरथ पुत्रनइं राज देई राजा आपणपे श्री-भद्राचार्य-समीपि चारित्र लेई, सुद्ध संयम पाली, मोक्षि पहुतड । हिव कनकरथ आपणउं राज पालइ छइ । इसिइ ऋषिदत्ताइं सिहरथ पुत्र जिन्मिउ । तिहां महा-महोत्सव हूउ । एकदा राजा ऋषिदत्ता-सिहत गउलि बहठउ छइ, एहवइ आकाशि पंचवर्ण आमां हूयां, अनइ देखतां जि विलइ गयां । तिवारइं राजाइ ए असार संसारनूं स्वरूप देखी मिन वैराग्य घरतां जि रात्रि गई । तिसिइं प्रभाति श्री-भद्रयशस्रिनंड आगमन सांभली सपरिवार राजा वांदिवा गयंड । तिहां गुरे धर्मोपदेश दीघंड । गुरुनी देसना सांभली पछइ ऋषिदत्ता गुरुनइ पूछइ, 'स्वामिन्! मईं भवांतिर कडण पाप कीघंड जे मुझनइ राक्षसीनंड कलंक चिंडडं ?' तिवारइं गुरु ज्ञानि करी कहइ, 'बत्सि ! पूर्व-भव सांभलि । गंगापुर नगर । तिहां गंगदत्त राजा, गंगा एहवइ नामि पिया, गंगसेना पुत्री । पणि अति हि सुर्शालि । एकदा गंगसेना नइ चंद्रयशा महासती-साथिइं धर्मनी गोष्टि हुई । तिवारइ गंगसेना विषय तृण-समान गणिवा लागी ।'

हिवइ ते गुरु कहर, 'ते महासती—कन्हिल काई एक तपस्विनी तप तपइ छइ। ते-साथि ताहरइ मत्सर हुउ। तूं तेहनी प्रसंसा सही न सकइ। पछइ तई तेहनइ एहवउ कलंक दीधउं ज, ''ए दीहइ तप तपइ अनइ रात्रिइं मसाणि जई मृतकनां मांस खाइ।'' तिसिइं तुझनइ महास्तीए किहें, ''बापडी! एवडउ कर्मबंध कांई करइ? सामुहउं कर्म ऊपार्जेइ छइ।'' हिवइ ए पाप तई अणआलोइं अणपिडकिमिइं मरी, घणउ काल संसार-माहि भमी, ईणइ जि गंगापुरि राजानी पुत्री हुई। पछइ प्रस्तावि जिन-दीक्षा लेई, तप तपी, अणसणपूर्वक मरी, ईशानेन्द्रनी प्रिया हुई। तिहां-हूंती चिवी तूं हरिषेण राजानी पुत्री हुई। पणि भवांतरनां कर्म-लगइ तुझनइ

१. K. L. Pu. विलवाद । २. P. Pu. देलह ।

ए कलंक ऊपनउं छइ । इम जु वचन-मात्रिइं प्राणी एवडां कष्ट पामइ छइ, तु जे कायाइ करी पाप करइ छइ, ते तउ भवने सए नहीं छूटइ ।' इम ज्ञानीनां वचन सांभली, वैराग्य-रंगि पृरित हुंती, ईहापोह करतां जाती-स्मरण-ज्ञान ऊपनउं । आपणउ भवांतर दीठउ । तिवारइं ऋषिदत्ता कर्म-थकी बीहती ज्ञानीनइ वीनवइ जउ, 'मुझनइ हिवइ जिन-दीक्षा दिउ ।' गुरु कहइ, 'राजानइ मनावि, जिम तुझनइ दीक्षा दिउं ।' पछइ ए वात सांभली राजा पणि संसारनउं असारपणउं रेखतउ सिंहरथ पुत्रनइ राज देई, ऋषिदत्ता भार्या-सहित राजाइ दीक्षा लीधी। पछइ विहार करतां, खड्ग-धारा-समान चारित्र पालतां, भिद्दलपुरि आव्या। तिहां संपूर्ण कर्म उन्मूली, केवल-ज्ञान पामी, वेद्द मोक्षि पहुतां।

इति श्री-शीलोपदेशमाला-बालाविबोधे श्री-ऋषिदत्ता-महासती-कथा ॥२९॥

*

हिवइ दवदंतीनी कथा कहीइ -

[३०. दवदंतीनी कथा]

ईणइ जंजूद्रीपि भरतक्षेत्रि अष्टापद—समीपि संगमपुर नगर | तिहां मम्मण राजा वीरमती भार्या-सहित सुखिई राज करइ | अन्यदा प्रिया-सहित राजा आहेडा-भणी नगर-बाहिरि नीकल्डि | तिसिइं संधात-साथइ महारमा एक मल-मिलन-गात्र आवतउ देखी मन-माहि अपग्रकन मानतड राजाइं महारमा खली राखिउ, संधात-हूंतउ चूकविउ | बार घडी-ताइं संतापी पछइ दया-परिणाम ऊपनइं, राजाइं महारमा पुछिउ, 'किहां हूंतउ तूं आविउ ? किहां जाएसि ?' तिवारईं सुनि कहइ, 'हुं रोहीतकनगर-हूंतउ आविउ | पणि अष्टापदि बिंब नमस्करिवा-भणी जाउं छउं | ते हूं तुम्हे हिवडां संधात-हूंतउ विछोहिउ ।' इम वात करतां राजाराणीए दु:स्वपननी परिइं कोप मू किउ । पछइ ते महारमा-नइ भातपाणीइं करी संपूर्ण भक्ति कीधी | तिसिइं महारमाई ज्ञानरूप धर्म-ऊषघ कर्म-रोगनी चिकित्सा-भणी आपिउं । पछइ महारमा अष्टापदि पहुतउ ।

हिवह ते बिहुइ महारमाना संवर्ग-लगइ श्रावकउं घर्म तिम पालिया लागां, जिम रांक द्रव्यनइ पालइ । अन्यदा वीरमतीनइ जिनधर्मनी गाढी स्थिरता करिवा-भणी शासन-देवताइं अष्टापद तांधे देखांडिउं । तिसिइं तिहां वीरमतीइं, अष्टापद-ऊपरि शाश्वती प्रतिमाइं जे देवता पूजईं अचेई छईं ते देखी परम आनंद घरती चउवीस इ जिननी प्रतिमा नमस्करी, विद्याघरीनी परिइं आपण्ड नगरि पाछी आवी । पछइ जिन-जिन-प्रति वीस-वीस आंबिल करी रत्नमइं चउवीस तिलक कराव्यां । पछइ सपरिवार अष्टापद-पर्वति जई स्नात्र-महोत्सप -पूर्वक चउवीस इ तीर्थंकरनइं चउवीस इ तिलक दीघां । भावपूर्वक वली चारण-श्रमण महात्मा तिहां आविआ हुंता, तेहनइं दान देई, महा-भक्तिपूर्वक नाचो, गीत गाई, घरि आवी । हिवइ बिहुंनइ डील इ जूजूआं पणि जीव एक जि । इम धर्म-कर्म करतां समाधि-मरण पामी, बेहूं देवलोक देव-देवी ह्यां । तिहां हुंतउ मम्मणनउ जीव चिवी, ईणइ जंबूद्वीपि, भरतक्षेत्रि, बहुली-देशि, पोतनपुरि नगरि, घम्मिल्ल नामिइं आमीरनी भार्या रेणुका, तेहनी कृखिइं, घन एहवईं नामिइ पुत्र हुउ । अनइ वीरमतीनउ जीव देवलोक-तु चिवी धूसरी एहवइ नामि घननी भार्या हुईं ।

हिवइ धन अरण्य-माहि भइंसि चारइ। कांई ? आभीरनइ कुलि मूलगी एह जि वृत्ति, जे भइंसि चारीइं। इसिइं अन्यदा वर्षाकाल आविउ। गाढउ कादम हुउ। मइंसि क्रींकार करिवा लागी। एह्वइ घन चारिवा-भणी वरसतइ मेघि भइंसिनइ लेई, माथइ छत्रडी घरी, नीकलिउ । पछइ महा-अटवी-माहि भइंसिनइं चारतां महात्मा एक प्रतिमाइं रहिउ दीठउ । पणि एक जि पग भूमिकाइं लागउ छइ। अनइ उपवासि करी महा-कृश छइ। वली ताढिइं करी कांपतउ, वृक्षनी परिइं धूजतउ छइ । एहवउ ते मुनि देखी धननइ दया ऊपनीइ आपणी छत्रडी महारमाना माथा-ऊपरी महा-भक्तिभावना-सहित धरी रहिउ। पणि न ते धन थाकउ, न ते मेघ वरसतड रहिउ । इम घणा प्रहर वृष्टि करी मेघ रहिउ । तेतनई महातमाई काउस्सग्ग पारिउ । पछइ धन प्रणाम करो महारमानई पग चांपिवा लागड । हाथ जोडी कहिवा लागड, 'अहो मुनि ! ए काल तु विषम, अनइ पृथ्वी कर्दम बहुल हुई । तु आज तुम्हे किहां-हूंता आव्या ? अनइ किहां जासिउ १' तिवारई मुनि कहइ, हूं पांडुदेस-यक्तउ आविउ अनइ गुरुनई वांदिवा-मणी लंकाइ जाइसु । पणि जातां ए वरसालउ आविउ, तु मुनिनइ वरसतइ मेघ**इ जावउं नायइ**। तेह-भगी मइ नीम लीध3- जां ए मेह वरसिसइ, तां किही नहो जाउं। इन चीतवी इहां 📵 रहिउ । तु आज मेहनइ वरसतां भात दिन थया । ए अभिग्रह हिवडां पहुतु । तु हिबइ हुं किहां एक वसिम हि जई रहिसु।' तिवारई धन कहिवा लागउ, 'माहरइ भइंसउ छइ, तिणि चडउ, जिम कादमनड उपद्रव न हुई।' तिसिई मुनि कहइ, महारमा भईसइ न चडई। परनई जिम पीड हुइ तिम न करई । महात्मा पाला जि चालई । इम कहितउ ते मुनि धन-नइ साथिइं नगरनइ परिंधिर आविउ । तेतल्ड धन कहइ, 'अहो मुनि ! जां हूं भईसि दोहुउं, तां पड़खड ।' इम कही घन घरि आवी भइंसि दोही, घड़उ एक दूधिई भरी, आपणपुं धन्य मानतउ, तिहां आवी महात्मानइं पारणउं कराविउं । पछइ वर्षानइ व्यतिक्रमि महात्मा पोतनपुरि आविउ । पछइ घन धूसरी-प्रिया-सहित श्रावकनउ घर्म सूघंउ सम्यक्त्व-सहित पालइ । पछइ अवसरि चारित्र लेई, सात वरस दीक्षा पाली, मरण पामी, सुरात्रि जे दान दीघंउं तेहनइ प्रमाणि, हैमवति क्षेत्रि बिन्हइ जीव युगलीयां हूयां । तिहां-हूंता मरी देवलोकि ऊपनां । वली तिहां-हूंतउ मम्मणन्ड जीव चिवी ईणइ भरतक्षेत्रि कोशलदेशि कोशलानगरीई ईक्ष्वाकु-कुलि निषध एहवड नामि राजा अनइ सुंदरी भार्या, तेहनी कृखिइ नल एहवइ नामि पुत्र हुउ । अनइ कूबर लघु बांधव हुउ ।

इसिइं विदमेदेशि कुंडिनपुरि भीमरथ राजा, पुष्पदंती-भार्या सहित, सुखिइं दिवस गमाडह छह । इसिइं पुष्पदंती पश्चिम-रात्रिइं सुख-शिच्याइं सूती सउणउं लही, राजानइ कहइ, 'स्वामी ! इम जाणउं वन-हूंतउ दावानलनउ प्रेरिउ स्वेत हस्ती एक माहरह घरि आविउ ।' ए वात सांभली राजा कहइ, 'ए सउणानइ अनुसारो कोई पुण्याधिक जीव ताहरी कृंखिई अवतरिसिइ।' पछइ पुष्पदंती अनेक धर्मकाज करइ । इम धर्म-कर्म करतां सार्छाष्ट नव मास गया । पछइ मलइ दिवसि पुत्री जन्मी । पिताइ पुत्रजन्मनी परिइं जन्म-महोत्सव कीघउ । पूर्व-कर्मानुभाव-लगी ते कन्यानइ भालि तिलक रत्न-समान ऊपनउं, जाणे सूर्य झलहलइ छइ । पछइ सूर्य-चंद्र-दर्शन कराव्यां, छठइ दिनि छट्टी जागी । हिवइ जे दावानल-हूंतउ स्वेत हस्ती घरि आवतड

१. K. बार । २. K.P.L. ताहरह।

दीठउ तेह-भणी दवदंती नाम दीघउं । जे 'मित्रेयी माता तेही मधुर-वचने बोलावइं ! जिम जिम कुमरी रीखती, पिंग नूपुर रिमझिम करती, हसती, खेळती चाळइ, तिम तिम मात्राप हर्षीइ ! इम पुत्री वाघती, मात्रापनां मनोरय पूरवती, आठ वरसनी हुई । तेतळइ माता-पिताए कलाचार्य-समीपि भणिवा मूंकी । पिण थोडे दिहाडे सर्व शास्त्र भण्यां । साक्षारकारि सरस्वतीनी परिइं शास्त्र जाणिवा छागी । गुरु नाममात्र जि हूया । तिसिइं कलाचार्यिइं दवदंती आणी राजानइं दीघी । तिवारइं राजाइं दवदंतीनी विद्या देखी, एक लाख सोनउं आचार्यनइ देई कलाचार्य विसर्जिड ।

पछइ निर्मृति-देवताइं दवदंतीनुं पुण्य देखी सुवर्णमइ श्री-शांतिनाथनी प्रतिमा आपी । वळी इम कहिउं जु, 'ए भाविउ सोलमउ तीर्थं कर होसिइ । ए प्रतिमा तइं सदाइ पूजिवी ।' कही देवता अहश्य हुई । पछइ दवदंती घरनइं देवालइ प्रतिमा मूंकी, सदाइ पूजइ । ऋमिइं दवदंतीइं योवनपणउं पामिउं । इसिइं मागाप अनुरूप वरनी चिंता करतां जि पुत्री अढार वरस्ती हुई । तेतलइं प्रधाने राजा वीनविउ, 'स्वामी ! स्वयंवरा-मंडप मंडावीइ । तिहां पुत्री आफणीई' वर ऊलखी लेसिइ ।' पछइ राजाइ स्वयंवरा-मंडप मंडाविउ । हिवइ गामि गामि दूत मोकली राजाना कुमार तेडाव्या । दूते निषधराजा बोलविउ । निषधराजा पणि नल-कूबर-पुत्रे परिवरिउ आविउ । पछइ भोमरथ राजाइं आगता-स्वागत करी, आवासे सर्व राजा ऊतारिया। तिसिइं नल देखी सर्व राजा अदेखाई करिवा लागा ।

हिवह मीमराजाइं सयंवरा-मंडप मंडाविउ | हेममय सिंहासन मंडाव्यां | जेहवी सीधमें द्रनी समा हुइ, एहवी कीधी | विचालइ स्तंभ मांडिउ | तीणइ सर्व-भूषण भूषित पूतली करी मांडी, जाणे देवांगना छइ | जे पाधरा राजा छइं, ते चींतवईं, अम्हे ए जोवा इ नहीं लहुउं | इसिइ प्रभाति सर्व राजेंद्र सिंहासने आवी बइठा | निषधराजा पणि पुत्रे परिवरिउ आवी बइठउ | एहवइ दवदंती उदार स्फार शृंगार करी, स्वेत वस्त्र पहिरी, सभा-मांहि आवी | पणि आगलि प्रतिहारिणी हाथि सोनानी कांब छेई सर्व राजानां नाम नइ गुण प्रगट करती कहुइ, 'हे स्वामिनि ! ए मगधदेसनउ अधिगति चंद्रकीतिं । ए अंगदेसनउ अधिपति भीमराजा । ए कोशलदेशनउ निषध राजा । ए नल-कृतर तेहना पुत्र ।' इम नाम छेतां नलनइ विषइ दवदंती- नउं मन गयउं, अंगि रोमंच ऊपनउ । तिवारइं नलनई कंठि वरमाला दवदंतीइ मूंकी ।

तेतलइ कृष्णराज खड़ लेई कहइ, 'रे नल! तूं कन्या मूंकि। मुझ-छतां कडण कन्या परिणी सकइ ?' तिवार इं नल अनइ कृष्णराजनइ माहोमाहि युद्ध होतां मनुष्यना संहार थातां देखी दबदंती इं अवश्रावणा की घी, 'जड हूं अहंतनी भक्त छंड, तड शासन-देवता! नलनइ जय हु।' इम कही पाणीनी छांट नांखी। तेतलइ कृष्णराजानं खांड उं पडिडं। पछइ कृष्णराजा इं नल प्रणामं । तिहां नलिइं जैत्र-पदवी पामी। तिवार इं सर्व राजेंद्र हिषया। पछइ मलइ दिवसि पाणि- प्रहण-महोत्सव हुउ। तिहां हाथ-मेल्हावणीइ भीमराजा इं अनेक घन, कनक अस्व, हस्ती दी घां। पछइ भीमरथ राजानइ पूछी निषधराजा पुत्रवधू-सिहत को शल-भणी चालिउ। तिसिइं भीमराजा पुत्रीनइ सीख दिइ, 'विति ! व्यसनि कि छइ पिडइ भर्तारनड केड उन मूं किवड।' इन सीख देई भीमराजा पाछड विलेख। पछइ दबदंती पितानी सीख मन-माह घरती, नलनइ रिथ बइठी। रथ आघड चालिउ।

१. K. मंत्रेइ। २. P. आपहणी Pu. आफहणी L. आफणी। ३. Pu. P. वल्यउ।

हिवइ नड़-दवदंती मार्गि अनेक वृक्षतां कउतिग कोतां, रथ उन्मार्गि चालिवा लागड । इम माणि चालतां अंधकार प्रकट हूउ। तिसिइ लोक चाली न सकई, उरई-परई पिडवा लागां। एहवइ निल दवदंतीनइ किहेंड, 'हे प्रिये ! निद्रा म किर, तिलक प्रकट किर।' तिवारई दवदंती रथनइ अग्नि जेतलइ बइठी, तेतलइ तिलक सूर्य शे पिरई उद्योत किरवा लागंड । पछइ सर्व लोक मुखिइं चालिवा लागां । इम चालतां निल मुनि एक प्रतिमाई रिहेउ दीठउ । तिवारई नल पितानइ कहइ, 'तातपाद ! अज्ञालानइ योगिइ महत्मा एक दीसइ छइ । तु मार्गनउ काई फल लीजइ । ए महात्मानइ काउतिग रहतां जे गंघहस्तीइ डील घिसउं छइ, तेहनइं गंधिई ममरा संतावई छई । ते परीसह मुनि सहइ छइ ।' ए वात सांमली निषधराजा पुत्र-सिहित तिहां जई, मुनिनइ प्रणाम करी, सर्व उपद्रव निवारी, उपदेश सांमली (१लइ)। पछइ नल मुनिनइ पूछइ, 'ए दवदंतीना तिलकतं एवडडं सिडं तेज ?' तिवारइ मुनि कहइ, 'जे चउवीस तीर्थकरनईं तिलक दीघां हूंतां, तेहनउं ए फल । अजो घणा प्रकार होसिइं ।' इम सांमली मुनि वांदी आघा चाल्या। पंथ अवगाही आपणि नगरि आव्या। पछइ निषधिइ नलनई राज दीघउं, अनइ कूबरनइ युवराज पदवो देई आपण रहं चारित्र लीघउं। तिवार-पछी नलराजा आपणी प्रजानई पालइ।

इसिइं अन्यदा नलराजा प्रधाननइ पूछइ, 'माहरइ पिताइ केतली भूमिका साधी हूंती ?' तिवारइ प्रधान कहइ, 'पिता-थकी तुम्हे घणी भुंइं साधी । पिण इहां-थकी वीस इ जोयण ऊपिर तक्षशिला नगरी, तेहनड अधिपति कदंबराजा छइ, ते तुम्हारी आज्ञा न पालह।' ए वात सांभली नलराजाइ कटक करी, तक्षशिलाइ जई, नगर वंटिउं। एहवइ कदंबराजा सामुद्ध नीकलीड। तिवारइ निल्हे कहें, 'जे एवडां मनुष्यनड क्षय कीजइ, ते कांइ? आवि, आपणपे बेहू युद्ध करीइ।' कदंबि ए वचन मानिउं। पछइ बिहुनइं युद्ध करतां कदंबि हारिउं। तिवारइ कदंबि दीक्षा लीधी। पछइ नलराजा कदंबना पुत्रनइ राज देई आपणइ घरि आविउ। तिण खंड साधी सुखिइ रहइ छइ।

इसिइ कूबर राज्यनी वांछा करतंउ शाकिनीनी परिइं नलराजानां छिद्र जोइ। पणि नलराजा तु सरल । हिवह एकदा कूबर दुष्ट स्वमाव-लगी सारि पासा आणी नलनइ कहइ, 'बांघवं! आवउ, आपणपे जूए खेलीइ। 'पछइ नल नइ कूबर बेहू रिमवा लागा। किवारइ नल जीपई, किवारइ कूबर जीपइ । इम करतां दैवना योग-लगइ नल हारिवा लागउ, अनइ कूबर जीपवा लागउ। गाम, नगर, देस, मंडार, कोठार, अश्व, गज, रथ, सर्व हारह, अनइ कूबर जीपइ। तिसिइं लोक हाहाकार करिवा लागा, 'स्वामिन् ! ए व्यसन मूकउ । ईणइ व्यसनि घणा लोक क्षयि गया छइं।' तु ही नल पाछउ उइटइ नहीं। तिसिइ दबदंती आवीनइ कहइ, 'स्वामी! ए द्युत-क्रीडा मूंकि । वरि आपणउं राज भाईनइ आपहणी दिइ । पणि जे हारीनइ दीजई, ते शोभइ नहीं।' जिम दसमी अवस्थाई हस्तींद्र कांइ चेयइ-वेयइ नहीं, तिम ते नलराजा कांइ चेयइ-वेयइ नहीं। पछइ दबदंती-सहित अंत:पुर पणि हारिउं। तिवारई कूबर नलनइ कहइ, 'ए तु मई सर्व जीतं । हिच माहरी मुंद छांडि । तुझनइ बापिइ राज दीघउं हूंतउं, मुझनइ परमेसरि दीघउं ।' ए वचन सांमली नलराचा राष्य-रिष्द्रि सर्व छांडी, एक पहिरणउं पहिरी, नीकलिख । तिसिइ दवदंती पणि केडिई नीकली । तिवारई कृतर कहइ, 'मइ तूं जूबटइ जीती छइ। तूं म जाएिख।' तेतलह अमात्य कहइ, 'कूबर! तू वरांसीइ छइ। ए सती परपुरुषनी छाया पणि न सहइ। वली वडा भाईनी पत्नी माता-समान गणीइ। हिव जु तूं रूडइ मूंकइ तु रूडउं नहोतरि ए सती भस्म करिसि। सतीनइ काइं असाध्य नथी। एह-भणी रथ एक सइं बलयुक्त सारथी सहित दवदंतीनइ आपि। तिवारई नल कहइ, 'मइ जु भरतार्थ छांडिंड, तु वली ईणइ रिथ सिउं कीजइ ?' इम कही द्वदंती-सिहत नल चालिउ। तिसिइ प्रधान वीनवइ, 'स्वामी! द्वदंती रथ-विण पाली चाली नहीं सकइ, तेह-भणी कृपा करउ। एतलउ बोल मानउ।' पछइ नल रथ लेई चालिउ।

तिसिइ चालतां मागि पांच सइं हाथनउ थांमउ एक दीठउ । ते थांमउ एकणि हाथि केलिनी परिइ लेई वली थापिउ तीणई थानिक । तेहवइ ऋषि एक आविउ । तीणइ किहंउ, 'वली इहां नलराजा राज्य पामिसिइ ।' इम वात सांमलो नल-दवदंती नगरी-बाहरि नीकली कहइ, 'हिवइ केही दिसिई जईसिइ !' तिवारइ दवदंती कहइ, 'स्वामी ! कुंडिनपुरइ जईइ, जिहां माहरउ पिता छइ ।' तिवारई निल कुंडिनपुर-भणी रथ खेडिउ । पछइ मार्ग उल्लंघतां महा अटवी-माहि रथ पिड । तिसिइ गमे गमे भील आव्या । एहवइ नल रथ-हूंतु ऊतरी, खइग छेई, सामुहु थाइवा लागठ । तेतलइ दवदंतीइ किहउं, 'हे नाथ ! शीआलीआ-ऊपिर ताहरउ सिउ आक्षेप ?' इम कहती दवदंती हुंकारउ मूकइ । जे जे हुंकारा सांमलइ, ते ते अचेत थई मुंइ पडइ । पछइ भीले पलायन कीघउं । हिवइ जे रथ अलगउ मूंकिउ हूंतु, ते रथ बीजे भीले लीघउ । पछइ नल-दवदंती पाला चालिवा लागा ।

इम चालतां मार्गि जातां थाकां । किहां एक वृक्ष-तलइ जइ बइटां । तिहां नल केलिने पत्रे करी दबदंतीनइ वाय घातिवा लागउ । दबदंती पणि नलना पग चांपइ छइ । एहवइ दबदंती तृषाकांत हुई । तेतलइ नलि कमलने दले करी जल आणी पायउं, सुस्ती कीधी । तिवारइ दवदंती पुछइ, 'अजी अटवी केतली थाकइ ?' नल कहइ, 'सउ जोयण-माहि अजी पांच जि कोयण आन्या छउं।' इम वात करतां सूर्य आथिमे । पछइ अशोकवृक्षना पल्हव लेई साथ-रख कीधउ । तिहां दबदंती सूती । एहवइ गाइनउ शब्द सांभली, वसतु तिवार इं जाणी, निल कहिउं, 'इहां कोई तापसाश्रम घटइ।' तुही दवदंती ऊठी न सकइ। निल कहिउं, 'हूं पाहरी छउं। तूं सुखिइं निद्रा करि।' पछइ दवदंतीनइ नीद्र आवी। एहवइ नल चींतवइ, 'जे किट आविइ सुसरानइ शरणि जाइ, ते अधम । एह-भणी जु दवदंती बापनइ घरि जाइ, तु हं भावइ तिहां जाउ । अथवा ए दवदंतीनइ शीलनइ प्रमाणि कांई उपद्रव नहीं ऊपजइ ।' इम चींतवी बन्न सरीखंड कठिन चित्त करी, छुरीइ करी जांघ विदारी, रुधिर काढी, वस्त्रनइ छेहडइ एहवा अक्षर लिख्या जु, 'ए वड-तलइ वि बाट छहं। तिहां डाबी वाट पिताना घर-भणी जासिइ, अनइ जिमणी वाट सुसराना घर-भणी जासिइ। हिवइ जिहां ताहरइ विचारि आवइ. तिहां तुं जाए। ' एहवा अक्षर लिखीनइ नल मउडइ-सिउं निकलिया लागउ। तिवारइ आपणा जीवनइ कहइ, 'अरे जीव ! तू चांडालनी परिइं निर्देय | कांई ? जे ए अवलानइ मूकी जाइ छइ।' वली विमासइ, 'जे अर्धेचं वस्त्र पहिरिउं छइ, अर्धेउ दवदंतीनइ विछाहिउं छइ. ते किम खांचि लिंड ?' इम चींतवतड वली कठिन चित्त करी, छुरिइ करी वस्त्र कापिउं । वली चींत-बाइ, 'ए हाथनाइ धिक कार हु, जे वस्त्र कापतां हाथ वहिउ । तु अरे जिमणा हाथ ! एतली दया इ.न. ऊपनी ११ इस्यादि अनेक संकल्य-विकल्प चींतवी नोकलिउ। तिसिइं आधेरउ जई बली नल चींतविवा लागउ जु, 'हूं आपणंड मुख किम देखाडिसु ?' इसिडं कहितउ वली बली पाछडं जोत इ. वही दैशतइ उहं भा दिइ, 'अरे दैश! अरे विधि! तई ए सर्व-गुणशाहिनी दवदंती कांइ नीपाइ ? अनइ जु नी गई तु एवडा दुख-माहि कांइ घाती ? तु अहो वन देवताउ ! ए बल्लभा तुम्हनइ भलावी छइ। तिम करिज्यो जिम एहनइ कच्ट नावइ।' इत्यादि विलाप करतउ पाछउं जोतउ तां गयउ जां आडां वृक्ष आन्यां । घणी भूमिका जई वली चींतवइ, 'रखे एहनइ कोई वनेचर जीव संतावइ।' इम चींतवी वनलतानइ अंतरालि जोतउ आत्मानइ कहइ, 'अरे नल ! जे तृं एकली निराधार प्रिया वन माहि सूती मूकीनइ जाई छइ, तु तृं शत-खंड कांइं नहीं थातउ ?' इम जि विलाप करतां प्रभात हुउं।

जेतल्इ नल आघउ चालिउ तेतलइ सूर्यनइ उदिय वली सिउं देखइ? महांत एक दावानल आगिल लागउ दीठउ । ते-माहि अनेक वनेचर जीवना आकृत्द सांभलिवा लागउ । आघेरउ जु जाइ तु मनुष्यनी भाषाइं इसिउं सांभलिबा लःगउ जु, 'अहो इक्ष्वाकु-कुलमंडन नल ! मुझनइ बलतां राखी राखि।'इम साप एक मनुष्य-भाषाइं बोलतउ द ठउ। तिवारइ नल चींतवइ, 'ए साप माहरउं नाम किम जाणइ ? अथवा मनुष्यन। भाषाइं साप किम बोलइ ?' इम नलनइ विमासतां वलतुं साप बोलिउ, 'अहो, उत्तम ! पूर्विलइ भवि हूं मनुष्य हूतउ । ते अभ्यास-लगइ मनुष्य-भाषाइं बोलउं छंडं । तउ वली मुझनइ अवधिज्ञान छइ, तीणइ करी सर्व जगत्रयनी वात जाणउं। पणि हिवडां मुझनइ ए आपदा-तु राखि।' पछइ निल आपणउं वस्त्र मृंकी, जिम कूवा हूंतउं पाणी काढीइ, तिम ते साप आगि हूंतंड का ढंड । तिवारइ जि. तीणइ सापि ते नल डिसेंड । तिम जि. निल साप भंइं लांखीनइ कहिउं, 'अहो सर्प ! तइ भलउं न कोघउं ।' तेतलड़ं विष डील-माहि संक्रिमिउं। नल कूबडउ अन्ह कुरूप हुउ। पछइ नल चींतवइ, 'हिव दीक्षा लेई आपणउं काज साधंउ। इसिइ सोप दिव्यमूर्ति हुई कहिंवा लागउ, 'वत्स नलं! तुं कांइं असमाधि करइ १ हूं तु ताहरउ पिता निषध नामि, दोक्षानइ प्रमाणि ब्रह्म-देवलोकि देवता हूउ छउं। ते हूं आज तुझनइ आपदा देखी इहां आविउ । हिव तुं विषाद म ऋरि । ईणइ रूपिईं तुझनइ वहरी कोई पीडा नहीं करइ । अजी तु राजा हुईं भरतार्ध भोगवेसि । तुझनइ दीक्षानु अवसर आपहणी हूं कहिसु । हिव ए श्रीफरु-बीलउं लइ, ए करंडी लइ, पिण आपणा जीवितव्यनी परिइं यत्निइ राखे । अनइ जिवारइ आपणंउ मूलगंउ रूप करिवा हीडइ, तिवारइ ए फल भांजी, वस्त्र-युगल काढी, अनइ ए करंडो-माहि-थकां आभरण काढी पहिरजे । एतल्ड मूलगउं रूप पामिसि । इम कहिइ हुंतइ वली नल पूछइ, 'तुम्हारी वहू मइ जिहां मूकी हूंती, तिहां जि छइ अथवा अनेथि गई ?' तिवारइ देवताई दवदंतीनउ सर्व वृत्तांत कही, वली नलनइ कहइ, 'ए वन-माहित् एकलउ कांइं भमइ ? जिहां ताहरी मनसा हुइ, तिहां मूर्कउं ।' वलतुं नल कहइ, 'मुझनइ सुंसुमारपुरि लेई मूकउ।' पछइ देवताई तत्काल नल तिहां लेई मूकिउ।

तिहां श्री-निमनाथनउ नगर-बाहिरि देह छ छ ह, तेह माहि जई नल देव वांदिवा लागउ । तिवार देवता अहश्य हुउ । देव जुहारी कृषडउ नगर-भणी जेतलइ नीकलिंड तेतलइ नगर-माहि कोलाहल सांमलिंड । तिसि इं कुमार च तवह, 'ए किसिंड कोलाहल ?' तेतलइ घाइ सिंड प्रलयकाल सरीखंड हाथींड एक प्रकट हूड । पणि ते हाथींड मनुष्यना लक्षनइ हणतंड , उपद्रव करतंड हाथने श्रेणि पाडतंड, मनुष्यनी कोडि परिवरिंड, एहवंड चहुंटा-माहि नीकलिंड । तेतलइ दिघरण राजा उच्चड हाथ करी किहिंवा लागड, 'अहो लोको ! जि को ए हाथीनइ विशे किरिस्ह, तेहन हूं सर्व संपदा आपिसु।' ए बात सांमली नल राजा हाथींआ-सामुहंड घायंड । तिसि हं लोक कहंं, 'अरे कुब्ज ! म मरि, म मरि । हाथी महा दुष्ट छह ।' इम वारतां जि निल हाथी हाकिंड, 'अरे पापी हस्ती! बापडा लोकनइ कांइ संतापइ १ हूं तु आगलि उभेड छंड । तुं आवि।' तेतलइ हाथींड सर्व लोक मूकी कृषडा नल-भणी आविंड। तिवार इं निल अनेक किरण-अंगमोटने करी हाथींड तिम खेदिंड जिम हाथींड थाकड । तेतलइ निल आपणंड वस्त्र लांखिंड । हाथींड रीस-लगई दंत्सल वस्त्र-भणी खोइवा लागड। एहवई आपणंड वस्त्र लांखिंड । हाथींड रीस-लगई दंत्सल वस्त्र-भणी खोइवा लागड। एहवई

१. C. Pu. खोवा, K. क्षोभिवा।

कुन्न-रूपि नल किरण देई हाथी-ऊपरि चडिउ । ए स्वरूप दिधिपण-राजाई देखी मन-माहि चींतिविड, 'ए कोई असामान्य पुरुष ।' इम चींतवी आपणा कंठनी रत्नमाला नलनइ गलइ घाती। तिवारइ नल हाथीइ बइसी, आलान-स्तंभि आणी, बांधिड । पछइ दिधिपण पट्टकूल, सर्व आभरण देई बहुमानपूर्वक जाति, कुल, वंश, सर्व पूछिवा लागड । तिवारइ कुन्न कहइ, 'जन्मभूमि कोशलानगरी। अनइ हूं ते नल-राजानउ सूआर। ते नलनी संगति-लगइ सर्व कला जाणंड । वली सूर्य पाक रसवती नल जाणतउ कि (१) हुं जाणंड । हिव ते नलराजाई चूनकीडा करतां राजरिद्धि सर्व हारिड, अनइ पापीइ कूबिर जीतडं। पछइ तिणि कूबिर नल दमयंती बाहिर काढचां। ते सांप्रत न जाणीइ किहां गयां?' ए वात सांभली दिधिपण-राजा नलना गुण स्मरी स्मरी, नलनां प्रेतकार्य करी, असमाधि करिवा लागड।

हिव अन्यदा दिघपण राजा ते स्आरनइ प्रार्थना करइ, 'अहो ! एक वार सूर्यपाक-रसवती नीपाइ ।' तिवारइ सूआरि सूर्यपाक-रसवती करी, राजा सपरिवारि जिमाडिउ । पछइ राजा संतुष्ट वर्तमान हूंतउ ते कूबडा नलनइ पांच सई ग्राम अनइ एक लाख टंका एतछं देवा लागउ । पणि ते नल ग्राम न लिइ । पछइ खरच-भणी एक लाख द्रव्य लीघउं । वली राजाई किहंड, 'जि काई ताहरइ जोईइ, ते कह ।' तिवारइ कुब्ज कहइ, 'तुम्हे राज पालतां उछउं कांई नथी । पणि देस-माहि सघलइ मदिरा, चूतकीडा, आहेडउ – ए सह निवारउ।' तिवारई राजाई 'तह त्ति' करी कुब्जनउं वचन मानिउं । इम कुब्ज-रूपि नल सुखिई रहइ छइ ।

एहवइ अनेरह दिवसि तलावनइ कांठइ ते कूबडउ जई बइठउ । तिसिइ कोई एक देसां-तरी ब्राह्मण आवी कुब्ज-कन्हइ बइठउ । तिहां क्वडनंड सवींग रूप देखी गोष्टि करतां अंतरालि तीणइ बि श्लोक पढ्या । यतः—

> अनार्याणामलज्जानां दुर्जेद्धीनां हतारमनां । रेखां मन्ये नलस्यैव यः सुप्तामत्यजत् प्रियां ॥१॥ विश्रब्धां वल्लमां स्निग्धां सुप्तामेकाकिनीं वने । रयक्तुकामोऽपि जातः किं तत्रैव हि न भस्मसात् ॥२॥

गीत माहि एहवउं सांमली कुन्न कहइ, 'तई मलउं गीत गायउं । पणि कहि, त्ं कलण ? किहां-हूं त्र आविउ ? अनइ किहां ए नलनी वाल सांमली ?' इम पूछिउ हूं तउ कहइ, 'माहरउ नाम कुसलउ, अनइ कुंडिनपुर-हूं तउ आविउ । तिहां मई ए नलनी कथा सांमली ।' तिवारइ विकश्चर-नेत्र हूं तउ कुन्न वली पूछिवा लागउ, 'अहो ! जिम तई वात सांमली छइ, तिम मुझ-आगिल वात सर्व किहि।' तु बाह्मण कहइ, 'सांमलि, जिवारइ नल दवदंती स्ती मूकीनइ गयउ, तिवारइ दवदंतीइ सडणउं दीठउ, 'जाणइ — हूं आंवइ चडी छउं, आंवा खावानी वांछाइ । जेतलई हाथ घातउं तेतलई हाथीइ आवी आंवउ उन्मूलिउ, अनइ हूं भुई पडी । इम सडणउं लही जेतलई प्रभाति जागी, तेतलई भर्तार आगिल न देखइ । पछइ चउ-पखेर जोवा लागी, तुही न देखइ । तिवारई चींतवइ, 'ए विधात्रा अजी मुझनइ सिउं करिसिइ, जे एहवी अवस्थाई भर्तारनइ न देखउं ? अथवा मुख घोवा-भणी तलांव गयउ हुनिई । अथवा सौभाग्यनिधि पति कीणी विद्याधरीइ अपहरिउ घटइ । अथवा हासा-लगइ वन-माहि छकी रहिउ घटइ ।' इम चींतवती दवदंती वृक्ष-वृक्ष-मितई जोइवा लागी । पणि किहां नलनइ न देखइ । तिवारइ विलाप करती कहइ, 'ते वृक्ष, ते पर्वत, ते भूमि दीसइ, पणि एक नल न दीसइ ।' पछइ सडणानउ अर्थ चींतारिवा लागी, 'जे सहकार दीठउ, ते नल । जे पुष्पफल, ते राज । अनइ जे

फलनउ स्वाद, ते राज्य-मुख । जे भमरा, ते परिवार । अनइ हाथीइ जे सहकार उन्मूलिउ, ते दैविइं नल राज्य-हूंतउ काढिउ । अनइ जे वृक्ष-हूंती पडी, ते ज'णे नल-हूंती हूं अलगी हुई । तु ईणइ सउणान अर्थ विचारी पछइ तिम रोवा लागी, जिम वृक्षनइ पणि रदन आविवा लागउं ।

वली विलाप करती कहइ, 'हे नाथ ! हे स्वामी ! मुझनइ मूंकी तूं किहां गयउ ? हूं तु तुझनइ कांइं भार न करती, कांचली जिम सापनइ भार न करइ तिम । अथवा तूं जु वन-माहि लकी रिहेउ छइ, तु ए हासउं शोभतउं नथी । अथवा हूं वनदेवतानइ प्रार्थना करउं छउं जउ, मुझनइ नल देखाडउ। अथवा वली पृथ्वी ! तूं वि-खंड था, जिम हूं माहि पइसु।' इम भरतारनई चींतवती, अटवी-माहि सूनइ मिन फिरती हूंती, आपणइ व स्त्र अक्षर लिख्या दीठा। ते देखी हिष्त हूंती वांचिया लागी। पछइ मन-माहि चोंतवइ, 'तां हूं नलनां मन-माहि छूं। आपणपे गयउ, पणि मुझनइ आदेस देई गयउ। तु हिव हूं ए वडनइ अहिनाणि पितानइ घरि जाउं। जिणि कारणि, पित-रिहत स्त्रीनइ पिता जि शरण।' इम विमासी नउकार स्मरती पिताना घर-मणी चाली। मार्गि जातां अनेक डाम खूनइं छइं, तिणि करी लोही नीकलइ। वली मर्गनउ श्रम, तिणि करी परिस्वेद उपजइ छइ। पणि तेहना शीलनइ प्रमाणि तेहवा इ वन-मार्टि महा हिंसक जीव ते साम्हा सखाईआ हुआ।

इम जातां आगिल संघात एक दीठउ । ते संघात देखी दवदंत नइ समाधि ऊपनी । एहवइ मीले आवी संघात प्रहेड, जिम विषय कामीनइ ग्रहंड । तिवारइ सती दवदंती ऊचह सादि मीलनई कहइ, 'ओर भीलो ! जाउ जाउ ।' त ही संघातना लोक बीहवा लागा । तिसिइ भील संघात लूसिवा-मणी धाया । तेतलइ सती कहइ, 'अहे लोको ! म बीहउ । ए संघात मई राखिउ । ते कडण छइ, जे तुम्ह-साम्हउं जोई सकइ ?' इम कही जेतलइ हूं कारउ मूं किउ, तेतलइ ते चोर सर्व नासी गया । जिम जांगुली-मंत्र-गुणिइ साप नासइ, तिम ते भील नाठा । पछइ संघातनउ अधियति सपरिवार आवी, हाथ जोडी, सती-आगिल ऊभउ रही कहइ, 'मात ! आज तई जीवदान दीधउं । तु तूं कडण ? ए वन-माहि तूं एकली कांई ममइ ? आज अम्हारा पुण्य-लगइ तूं इहां आवी ।' तिवारई वलतूं दवदंती कहइ 'नल-राजाइ चूत-व्यसिन करी राज हारिउं ।' इत्यादि सर्व वात कही । पछइ सार्थवाहि नलनी प्रिया जाणी, बहिन करी मानी । पछइ सार्थवाहि दवदंती तंगोटी माहि राखी । सुखिई मार्ग उलंधिवा लगा।

तेत इड् वरसाल उ आवि उ । कादम माहि गाडां खूचिता लागां । बलद हाली न सकई । तिवारइ च्यारि मास संघात तिहां रहिंड । पछइ सती घणा कालनी स्थिति जाणी सार्थवाहनइ विण-कहिइ एकािकनी नीकली । तिहां-हूंती जेतलइ आधी चाली, तेतलइ राक्षस एक सामुह आवि उ । किहिवा लाग उ, 'हूं घणा दिनन उ भू खिउ छंड । आज तुझनइ खाइसु ।' तिवारइं सती बीहती इ हूंती घीरपण अवलंबीनइ कहिवा लागी, 'अहो राक्षस ! जु जीव जाय उ. तु मरण छइ । पणि परस्त्रीनइ स्पर्शि तूं भस्म थाएसि ।' इणि वचिन राक्षस हिष्ठ हूं तु कहइ, 'विष्छ ! तूठउ । भणि, सिउ उपगार कर छं ?' तिवारइ सती कहइ, 'जु तूं देवता छइ, तु किह, मुझनइ नल कहीइ मिलिसिइ ?' तिसिइं अविधनइ बिल राक्षस कहइ, 'बारमइ चिरिस पितानइ घरि तुझनइ नल मिलिसइ ।' पछइ राक्षस कहइ, 'हे भिद्र ! जु कहइ, तु तुझ इ क्षण एक-माहि पितानइ घरि लेई मूक्डं ।' तिवारइं सती कहइ, 'तूं हनइ कल्याण हु । हूं परपुरुषन उ स्पर्श न कर छं ।' इणि वचिन देवता प्रकट हुई, आपण उं लप देखाडी, अहस्य हूउ । हिव दवदंतीइ बार वरसनी अविध जाणी पछइ एहवउ अभिग्रह की घउ, 'जां भर्तार न मिलइ, तां-सीम रक्त-वस्त्र, तांबून, भूषण, विलेपन, विगई-एतलानु

मुझनइ नीम ।' पछइ पर्वतनी गुफा-माहि श्री-शांतिनाथनी माटीनी प्रतिमा करी, एकइ खूणइ मांडी । तिहां चनना कुमुम आणी सदा इ पूजइ । त्रिहु उपवासि पारणउं करइ, अनइ पारणइ फलाहार लिइ । नवकार गुणई । एकली रहइ छइ ।

एहवह ते सार्थवाह दवदंतीनइ अणदेखतड, असमाधि करतड, पगई पिंग केडिइं आविड । तिहां गुफा-माहि देव-पूजा करती दवदंती देखी सार्थवाह पूछइ, 'ए कडण प्रतिमा ?' दवदंती कहइ, 'ए श्री शांतिनाथनी प्रतिमा ।' इम आलाप-संलाप सांभली दूकडा तापस छइं ते आव्या । पछइ दवदंतीइ तेहवड कांइं उपदेस मांडिड, जिम वसंत सार्थवाह श्रावक हूड । पछइ सर्व संघात तिहां आणी राखिड । इसिइ तापसनइ आश्रमि महा-मेघवृष्टि होइवा लागी । तिणि करी तापस आकुला हुंता दवदंती-कन्हिल आव्या । तिवारइं दवदंतीइं मेघनईं कहिड, 'जु मइं जिन-धर्म सूधड पालिड छइ, तु मेघ म वरिसिजो ।' इणि वचिन मेघ थंभाणड । पछइ तापस धनकनक आणी दिइ पणि सती न लिइ । तिहां तापसि जिनधर्म पडिवजिड । पछइ वसंत सार्थवाहि तिहां महानगर वसाविडं । वली श्री-शांतिनाथनड प्रासाद कराविड । सती दवदंतीइ पांच सईं तापस प्रतिबोध्या। तेह-भणी तापसपुर ए नाम हुउ ।

हिव अन्यदा यशोभद्रसूरि आचार्य तिहां आव्या | ते-कन्हिल विमलमित-कुलपितइं दीक्षा लीघी । इसिइ पर्वत-ऊगिर उद्योत दीठउ । तिहां एक देवता आवइ, एक जाइ । इम जयजया- त्व देखी तापस, सार्थवाहना लोक, सर्व जाग्या । पछइ दवदंती तापस-विणग-सिहत पर्वति चडी । तिहां जु जोइ, तु सिंहकेसर मुनिनइ केवल ज्ञान ऊपनं छइ । एह-भणो देवता केवल-मिहमा करइ छइं । पछइ सपरिवार दवदंतीइ ते केवली बांदिउ । एहवइ यशोभद्र केवलीन गुरु तिहां आविउ । ते पणि केवलीनइ बांदी आगिल बइठउ । तिसिइ सिंहकेसरि-केवली धर्मीपदेश देवा लागउ । तिवारइं तापसे पृछिउं, 'स्वामी ! दवदंतीइ जे मेह राखिउ, ते किम ?' सुनि कहह, 'ए शीलनउं प्रमाण । अनइ जे संघात चोर-हृंतु राखिउ, ते ही शीलनउं प्रमाण ।' इम कहितां जि ते केवली मोक्षि पहुतउ । पछइं यशोभद्रसूरि कन्हिल दवदंतीइ आपणउं भवांतर पृछिउ । तिवारइ गुरे सर्व कहिउं। तिहां तापसे दीक्षा लीघो। पछइ सार्थपितई प्रासादनी प्रतिष्टा करावी। इम दवदंतीइ सात-वरस-तांइं प्रभावना-पूजा कीघी।

हिव अनेरइ दिविस कोई गुफानइ बारणइ आवी कहइ, 'हे दबदंति ! मइ तउ दूकडउ जि नल दीठउ, पणि माहरइ साथ जाइ छइ । तेह -भणी हूं नही पडलउं ।' ए वात सांमली दबदंती हिंति हूंती शब्द-केडिइं जि नीकली । आगिल जु घणी मुंइ गई, तु मनुष्यनइ न देखड । कांई ? देवो दुर्बलघातकः'। दबदंती पछइ अरण्य-माहि पडी । तिवारइ वली बहसइ, वली ऊठइ, बली रुदन करइ, वली वल्लभनइ स्मरइ, वली चीतवइ, 'किसिउं करउं ? किहां जाउं ?' इम चीतवतां राखसी एक आवी कहइ, 'हूं तुझनइ खाइसु ।' तिवारई दबदंती कहई, 'जउ मई नल टाली बीजउ मिन करी प्रार्थिउ न हुइ, तउ राखसी ताहरउ प्रभाव जाउ ।' तेतलइ राखसी अहहय हुई । पछइं दबदंती आधी चाली, पणि त्रिषाक्रांत हुई । एहवइ नदी एक जिल करी रहित दीठी । तिवारइ दबदंती कहइ, 'जु मइ सूधउं समिकत्व पालिउं छइ, तु सांपत पाणी प्रकट थाउ ।' इम कही जेतलइ पाटू आहणी तेतलइ जल नीकलिउं । पछइ पाणी आश्वादी, आगिल जाती वड-तलइ जई बहुटी । तिसिइ घनदेव सार्थवाह तिहां आविउ । तिणि ते सती दीठी । पछइ तेहनइ साथइ अचलपुरि आवी । हिवइ ते अचलपुरनइ परसरि वावि

एक छइ । तिहां तृषांक्रांत पाणी पीवा-भणी आवी । इसिइ पाणीहारि जाणइं जउ, 'ए जरू-देवता छइ ।' पछइ जेतलइ वावि-माहि पइटी, तेतलई दवदंतीनउ पग जलगोधाइं ग्रसिउ । तिवारइं जि त्रिण्णि नवकार कहिया । तेहनई प्रमाणि पग मूंकाणंउ । पछइ दवदंती पाणी पीईं वाविनी वरंडीइ आवी बहटी ।

हिनइ तीणइ नगरी ऋतुपर्ण राजा राज्य करइ छइ । अनइ चंद्रयशा भार्या । नेहनी दासी एक नानिइ पाणी भरिना आनी । तिणि ते सती दीठी । तिणि दासीइ जई चंद्रयशा राणीनइ कहिंउ । तिनारई नळतुं चंद्रयशा कहइ, 'जा, ते स्त्री इहां आणि । जिम माहरी पुत्री चंद्रवती, तेहनइ बहिन हुसइ ।' इम कही दासी-पाहिई तेडानी, पुत्री करी मानी । पणि सगपण कुणहइ न जाणिउं । इम एकदा चंद्रयशा कहइ, 'जेहनी दनदंती, तेहनी ए संभानीइ छइ । पणि ते नळनी पत्नी, इहां इम किम आवइ १' नळी ते स्त्री पूछी । तुरी दनदंतीइ आपणउ चुत्तांत न कहिउ । पछइ चंद्रयशाइ पुत्री करी मानी । तिहां शतुकारि दान दिइ छइ ।

इसिइ पिंगल चोर मारिवा काढिउ | तिसिइ तिणि दवदंतीइ ते चोर मूंकाविउ | पछइ तिणि चोरि दवदंती माता करी मानी | तिवारइ दवदंतीइ चोर पूछिउ, 'तूं कउण ?' तिसिइं चोर कहइ, 'हूं वसंत-सार्थवाहनउ दास पिंगल । कर्मनउ प्रेरिउ हूंतउ इहां आवी चंद्रवतीनी रतननी करंडी चोरी | तेतलई हूं तलारि झालिउ | पछइ राजाइ वध-भूभिकानउ आदेस दीघउ | अनइ तई ईणी वेलाई जीवदान दीघउं |' वली चोर कहइ, 'माता ! जित्रारइ तूं तापसपुर-हूंती गई, तिवारइ सार्थवाहि भोजन मूंकिउ | एहवइ यशोभद्रसूरि आव्या | तीणे गुरे सातमइ दिहाडइ वसंत-सार्थवाहनइ पारणउं कराविउं | पणि रोतउ, असमाधि करतउ रहइ नही | पछइ ते वसंत सार्थवाहनइ पारणउं कराविउं | पणि रोतउ, असमाधि करतउ रहइ नही | पछइ ते वसंत सार्थवाह, अन्यदा, घणी मेटि लेई, कूतर राजानई मिली, संतोष उत्पजावी, ते तापसपुरनउ राजा हुउ | तिहां कूत्ररि छत्र-चामर देई, ते सामंत करी मूंकिउ | अनइ वसंतश्रीसेखर एहवउं नाम दीघउं | वली कृतरि अनेक वाजित्र दीधां | पछइ वसंतश्रीसेखर गाजतइ बाजतइ आपणइ नगरि आविउ | सुखिइ राज पालइ ।' हिव दवदंनी कहइ चोरनइ, 'तू दीक्षा लेइ, संसार-हुंतउ निस्तरि ।' तिवारइ पिंगलि तेहनउं ववन मानी दीक्षा लीधी |

एहवइ प्रस्तावि मीमि राजाइं वात सांमली जु, 'नलि राज हारिजं अनइ क्वरिह नल बाहरि काढिउ। पछइ दवदंतीनइ लेई अटबी-माहि पइटउ। आगलि ते न जाणीइ जीवइ छड़ं कि मूआं।' तिवारइ पुष्पदंती माता पणि रोवा लागी। पछई भीमराजाइ हरिमित्र नले-दवदंतीनी सुद्धि लेबा-भणी देस-माहि चलाविउ। हिव ते गाम, नगर, वन जोतउ जोतउ अचलपुरि आविउ। तिहां आवी राजा-कन्हिल नल-दवदंतीनी वात पूछी। तिवारइ चंद्रयशा बइटी हूंती। तिण वात सांमली नल-दमयंतीनउं स्वरूप पूछिउ। तिवारइ हरिमित्रइं सर्व वात कही। तिहां सर्व असमाधि करिवा लागउ। एहवइ सहू असमाधि करतां देखी ते हरिमित्र भूखिउ हूं तउ, दानशालाइ जिहां शत्रुकार मंडाणउ छइ, तिहां जु आवइ, तु आगलि भीमराजानी पुत्री दीठी। जलखी। पछइ दमयंतीने पगे लागउ। भूख-तिरस सर्व विसरी गई। पछइ पूछइ, 'माता! तुम्हनइ ए कउण अवस्था?' इम कही तिहां-थकउ ऊठी चंद्रयशादेवीनइ वधामणी दीधी। कहिजं 'ताहरी दानशालाइं दवदंती छइ।' तेतलइं चंद्रयशा तत्काल तिहां आवी कहिवा लग्गी, 'मइ एनलउ काल तू उलखी न सकी, पणि तई आपगाउं काई न जणाविउं? किवारई जु भाविठ आवइ, तुही मातृकुलि लाज न कीजह।' अथवा वठी कहइ 'तइं नल मूकिउ कि नलइ तुं मूकी?'

तिवारइं दवदंती कहइ 'ए वात पछंड कीजिसिइ ।' इम कहइ हूंतइ चंद्रयशां आपणइ घरि आणी, स्नानमोजन करावी, सवे नलनी कथा पूछी । दवदंतीइ सवे वात कही । तिवारइं सघलानइ मिन हर्ष उरानड । तेतलई कोई एक देव, आपणी कांतिइं समा-माहि उद्योत करतड, आवी दवदंतीनइ प्रणाम करी कहइ, 'हे मात ! ते हूं पिंगल चोर, जे तई प्रतिबोधी, दीक्षा देवरावी । पछा हूं इमशान-माहि प्रतिमाइ रहिउ हूंतड । तिहां चितानड दवानल आविउ, तिणि करी हूं दाधउं। पणि मइ परीसह अहिआसिउ । तेह-लगइ मरी, ताहरइ प्रसादइ, हूं सौधम-देवलोकि देवता हुउ ।' इम कही सभा-माहि सात कोडि सुवर्णनी दृष्टि कीघी सर्व देखता । पछइ ते धमनें उत्तर देखी राजाइं जिनधम पिडविज । तेतलइ हरिमित्र कर्इ, 'इर्! दवदंती घणउ काल रही । हिवइ पितानई घरि मोकलउ ।' पछइ राजाई आपणउ कटक संघाति देई सती पितानइ घरि मोकली । पिताइं पणि आवती जाणी, माता पिता सामुहा आव्या । तिहां दवदंतीई मा-बाप नम्या । तिवारइं हर्ष अनइ विखवाद समकाल हूआ । पछइ नगर-माहि आणी, सात दिन-ताइ महोत्सव करी भीमि राजाई नचनउ सर्व वृत्तांत पृछिउ । तु अहो कुडज ! जिवारइं दवदंतीई ते नलनी सर्व वात कही तिवारइं हूं तिहां बइठउ हूं तउ । पछइ दवदंती बापनइ घरि रही । तिहां राजाई हरिमित्रनई पांचसई गाम दीधा । अनइ वली कहिउं, 'नलनइ आगमनि तक्षनइ अर्थ राज आपिसु ।'

इसिइं प्रस्तावि पूर्वि आपणइ काजि दिधपर्ण राजानउ जण एक सुंसुमारपुर-थकउ भीम-राजा-कन्हलि आविष हूंतउ, तेणइ भीमराजा-आगलि एहवी वात कीषी जु, 'नल राजा-नड सूआर दिघपर्णराजा-कन्हिल आविउ छइ। ते सूर्यपाक-रसवती करइ छइ।' ए वात सांभली दवदंती कहइ, 'तात! नल टाली ए विद्या अनेथि नथी। पणि गुटिका,मंत्र, देवतांना योग-लगइ आपणंड रूप गोपविंड घटइ । तु सही तुम्हारउ जमाई तेह जि घटइ ।' पछइ भीमि मुझनइ सीख देई हूँ इहां मोकलिउ । हिव हूँ पूछतउ पूछतउ इहां आविउ । त कुबडान उं रूप देखी मइ चींतिवड, ते नल किहां अनइ तूं किहां ?" तिवारइ कुब्ज रोवा लागउ । दबदंतीनउ वियोग चीति आविउ । पछइ कुन्ज कहइ, 'अहो ब्राह्मण ! तूं भलइ आविउ । वारु कथा कही जे मुशनइ संतोष ऊपजाविउ। तु आज तू माहरइ घरि आवि ।' इम कही ब्राह्मण घरि तेडी, सूर्यंपाक-रसवतीनुं भोजन करावी, अनइ जे पूर्विइ लाख टंका लाघउ हतउ ते ब्राह्मणनइ दीघउ । वली आपणां आभरण दीघां। पछइ ब्राह्मणि भीम राजा आगिलि जई ते कूनडनउ रोइवंड, स्पैंगक रसवतीनुं करिवंड, लक्ष टंकानंड देवडं-ए सर्व वात कही । तिवारइं दवदंती कहइ, 'तात ! इहां कांई विचारणा न करिवी । ए सही कृत्रडनइ रूपिई तुम्हारउ जमाई छइ। एक बार किम ही इहां आणउ, जिम हूं ऊलखुं।' तिवारइ भीम कहइ, 'कूड़उ सर्यवरामंडप मंडावी सुंसुमारपुरनउ अधिपति तेडावीइ। अनइ जुनल होसिइ त ते साथि आपहणी आविसिइ । कांइ, नारीनउ पराभव पशुनइ पणि दोहिछ हुइ । वली अश्वना हीयानी वात नल टाली बीजउ को न जाणइ। एह-भणी सयंवरा-मंडपनरं मुहूर्त्ते दूकडुं कहावउ ।'

पछई भीमराजाई दिधिपर्णराजा-समीपि दूत मोकली कहाविउं, 'अहो दिधिपर्ण राजेन्द्र! जे दबदंतीनउ संख्वरा-मंडप छइ। चेत्र छुदि पांचिम महूर्त छइ। इणि कारणि तुम्हे बहिला आविज्यो।' इसिउं कहाविइं दिधिपर्ण विखवाद करइ। तिवारइ कूबड कहइ, 'राजन्! आज सचित कांइ ?' तिवारइ राजा कहइ, 'अहो कूबड! नल राजा परोक्ष हुउ सांमली सांपत भीम

राजाइं दवदंतीनइ हेति संयवरा-मंडप मंडाविउ । अनइ ते मुहूर्त आडा सघलाइ च्यार प्रहर छइ । तेह-भणी मइ तिहां न जवाइ । एह जि चिंतानुं कारण ।' तिवारइ कूचड कहइ, 'हूं तुझनइ कुंडिनपुरि प्रभाति लेई जाउं, जु मुझनइ मनमानतां घोडा नइ रथ आपइ।' तिसिइ राजाइ रथ मजूद कराविउ । पछइ तिणि रिथ राजा, छत्रधर, तंबोलदार, वि चमरदाल, अनइ कूनड-एतला जणा रथि बइठा। वली कूनडि आपणी करंडी अनइ श्रीफल ए वि वानां संवाति लीधा । इम छ जणा रथि बइठा । पछइ कुबडइ रथ खेडिउ । जिम वायनउं प्रेरिउं प्रवहण चालइ, तिम रथ चालिवा लाजउ । इम चालता राजानुं उत्तर संग ऊडी भुई पडिउं । तेतलइ राजा कहइ, 'अहो कूबड ! रथ राखि, जिम वस्त्र लिउं तिवारई कूनड हसीनइ कहइ, 'राजन ! जिहां वस्त्र पडिउ ते अनइ रथनइ पंचवीस जोअणनउ आंतरउ हुड । अजी ए घाडा मध्यम छई, जु उत्तम हुई तु पंचास जोयणनउ अंतराल हुइ ।' इम मार्गि चालतां कउठनउ वृक्ष एक दीठउ । ते देखी राजा उत्कर्ष-लगइ कुबडनइ कहइ, 'ईणिइ वृक्षइ जेतलां फल लागा छइ तेतलां वलतां तुझनइ हूं किह्सु । हिवडां तु कालक्षेप खमइ नहीं।' तिवारई कूनड कहइ, 'राजन् ! हिनडां जि कउतिग देखाडि। तू कालक्षेपन अभय माणेसि ।' तिसिइं राजाइं कहिउ, 'ईणइ कडिंठ अढार सहस्र फल छइं।' पछइ कूबड३ एक मुष्टिनइ प्रहारि वृक्ष आहणिउ । तेतलई तडतडाट करतां फल भुई पड्यां। जुगणी ओइ तुते अदार सहस्र फल हुआं। पछइ कुन्जि ते विद्या लीघी। अनइ अश्वा हीआनी वात जाणिवानी विद्या राजानइ दीधी । तिसिइ एक दिसिई सूर्य ऊगिउ आइ ए हइ दिसिई विदर्भानी पोलिनई बारणइ आव्या ।

तेतलइ दवदंतीइ रात्रि सउणउं लही प्रभाति बापनइ कहइ, 'तात ! आज निवृत्तिदेवीइ हुं कोश अनगरीइ लीभी । तिहां मुझनइ वन देखाडि^उ । वली तेहनइं वचिन हूं सहकारि चडी । वही तीणई एक कमड माहरई हाथि दीघउं। एहवइ पंखीउ एक वृक्ष-तहाइ पडिउ ।' एहवड सउणउ दवदंतोई कहिउ । तिवारई भीम कहइ, 'वितिस ! तई सउणउं उत्तम दीठंड । जे कोशलानउ वन दीठउ ते वली पूर्विली संपदा पामेसि । अनई सङ्कार ते तुझनई नल मिलसिई । वली जे पंखीउ पडिउ ते जाणे कूबर राज-हूंतउ पडिसिइ।' इसिड सउणानउ विचार सांभली हुर्ष धरिवा लागी। तेतलइ वधामणीइ आवी वधामणी दीधी। कहिउँ, 'स्वामी! दिधपर्ण नइ कुनड पोलिनइ बारणइ आव्या ।' पछइ, भीमराजा साम्हउ आवी, घणउं बहुमान देई, आवासि ऊतारिया । तिहां कूबड-पाहइ सूर्यपाक-रसवती करावी सर्वे जिम्या । पछइ दवदंतीई कृबड आपणइ घरि अणावी बापनइ इसिउं कहइ जउ, 'कूबड-रूपि नल। कांई, ज्ञानीई तु इम कहिउं हंत उं जु, नल टाली सूर्यपाक-रसवती बीज उको करी न जाण इ । तु एह-भणी ए निषधराजान उ पुत्र नल जि । इहां संदेह नही । मुनिनां वचन अन्यथा न हुई । वली एक विशेष छइ,जु एहनी आंगुली लागइ मुझनइ रोमांच ऊपजइ तु जाणिज्यो नल, नहीतर नहीं।' तिवारइ कूबड कहइ, 'आजन्म परस्त्रीनइ हूं स्पर्शे न करउं ।' पछइ भीमराजाइ घणी अभ्यर्थना करी आंगुलीनउ स्पर्श कराविड । तेतलइं दवदंतीनइ रोमांच ऊपनंउ । तिसिई दवदंती कहइ, 'स्वामी! तहीइं हुं सृती मूंकी तूं गयउ । पणि हिवडां जागतां किम मूंकी जाएसि ?' इसिउं कही कूबड ग्रहांगण-माहि आणी, प्रार्थना करिवा लागी, 'प्राणनाथ! अजी आपणउं रूप प्रगट कांई न करह ? मुझनइ कांइ संतापइ छइ ?' इम कहिइ हू तह तिणइ कुनडइ

श्रीफल-बील मांजी वस्त्र-युगल काढिउं । वली करंडी-मोहि-थां आमरण काढ्यां । तेतल्ड् तरकाल कुवडउ फीटी संपूर्ण-रूपि नल प्रगट हूउ । पछइ तिहां सर्व समा-लोक देखतां नलनइ सिंहासनि बइसारी भीमराजा हाथ जोडी किह्वा लागउ, 'ए राज-संपदा, अम्हे, सर्वस्व ताहरउं। जि कांइ आदेस दिउ ते ह्ं करउं।' तिसिइं वली दिघर्ण राजा पणि ससंग्रांत नलनइ प्रणाम करी कहइ जे, 'मइ अजाणि जि कांई अवज्ञा कीधी ते त् खिम।' विल तिणि समइ धनदेव सार्थवाह मिलिवा आविउ। दबदंतीइ माईनी परिइं मिक्त कीधी। इम सघलानइ बहुमान देई, मासदिवस-सीम सर्व राख्या। पछइ नवनवा उत्सव करिवा लागा।

इम अनेरइ दिनि कोई एक देवता आवी दवदंतीनइ कहइ, 'हे देवि! तुझनइ चीति आवइ, जे पूर्विइ तापसनड नायक सम्यक्त्व हैवराविड हूंतड ? पछइ वली दीक्षा लेवरावी ? ते हूं सौधर्म-देवलोकि देवता हुउ ।' इम कही सात कोडि सुवर्णनी वृष्टि करी अदृश्य हुउ । पछइ वसंत सार्थवाह, दिष्पण, भीमादिक राजाए मिली नलनइ राज्याभिषेक कीधउ । पछइ मलइ सुहूर्ति नल राजा अयोध्या-भणी चालिड । माणि अनेक देस, गाम, नगर साधतड साधतड अयोध्यानगरीनइ परसरि रितविवलम-उद्यानविन आवी ऊतरिड । एह्वइ कूचरि वात सांभली बीहवा लागड । तेतलह नाल दूत मोकली कहाविडं, 'बांधव ! आवि, पासे करी वली खेलीइ । जु हूं जीपडं तु माह-रंड राज, अश्व, हस्ती, सर्व माह उं, अनइ तूं जीपइ तु ताहरंड ।' इम जिवारइ कहाविडं, तिवारइ कूचरि चींतविड, 'सही ए-साथिइ 'रण-भूमिकाइ नहीं जीपाइ, पणि पासे करी नलराजा आगिइ मइ जीतड छइ अनइ वली जीपेसु ।' इम विमासी तिहां आवी बेहू बांधव पासे खेलिबा लागा । हिव माग्यना उदिय करी नलराजाइ सर्व पृथ्वी जीती । पछइ नलइ आपणडं राज्य लीघडं अनइ क्वरनइ माई-भणी युवराज-पदवी दीधी ।

हिवइ नलराजा आपणउं राज लेई दवदंती-सहित कोशलानगरीना चैत्य वांदिवा गयउ। इसिइ अनेक राजा भेटि लेई आविवा लागा। इम घणा वरस भरतार्धनुं राज्य पालिउं। तेतलइ निषध पिता देवलोकथी आवो नलनइ उपदेश दिइ, 'ए असार संसार, तेह-माहि चारित्र जि सार। तेह-भणी हिव तूं दीक्षा लिइ'। पछइ नलराजाइ पुष्कल-पुत्रनइ आपणउं राज देई, दवदंती-सिहत दीक्षा लिधी। तिहां सतरे भेदे संयम पालतउ पृथ्वी-माहि विहार करिवा लागउ। पणि नल सकोमलपणा-लगइ चारित्र पालतउ दीलउ हूउ। एहवइ निषधि देवि आवी दृढ कीधउ। तुही नल-मुनि दवदंतीनइ विषइ कामातुर हुउ। वली पिताइ आवी प्रतिबोधिउ। तुही चारित्र पाली न सकइ। पछइ नल-मुनिइं अणसण लीधउं। तिवारइ नलनइ स्नेहि दवदंतीइ पणि अणसण लीधउं। पछइ अणसण-सिहत नल मरी कुबेर-नामि उत्तरदिशानउ अधिपति हूउ, अनइ दवदंती तेहनी देवी हुई। इम दवदंतीनी परिइं अनेरे लोके शील पालिवउं।

इति श्री. शीलोपदेशमाला-बालावबोधे नल-दवदंतीकथा ॥३०॥

*

हिव श्री कमला महासतीनी कथा कहीड़-

[३१. कमला महासतीनी कथा]

श्री. लाटदेशि भृगुकंच्छनगरि मेघरथ राजाराज करइ। तेहनइ गृहांगणि विमला राणी। तेहनी पुत्री कमला एहवइ नामि। सात पुत्र ऊपरि ते पुत्री जाई। महा रूपवंति, वाधती वाधती

१. К. संप्रामि ।

यौवनभरि आवी । इसिइ सोपारइ पत्तिन राजा श्री.रितवल्लभ राज करइ। तेहनइ मेघरथ-राजा- साथि प्रीति हुई छइ। ते मेघरथ-राजानई रितवल्लभ दिहाडीनी भेटि मोकल्इ। इम बिहुनइ क्रीति वाधिवा लागी । दूत माहोमाहि आवता जि रहुई ।

अन्यदा मेघरथ चींतवइ जु, 'रितविल्लम समान राजपुत्र कोई दीसई नहीं । तु माहरइ कमला पुत्री छइ ते रितविल्लमनई देई प्रीति वाधती करउं।' इम विमासी मेघराजा सभा-माहि आवी बइटउ। तेतलइ कमला पुत्री पितानइ उत्संगि जई बइटी। तिसिइ वरनी चिंता ऊपनी। राजा प्रधाननइ कहइ, 'पुत्रीनइ वर कडण कीजिसिइ ?' तिवारई प्रधान कहई, 'स्वामिन! कुल,शील, रूपि, योविन करी रितविल्लभ-राजा योग्य दोसइ छइ।' तिवारइ राजा कहइ, 'माहरी मनसा-सारइ तुम्हे वचन कहिउं। तु इणि कारणि राजा मुहताने लोचने करी सहस्राक्ष कहीइ ते वात साची।' पछइ प्रधाने कि. 'स्वामी! आपणपे दूत मोकली नातुं करावीइ।' पछइ राजाइ सार्दू ल प्रधान मोकली, लग्न-ऊगरि रितविल्लभ तेडावी, भलइ मुहूर्ति रितविल्लभनइ आपणी पुत्री कमला दीधी। घणइ विस्तारि पाणिग्रहण हूउं। तिहां हाथ-मेल्हावणीइ रतन, अलंकार, गज, अश्व घणा दीधा। पछइ रितविल्लभ परणी घर-भणी चालिउ। मेघरथ-राजा संप्रेडी पाछउ वलिउ, अनइ रितविल्लभ मार्ग उल्लंबी आगणइ नगरि महाविस्तारि आविउ। तिहां कमला-सिहत सुल भोगवतां घणा दिन गया।

इसिइं समुद्र-माहि गिरिवर्धन-नगरि कीर्त्तिवर्धन राजा राज कग्इ । पणि ते महा स्त्री लाला । तिण अन्यदा कमलानुं रूप सांभली काम-विह्नल हुउ । तिवारइ युगंधर-मित्र मंत्रवादी एकांति तेडी कहिउं, 'ताहरी पीति, ताहरा मंत्रनुं सिउं फल, जे हु कमला स्नीनइ की घड दु:स्वी थाउं छउं ?' तिवारइं मिनई कहिउं, 'स्त्री तु बिहुं प्रकारे छइ-एक पतित्रता, बीजी असती । तिहां सती हइ ते आणिवान असिउं प्रयास कीज ? ज कशीलि स्त्री हइ त हिवडां आण उं। तिवारइं राजा कहइ, 'ए वातनी सी चिंता करइ ? एकवार इहां-ताई आणि, जिम तेहनउं फला-फल देखाइड ।' पछइ मित्र भूमिग्रह-माहि पइसी मंत्र-जाप-होम तिम करिवा मांडचा, जिम क्षण-एक-माहि, कमला जिम पल्यंकि सूती हूंती तिम जि थकी आकर्षी आणी। तिरिइ युगंधर मित्र चींत-वइ 'एहनइ जु हुं जगाडिसु, तु मुझनइ सतीपणइ हिवडा जि भस्म करिसिइ।' इम चींतवी कीर्तिवद्ध न-नइ कहिंड, 'मइ आकर्षणी-विद्यानइ बलि ते कमला आणी छइ । आघी वात तूं जाणइ ।' तिसिंड प्रभाति कमला आपहणी जागी । जउ जोइ तु न ते गाम, न ते ठाम, न ते आवास । एक न देखह। तिसिइ यूथ-भ्रष्ट हरिणीनी परिइं सर्व दिशि जोइवा लागी। तेतलइ कीर्तिवर्द्धन राजा कहइ, 'हे भद्रि ! ए घर, ए ठाम, ए संपदा, सहू ताहरउं। हूं इ ताहरउ आदेश-कारक छउं। ए वात सांभली कमला रीसाणी हूंती कहइ, 'अरे दुष्ट! तूं कीर्तिवर्द्धन फीटी आज अकीर्तिवर्द्धन हुउं । तु मुझ-आगिल सिउं ऊभउ रहिउ ? हूं तु रितवल्लभराजानी प्रिया. ते तहनइ किम होसिइ ? जिप रत्नावली कागनइ कंठि न छाजइ। बापडा! मुझनइ शीघ्र माह-रइ घरि मोकलि । नहीतउ, माहरा भर्तारनां बाण ताहरा मस्तकनई दिग्पालनी पूजा-भणी करुपसिइं।' तिवाग्इं कीर्तिवर्द्धन-राजा कहइ, 'हूं बलारकारि ताहरउं शील मांजिसु ।' इम कही सर्वांग लोहि वीटी, पिंग अठील घाती, बंदीखाणइ घाती मूकी छइ।

एहवइ रतिवल्लभराजा जु जागइ तु कमला राणीनई न देखह। तिवारई चोरइ मुस्यानी परिइं राजा आकुल-व्याकुल हूंतउ सर्वत्र जोइवा लागउ। तुही न देखह। पछइ पाहुरी पूछ्या। ते पणि विस्मयापन्न हूंता कहई, 'राजन ! इहां पादचारी कोई नाविउ । अम्हे तुप्रभात-तांई जागता हूंता ।' पछइ सघछे द्वीपानतरे चर मोकल्या । पणि कहीं सुद्धि न पामी । तिवारइ राजाइ आपणइ मिन निश्चाउ कीघउ जु, 'सही ए राणी विद्यासिद्ध-पुरुषि विद्यानइ बिल अपहरी। तु ए माहरउं राज फोक, माहरी संपदा, मारहउं बल ए सहू फोक, जे मई आपणी प्रिया गमाडी । तु भई, जि को प्रियानी सुद्धि आणइ तेहनई हूं आपणउं अद्धे राज आपउं ।' इम कही नगरमाहि पडह बजाविउ।

इम करतां पांचमइ मासि केवली नगरनइ परसिर आवी समवसिर । पछइ तिहां राजाई जई केवली वांदी देशना सांभली । पछइ पूछिवा लागड, 'स्वामिन ! कमलाप्रिया जीवह छइ कि मूई ? अथवा ए किहनंड विलिस्त ? अथवा जीवती मिलिसिइ ?' इम पृछिई हुंतइ केवली कहइ, 'एहनड भवांतर सांभलि । विस्मयाक्षि पुरि दुर्जय राजा । तेहनी भार्या घन्या एहवइ नामि हूंती । तिणि एक बार कोघ-लगइ दासी एकनई गाढी कूटी, बांघी करी, केतलाएक प्रहर सीम मुंइहरा-माहि घाती राखी । पछइ दया ऊपनीइ बाहिर काढी । तीणइ भवि कमलाइ ए कमें ऊपार्जिडं । पूर्व-कर्म-लगइ संप्रत कीर्तिवर्द्धन-राजानइ मित्रिइ विद्यानइ बिल अपहरी, तिहां बंदीखाणइ घाती मूंकी छइ । ते पाछिलडं कर्म उदिय आविड । ते घन्या मरी सांप्रत ताहरी प्रिया कमला हूई । अनइ जे ईणइ भवांतरि ज्ञानपांचमीनड तप तिषड, ते पुण्यनइ प्रमाणि हिवइ-मास एक-माहि बंदिमोक्ष होसिइ । तुझनइ मासनइ प्रांते निश्चईसिडं मिलिसिइं । कांइ, कर्म भोगच्यां विण न छूटीइं ।' इम केवलीना मुख्यी कमलानड पूर्वभवांतर सांभली घणा जीव प्रति-बोध्या हूंता आपणइ आपणइ घरि गया । पछइ रितवल्लभ राजें द्र कटक मेली कीर्तिवर्द्धन-ऊपरि चालिवा लागड ।

एहवड तेह जि भुवनभानु केवली विहार करतउ गिरिवर्द्धनपुरि आविउ । तेतलह केवलीनह प्रभावि कमलाराणीनइ गलानी सांकल, पगनी अठील, सर्वे त्रुटी । तिसिइ श्री कीर्तिवर्द्धन-राजा भुवनभान्-केवलीन्इ वांदिवा गयउ । तिहां महात्माइ धर्मलाभ दीधउ । वली विशेष प्रतिबोध-भणी कमलानउ भवांतर कहिवड मांडिउ। कहिउं, 'जि को सुद्ध शील पालइ तेहनइ लोहनी सांकल बटी जाइ।' ए बात सांमली कीर्तिवर्द्धन मन-माहि चिकिउ जु, 'मइ लोक-द्रय-विरुद्ध ए आचार मांडिउ, जे मइं कामार्त-हुंतइ कमला-महासतीनइ पाङ्कउं चींतविउं । पिंग ते एहनइ शीलि करी सह निष्फल हुउं।' इम चींतवी पछइ पाधरउ बंदीखाणइ जई बंदीखाणा-हंती कमला बाहरि काढी। लाजतु हूंतु राजा पंगे लागी खमाविवा लागउ जु, 'हूं महा पापी, विरांसिउ । आज पछइ तूं माहरइ बहिन, तूंह जि धर्माचार्य, जे हूं पाप करतंउ निवारिउ । हे बहिन ! तू रतिवल्लभ-साजानी रीस उपसमावे । हिव तुझनइ हूं प्रवहणि बइसारी ताहरइ नगरी लेई जाइस ।' इम कही जेतलइ प्रवहण सज्ज करो, कीर्तिवर्द्धन राजा कमलानइ लेई चालिउ, तेतलइ रतिवल्लभ-राजा कटक मेली सीमा-सेंढइ आविउ। तिस्इ कमलाइ सामुहउ जण मोकली कहाविउं जु. 'स्वामी ! ताहरइ प्रसादि हूं अक्षतशील हूंती, कीर्तिवद्ध न बांधव साथिइं आवडं छंड । तुम्हे ए राजा-ऊपरि कोप म करिज्यो ।' एहवडं स्वरूप सांमली राजा चींतवड. 'अहो शीलनूं महातम्य जोउ, जे कमलानइ शत्रु हूंता ते मित्र हुआ ।' इम माहोमाहि बेह राजा मिल्या । बिहु उचित प्रतिपत्ति कीधी । पछइ कमलासती महा विस्तारि नगर-माहि आणी ।

हिव केतला-एक दिवस कीर्तिवर्द्धन कमला-बहिन-समीपि रही, पछइ आपणइ नगरि पहुतड । पछइ रितवल्डम कमला-सिहत ग्रहस्थधमें पाली, अवसरि पुत्रनइ राज देई, दान, संघपूजादिक भक्ति करी, श्री-चंदनाचार्य-समीपि दोक्षा लीधी । चारित्र पाली, धातीयां कमेनइ श्रिय केवल्जान पामी, बेहू मोश्र पहुता ।

इति श्री-शीलोपदेशमाला-बालाविबोधे श्री कमला-महासती कथा ॥३१॥

हिव कलावतीनी कथा कहीइ-

[३२. कलावतीनी कथा]

ईणइ जंब्द्रीपि, मंगलावती-विजयि श्रीशंखपुर नगर । तिहां शंख नामा राजा राज्य करइ। हिवइ ते राजा एकदा सभा-माहि जई बहटउ। एहवइ गज-श्रेष्टिनउ पुत्र दत्त पहवइ नामि, तिणि मेट आणी राजा-आगिल मूकी प्रणाम कीघउ। तिसिइं राजाइ आगता-स्वागत पूछिउं। वली राजा पूछइ, 'कहउ, कांई देसांतरि कउतिग देटउं?' तिवारइ दत्त कहइ, 'राजन! देवशालपुरि नगरि हूं वाणिज्य-नइ हेतिइं गयउ हूंतउ। अनइ वाणिज्य करी जु पाछउ वलिउ, तेतलई अंतरालि कन्या एकनं रूप दीटउं। ते तां मुखि करी न कहवाई। पणि तेहनी वानगी आणी छइ।' इम कही चित्रलिखित रूपनी पाटी राजा-आगिल मूंकी। ते रूप देखी राजा दत्तनइ कहइ, 'ए रूप देवीन उंघटइ। मनुष्य-माहि एहवउं रूप किहां?' तिवारइ दत्त कहइ, 'स्वामी! ए मानवी जि, पणि विधात्राह आपणउं कुशलपणउं जणावानइ अर्थि एहवउं रूप कीघउं।' 'तु ए कउणि?' दत्त कहइ, 'देवशालिपुरि श्री-विजयसेन राजा, श्रीमती राणी, तेहनी पुत्री कलावइ एहवइ नामि। ते जिवारइं वयःपास हुई तिवारई कन्याई एहवी प्रतिशा कीघी जु, 'हूं तेहनउं पाणिग्रहण करिसु, जे बिहुं बोलनउ ऊत्तर देसिई।' ए वात सांमली राजा गाढउ सचित हूउ। पछइ सयंवरा मंडप मंडाविउ।

एहबइ आपणा नगर-भणी हूं पाछड चालिउ । जेतलइ हूं देवशालि नगरनइ उद्यानविन आविड, तेतलइ राजा विजयसेननड पुत्र जयसेनकुमार दुष्ट घोडइ अपहरिड मूर्छागत जातड दीठड । ते मइ जीवाडिड । पछइ सुखासिन बइसारी घरि छेई गयड । तिवारई राज हं ईणइ उपगारि हूं पुत्र करी मानिड । हिवइ एकदा राजा सभा-माहि मुझनइ कहिवा लागड, 'अहो दत्त ! जिम जयसेनकुमारनइ उपगार कीघड, तिम माहरी बेटी कलावतीना वरनी चिंता करि ।' तिवारई मई कहिंड, 'श्री-शंखराजा योग्य छइ ।' इसिउं कही पछइ मई कलावतीनडं रूप पिट लिखाई, हूं इहां आविड । ए तु रूप मई वानगी मात्र आणिउं छई । सघलू इ रूप लिखाइ नही ।' ए वचन सांमली राजा वली वली रूप सामुहउं जोतड, मूर्छागत हूंतड, दत्त-प्रति कहइ, एवडूं माहरुं माग्य किहां छइ, जे एहवा पात्रनड संयोग मिलई ?' तिवारई दत्त कहइ, 'नाथ ! तृ असमाधि म करि । तुझनई सउण ते हुइ छइ, जे ए पत्नी ताहरी होसिइ । पिण तुम्हे सरस्वक्षनइ आराधड, जिम च्यारि प्रथनड ऊत्तर आवडइ ।' इण वचिन शंखराजा बहावत पालतड सरस्वती आराधिश लागड । तिसिइ सातमइ दिनि सरस्वती तृठी । इसिउं कहइ, 'वत्स !ताहरा हाथनइ स्नर्श मात्रि पूतली ते ही बोलिसइ, च्यारि प्रथना ऊत्तर पणि देसिइ ।' इम कही

सरस्वती अहरप हूई । पछइ शंखराजा दत्त सिहत देवशाजनगरी-भणी सैन्ये परविरित्त चालिउ। एहवइ विजयसेनराजाई शंखराजा आवत जाणी, जयसेनकुमार सामुह्य मोकली मोटइ विस्तारि नगरमाहि आणिउ। इसिई सयंवरा-मंडिंप सर्व राजा मिल्या। भावइ जई बहुठा। तेतलइ कलावती सालकार साभरण सखीए परिवरी सभा माहि आवी। तिसिई प्रतीहारिणी कहइ, 'जि को ए च्यारि प्रक्षनउ ऊतर देसिइ, ते कलावतीनुं पाणिग्रहण करिसिइ। ते च्यारि पक्ष केहां ?

को देवः को गुरुः किं च तत्वं सत्त्वं च कीहर्शः । स्फुटीकर्तार्हेति स्पष्टं कलावत्या वरस्रजं ।।१॥ ईणिइ प्रश्नि कुण ही राजानइ वलतु ऊतर नावइ । तिवारइ शंखराजाइं कहिउं– वीतरागः परं देवो महाव्रतधरो गुरु । तत्त्वं जीवादयो जेया सत्त्वं चेंद्रिय-निग्रहः ॥२॥

ईणइ वलतइ ऊतिर दीधह हूंतह कलावती कन्या सहर्ष हूंती इ शंखराजानह कंठि जेतलई वरमाला मूंकी, तेतलह बीजा सर्व राजा रीसाणा। पणि कलावतीनह शीलि शंखराजाह सर्व राजा जीता। पछइ मलह मुहूर्त्ति पाणिग्रहण कीघंउ। मास एक तिहां रही आपणा नगर-भणी पाछउ चालिउ। तिसिह विजयराजा पुत्रिकानह शिख्या देई पाछउ वलिउ। अनह संखराजा कलावती-प्रिया, दत्त-संहित एकणि रथि बहसी, पंथ अवगाहतउ, सैन्ये परवरिउ, आपणइ नगरि आविउ। तिहां सुखह राज्य पालह छह।

इतिइ कलावतीइ सउणा-माहि काम-कुंभ अमृत भरिउ दीठउ । जागरण पामी राजानई कहिउँ । तिवारइ राजा कहइ, 'आपणइ घरि पुत्र जन्मीसिइ। ते राज्यनइ योग्य होसिइ।' पछइ जेतलई आठ मास वीस दिन गया, एहवई कडावतीनइ पिताई जाणिउं जु, 'पुत्रीनउ पहि-लंड प्रसव पितानइ घरि हइ । तेह-भणी विजयसेन राजाइ कलावतीनइ लेवा पुरुष मोकल्या छड़ । तेहनइ हाथि कलाव ीनइ भाईड़ कलावतीनड अर्थि वि ब*ि*रला लाख लाख द्रव्यना मोक-ल्या । वली लूगडां पणि मोकल्यां । तीणे पुरुषे आवी कलावतीनइ दीधां । अनइ कलावतीइ ते बहिरखा-वस्त्र राजानइ अणदेखाडिइ पहिरियां । पछई जे प्रधान आन्यां हंता ते सन्मान देई विसर्ज्या । हिवइ जे जयसेनभाईना अरयंत रुनेह-लगी कलावतीइ ते बहिरखा आगणइ हाथि बांध्या. बांधीनइ हसती हुती सखी-प्रति इसिउं कहिवा लागी, 'हे सखि! जीणइ ए बहिरखा मोक-ल्या ते साथि माहरइ गाढउ स्नेह छइ । ते दिवस, ते घडी, किवारइ होसिइ, जिवारइ है तेहनइ मिली आपणंडे जीवितन्य सफर करिस ? जिणि कारणि आज मइ तेइनां हाथना मोकल्या बहिरखा पाम्या ?' एहवउं मिश्र-वचन बोलती राजाई सांभली। तिवारई राजा मन-माहि क्रोध धरतउ इसिंड चीतवइं, 'जोउ, मुझनइ टाली ए कलावतीनइ अनेरउ कोई चित्त-माहि वसइ छइ। मझ-साथि चिणउठीनी परिइं बाहरि स्नेह छइ, पणि एहनइ मन-माहि बीजउ कोई छइ । जोउ, एह-नइ हं सर्वस्व दिउं तुही ए माहरी वर्णना नथी करती। तु हिवइ हूं एहनइ छांडिसु ।' इम चींतवतां रात्रि पडी । तिसिइं मातंगी-युगल तेडावीनइ इसिउं कहिउं जे, 'राणीनइ वन माहि मुकी-नइ तेहना बेहु बहिरखा अनइ बेहू हाथ छेदी लेई आविउयो | इहां कांई विचारणा म करिज्यो | इम कही ते बेह मातगी मोकली । पछइ शिय्या-पालक तेडीनइ कहिउं, 'जाउ, जिम कोई न जाणइ तिम कलावतीनइ रथि बइसारी वन-माहि मुंकी आवि ।' पछइ तिणि एकली कलावती

१. L. मंचि, C. P. मंडपि ।

रथि बइसारी अरण्य माहि छेई, रथ-हूंती ऊतारी, गदगद-स्विर किह्वा लागड, 'हे मात ! न जाणीइ, कीणइ कारणि राजाइ तूं वन-माहि मूं कावी।' जिम ए वात सांभली, तिम जि मूर्छांगत हूंनो, रोवा लागो। वली सचेत थाइ, वडी मुंइ पडइ! वलो माता-पिता-भ्रातानइ स्मरती तिम रोवा लागो, जिम पालती बुक्ष छइं ते ही रोवा लागा। इम अनेक विलाप करती ते सिय्या-पालकनइ हाथि इसिड संदेस कहाविड जु, 'राजन! मइ जे अनाचार कीघड, ते तइं मुझनइ कांइं न जगाविड?' इम सांभली पछइ रथ-हूंती ऊतारी जेतलइं पाछड बिलड, तेतलइ मातंगी-जुगल आवीनइ कहइं 'रे पाणिणो! तूं भर्तारनी वंचनान् फर मोगवि।' इम कही बिहरखा-सिहत बिन्हइ हाथ छेदीनइ लेई गई। तिवारइ कलावती महा-विलाप करती पूर्वोपार्जित कर्म नइ सूरती नदीनइ तीरि जई वननिकुंज-माहि पुत्र प्रसविड। पणि हाथ-पालइ पुत्रनइ सार न कराइ। तिवारइ रोती हूंती इसिडं कहइं, 'जोड, जे दालिदीनइ कुलि पुत्र प्रसवीइ, तेहनइ घरे गीत गाइँइ, उत्सव कीजइ। अनइ ए पुत्र राजानइ कुलि ऊपनउ छइं, ते पुत्रनी सार-इन्नड संदेह पडिड।

इसिइ नदी महा-पूरि आवी दीठो । ते देखो संकल्प-विकल्प करी पछइ कलावतीइ एहवी अवश्रावणा कीधी, 'जु मह मिन वचिन कायाइं करी शुद्ध शील पालि हुइ, तु ए नदी उपश्मपणंउ पामिष्यो । अनइ माहरा हाथ नवा आविष्यो ।' इम जेतलइं कहिउं, तेतलइं तेहना शीलनइ प्रमाणि कनकचूड-मंडित नव-पल्लव नवा हाथ आव्या । नदी उपश्मी । तिवारइ आकाशि कुसुमनी वृष्टि हूई । पछइ कलावती पुत्र-सहित नदी ऊतरी पारि गई । एतल्ड तापस आवीनइ कहइ, 'हे सुमिग ! बालक प्रसावइ इहां रहिवउं नावइ । तेह-भणी तूं अम्हारइ आश्रमि आवि ।' इम कही आपणइ आश्रमि आणी। तिसिइ तापसपित पूछइ, 'वित्स ! तूं कि अणि ! कहिनी स्त्री ! किहां-हूंती आवी !' तिवारइं कलावतीइ आपणउ सर्व वृत्तांत कहिउ । पछइ तापसि अश्वासना देई, पिताना घरनी परिइं पुत्र-सहित कलावती आश्रम-माहि राखी।

हिवइ इसिइं चांडालि आवी हाथ अनइ बहिरला राजा-आगिल आणी मूक्यां । तिसिइं राजाइं बहिरला हाथि लेई जोया । जु जोइ, तु कलावतीनु भाई विजयसेनकुमार, तेहनुं नाम दीठं । पछइ राजाइ ससंभ्रांत भाई कलावतीनी सली पूर्ल । किहें , 'देवशालन गर हूं ते उ कोई इहां आविउ हूं ते उ ?' तिवार इं सली इं किहं हें, 'स्वामी ! कलावतीन इ भाई इ वि बहिरला अनई वस्त्र मोकल्या हूं ता । ते जण अजी इहां जि छइं ।' पछइ राजाइं ते जण तेडीन इ पूछ्या, विहं , 'ए बहिरला तुम्हे आण्या ?' तीणे किहं , 'अम्हे आण्या ।' जिम ए वात राजाइ सांभली, तिम राजा अचेत थई मुंइ पडिउ । तेतल इ प्रधाने ताद उ वाय घाती सचेत की ध उ । पछइ राजा हीय उं आहण इ. माय उं कू रह । तिवार इ प्रधानि किहें उ 'पहिल उं अणविमासिइ काज न की जइ, जु की जइ तु एवड उं दुक्ल हुइ ।' राजा कह इ, 'हिव हूं ए दुक्ल सही न सक उं, काष्ट भक्षण किर ।' इम कही राजा काष्ट भक्षण किर चालिउ । तिवार इ महुत कह उं, 'स्वामी! सात दिन ताई पडल उ, जिम हूं एक वार ते ठाम जोई आवं । किवार इं तुम्हारा भाग्य-लगाइ जीवती मिल इ।' इम राजा समजावी, आपणि जोवा नी किल उ। सर्व वन जोवा लगाउ । पणि किहां देल इ नही । पछइ तापसन इ आश्रम आवी, तापस पूछचा, 'अहो तापसो! ए वन-माहि एका किनी स्त्री दीठी कि ना ?' तिसिइ तापस कह इं, 'तिणि स्त्रीइ कठण का ज छइ ?'

१.PL. पहिलंड अणविमासिउं काज कीजइ तु ।

तिवारइ प्रघानि कहिउं, 'शंखराजा ते कलावतीनइ वियोगि प्राण-त्याग करइ छइ। पणि जु ते आवइ, तु प्राण न छांडइ।' इम कहइ हूंतइ तापसे जाणिउं, 'ए सही राजानउ प्रधान घटइ।' पछइ दत्तप्रधान-नइ पुत्र-सहित कलावती देखाडी। जिम कलावतीइं ते राजानु मित्र दूर-तु आवतु दीठड, तिम जि पेउहंस ऊपनइ रोवा लागी। तेतल्डइं दत्त आवीनइ कहइ, 'बिहन! मरोइ। कीघां कर्मनां फल मोगन्यां विण न छूटीइं। जे तीर्थंकर देव छइ, ते ही कर्म-आगलि न छूटइ। इम जाणी धीरपणउं आदिर। अनइ ईणइ रिथ बइसि। आपणइ दर्शनि करी राजानइ जीवदान दिइ। नहीतर पश्चात्ताप करतउ राजा काष्ट-भक्षण करिसिइ। मह आजना दिन-ताई जिराजा राखिड छइ।'

पछह कलावता तापसनी अनुज्ञा मागी दत्त-साथि रथि बहुसी चाली । तिहां-हूंती पंथ अवगाही आपणा नगरनइ परसिर आवी । तेतलह शंखराजाइ वात सांभन्नी । पछह आंखिई आंसू पाडत उराजा सामहंउ आवीनइ कहइ, 'हे भिद्र ! जे मह तुझनइ विडंबना कीधी, तूं वन-माहि मूकावी; ताहरा हाथ कपाव्या, ते माहरु सर्व अपराध खिम ।' इम कही महा-विस्तारि पुत्र-सहित नगर-माहि आणी । तिहां सउणानइ अनुसारि पुत्रनइ पुणंकलस ए नाम दीखंउ । अन्यदा कलावतीई एकांति अवसर लही राजा पूछिउ, 'स्वामी! कीणह दोषि वन-माहि मूंकी माहरा हाथ छेदाव्या ते कहउ ।' तिवारई राजा सलज्जपणई कहइ, 'हे भिद्र ! तुझ-माहि सर्वथा कलंक नथी, पणि ताहरा भवांतरी कमें-लगइ मह ते कांई कम आविरंड, जे मातंग इ नाचरह।' तिवारह राजाई आपण्ड सर्व दृत्तांत कहिवा मांडिउ, 'हे सुभिग ! जिणि दिहाडइ मह तुझनइ आपदा अणावी है ते-हूंतूं अनेरह दिहाडइ, ताहरा बहिरखा देखी मुझनइ उरतउ उपनइ, हूं काष्ट भक्षण करिवा लग्ग । तिसिइं दत्त-मित्रइ आवी प्रतिज्ञा करी हूं राखिउ। पछई हूं प्राधादई देव नमस्करी रात्रिनइ समह नगरनइ परसिर रहिउ । तिहां मह निद्रा-माहि इपिड सउण्डं लाधं जु अणपाकी वेलि कल्पवृक्ष-हूंती खिसी पड़ी। अनइ वली ते वेलि संपूर्ण फल लगाइ तत्काल कल्पवृक्षि चडी। पछइ प्रभाति मह गुरु पृक्षया। गुरे कहिउं, 'राजन्! कल्पवृक्ष-समान तृं जाणिवउ, अनइ वेलि-समान ताहरी पिया। ते तुझनइ पुत्र प्रसिवइ मिलिसिइ।'' ते तृं मिली।'

इत्यादि स्वप्न-विचार कही पछइ राजा कलावती-सहित वन-माहि मुनिनइ वांदिवा गयउ। तिहां देवपूजा करी, मुनि वांदी भार्या-सहित राजा आगिल बइटउ। तिसिइ मुनिइ देसना दीधी। पछइ देसनाद अंति राजा पृछइ, 'भगवन् ! कलावतीइ कडण कर्म कीघडं, जे निर्दोष कलावतीना मद्दं हाथ छेदाच्या ?' तिवारइ मुनि तेहनड पूर्व-भव कहिवा लागड, 'श्री विदेहि क्षेत्रि, हे महें द्रपुरि नगरि, विकमराजा लीलावती-भार्या-सहित सुखइं राज करइ छइ। इनिइ मुलोचना एहवइ नामि पुत्री जाई। माता पितानइ महा-वल्लभ हूंती। क्रिम क्रिम वाधती यौवनावस्थाइ आवी। हिव एकदा पुत्री राजानइ उत्संगि बइडी छइ। एहवइ कुणिहि एकिणि एक सूडड मनोहर आणी राजानइ भेटिइ दीवड। राजाई ते उपाध्यायनइ देई भणाविड। राजानइ आशीर्वाद देवा लागड। पछइ राजाइ ते छक पुत्रीनइ दीघड। जिम दालिद्री मोदक पामी हर्ष आणइ, तिम ते छक लही पुत्री र. C. L.प्रडंहस K. प्रहुंप Pu. प्रहहंस P. पहंस। २ K. भवांतरीक कर्म A.B. भवांतरी कुकर्म C. भवांतरी कर्म। ३. K. ते हुतु पहलइ दिनि, Pu. ते हुंतु अनेरइ। ४. A.C. महेन्द्रपुरि नगर विकाम ..B. K. महेन्द्रपुरि नरविकम... ५. P. मनोहारिड L. मनोहरीड A. मनोहारी।

हर्ष मानिया लागी। रात्रि नइ दिवत पुत्रो शुकतइ मूंकई नही। अनेक साकरना पाणी, शालि, दाडिमनी कुली दिन-प्रति दिइ। वली सुवर्णमइ पांजरइ घाती राखिउ। किवारइं उत्संगि, किवारइं पांजरइ, इम विनोद करती भणावइ। भोजनि, शयनि, आसनि, स्ती, बइठी, योगिनीनी परिइं एकाग्र-मन हूंती, ते सुलोचना कन्या शुकनइ मूंकइ नही।

हिवह एकदा मुलोचना उद्यानवनइ विनोद-भेणी, ग्रुकनइ पांचरा-माहि घाती लेई गई। तिहां देहरा-माहि सुलोचनाइ सोमंघरस्वामि नमस्करिया । एहवइ ग्रुक पणि प्रतिमा देखी चींत-वइ. 'एहवी प्रतिमा मइ आगइ किहांई दीठी हुंती ।' इम ईहापोह करतां जाती-स्मरण-ज्ञान ऊपनं । तिसिइं जु जोइ, तु पूर्विलइ भवि चारित्र पामिउ हुंतउ । तिहां सर्व शास्त्र भण्यां क्षयोपराम-लगइ । पणि क्रिया तेहवी न पाली । अनइ वस्त्र, पुस्तक, पात्रानी मूर्छोई आपणई ज्ञान फ्रोक गमाडिउं । चारित्र विराधिउ । तिहां-हूंतु मरी ए-वन-माहि हूं सुडउ हुउ । अनुइ जे हुकड़ पाढ मूकिउ तेह-लगइ हिवडां भणवानी मनसा हुई। हिवइ तु हूं तिर्यंचनइ भवि आविउ । मइ सिउं चालइ १ पणि 'आज पछइ ए देवनइ प्रणमी भोजन करिसु ।'' एहवउ नीम लीधंड । पछइ मुलोचना देवनइ प्रणमी पूजी, पांजरंड संघाति लेई पाछी आवी । तिसिङ बीजड दिनि शुक्तड हाथि लेई जिमवा बहुठी । तेतलइ सूडानइ नीम चीति आविउ । पछइ "नमो अरिहंताण " कही सुड़ उ ऊड़िउ, देहरइ जई, प्रतिमा प्रणमी, वनफल खावा लागउ । इसिइ राजानी पुत्री ग्रुकनइ विरहि विलाप करिवा लागी। एहवइ सूडा-भणी पायक धाया। ते वन-माहि आव्या । तिहां आंवानी डालइ सूडउ बइठउ दीठउ । तीणइ पास मांडी सुडउ झासी सलोचनान् आणी आपिउ । तिवारइ सुलोचना स्नेहमइ वचन ग्रुक-प्रति कहइ, 'अहो ग्रुक ! मुझनइ मूं की तूं किहां गयउ हूंतउ ? आज पछइ ताहरउ वेसास भागउं। देम कही नृपांग-जाइं गतिना भंग-भणी सुडानी बेहं पांख परही करी, सोनानइ पांजरइ घाती मृंकिउ । तिवारई शुक चीतवह जु, 'परवसपणानइ धिक्कार हु, जे मह एवडी पीड सहीइ छइ । अथवा जु तहीं इ किया सूत्री पालतं तु, आज परवसपणंड न पामत । तु <mark>आरे जीव ! वेदना</mark> सिंह । कहइ, हिव परमेसरनंड मुल किम देखिसि ?' ते सृइउ इम चीतवतड, आंखिइ आंसू पाइत 3. अगसग लेई, मरण पामी सौधर्म-देवलोकि देवता हुउ । पछइ सुलोचना पणि शुक्रनइ विरहि अणसण पाली, सौधर्म इ देवलोकि तेहनी प्रिया हुई।

हे राजन ! तिहां घणा सुल भोगवी ते शुक्रनड जीव मरी सांप्रत तूं शंखराजा हूड, अनइ सुलोचनानु जीव ए कलावती हुई । पणि जे भवांतिर सूडानी पांख छेदी हूंती, ते कर्म लगइ कलावतीना हाथ तहं छेदान्या । तु ए आपणा कर्म भोगन्या विण न छूटीइ । एक वारनंड कीघंड दसवार भोगवीइ ।'

पछइ तत्काल राजाराणीनइ जातीस्मरण-ज्ञान उपनउं । तिहां आपणड भवांतर दीठउ । तिसिइ वैराग्य-रंग ऊपनइ पूर्णकलम पुत्रनइ राज्य देई, गुरु-समीपि बिहुइ दीक्षा लीघी । पछइ घणउ काल चारित्र पाली केतलइ कालि मोक्षि पहुचिसिइं ।

इति श्री-शीलोपदेशमाठा-गलाविगोधि श्री-कलावती-कथा समाप्ता ॥३२॥

*

हिव केई एक महासतीनइ ग्रहरूथावासि वसतां इ हूंता शीलना माहातम्य-लगह महर्षि इ स्तवइ । ते कहइ—

सीडवइ-नंदयंती-मणोरमा-रोहिणी-पमुक्खाणं । रिसिणो वि सयाकालं महासईणं थुणंति गुणे ॥५६

ह्याख्याः- शीलवती १, नंदयंती २, मनोरमा ३, रोहिणी ४-प्रमुख च्यारि महासती जयवंती हु। कांइ जे, महासतीना गुण, ऋषिश्वर इ सदा इ=सर्वकाल गुण स्तवइ। एतलइ गाहनउ अर्थ हुउ। भावार्थ कथा-हूंतउ जाणिवउ। तिहां पहिलंड शीलवतीनी कथा कहीइ--

[३३. शीलवतीनी कथा]

ईणइ जंबूद्वीपि श्रीनंदनपुरि नगरि अरिमर्दन राजा राज करह । हिवह ते राजानह मान्य श्रीरत्नाकर नामि श्रेष्ठि वसह । श्री एहवह नामि तेहनी मार्या । ते बेहूं श्रावकउ धर्म पालह । पणि कर्मना योग-लगइ संताननी प्राप्ति नहीं । तिणि करी महा दुवी । हिवह अन्यदा पुत्रनह हेति श्री-कलत्र श्रेष्टिनइ इसिउं कहइ, 'स्वामिन ! ए श्रीआजितनाथना देहरा-आगलि अजितवला-देवी महा सप्रमाविक छह । ते अपुत्रीयानइ पुत्र दिइ, निर्धननइ धन दिइ, दोहागीनइ सोहागी करइ । जि को एहनी सेवा करइ, ते सहू पामइ । इणि कारणि, हे नाथ ! आपणपे पुत्रनइ अर्थि काई मानीइ । काई, बेटानइ हेति आपणा प्रणांते ही दीजइ ।' तिवारइ रत्नाकर श्रेष्टिइ श्री-नइ बचिन ते देवीनइ काई मानिउं । पछइ संताननी प्राप्ति हुई । काई ? भाग्यनइ योगइ सघली इ वस्तु फलइ । क्रमिइ पुत्रनउ जन्म हुउ । तेहनइ अजितसेन ए नाम द्धाउं । जिवारइं बाल्यावस्था अतिकमी योवनावस्थाई आविउ, तिवारइं पिता विवाहनी चिंता करिवा लागउ जु, 'एहनइ मली कन्या आवइ तु रूडउं । यतः—

निर्विशेषः प्रभुः पारवश्यं दुर्विनयोऽनुगः । दुष्टा च भार्या चस्वारि मनःशल्यानि देहिनां ॥१॥१

इम विंता करह छह । एहवह व्यवसायन हेति कोई वणिगपुत्र रस्नाकर-सेठिइ आगइ चला-विड हूंतड, ते संपूर्ण व्यवसाय करी श्रेष्टि-कन्हिल आवी बइठउ । तिसिइं सेठिइं व्यवसायन्ं स्वरूप पूछिउं । तिवाद वाणउति आय-वरउ सर्व देखाडिउ । वली वाणउत्र कहइ, हूं मंगलावती नगरीइ गयउ हूंतउ । तिहां जिनदत्त-श्रेष्टि-साथि माहरइ व्यवहार हूउ । तिणि सेठि एक दिवस हूं घरि जिमवा तेडिउ । तिहां मइं देवांगना सरोखी कन्या एक दीठी । तिसिइं मइ श्रेष्टि पूछिउ, 'ए कडिण ?' तिवारई श्रेष्ठि कहइ 'ए माहरी पुत्री । पणि मुझनइ कहीइ विंता टलती नथी । काई १ जागउं, ए पुत्री किसेड वर पामिसिइ १ किम समुरानइ रंजविसिइ १ किम शील पालिसिइ १ किम पुत्र प्रस्विसिइ १ अथवा ए वली रखे एहतइ सउकिनउं दुख ऊपजइ । इम ए कन्या वाधती वाधती मुझनइ विंता उपजावइ छइ । पणि ए पुत्री सर्व गुणनी खाणि छइ । सर्व भाषा जाणइ । पंलीयानी भाषा ते ही समझइ । शीलवतो एहवउं नाम । 'एहनइ रूर-कला-गुणे करी सरीखउ वर एहनइ जोईइ छइ । पणि वर किहाइ मिलइ नहीं । एह भणी मुझनइ विंता 'टलती नथी ।' तिवारइ मई सेठिनइ कहिउं, 'चिंता म करि । श्री नंदनपुर रस्नाकर श्रेष्टिनउ पुत्र अजितसेन ए कन्यानइ थोग्य छइ ।' तिसिइ जिनदत्त कहइ, 'हे मित्र ! घणा

१. A.B एहना, C. एहने । २ C.K टलइ नहीं ।

दिननी चिंता आज तई भांजी।' इम कही पछइ आपणी बेटी अजितसेननइ देवा-भणी आपणड जिनशेखर पुत्र मुझ साथि मोकलिउ। ते सांप्रत माहरइ घरि छइ। हिव तुम्हे ए नात्रडं सही करउ।' तित्रारई श्रेष्टि कहइ, 'हे महाभाग! तइ ए भड़ेंड की घंडं। काई? सघलाइ लाम-माहि ए लाम मुझनइ मोटउ हूउ।' पछइ रत्नाकरि बहूमान-पूर्वक जिनशेखर तेडी शीलवतीनउं नात्रडं सही की घडं।

पछइ पिताइं अजितसेन पाणिप्रहण-भणी जिनशेखर-साथि चलाविउ । तिहां महा ऋदिनइ विस्तारि अजितसेनि शीलवतीनुं पाणिप्रहण कीषउं । अनइ हाथ-मेलावणीइ मणउं घन लाघउं । पछइ सुनरानइ मोकलावी शीलवती-सहित आपणइ घरि आविउ । हिवइ अजितसेन शीलवती-सहित सुखिइं धर्म, अर्थ, काम-त्रिण्णइ पुरुषार्थ साधिया लागउ । इम करतां घणा दिन गया । एकदा प्रस्तावि शीलवतीइ रात्रिनइ समइ रेशिवा-फेकारीनु स्वर सांमलिउ । ते स्वरनइ अनुनारि घडउ लेई रात्रिइ चाहिरि नीकली । तिसिइ शीलवतीनु सुसरउ जागतउ हूंतउ । तिणि ते वधू रात्रिइं बाहिरि जाती दीठी । ते देखी मनि विकल्प ऊपनउ ।

पछइ चोंतिविवा लागउ, 'सही एहवी रात्रिई जु ए बाहिरि नीकली छइ, तु इम जःणीइ ए शीलवती कुशीलि छइ जोउ-नइ, भला कुलनी बेटी भलइ थानिक आवी अनइ एहवा इ काज करइ । तु इम जाणीइ, प्रवाहई स्त्री आप-स्वार्थिनी । वाहिरि रूडी दीसइ, पणि माहि चित्त कूडडें ।' सुसरउ इम चींतिविवा लागड ।

हिव शीलवती मायाई करी रहित, कांई काज करी, घडड ठामि मूकी, आपणि शिय्याइ आवी सूती । पछइ प्रभाति तोछड गणा लगई सेठि आपणी स्त्रीनइ इसिउं कहइ जु, 'ताहरी वह शीलि गुणि आचारे करी केहवी प्रतिभासइ ?' तिवारइ सीइ कहिउं, 'स्वामी ! कुलमर्यादाई करी रूडी छइ।' तिसिई शेष्टि कहइ, 'ताहरी बुद्धि पणि रूडी नहीं, जिणि कारणि, एहनां आचरण आज रातिई मह दीठां छइ। न जाणीइ, एकलो किहांइ नीकली गई हूंती ?' इम वात करई छइ। इसिइं अजितसेन पुत्र मातापिताना पग निमवा आविउ। तिहां वापनइ सचित देखी पूछइ, 'आज तुम्हे सचित कांई दीसउ ?' तिवारइ पिता कहइ, 'वत्स ! हिवई सिउं कहीइ ?' विधात्राई आपणइ घरि कहावेलि वावी, पणि सांसही न सकी। कांई जे, शीलवती एहवइ वंशि ऊपनी, महागुणवंती अनई 'एहवी इ जु अपङ्गा आचारि चालइ, तु सिउं कहीइ ? जु लाज, जु जिनधर्म, जु सर्व गुण जोईइ, तु एह-माहि । पणि हिवडां सर्व गुण गमाडचा। एतला दिन कल्पवेलि-सरीखी हूंती, पणि हिव विधवेलि समान हुई। आज रात्रिइ पाणीनउ कुंभ लेई किहांइ गई हूंती मुझ जागतां जि। ते एक प्रहर बाहरि रही पाछी आवी। तु वत्स ! एहनइ तृ छांडि।' तिवारई पुत्र पितानउ आदेस अणलोपतउ 'तह त्ति' कही घरि आविउ।

तिसिइ प्रभाति श्रेष्ठि कांई कूड विमासी ६घू समीपि आवी कहइ, 'वित्स ! ताहरइ पिताईं त्ं ऊतावली मिलवा-भणी तेडी छइ।' तिवारई वधूई डहापण-लगइ रात्रिनं चृत्तांत जाणी ससुरानं वचन मानिउं। कांई १ परीक्षाइ ^४आफहणी सोनं उं किस पहुचिसिइ। पछइ २थ प्रगुण कीघं । तेतलइ शीलवती-वहू-सिहत रत्नाकर श्रेष्टि रिथ बहसी चालिउ। मार्गि चालतां नदी एक आवी। तिसिइ श्रेष्टिई शीलवतीनइ कहिउं, 'हे वधू! ए पगनां खासडां ऊतारि, पाणीइ

१K.शिवा फेत्कार करती सांभली । २ P. एहवई, C. एह इ । ३. K.P पाड्रंड्ड आचारि प्रवर्तेइ । ४.CK. आफणी ।

भोंजिसिइं ।' तिवारइं वधू कांई 'विमासीनइ ते खासडां पहिरिइ जिपाणी-माहि चाली । तेतलई श्रेष्ठि रीसाणउ हुंतु चींतवइ, 'सही ए तां आप छंदी छइ ।' इम वली माणि चालतां आगलि वैम्ंगतुं क्षेत्र फलिउं देखां सुसरउ कहइ, 'विरेस ! ए क्षेत्रीनइ हाथि सर्व धान आविडं । आजकालि धान घरि आविसे ।' तिवारई वलतुं वहू कहइ, 'ए क्षेत्र आगिम खाधउं, घरि धान कांई नहीं आवइ।' ईणइ पद्धतिर ससुरउ गाढेरउ वृह्वाणउ। वली जेतलइ रथ आघउ' चालिउ तेतलइ नगर एक मोटउं, धिन करी धनद यक्षना नगर सरीलउं, दीठउं। ते देखी श्रेष्ठि वहूनइ कहइ, ए नगर वसइ छह। ईणइ नगरि आपणपे रहीइ।' तिवारइ वधू वलतुं कहइ, ना, ए नगर सूनउं छइ। इहां नहीं रहोइ।' पछइ आधा चाल्यां। पणि ससुरउ दूहवाणउ। तिसिइ आगलि सुभट एक घाए जाजरउ कीधउ आवतंउ दीठउ। ते देखी श्रेष्ठि कहइ, 'वाएडइ सुभिट वे वडा घाय सहा। छई ?' तिवारइ वधू कहइ, ए कायर नासतु हूंतु कूटाणउ छइ।'

वजी मुगर वधूनी निंदा करत उ बडबडत उ, रीसाण उ आघ उ चालि उ। तिसिइं सूर्य घण उ च डि उ जाणी श्रिष्ट वड एक माट उ देखी, वड नतल इ जई ऊतरि उ। तेतल इ वधू इ वड नी छांह मूं की लूपड उ ऊही तडक इ जई बहरी। तिसिइं श्रेष्टिइ कहिंड, 'वित्स ! छायाइ आवि।' तिवार इ वधू अणसां मलती आंखि मोची रही। पछइ श्रेष्ट चींतव इ, 'जे वात हूं कह उं ते तु ए न मान इ। तु हिवइ एह नइ कडण कहिसिइ ?' इम कही श्रेष्ट आघ उ चालि उ। तेतल इ सून उं गाम एक आविडं। तेह-माहि 'सघलाइ घर च्यारि-पांच वस इ छइ। ते तुच्छ गाम देखी श्रेष्ट कह इ, 'ईण इ गामि नही रही इ।' तिवार इ शीलवती कह इ, 'ए गाम गाड उ वस इ छइ। इहां रही-सिइ।' एछ इ श्रेष्ट चींतव इ, 'ए वह सबैधा विपरीति'।' तेतल इ गाम-माहि-हंत ड शीलवती न उ माउल ड आविडं। तिण बहुमान पूर्व क 'से ठि जिमाडी राखिवा लाग उ। पणि रह इ नही।

पछइ वधू-सहित सेठि आघउ चालिउ । तेतलइं वृक्ष एक देखी मध्याह-समु जाणी रथ हुतु ऊतरिउ । तिहां कांई थोडडं विडं सीरावी रथ-जि-ऊपिर सेठि कपट-निद्राई सूतड । पछइ बीलवती पणि पितानुं घर ह्कडडं जाणी रोटी-करंबड लेई जिमवा बहुठी । तेतलइ कयरना वृक्ष -ऊपिर काग एक बोलिवा लागड । तिसिइ ते कागनी भाषा उल्ली शीलवती कागनइ कहइ, 'रे काग ! तूं कांइ करगराट करइ !' ए वात सांभली श्रेष्टि मन-माहि चींतवइ, 'ए दुरा-चारि सडण पणि जाणइ छइ।' पछइ वधू कागनइ कहइ, 'तुझनइ करंबानी इच्छा छइ, तेह-भणी तूं बोलइ छइ।' तिवारइ शीलवती अवसर जाणी निःशंकपणइ कहिवा लागी, 'अहो काग! एक बोल आगइ 'शिवा-फेकारीनउ मानिउ, ते माटि भर्तरनउ वियोग हुड, अनइ सांप्रत

१. С.К. Ри. विमासी नये खासडे पहिरे । २. Ри. सुगनु क्षेत्र वाविउं देखी । ३. К. रीसाणड । ४. Ри. आघेरड । ५. К. सर्व थई घर च्यारि पांच सई छई, Ри. घर सघळा इ च्यारि कई पांच वत्तई छई । ६. С. वातिई । ७ К. सुवासिई ८. А.В. विपरित । ९. К. सेठिनइ १०. Ри. शिवानु मानिउ ंतु ।

ताहरउ बोल जु मानउं, तु वितानइ मिलवानउ संदेह पडइ । तिवाग्इ श्लेष्टि वागतउ हुंतउ. साभिपाय वचन सांमली कहइ, 'हे दुर्विनीत! ए सिउं बोलइ छइ ?' तिवारइ शीलवती कहइ, 'सुसरा ! ए साची जि वात । कांइं ? जे माहरा गुण हूंता, ते दोषनइ हेति हुआ, चंदननी परिइं। हुं जहीइ बालकपणइ सर्वे शास्त्र भणी, तहीइ काकरत पणि भणिउं हुंतुं ।' इणि वचनि श्रेष्टि सावधान थई सर्व वात पृछित्रा लागउ । तिवारइ वहू कहइ, 'सुसरा ! जिवारइ हं रात्रिइ जागती हंती, एहवइ सिवा एक बोली । पछइ हूं तेहना सउणनइ अनुसारिइं घडउ लेई नदीइ गई । तिसइ निहां मृतक एक आविउं । तेतलइ ते नदी-इंतु बाहरि काढी, तेहनी कडिइ आभरण हुंना ते मई लीघां। ते लेई घडा-माहि घाती हूं घरि आवी। पछइ मइ छाणहरा-माहि घडउ ³घातिउ । तु कहर, ईणइ अपराधि हूं तुम्हे एतली भुई आणी । हिव वली ए वायस बोलिंड । ते इम कहइ छइ जे, ए वृक्ष-तलइ दस लक्ष ^४स्वर्ण छइ । तेह-भणी हुं कागनइ कह छउं--- दाघा ऊपरि फोडउ म पाडि । आगइ आपदा-माहि पाडी छउं, वली कांइ पाडइ ११ ए वात सांभली, तिषिद सुसरड कहइ, 'हे वित्स ! ए वात किसिडं साची !' इम कहितड पलवटि बांघी, तरुणा पुरुषनी परिइं कुदालउ हाथि लेई, कागनइ करंबउ देवरावी, ते वृक्षनइ मूलि आबी खणिवा लागउ । तेतलई माहि-ढूंता दस घडा लाख टाख सुवर्ण भरिया नीकल्या । त जाणे शीलवतीना गुण प्रगट हुआ । ते सोनुं देखी श्रेष्टि चींत इ, 'सही, ए शीलवती साक्षा-त्कारि मूर्त्तिवंती लक्ष्मी छइ । जोउ, मई काचनी भ्रांतिइ मरकतमणि-समान ए बहू अवगणी। इम कड़ी सुवर्णकु भ र्राथ घाती, शीलवतीनइ आपणउ अपराध 'खमावा लागउ। वली वली वधूनी प्रसंसा करतंड, वधूनइ २थि बइसारी रथ पाछड वालिङ । तिसिइ वधू कहइ, 'माहरा बापनं चर द्वकडं छइ। तेह-भणी एक वार पितानइ मिल्डं !' तिवारई सुसरं कहइ, हि सभिग ! हिवडां तूं घरि आवि । आपगउं कुल 'उज्जालि ।' पछइ शीलवतीइ सुसराना दाक्षिण्य-लगइ वचन मानिउं ।

पछइ श्रेष्टिहे रथ पाछउ खेडिउ। इम मार्गि आबतां पूछिवा लागउ, 'हे वित्स! जवस नगरनह तहं वसतउं कांहं किहिउं!' तिवारह शीलवती कहइ, 'जिहां आपणा सगा हुई, ते सूनउं इ वसतउं जाणिवउं! कांहं? जेतलई तुम्हे आव्या सांमल्या, तेतलइं माहरइ माउलइ 'जि कांई कीघउं ते तुम्हे दीठउ। तेह-भणी मई वसतुं किहुउं!' तिवार इं विचारनी परिइं वधूनां वचन सामिपाय जाणी वली श्रेष्टि कहइ, 'जिवारई हूं वड-तलइ ऊतरिउ तिवारइ त्ं तडकइ कांह बइठी?' वधू कहइ, 'तुम्हे किसिउं सांमलीउं नथी, जु वायस विड बइठउ स्त्रीनइ माथइ विटा करइ तु छ-मास-माहि भर्तारनइ मरण हुइ किया महांत रोग आवइ? अथवा वडनइ मूलि साप हुई। तेह-भणो मई उपाय करो ''उढणउं उढी, छाया मूकी अलगी बहठी।' श्रेष्टि कहइ, 'वित्स! ताहरी मली बुद्धि।'

१. С. L Pu. पिताइ । २. K सूत् । ३. K घालिउ । ४. K द्रव्य । ५. A. B. पाडी छइ । ६. K. देई । ७. K. Pu. खमाविवा । ८ K. Pu. अजूआि । ९. K. जे कांइ भ केत की घी ते तुम्हे दीठी । १०. K. चाणाक्य । ११. K. Pu. ओदणउ ओढी ।

कहर, 'तेहनइ पृठिश् घा लागा हूंना पणि सन्मुख न ंता ।' ए वात सांभली श्रेष्टि चमत्क-रिउ हुंत वजी पृछइ, 'वस्तां नगरनइ तहं जवस कांइं कहिंडं ?' तिवारह वध् कहह, 'जिहां आपणड सगउ कोई नही, ते वसतडं इ स्नूनडं ।' वला सुसरउ पृछइ, 'मूंगनडं क्षेत्र फलिडं देखी मह कहिउ —ए क्षेत्रना घणोन् धाननडं वांक कांई नहीं हुइ । तिवारई तई कहिडं—ए क्षेत्र आगिम खाघडं । ते तहं इम कांइं कहिउं ?' वध् कहइ, 'ए क्षेत्रना घणी टोहता हूंना, पणि निरादरा दीठा ।' पछइ श्रेष्टिइ ते क्षेत्रना घणी पूछ्या। त णे कहिउं, 'अम्हे ए क्षेत्र आगिम खाघडं ।' ए वात सांमली श्रेष्टि गाउँ हिंबंडं । वली सुसरउ पूछइ, 'पाणी भरी नदी, तेह-माहि खासडा पहिरिइ तूं कांइं चाजी ?' तिवारइ वध् कहइ, 'पाणि-माहि कीडा, कांटा, जलसर्प दोसइं नहीं। तेह-मणी मह खासडां पहिरियां।' इत्यादि वात करतां क्रमिइ घरे आव्या। तिहां श्रेष्टि आपणी स्त्री, आपणाउ बेटड तेडीनइ कदइ जु, 'मइ अजाणपणइ तुम्हनइं भ्रांति उपजावी। पणि ए साक्षात्कारि लक्ष्मी छइ। एहनइ प्रसादइ मइं दस लक्ष सुवर्ण आणिउं। वली तहीइ जे घडउ लेई रात्रिइ बाहरि गई हुंती 'तहीइ ईणीइ रत्नराशि आणी छइ।' इम श्रेष्टि सर्व चुतांत कही। छाणहरउं खणी रतन काढ्यां। तिहां सघले दीठां। पछइ सर्वस्व घरनी स्वामिनी शीलवती हईं।

हिवइ किमई श्रेष्टि अफावानइ क्षिय परोक्ष हूउ । अनइ अजितसेन पुत्र कुंदुंबनउ नायक कीधा । पछइ ते बेहू श्रावकउ धर्म पालिया लागां । तिसइं नगरनउ राजा अरिमर्दन, तीणइ पांचसइं महुता नवा कीधा, पणि मुख्य महुतु नहीं । तेह-भणी राजा परीक्षा जोवा-भणी एहवी एक समस्या समस्त नागरीक लोकनइ कहइ । किसी ?—'जे मुझनइ पि करी आहणई, तेहनइ कडण दंड कीजइ ?' तिवारइ लोक कहइ, 'स्वामी ! तेहनइ शिर्च्छेद कीजइ ।' पणि राजानइ ए वात मेलि नावइ । पछइ ए वात अजितसेनइ आवी शीलवतीनइ कहीं । तिसिइ शीलवती कहइ, 'तेहनइ सर्वांग आभरण दीजइ ।' तिवारइ अजिनसेनइ पूछिउं, 'ते किम ?' कहिउं, 'राजानइ प्रिया टाली कडण पाद दिइ ?' ए वात सांमली अजितसेन सेठि राजा-समीपि जईनइ कहइ, 'जिणि पाद दीधी तेहनइ सर्वांग अभरण दिउ ।' ए वात सांमली राजा संतुष्ट हूंत ते अजित सेननइ सर्वं प्रधान-माहि मुख्य कीधउ ।

अन्यथा पर्यंत देशना राजा-ऊपरि अग्मिदंन-राजाइ करकी कीघी। तिहां अजितसेन संघाति तिह्नि , चालिय। लागड । तिसिइ अजितसेन शीलवती-प्रियानइ कहइ, 'तूं एकली घरि किम रिहिस ? किम शील पालेसि !' तियारइं शीलयती कहइ, 'स्यामी ! जु इंद्र आपणपे आवइ, तुही माहरं शील खंडी न सकइ । अनइ जु तुम्हनइ माहरउ प्रत्य नथी, तउ ए फूलनी माल लइ । माइरा शीलनइ प्रमाणि सदाइ सश्रीक रिहिस । अनइ जहीइ मुझनइ कुशीलपणउं, तहीइ जाणे कुरमासिइ ।' इम कही अजितसेननइ कंठि कुमुनमाला मूंकी । पछइ अजितसेन राजा-साथइ चालिउ । महांत अटबी-माहि गया । तिहां फलफूर कांई न पामोइं । तिसिइ अजितसेननइ कंठि फूलनी माला देखी राजा कहइ, 'एहवी अटबी-माहि एहवां फूल किहां?' तिवारई अजितसेन कहइ, 'स्वामी ! माहरी शीलवती प्रियाना शीलनइ प्रमाणइ फूलनी माला

१. C. तेही ईणीइ...। Pu. तेही ईणइ।

कुरमाती नथी ।' जिम ए बात सांभन्नी राज इं, तिम जि कामांकुर-मित्रह कहिउं जुं, 'स्नीनह शील किहां ?' तिवारइ बीजउ लिलतांग कहइ, 'ए वात साची । स्नीनह शील नही ।' तेतल्ड त्रीजइ रितकेलि-मित्रह कहिउं सही, इहां काइं संदेह नही ।' तिसिइं चउथउ अशोक कहइ, 'चालड, परीक्षा कीजइ।' पछइ राजाइ घणउं धन देई च्यारह शोलवती-कन्हलि मोकल्या ।

हिव कामांकुरि आवी शीलवतीना आवास-कन्हिल नवंड घर मंडाविउं । तिहां सदाइ हाव-भाव नेपथ्य शीलवतीनइ देखाडइ। णि शीलत्रतीइ जाणिउं जु. भाहरां शीलना भ्रेश-भूषी एतलां वानां करइ छइं ।' पछइ च्यार इ मित्र उपाय चींतिववा लागा । हिव अनेरइ दिविध अशोत किइ दूती मोकलीनइ कहाविउं, 'हे भद्रि ! ताहरउ भर्तार तउ देशांतिर गयउ छह । तूं यौवन-नंडं फल कांई न लिइ ?' तिवारइ शीलवती कहइ, 'कुलस्त्रीनई ए वात युगती नहीं । अनइ कदापि ज ए वात कीजइ तु लोभ-पाखइ न कीजइ।' इंसिई कहिइ हूंतइ अशोकि वली दासी मोकली पूछाविउ जु, 'तूं केतलंड धन मागइ छइ?' तिवारइ शीलवती कहइ, 'हूं लाख टंका मागंड । तेह-माहि अर्ध पहिलंड आपउ, अनइ तुम्हे पांचमइ दिहाडइ आविषयो तहीई अर्ध लेतां आविज्यो ।' इणि वचनि अशोक हर्षिउ हुतु दूती-हाथि अर्धे उलाख देई शीलवतीनह माकलिउ। हिव शीलवतीइ उरडा-माि छानउ एक कुउ खणाविउ, अनइ ते-ऊपरि पत्यंक एक वाण-पाटी-रहित उत्तरपटिइ ढांकी मूंकिउ छइ। इसिइ पांचमइ दिनि अशोक पंचास सहस्र लेई, तांबूल भक्षण करतड, जगत्र सघलउं त्रिण समान गणतड, जेतलइ परुयंकि जई बइठड, तेतलइ घाइ संउ कुआ-माहि पडिउ। पछइ शीलवतीइ ते लाख टंका लेई घर-माहि मूं क्या, अनइ तेह-नइ शरावलइ रदोरडउ बांघी, भात-पाणी घाली, कूआ-माहि मूकावइ । हिवइ ते नारकीनी परिई दुःख अनुभविवा लागउ । इन कुआ-माहि रहितां अशोकनइ एक मास अतिक्रमिउ । एहवइः वली ललितांग मुहत उद्भय लेई आविउ । ते पणि शीलवर्ती एक लक्ष द्रव्य लेई कूआ-माहि घातिउ । हिवइ वली त्रीजउ कामांकर धन लेई आविउ । ते पणि शीलवतीई लाख टंका लेई कुआ-माहि घातिउ । वली चडथर रतिहेि आतिउ । तेर्नर पणि तेह जिहार शीलवतीर कीघउ । इम च्यारि महा दुख भोगविवा लागा ।

इसिइ राजा वयरी जीपी आपणइ नगरि पाछ 3 आवित । पछ इ ते च्यारि इ मित्र महा
दुखी हूंता शीलवतीन कह इं, 'जे अणिवमासि काज कर इ, ते अम्हारी परिइं दुख पाम इ । हिंब इ
अम्हन इनरग-हुंता का ढि ।' तिवार इं शीलवती कह इ, 'ज उ माहर उं वचन मान उ, तु काढ छं।'
तिसि इं ते कह इं, 'जि कां इ ताहर इ कर्त व्य छ इं, तेह न छं आदेश दह । पणि एक वार कूआ-हूंता का ढि।'
वह तुं शीलवती कह इ, 'जितार इ हूं बो चाव छं तिवार इं तुम्हे च्यारि अस्लिल ते बोलिज्यो ।' तीणो
चिंहुए ए वचन मानि छं । इम तेह न इस्मली सीख देई, पछ इ अजितसेन – पतिन इं सर्व वात
जणावी, सपरिवार राजा आणाइ घरि जिमवा नि हुतिरिछ । तेतल इ शीलवती इं सर्व रसवती नीपाई,
प्रच्छन करी मूंकी । तिसि इराजा आवी जिमवा ब इठ छ । पणि भोजन नी सामग्री काई न देल इ ।
तिवार इराजा कह इ, 'अम्हे किस्या ऊपरि नि हुतिरिया हुंता ?' तेतल इ शीलवती मूर्तिमंत बारण इ
आवी, फूले पूजी, किह वा लागी, 'अहो यक्षो ! सघली रसवती मजूद कर छ । आज आपण इ घरि
राजा जिमवा आविष्ठ छ इ।' तिसि ह ते कूभा-माहि-यका च्यार कह इं. 'अम्हे रसवती मजूद

१. Pu. दोरड ।

^{2 9}

करंड छंडं । तुम्हनइ घणी इ पूरिसिउं ।' पछइ राजा जेतलइ जिमवा बइठउ, तेतलइ सघली इ सामग्री राजा-आगलि आणा। राजा जिमवा लागउ। पणि मन-माहि कडितग ऊपनउं। तिहां वली शीलवतीइ तांबूल-वस्त्र अलंकारे करी चारी लाख टंकानउ व्यय कीघउ।

तिवारइं राजा संतोषिउ हुंतड चींतवइ, 'सही ए कांई अपूर्व सिद्धि छइ, जे बोल बोलतां सर्व संपन्न हैं ।' पछइ राजा शीलवतीनइ पूछइ, 'हे भदि! ए आश्चर्यकारक किसिडं ?' तिवारइं शीलवती कहइ, 'माहरइ घरि च्यारि कामिक यक्ष छइ। तिणि करी सर्व वस्तु संग्जइ।' तिहां राजाइं शीलवती बहिन करी मानी। पछइ वहुमान-पूर्वक वस्त - आभरण देई च्यार इ यक्ष माग्या। तिवारइ शीलवतीइ वचन मानिजं। कहिउं, 'ए च्यारिइ यक्ष तुम्ह-भागिल आणी मूिकसु।' ए वात सांभली राजा आपणइ घरि गयउ। पछई शीलवतीइ ते च्यार इ क्आ-माहिथो काढी, बावने चंदने लींच्या, बांसना करंडीया-माहि घाती रिथ बइपार्य। पछइ भागिल भने क धूग ऊगाहीते, वाजित्र वाजते, नाटक करावाते, इणी रीतिइं करंडीया राजा-कन्डलि आणीवा लागा। तेतलइ राजा साम्रहु आवी बहुमानपूर्वक च्यारि इं करंडीया घरि लेई गयउ। पछ६ राज इं सूआर निवारिया, कहिउं, 'आज रसवतो यक्ष जि देसिइं।' पछइ भोजननइ अनसारि राजाइं पूजी, अर्ची, भोगादि करो किहं, 'अहो यक्षो! तुम्हे नीपनी रसवती आपउ।' तिवारइ पेला किहां-थकी आपइ ?

पछइ राजाई जिम करंडीया ऊघडाव्या, तिम माहि थिका च्यार इ ते कराल-विकराल अस्थि-चर्मावरोव नीकल्या | तिवारइ राजा बीहनउ हुंतु पूछइ, 'तुम्हे कडण ? राखत कि झोटींग कि प्रेत ?' तिवारइ ते च्यार इ कहइं, 'स्वामी ! अम्हे ताहरा कामांकुरादि च्यार इ पुरुष ।' इम कहिइ हूंतइ राजाइ उल्ल्या | पछइ सर्व चुत्तांत पूछिउ | तीणे सघली इ वात जिम हुईं, तिम राजा-आगिल कही | तिसिइ राजा कहइ, 'बत्सो ! ए तुम्हनइ कडण अवस्था आवी ?' एइवर्ड स्वरूप जाणी राजादिक लोक सहु चमत्करिया | तिहां राजाई शीलवतीनां शीलनी प्रसंसा कीधी | पछइ राजाइ शीलवती तेडावीनइ कहिंच, 'हे पतिव्रते ! ताहरी ए माटी बुद्धि | हे महासित ! एहवा दृदिमा शीलनी अनेथि न दीसइ | जिवारई मई अजितसेननई गलइ फूलनी माल दीठी, तिवारइ अम्हे ताहरडं शील जाणिउं | तु हिव तूं अम्हारड अपराध खिम | आपणा बांधव ऊपरि कोप म करेसि ।' पछई तेहना शीलनइ प्रमाणि देवताए कुसुमनो वृध्यि कीधी | तिहां राजादिक होके परस्तीना नीम लीधां। पछइ राजाइ शीलवती सत्कारी सन्मानी घरि मोकली।

हिवइ अजितसेन शीलवती प्रिया-सहित सुखिइं रहइ छइ । ईसिइ 'श्रीदमधोषसूरि ज्ञानी तिहां आव्या । राजादिक सर्व वांदिवा गया । पछइ देसनानइ अंति ज्ञानी सुनि शीलवतीनइ कहइ, 'हे भद्रि ! पूर्व भवनां अभ्यास-लगी ताहरउं शील दीपइ छइ ।' तिसिइ अजितसेन पूछइ, 'किम ?' तिवारइं ते ज्ञानी सुनि शीलवतीनु पूर्वभव कहइ, 'कुशपुरि नगरि सुलस श्रावक वसइ । तेहूनी भार्या सुजसा । तेहनु धर्मपुत्र दुर्गत, अनइ तेहनी भार्या दुर्गिला । ते एकदा सुजसा-साथि महासतीनो पोसालइ आवी । तिणि सुजसाइ पोथी पूर्जा । ते देखी दुर्गिला महासतीनइ पूछइ, 'ए किसिउं ?' तिवारइ महासती कहइ, 'आज अज्ञुआली पांचिम छइ । ए पोथी पूजतां, शील पालतां मोक्ष पामीइ ।' ए वात सांभली दुर्गिला चींतवइ, 'ए माहरी स्वामिनी धन्य, जे इम दान दिइ छइ । अनइ एक हूं अभागिणी, जे दान देई न सकूं ।' तिवारइं महासती कहइ, 'जु तई दान न देवाइं, तु तं सुद्ध शील पालि, जावउजीव परपुरुषनउ नीम लयइ । अनइ

१.P धर्मघोषसूरि, Pu. श्रीमदघोषस्रि ।

आठिम चउद्सि धरि पणि शील पाले'। ए उपदेस सांभली दुर्गिलाई ए नीम लीधा । क्रिमंई समिकित्व पणि पामिछं। वली ज्ञान-पंचमीनछं तर पणि कीधाउं। कालनइ योगि भर्तार-भार्या मरी सौधर्म-देवलोकि देवता थया । तिहां-हूंतछ चवी दुर्गेतनछ जीव तूं अजितसेन हूछ, अनइ दुर्गिलानु जीव चिवी ए शीलवती हुई । जे भवांतरि ज्ञान आराधिछं तेह-लगइ शीलवतीनइ निर्मेली बुद्धि हूई।' इम किहइ हूंतइ जाती-स्मरण-ज्ञान उपनछं। तिहां आपणछं पूर्व भवनू स्वरूप देठछं। पछइ बिहुनइ वैराग्य ऊपनइ हूंतइ चारित्र लेई, सम्यग् पाली, पांचमइ देवलोकि देवता हुआ। तिहां हूंता वली एक वार मनुष्यनु जन्म लही मोक्ष पामिलिइं।

. इति श्री-शीलोपदेशमाला बालावबोधि श्रीशीलवतीचरित्र समाप्त ॥३३

*

हिव नंदयंतीनी कथा कहीइ

[३४. नंदयंतीनी कथा]

श्रीपोतनपुर नगरि नरिवक्तम राजा राज्य करइ । तिहां सागरपोत नामा श्रेष्टि वसइ । तेह-नउ पुत्र समुद्रदत्त । ते बालपणा-लगइ सर्व कला अभ्यासतु क्रमिइ यौवनपणंउ पामिल । इसिइं सोपारापाटण-वास्तन्य नागदत्त श्रेष्टि, तेहनी पुत्री नद्यंती महागुणवंति, तेह साथि समुद्रदत्तनइ पाणिप्रहण हूउं । हिव समुद्रदत्तन उ जे बालिमित्र सहदेव, ते साथि कथा-कान्य-विनोद करी काल अतिक्रमावइ ।

अन्यदा समुद्रदत्ति सहदेवनइ कहिउं, 'हे मित्र ! पुरुष ते प्रमाण, जे आपणी जपानी लक्ष्मी भोगवइ । तेह-भणी चालउ आपणपे देशांतरि जई लक्ष्मी जगानीं ।' तिवारइ वलतुं सहदेव कहइ 'तूं पितानइ किह, जिम आपणि चालीइ ।' पछइ समुद्रदत्त आप-कन्हिले आवी कहइ, 'मुझनइ आदेश दिउ, जिम हूं देशांतरि चालउं । तिवारइ पिता कहइ, 'आपणइ घरि घननी कोडि छइ । देशांतरि जईनई किसिउं किस्सु ! ए लक्ष्मी आपणी इच्छाई विलिस । कांइं ! ए बात साची हुई, जे आंगणइ कल्पवृक्ष अनइ बेडि-माहि फल लेवा जईइ ।' वली पुत्र कहइ, 'तात ! जे का-पुरुष हुइ, ते बापनू उपार्जिउं घन विलस ।' ए बात पुत्रनी सांभली पिता शोक अनइ आनंद घरतउ, गद्गद-स्वरि रोतु कहइ, 'वरस ! ए बात तु साची । जे भाग्यवंत पुत्र हुइ, तेह जि आपणी उपार्जी लक्ष्मी विलस । ' इत्यादि वचन कही पिताइं ए वचन मानिउं ।

पछइ समुद्रदत्त घणां कियाणां मेली, द्रन्यनी कोडिइ प्रवहण पूरावी, मातापितानी अनुमित मांगी, मलइ मुहूर्ति समुद्रदत्त-मित्र-सिहत प्रवहणि चडी चालिउ । तिसिइं रात्रिनइ समइ प्राण-वल्लभा नंदयंती चीति आवी । तिहां तेहनइ विरिह झ्रात असमाधि करतउ मित्र-प्रति इसिउं कहइ 'मइं सहू मोकलाविउ पणि नंदयंती प्रिया रित आवो हुंती, तिणि करी मइ मोकलावी नहीं । ते माहरा मन-माहि अपार खटकइ छइ ।' तिवारइ मित्रिइं कहिउ, 'अजी कांई विष्णुं छइ ? पाछउ जई मिली आवि ।' तिवारइ समुद्रदत्त पाछउ वलिउ । अर्धरात्रिनइ समइ घरनइ बारणइ आविउ । पणि सुरपाल पोलीउ जावा न दिइ । तिसिइ समुद्रदत्तिइं पोलीआनः सर्व वात जणावीनइ कहिउं, 'एक वार माहि मू कि, जिम नंदयंती-पियानइ मिली आवउं । अनइ जड न मानइ, तउ ए माहरी नामांकित मुद्रिका लइ ।' इम कही सूरपाल-पोलीआनइ आपणी नामांकित मुद्रिका दीधी । पछइ आपणइ घर आवी बारणइ ऊभउ रही इम चीतवइ, 'जोडं,

१.К विणठउं नथी । С. विणठउं छइ, पाछउ जा, मिली आबि ।

प्रियानइ मिन माहरउ वियोग केतलउएक छइ ? किसिडं करइ छइ ?' इम प्रच्छन्न-वृत्ति इं जु जो इ तु सिडं देखह ? ते नंदयंती भर्तारनइ वियोगि जिम जल-विण माछली टलचलइ, तिम टलवलइ छइ । खिणि बइमइ, खिणि सूइ, खिणि ऊठइ, खिणि मुंइं पड़ । इम करतां किमही जंग न हुइ । वली हार-दोर त्रोडह, समस्त अंग मोडह, चंद्र चंद्रन अपारि दहइ, मुखि इम कहइ, 'देविइं मुझनइ एवडउ वियोग सिउं कीघउ ?' इम कही तिहां-थकी ऊठी घरनी वाडीइ गई । तिहां जई पंच-परमेष्टि-नवकार कही, देवगुरु स्मरी, सर्व जीव साथि खिमित-खामणां करी कहइ, 'हिवडां भरतार अणबोलाविउ चालिउ छइ । जु इणि भवि एहवउं स्वरूप हूउं, तु आवतइ भवि मुझनइ समुद्रदत्त भर्तार होज्यों ।' इम कही आपणा बस्त्रनउ पासउ करी बृक्षिई बांधिउ । तिहां भरतारना गुण वली वली स्मरी आपणइ गलइ जेतलइ पासउ घातिड, तेतल्ड समुद्रदत्त आवी पासउ कापिउ । पछइ तिहां संभोगादिक सुख अनुभवी, रात्रि रहो, प्रियानइ मोकलावी, पाछउ प्रवहणि आवी, प्रवहण खेडावी द्वीपांतिर चालिउ ।

हिव जे समुद्रदत्त रात्रिइं घरि आवित्र, ते वात कोई न जाणइ। पणि तीणइ संयोगि नंद्यंतीनइ गर्भ रहिउ। तेतलई मास च्यारि हुआ, पछइ उदर वाधिवा लागउं। तिसिइ सागरपोत-सुसराना मन-माहि एहवउ विश्लेष ऊपनउ, 'जहीइ समुद्रदत्त चालिउ तहीइ ए वधू तु रितंती हूंती। तिणि करी विणमोकलाविइं चालिउ। अनइ हिवडां जे ए गर्भ दीसइ छइ, तिणि करी इम जाणीइ, ए दुःशीला। तु ए वधू अम्हारा कुलनइ लांछन ऊपजाविसिइ। हिवइ ए राखिवा व्यक्ती नही। चांडालिनी परिइं अपरिहरी जोईइ।' इम मन-माहि चीतवी, निर्देयपणउं आणी, मउडइ-सिउं नंदयंतीनइ रथि बईसारी, महा-वन-माहि लेई मूंकी आविउ।

तिवार-पछइ नंदयंती चींतवइ, 'मइं तु अपराध कांई नहीं कीधउ, अनइ हूं जे ईणइ स्वमुरइ छांडी ते कांई ?' इम विमान्तो अचेत थई मुंदं पड़ी । लगारेक वाय वायउ, सचेत हुई । निराधार हूंती चींतवइ, 'हिबइ माहरउ शील किम रहिसिइ ? इम चीतवी जेतलइ वन-माहि पासउ गलइ धातिउ, तेतलइ देवताइ पासउ कापिउ । तिहां हूनी आधी चाली । सिंह ब्याघ आवी नमी नमी जाई, पणि पाइउं कांई न करई । पछइ पवेत एक नई शृंगि चडी, देव-गुरुनउं ध्यान करी जेतलइ सांग दीधी, तेतलई देवताइ तलइ पल्यंक कीधउ । तिहां शासन-देवताई सांनिध्य कीधउ । वली आगलि जाती चींतवइ, हू भरतारि छांडो, पिताई छांडी, न जाणीइ मुझनइ अजी विधाना सिउं करिसिइ ?' इम आपणपउ निंदती यूथभूष्ट हरिणीनी परिइं उरइ-परइ फिरिना लागे । ईसिई मरूभच-नगरनउ अधिपति श्रीपद्मराजा मृगयाना-मणी नीकलिउ हूंतउ, तिणि ते बन-माहि नंदयंती दीठी । बहिन करी मानी । पछइ आपणइ नगरि आणी । कहिउं, 'बहिनि ! जां-लगइ ताहरउ पति नावइ तां-तांई शत्रुकारि दीन-दुखित-लोकनइ दान दइ ।' पछइ नंदयंती दान देती, धर्म-ध्यान करती, गर्भ पालती, मर्तारनइ स्मरती, रहइ छइ । हिव श्रेष्टि कहुनइ वन-माहि मूकी पाछउ घरि आवी, तिहां वहूना शीलनी वात सर्व-कुटुंब-आगिल कही ।

हिवइ अन्यदा स्रपाल प्रतीहार किसिइं काजिइं जिहां समुद्रदत्त छइ तिहां गयउ हूंतउ । ते आपणउं काज करी पाछउ घर-भणी चालिया लागउ । तिसिइं तेहनइ हाथि समुद्रदत्तई आपणइ घरि माता-पिता-प्रियानइ कांई कांई अपूर्व वस्तु मोकली । ते लेई सूरपाल घरि आवी

१K.पाद्य । २.K.P युक्त । ३K. छांडिवा योग्य । ४K.नथी ।

मानापनइ जुज़्ई वस्तु आपी। पछइ जड नंदयंतीनइ वस्तु देवा जाइ, तु नंदयंतीनइ न देखा । तिवारइं सूरपाल सागरपोत-कन्हइ पूछइ, 'वधू किहां ?' इम पृछिइ सागरपोति वहूनी सर्व वात कही । तेतल्ड सूरपाल रोतड कहइ, श्रेष्टि ! तुम्हे गाढा वरास्या । ते तु महा पतिवता ।' किह्उं, 'सांमलड, जहीइ समुद्रदत्त चालिड हूंतु, तीणी जि रात्रिई छानड पाछड आविड । हूं तेहनइ माहि नहुतड मूंकतु, पणि तीणइ नामांकित मुद्रिका मुझनइ आपी। आपणि घर-माहि जई प्रियानइ मिली पाछड वली प्रवहणि चिडड । अनइ मूझनइ सम दीघड हूंतड, तेह-भणी महं न कहिउं।' इम कही जेतल्ड नामांकित मुद्रिका देखाडी, तेतल्ड सागरपोत घणी असमाधि आणतड, विलाप करतड जि वधूनइ जोवा चालिड ।

ईसिइ समुद्रदत्त पुत्र घणउ लाम ऊपार्जी आपणइ नगिर कुशलखेमइ आविउ । तिसिइ ते स्त्रीनी वात सांभली वज्राहतनी परिइं महांत असमाधि करतं इम कहइ, 'प्रिया विना जीवीनइ मह सिउं करिवउं छइ ! हिव हूं काष्ट-भक्षण किर ।' तिवारह मित्रइ किहुउं, 'एक वार संघले देसे जोई आवि । पछइ तुं काष्ट-भक्षण करे ।' ए मित्रनुं वचन सांभली समुद्रदत्त गाम, नगर, वन, सह जोतं जोतं जाइवा लागं । तिहां संबल खूटइ सखाईया पाछा गया । पछइ एकांकी फिरतं नंद्यंतीनइ समरतं , कंदमूलफलाहार करतं , महाकुश हूंतं , फिरतं फिरतं भक्षि अविउ । पणि क्षुधाइ पीडिंड हूंतु भोजननइ हेति शत्रूकारि गयं । तिसिइ दानशालाइ दान देती नंदयंती दीठी । उलावी । अनइ नंद्यंतीइ ते समुद्रदत्त उलाविड । इम बिहुंनई माहोमाहि हर्ष ऊपनं । हिव नंदयंती आपणी वात किहती रोवा लागी । तिसिइ समुद्रदत्तह आपणइ हाथिइ करी आसू लहीया। पछइ प्रेममइ वात करिवा लागा । इसिइ राजाइ ए वात समिली । राजा पणि तिहां आवी समुद्रदत्त-नंदयंतीनइ घरि लेई सर्व वात पृछी । एतलइ सामरपोत अनइ सूरपाल बेहू भमता भमता तिहां आव्या । सर्व एकठा मिल्या । इम माहोमाहि वात करंड छई ।

ईसिइ ज्ञानमानु केवली तिहां आवी समवसरिउ। तिसिइं समुद्रदत्तादिक सर्व वांदिवा गया। केवली वांदीनइ समुद्रदत्तइ पृछिउं, 'स्वामिन! नंदर्यतीनइ कीणइ किम्इ ए कलंक चिडिउं ?' तिवारइ ज्ञानी कहइ, 'एहनइ जीवइ भवांतिर याग मांडिउ हूंतउ। तिहां महातमा एक भिक्षानइ अर्थि आविउ। तेहनइ किहुउं, ''रे शूद्र! तृं इहां किहां आविउ ?'' एहवउं दूषण दीघंउ। तेतच्इ एहनइ कुटुंबि सघले साचउं करी मानिउं। तिहां सामु-दायक कर्म ऊपार्जिउं। तेह-लगइ ए महासती इ हूंती पणि कर्म उदिय आविइ हूंतई ए क्लंक पामिउ।' तु केवली कहइ छइ, 'अहो लोको! अणआलोइ कर्मना विशेष-लगी जीव भवाटवी-माहि ईणइ परि भमइ।' एहवउ उपदेस सांभली, वैराग्य-पर दीक्षानु मनोरथ चींतवता आवकड धर्म पडिवजी, जीर्णोद्धारादि पुण्य करी, भर्तार-सिहत नंदयंती घणउ काल गृह-धर्म पाली, आऊ-खानइ क्षिय देवलोकि पहुती। क्रमइ मोक्षि जासिइ।

इति बीलोपदेशमाला-बालाविबोघे श्री नंदयंती कथा समाप्त ॥३४॥

अथ वली त्रीजी मनोरमा महासती, सुदर्शन-शेष्टिनी कलत्र, सर्व-लोक प्रसिद्ध जि छह । जेहना शील-महिमा-लगइ सुदर्शन श्रेष्टिनइ एवडइ कष्टि पडिइ, काउसग्ग कीघइ शासन देवताइ प्रत्यक्ष हूई संकट भांजिंड । तिहां महांत महिमा हुई । ते सुदर्शन श्रेष्टिनी कथा-हूंती जाणिबी । इहां मनोरमानं नाममात्र कहिंउं ।

हिंव रोहिणीनी कथा कहाइ-

[३५. राहिणीनी कथा]

पाडलोपुर नगर | तिहां श्री-नैदराजा राज करइ | तिणि नगरि धनावह श्रेष्टि वस्ह | तेहनी प्रिया रोहिणी, पणि रूपी करी सर्व-जग-मोहिनी |

अन्यदा श्रेष्टि रोहिणोनइ कहई, 'हे प्रिये ! जउ तूं कईइ, तउ हूं प्रवहणि बइसी, देसांतिर जई, घन ऊपार्जी आवउं !' तिवारइं रोहिणीइ आदेस दीघउ | पछइ घनावह देशांतरि चालिउ !
हिव रोहिणो त्रिकरण-सुद्ध शील पालती, घर्म ध्यान करती सुखिइं रहइ छइ । इंशिइं उष्ण-काल
आविइ रोहिणो सखीए परिवरी आगणा आवासनो सातमी भूमिकाइं चडो हासु-विनोद करिवा
लागो | तिशिइं नंदराजाइं दीठी । निरूगम रूप-लावण्य देखी राजा कामांघ हुउ । पछइ राज्याइं
रोहिणी-कन्हलि दूती मोकली । तिणि दूतीइं आवो रोहिणीनइ इसिउं कहिउं, देवि ! तूंहनइ कंर्प तूठउ । कांहं, तुझनइ राजा श्रीनंद वांछइ छइ । तु हिव तूं नंदराजानइ संगि आपणउं
तुक्णागउं सफल करि ।' जिम ए वात सांभठी, तिम रोहिणी मन-माहि चीतवइ, 'सही, ए तां
राजा निर्गाला माता हस्तींद्रनी गरिइं शीलक्षीउ वृक्ष उन्मूलिसिइ। तु मइ ए राजा उपाइ जि करी
राखिवउ । पणि इहां कांई प्राणनही चालइ ।' इम विनासी दूतनइ मधुर वचने करी कहइ, 'हे
सिख ! स्त्रो तु सहजिइ सुभग पुरुषनी वांछा करइ। पछई वली विरोषिइ नंदराजा सरीखउ पार्थइ तु
दूध-माहि सफर मिली । जु ए राजा आवणहार छइ, तु राति आविओ ।' इम कही
फलफूल देई दासी विसर्जी । तिणि जई नंदराजा संतोषिउ ।

पछइ राजाई ते दिवस वर्ष समान गमाडिउ | तिसिइ रात्रि आवी | राजा नंद शंगार करी. सर्व लोक विवर्जी, नर्म-महुता सहित रोहिणीनइ घरि आविउ । तिहां चेटी-पाहंति आगता-स्त्रागत कराविडं । पछइ राजा मनोरथ-सहित सिंहासनि जई बइठड । तिसिहं रोहिणी सालंकार साभरण राजा साम्ही दृष्टि देई रही, अनइ राजा रोहिणीनइ साम्हुउं जोई रहिउ। जेतलइ राजा धीरिमपणंड अवलंबी कांई बोलइ, तेतलइ सत्रीए कहिउं, 'स्वामी ! रसवती मजद हुई ।' इम कही राजा आगिल सुवर्णमय थाल आणी मूकिउ । पछइ फलहिल परीसी । तेतलइ नवनवे वस्त्रे ढांकी हांडली सउ-एक आगिल आगी मूकी । रोहिणी परीसिवा लागी। तिसिइ राजा कहड, 'सवे हांडली-माहि-थकुं थोडउं थोडउं परीसउ।' जिम कोई तृष्यकांत पाणी मागइ तिम नवनवी हांडिलीनी रमवती लिइ। पाण स्वाद एक जि देखह। तिवारइ राजा कहइ, 'ए हांडिली नवी नवी दीसईं, अनइ रसवती पणि जूज़ई दीसईं, पणि स्वादतां एक जि स्वाद आवइ छइ । अनइ ए जुजूए ढांकणे करी ढांकी छइं ते कांई विशेष संभावीइ १ तिवारइं रोहिणी हसीनइ कहइ, 'राजन ! सर्व जाणवेत्ता-माहि तूं धुरि छइ, पणि इहां कांडे कारण छइ।' राजाइ पृछिडं 'किसिडं कारण !' तिसिइं रोहिणी कहइ, 'अम ए सर्व वस्त जुन्हें देखीइ छइ, पणि स्वाद एक जि, तिम संसार-माहि स्त्री सर्व जुन्हें जि छइं । पणि केतलीएक गोरी, केतलीएक स्थाम, एक रूपवंति, एक मध्यम रूपवंति । इम सर्व स्त्री जुज़ई छइं। पणि पवि हुं-नउ संभोग-विशेष एक जि। जिम आकांक्ष चंद्रमा एक. पणि वाणी-माहि प्रतिविंव जुजू भां देखीइ । जिम चंद्रमा एक जि तिम सर्व स्त्री स्वादिइ एक-सरीखी, विशेष कांई नहीं । पण एतलउ विशेष जि स्वट्रार-संभोगनउ संतोष ते सन्मार्ग. अनइ परस्त्रीन इ संभोग ते असन्मार्ग । तु अहो राजन् ! इहलो इ-परलोक-विरुद्ध किम इ नाचरीइ । विशेषत तुम्हे प्रजाना नाथ, पिता समान, सघलानइ आधारभूत छउ । अनड

जे तुम्हे अन्याई चालउ, तु इम जाणीइ, अमृत-हूंती अंगारनी वृष्टि पडी । हे राजन् ! ए विषय-सुख नरकनी खाणि छइ । तेह-भणी त् आपणा कुलनउ आचार स्मिर । अन्याय-मार्गि म चालि ।

इणि वनि राजा प्रतिबोधित हूंत उरोहिणीने परे लागी, आपण अपराध खमावी नह कहइ, 'हे मांद्र ! तुराचारना उरदेशना देणहार घणा इ हुई, पणि हितोपदेश विरख कोई दिइ । आज-गळह तूं माहरइ भगिनी अनइ माहरो गुहणी पणि तूं, जे हूं नरम माहि पहत तई राखित ।' पळइ नंदराजा आपणइ घरि आवित । इसिइ धनावह श्रेष्टि द्वीपांतर-हूंतत घर जपाजी घरि आवित । तिसिइं रोहिणीई आगता-स्वागत की घउं । पळइ नंदरायन सर्व बृत्तांत चेडीना मुख-इतु सांभळी धनावह सेठि चींतवइ, 'ए रोहिणीनुं रूप-लावण्य अमृत तेहनी कूई । ए एकांति राजाई विण भोगवी किम मेवही हुसिइ ! जिम ऊधाडत करंगत काम-विस पडित हूंतत अणवाखितं न मूकइ । वली बिमुक्षितनइ मुख सरस फल आवितं अणचाखितं न मेवहइ । तिम एकां ते रूपवंति स्त्री पुरुषनइ वसि पडी हूंती अणभुक्त न जाइ ।' एहवत विकल्प मन-माहि चींतवी धनावह रोहिणी-साथि न बोलइ। सचिंत थकत रहह । इसिइ रोहिणीइ चतुरपणइ भत्रीरन अभिप्राय जाणित । तिहां धनावह पणि रात्रिई अणबोळित रहित ।

इसिइ मेघ अखंड-धार मुसल-प्रमाण धाराइ करी वरसिवा लागउ। वली सात दिन-माहि धार न 'खंडी । तिसिइ गंगानदी महा-पूरि आको। समस्त पाडलीपुर नगर वाहीवा लागउं। तेतल्ड राजा-प्रमुख सर्व लोक मिली कहइं, 'ते कोई छइ जे नदीनंउ पूर वाल्ड ?' तिवार हे रोहिणी प्रस्त व जाणीन अवो। पछइ राजा, भर्तार देखतां, सर्वलोक प्रत्यक्ष, हाथि पाणी लेई, नवकारनं उस्मरण करी किवा लागी, 'हे गंगे! ज मइ मिन वचिन कायाइ करी सुद्ध शील पालिउं हुइ, तु निदि! तूं माग दइ। पाछी उहिट।' इम कही जेतल्ड पाणीनी छांट घाती, तेतल्ड तत्काल नदी पाछी वली। तिसिइ सहू लोक जयजयारव करता, देवता ए कुसुमनी वृष्टि कीधी। तिवारइ भर्तारनइ मिन विश्लेष ऊतरिउ। पछइ सपले शीलनी महिमा विस्तरी। तिसिइं घणे लोके परस्त्रीनं नीम लीघंड। वली मिथ्यात्व-हूंता घणा लोक निवस्यी। विशेषत जिन धर्मनी ख्याति हुई। पछइ रोहिणी राजा-सहित चैत्य-परिवाडि करी रोहिणीनइ घरि आज्या। तिहां धनाविह शील मिहमा देवो, सर्व मंत्रोषिउ। इम रोहिणो जिन-सासिन प्रभावना करो, घणड काल धर्म पाली, देव-लोक गई।

॥ इति रोहिग्गीनी कथा ॥३५॥

हिव शीलवंत मनुष्यनं संसर्ग बहु गुण-दायक हुई । ते कहोई— सील कलिएहिं सिद्धिं संगो वि हु तग्गुणावहो होई । कप्पूरं सई झत्तं(१त्थं) पि कुणइ वत्थूण सुरहित्तं ॥५७

ठ्याख्याः — जे मनुष्य शील-कलित कही इ, शील ई करी सहित हुइ=सुसील हुइ इसिउ अर्थ । तेह मनुष्यत संग=संबंध गुणकारक हुइ । कांडे ? ते ही मनुष्य सुशील हुइ, कपूरनइ दण्टांति । जिम कपूरन उ संसर्ग की धउ हूं तउ सयर अनइ वस्त्र बिहुन इ आपण इ परिमलि करी सुगंध कर इ, तिम शीलवंतन उ संसर्ग करतां, करणहार न इ शीलादिक गुण उपज हैं । जिणि कारणि वली कहिंड,

१,K. लांची, A.B. खंची, Pu. खंडी ।

जो जारिसेण संगं करेइ अचिरेण तारिसो होइ। कुसुमेण सह वसंता तिला वि तग्गंधिया जाया ॥१॥

पह-भणी शीलवंतनउ संसर्ग करिवड, कुशीलनड संसर्ग न करिवड | हिवइ एक शील-गुण-पाखइ बीजा सर्व गुण-फोक थाई | ते कहइ---

> सयलो वि गुणम्गामो सीलेग विणा न सोहमाबहइ । नयण-विहूणं व मुहं लवण-विहूणा रसवई व्य ॥५८

इयाख्याः — नय-विनयादिक सघलाइ गुणमाम=गुण-समूह, शील-पालइ शोभा न पामइ, मुखनइ दृष्टांति । जिम मुखि मला कपोल, सता होठ, लंब कर्ण, गौर वर्ण, सुकुमाल शरीर, मली दादी — इत्यादि मलां हुइ पणि एक आंखि विना जिम मुख न शोभइ । वली दृष्टांत कहइ, जिम समस्त रसवती मिष्ट, मधुर, गविल, तिकादि संपूर्ण-रस-सहित हुइ, पणि जड एक माहि लवगरस न हुइ तु लगारइ स्माद न दिइ, तिम अनेश समस्त गुग शिलगुग-विण शोभइं नहीं । अनई किवारइ शरीर-माहि बीजा गुग न हुइं, एक शील जि गुण हुइ, तउ जाणे सर्व सुण हुआ ।

हिवइ शीज-छगइ इह-जोकि हि प्रत्यक्ष फल हुइ ते कहइ— विस-विसहर-करि-केसरि-चोरारि-पिसाय-साइणी-पमुहा । सब्वे वि असुह भावा पहुंबति न सीखंताणं ॥५९

व्याख्याः—विष थावर-जंगम-रूप, विषधर=अजगरादि सर्प, करि=मदोन्मत्त हस्ती,केसरि= सिंह व्याघादि, चो'=तरुकर, अरि=त्रेरि, पिशाच=भूतपेत, झोटोंग-गोगा-प्रमुख, शाकिनी=शीकोत्तरी-प्रमुख नव कोडि कात्यायनी –ए सघलाइ मारणारनक अशुभ पदार्थ छई, पणि शीलव्रतधारीनइ प्रभवई नहीं, काई उपद्रव करी न सकई ।

हिवइ शीलवत आदरीनइ इंदीना वाह्या हूंता शील मेल्हई, शील मांजई तेहनूं स्वरूप कहर---

> सील-ब्महाणं पुण नाम-ग्गहणं पि पाव-तरु-बीयं । जा पुण तेसि तु गई तं जाणइ केवली-भयवं ।।६०

ठयाख्या:——जे जीव शील-हूंता भ्रष्ट थाई तेहनुं नामग्रहण पणि पाप-तरु-बीज हुई । जिम बीज बुक्षनइ ऊपजावइ, तिम कुशीं उनउं नामग्रहण पाप ऊपजावइ। अनइ जे वली शील-भ्रष्टनी गति संसार-माहि परिभ्रमण-रूप, ते केवली भगवंत जाणइ। अनेरउ को जीव जाणी न सकइ। कही पणि न सकइ, अति रीद्र-पापपणा लगइ। एतलइ गाथार्थ हुउ।

हिव वटी शील-भ्रष्ट जीवनइ इह-लोकइ पर-लोकि जे फल हुई ते बिहु गाथाए करा कहइ—

> बंधण-छेयण-ताडण-मारण-पमुहाइं विविह-दुक्खाइं । इह-लोए वि जहा थिरमजसं पावंति गय-सीला ॥६१ दालिह-खुद-वाही-अप्पाउ-कुरूवयाइं असुहाइं । ैनरयंताइ वि वसणाइं गलिय-सीलाण पर-लोए ॥६२

१. Pu. मरणंता ।

ञ्याख्या :—-शीलना मंग-लगइं जीव इह-लोकि बंधन=शंदु-लोहना बंधन इत्यादि पामइ! छेदन कर्ण-नासिकादि, ताडन शिक्ष करी, मारण लकुटादिके, खङ्गादिके करी, प्रमुख शब्दिइं बीजी इ नानाविध कदर्थना सहावीइ! बली इहलीकि अयश=अपकीर्त्ति एवमादिक प्रकार लह्इ! अनइ मूआ पूठिइ परलोकि दालिद्र हुइ! क्षुद्र व्याधि, अल्पायु, कुरूपता, वामणा, कृबडा, टूंटा, पांगुला, अशुभ नेपुंसका, नरक, तिर्यंचादि-गित-प्रमुख अनेक कष्ट=व्यसन लहइ=पामइ! जोठ, शिल-भंगइ इह-लोकि पर-लोके एवडां कष्ट भोगबीइ ै।

हिव शील-भ्रष्ट कूलवाल्आनउ दृष्टांतपूर्वक फल कहइ--

निरुवम-तव-गुण-रंजिय सुरो पि सो कूलवालुओ साहू । मागहिया-संगाओ गलिय-वओ पाविओ कु-गइं ॥६३

व्याख्या:—निरुपम=असामान्य जे तपगुण, तिणि करी रंजन्या सुर=देवता जीणइ इसिड, ते कूलवाळूड मुनि मागधिका गणिकाना संसर्ग-लगइ गलित-त्रत=भग्नशीलत्रत हुउ । इह-लोकि पतित हुउ अनइ परलोकि नरकादि कुगति पामी । एतलइ गाथानउ अर्थ हुउ । भागर्थ कथा- हुंतु जाणिवउ ।

ते कूळवाळ्ञानी कथा कहीइ--

[३६. कूलवाल्युआनी कथा]

कीणइ एकि नगिर कोई एक आचार्य क्षमावंत हुआ । ते आपणा गच्छनइ पालई । हिवइ जिम श्री-महावीरनइ गोसालड कुशिष्य, तिम ते गुरुनइ कुशिष्य एक सांपडिड, गुरुनइ उद्देगकारक, दुर्विनीत, गुरुनइ प्रतिकूल । तेहनइ गुरु घणोइ सारणावारणा दिइं, पणि ते कुशिष्य-नइ गमड नहीं । इम सदा-इ ते गुरु-ऊपिर पाप बांघइ । अन्यदा गुरु यात्रा-मणी श्री. गिरि-नारि पर्वति चड्या । तिसिइ ते कुशिष्य चपल-लोचन मावइ तिहां सुल जोतड देखी गुरे रीस कीची । पछइ चेलड इंस राखी रहिड । गुरु जिवारइ पाछां ऊतरिवा लागा, तिवारइ केडिइ गडड एक गुरु-भणी ढोली दीघड । तिसिइं गुरे ते पाषाण आवतड जाणी, गुरु टली अलगा हुआ । गडड वही आघड गयड । गुरु रीसाणा हूंता कहई, 'रे कुशिष्य ! तूं स्त्री-हूंतड पतित याए ।' पछइ ते शिष्य गुरुवचन कूडडं करिवा-भणी चींतवइ, 'हूं तिहां रहिसु, जिहां स्त्रीनंड नाम-मात्र नही सांभलंड ।' इम चीतवी नमदा-नदीनइ कूलि जई मास-श्वपणादि तप तपतड काउसिंग रहिड । तिसिइ वरसालइ नदीनडं महा-पूर आविंड । तेतलइ नदीनी अधिष्टायकइं तरनई प्रमाणि प्रवाह टालिड । तिहां लोक-माहि क्रवाल्ड महारमा ए नाम विख्यात हुउ ।

हिवइ तिणि प्रस्तावि हार-कुंडल-वस्त्र-सिंद से चनक हस्ती श्री.श्रेणिक राजा हल्ल-विहल्लनइं दीघंड । तेतलई श्रेणिकराजा परोक्ष हूउ । पछइ कोणिक राजि बइठउ । पणि श्रेणिकनी असमाधिइं नगर-माहि रही न सकइ, बाहरि जई रहिउ। तेतलई प्रधाने बुद्धि दीघी । तिहां चंपानगरी वसावी । पछइ कोणिक कालादिक दस कुमार सहित तिहां रहिउ । पद्मावती पट्टराणी कीघी । ते राणीना आग्रह-लगइ कोणिकइ हल्ल-विहल्ल-कन्हई हार-कुंडल माग्यां । तिसिइं हल्ल-विहल्ले विमासी, सार वस्तु लेई, रतोरतिइं विशालानगरीइ आव्या । तिहां हल्ल-विहल्लनउ नानउ चैडड राय राज्य करइ छइ । तिणि हल्ल-विहल्ल मान देई राख्या । तिसिइं प्रभाति कोणिक वात

१ K. नपुंसकता । २ C. भोगवावीइं, K. भोगवावीइ ।

सांमली चींतवइ, 'तां भाई तु गया अनइ रत्न इ गयां । जु मइं ए वात पडिवजी, तु हिन हूं पाछी किम मूंकउं ? विर कटक करीनइ ए रत्न लेई आवउं ।' इम चींतवी दूत मोकली चेडा-रायनई कहाविउं जु, 'हल्ल-विहल्ल बेहूं उरहा मोकलिओ ।' तिवारइ चेडउ राजा दूतनइ कहइ, 'अहो दूत ! ए माहरा दोहीत्र शरणइ आन्या, ते मइ किम देवराई ?' इम कही दूत पाछइ वालिउ ।

तेतलइ कोणिक सिंहनी परिइं रीसाणउ हूंतउ कटक मेली विशालानगरी-मणी आविउ । तिवारइ चेडल राजा पणि सामुह आविउ । हिवइ चेडारायनइ परिम्रह-परिमाणि एक जि बाण नांखिवानउ नीम छइ । इसिइ पहिलइ दिनि कोणिकइ आंपणउ माई काल इसिइ नामि सेनानी कीघउ । तिहां झुझनइ समइ चेडारयनइ एक-इ बाणि परोक्ष हूउ । वली बीजइ दिनि बीजउ माई हणिउ । इम चेडइ रायइ नवे दिहाडे नव भाई कोणिकना हण्या । तिहां कोटि-संख्य सुभट पड्या । किहांइएक एहवी संख्या दीसइ छइ जउ, एक कोडि असी लाख एतला सुभट पड्या । एहवउं महा-अरिष्ट झुझ हुउं ।

हिवइं रात्रिनः समइ हल्ल-विहल्ल सेचनिक हाथीइ बइसी नीकलइं, अनइ कोणिकनउं कटक हणी पाछा आंवई । इम करतां कोणिक घणाइ उपाय करइ, पणि हल्ल-विहल्ल किमिहि विश्व नावइ । पछइ कोणिकइ खाई एक विल्ली, खयरना अंगार भरी, छानी ढांकी मूकावी छइ । इसिइ तिम जि रात्रिइ हल्ल-विहल्ल सेचनिक बइसी आव्या । तिसिइ हल्ल-विहल्ल सेचनक प्रेरिउ । पणि सेचनक आगि जाणी आघउ पइसइ नहीं । जिवारइ बलारकारि हाथीउ प्रेरिउ, तिवारइ हाथीई सूंढिइ करी हल्ल-विहल्ल पूठि-हूंता ऊतारी आपणि खाई—माहि पडिउ । तेतलइ आगि प्रकट हुईं । पछइ हल्ल-विहल्ल उरता करता दीक्षानी वांछा करिवा लगा । इसिइ श्रीशासन-देवताइ ऊपाडी श्रीमहावीरनइ समोसरणि मूंक्या । तिहां तीणे दीक्षा दीघी ।

हिवइ कोणिक विशाला लेई न सकइ । तिवारइ वली कोणिकइ एहवी प्रतिशा कीषी, 'हूं तु कोणिक, जु विशालनगरी—माहि रासभी जोतरी हल खेडावउं । नहीं तु अग्नि-माहि प्रवेस करडं।' इसी प्रतिशा कीषी, तुही गढ लेवराइ नहीं। तिवारइ कोणिक मन-माहि विखवाद करिवा लागउ। तिसिई शासन-देवताई गुरुनड प्रत्यनीक कूलवालुड जाणी, रीसाणी हूंती, आकाशि रही एहवी वाणी बोली—

'समणे जह कूलवालए मागहिआ गणिआ य आणए । राया य असोगचंदए वेसालिं नगरिं गहिस्सए ॥१॥'

एहवी गाथा सांभली कोणिक राजा हर्षिउ! कांई १ देवतानी वाणी निःफल न हुइ। पछइ राजाई मागिधका वेश्या तेडी वस्त्र-अलंकारे सत्कारीनइ कहिउं, 'हे भिद्र! कुलवालूउ मुनि भोलवी इहां आणि।' तिवारई वेश्याइ ए वात पिडवजी। पछइ कपट-श्राविका हुई, तेवडतेवडी पांच-सात सली साथि लेई, संघनी रचना करी, तीर्थ नमस्करती, जीणइ प्रदेखि कूलवालूउ मुनि छइ तिहां आवी। भावना-पूर्वक मुनि वांदी, आगिल बइटी। तिसिई मुनिई धर्मेलाभ कही पूछिउं, 'तुम्हे किहां-हूंता आव्या १' तिवारई मागिधका कहइ, 'नाथ! अम्हे चंपानगरी हूंता तीर्थ नमस्करता नमस्करता इहां आव्या। तु आज अम्हे जंगम-तीर्थ मेटिउं। महात्मन् ! हिव अम्ह-ऊगरे कृपा करी बइतालीस-दोष-विशुद्ध आहार छइ ते आज त्ं लइ।' १. कि. अत्र । २. 'खणी' पाठ मात्र कि. मां ज छे. ३. कि. आघर गमन करइ।

पछइ मुनि घणइ आग्रहि फासू जाणी विहरवा आविउ । हिव मागिषिकाइ पूर्विइ नेपालगोटे मिश्रित मोदक करी मूक्या छई । तेहवा ते मोदक विहराव्या । पछ मुनि एकांति जई जेतलइ पारणउं कीष उं, तेतलइ 'विरेच लागउ । तीणइ अतीसारि करी रात्रि मोटइ कि गई । तेतल इं प्रभाति मागिषका आवी कहइ, 'ए दोष मुजकृत हुउ ।' इम कहती सारग्रुद्धि करिवा लागी । वली कहइ, 'अम्हारउं वालणउं रहिउं । काई ! मुनिनइ ए अवस्था हुई हूं किम छांडी जाउं !' पछइ अंगनी संवाहनां करिवा लागी । इम संकटि पाडी हावभावे करी तिम किमइ मुनि भोलिवउ, जिम भर्तार-भार्यानउ संबंध हूउ । जोउ मोहन विलिस्त । जिम क्रीडा-मर्कट दोरीइ बांधिउ भावइ तिहां लीजइ, तिम ने कुलवाल्युउ मुनि मागिधका वेश्याइं कोणिक कन्हिल आणिउ । पछइ राजानइ कहइ, 'ए कुलवाल्युउ मह पित करी आणिउ छइ ।' तिसिइ राजा कुलवाल्युआनइ कहइ 'अहो मुनि ! तिम करि जिम ए विशाला लेवराइ ।'

पछड़ मनि विशाला-माहि जई नगरना चरित्र जोइवा लागउ । जु जोइ तु नगर-माहि राजानइ सबलाइ कांइं नथी । पणि श्री-मुनिसुत्रतस्वामिना स्तूपनी सबलाइ दीठी । ते यूभनी प्रतिष्टा मूल कि पुष्पार्कि मोटइ योगि हुई छइ। तिणि करी जउ इंद्र आवह तु ही ए नगरी न लेवराइ। एहवर्ड कारण जाणी कांई विचारइ तेतलइ नगरना लोक, राजा सह आवी मूनि-कन्हलि पूछइ, 'अहो ! अजी विष्रह केतलाएक दिन होसिइ ?' तिवारइ मुनि कहई, 'जां नगर माहि ए स्तूप छइ, ^४तां-लगइ गढ-रोहउ होसिइ।' कहिउं, 'जु ए खणी लांखउ, तु हिवडां इ गढ-रोहउ भाजइ।' तेतलड लोक कुसि-कुदाला लेई थूम खणिवा लागा। कहड, धूर्तिइ कडण-एक भोलवीइ नहीं ? पछइ तीणइ कोणिकनइ इसिउं जणाविउं जु, 'तूं कटक लेई कोस वि अलगउ जाए, जिम एहनइ प्रत्यय ऊपजइ ।' पछइ कोणिक बि-कोस ताइ पाछउ गयउ । तिवारइ लोके साचउ प्रत्यय जाणी स्तूप मूल-हूँतउ खणी नांखिउ । तिसिइं अधिष्टायक नगरनइ छोडी गया । पछइ बारमा बरसनइ अंति कोणिकइ विशाला नगरी लीधी। तीणी वेलाइ जे संग्राम हैउ ते संग्राम ईणइ उत्सर्पिणीइ न हुत उ हुउँ। पछइ कोणिकि चेडानइ नीकली नइ कहि उं. हि नाना ! हिव तूं जि कांई कहइ ते हूं करंड !' तिवारइ चेडिंड कहइ, 'जेतलह हूं वाविई स्नाम करी आवउं, तेतलइ त् नगर-माहि मावेसि ।' इम कही पछइ चेडइ राजाई स्नान करी आपणइ कंठि प्रतिमा बांधी जेतलइ वावि-माहि झांप दीधी तेतलई घरणे दूई आवी. चेडाराजानड साहम्मी-भणी लेई, आपणइ स्थानकि गयउ ।

तिहां चेडउ राजा अणसण लेई, आराधना-पूर्वक मरण पामी, आठमइ सहसार देवलोंकि देव हुउ। एहवइ चेडारायनउ दोही मु पुजेष्टानु पुत्र सत्यकी एहवइ नामि विद्याधर छइ। तिणी आवी ते विशालानउ सर्व लोक नीलवंति पर्वति लीधउ। पछइ कोणिकि नगरी-माहि जई, हिल रासम जोतरावी, विशालानी मृमिका खेडी, कउडां वावी प्रतिज्ञा पूरी कीधी। पछइ अशोकखंद्र राजा आपणई नगरि पाछउ आविउ। अनइ कुलवालूउ ऋषि मागिधका वेश्यानइ संगि शीलमी खंडना करी अनेक भव संसार-माहि भामउ।

इति श्री शीलोपदेशमाला-बालाविबोधि कूलवाल्युआनी कथा ॥३६॥

हिवइ तु (जु) विषय-सुखरिक जीव, तेहनइ तप इ निरर्थक, ते कहइ —

- १. K. रेच २ C.L. चलागडं, K. चालिवउं । ३. Pu. अवस्था हुई केम ।
- ४. К. तां-सगइ ए विग्रह नहीं भाजइ। तेतस्र लोक कुसि......

समणी वि हु विसय-रसा पुव्व भवे दोवई कव-नियाणा। सिवदायगं पि हु तवं मुहाइं हारिंसु(?) ही मोहो ॥६४

ठ्याख्या:— द्रुपदी=द्रुपद राजानो पुत्री अनइ पांडवनी कलत्र । द्रुपदी पूर्विलइ भवांतिर सागरदत्त श्रेष्टिनी पुत्री हूती, ते पुत्री श्रमणी महासति हुई । पछइ विषयरस=लोलपता-लगइ नियाणंड बांधिउं। ते नियाणा-लगइ आपणंड तप मुहियां हारविउ। जिणि कारणि बाटी-वडइ अरहट वेचिउ। जिम कोई दोरीनइ काजि वेदूर्य-मणि भाजइ, लोह-खंडनइ कीघइ प्रवहण भांजइ, तिम तीणी महासतीइ भोगनइ काजि मोक्ष-दायक तप मुहियां हारविउं। एतलइ गाथार्थ हुइ ।

हिवइ व द्रुपदीनी कथा कहीइ--

[३७. द्रुपदीनी कथा]

चंपानगगइं त्रिण्णि त्राह्मण-सहोदर, सोमदेव, सोमभूति, सोमदत्त-इणि नामिइं वसइं । ते त्रिहं नी ए त्रिण्णि प्रिया-नागश्री १, भूतश्री २, यक्षश्री ३। ए त्रिण्हइ आपणइ आपणइ वारि रसवती करइ अनइ सर्व कुटुंब एकठउं भोजन करइ । इम एक दिनि नागश्रीई आपणइ वारइ व्यंजन-सहित रसवती की भी । पणि ते व्यंजन-माहि अजाणपणइ कड़ई त्वडी पचाणी। पछड संपूर्ण पाकनइ अंति रसवती चाखतां ते कडूई तूंबडी सप-ट्रप्टनी परिइ अनिष्ट जाणी । तु-ही होभ-लगइ लांखी नही, एकांति राखी मूंकी। पछइ कुटुंब सर्व जमाडिउं। जेतलह भर्तार-देवर जिमी बाहरि गया, तेतलइ उद्यानि वनि धर्मधोषसूरि ज्ञानी समोसरिया | हिवइ तेह-माहि एक धर्मेरुचि महात्मा मासक्ष्यपणनइ पारणइ नागश्रीनइ घरि विहरवा आविउ। तेतलइ नागश्रीइ दुर्गति पडिवा-भणी महात्मानइ कङ्कं त् बडंड दीघंडं। तिणि महात्माइ ते गुरुनइ आणी देखा-डिउं। तिसिइं गुरे वत्सलपणा-लगइ कहिउं, 'ए त्बडउं नागश्रीइ तुझनइ दीघउं, पणि तूं म लेजे. किहांइ प्राप्तक भूमिकाई लेई अपरिठविजे ।' एइवड गुरूनड आदेस पामी धर्मरूचि नगर बाहरि परिठिववा गयउ । तिहां परिठवतां बिंदु एक भूमिकाई पडिउं । तिहां कीडी आवी । के के कीडी बिंदुइ लागइ, ते मरइ। ते देखी चौंतवइ, 'जु एकणि बिंदुइ एवडी कीडी मई छहं, तु सर्व परिठवतां न जाणीइ केता जीव परिसिइं ?' इम चींतवी आराधना-पूर्वक ते कड़ उं तं बडं धर्मरुचि-महात्माइं ^४ लीघउं । लेतां समान मरण पामी सर्वार्थसिद्धिइं पहतउ । तिसिइं गुरु बाट जोइं जु. 'अजी धर्मरुचि नावइ।' पछइ गुरे बि महातमा मोकल्या। तीणे धर्मरुचिनंड स्वरूप जाणी गुरूनइ आवी कहिउं। तिवारइं गुरे महात्मा-आगलि सर्व वात कही। ते वात कीणइ प्रकारि सोमदेवादिके जाणी, नागश्री-ऊपरि रीसाणा । पर्छ सोमदेवि नागश्री घर-हंती कादी | तिहां लोके गरहीती-निंदीती जाती हूंती ज्वर-खास-परवास-अतीसारनी बेदना अनुभवती. क्षचा-तृषा सहिती, रौद्र-ध्यान-लगइ मरी छठी नरग-पृथ्वीइ गई। तिहां-हुंती मत्स्यनइ भवि गई। बली सातमी नरग-पृथ्वीइँ, वली मत्स्यनई भवि, इम सवले नरके भमी । पछइ वली ³पृथ्वीकाय-माहि भमी । इम गिरि-सरिदुपल-न्यायि करी कर्मना लाघव-इतु नागश्रीनउ जीव भमी भमी चंगानगरीइ सागरदत्त-श्रेष्टिनी भार्या सुभद्रा, तेहनी कूलिइ सुकुमालिका[®] एहवइ नामि पुत्री हुई। र. K. जिम कोदिरा नई काजिई वैह्रर्थ मणि भाजइ । २. K. मां सर्वत्र 'द्रौपदी' पाठ छे.

३ K. सिवाय 'परठवा' । ४. K. वावरिउं । ५. Pu. K. कास, ६. K.छ-काय-माहि ७. K.C. सर्वत्र 'सुकुमारिका' पाठ आपे छे.

इसिइं तीणइ जि नगरि जिनदत्त श्रेष्टि, भद्रा प्रिया, तेहनउ पुत्र सागर सर्व-गुण-संपूर्ण छइ। इसिइ अन्यदा जिनदत्त-श्रेष्टिइं ते सुकुमालिका महा-रूपवंती दीठी । ते देखी चीतवइ, 'सही, ए कन्या माहरा पुत्रनइ योग्य छइ।' इम विमासी साजन मेली सागरदत्त-कन्हिल सुकुमा-लिका पुत्री मांगी। तित्रारइ श्रेष्टि कहइ, 'पुत्री तउ वरनइ दीघी जि जोईइ, पणि पुत्री-विण हूं एक घड़ी रही न सकड़ं । तेह-भणी जउ घरजमाई थाइ तु पाणिप्रहण कर उ।' सेठिइ ए वात पडिवजी । पछड मोटइ विस्तारि पत्रनउं पाणिग्रहण हुउं । तिहां सागरनइ हाथ-मेल्हावणीइ घणउं घन दीघउं । पछइ सागरिइं सर्व भोगांग-सामग्री मेली सिज्याइ स्त्रीनइं विषइ एकत्र संयोग कीघउ । तेतलइं पूर्वकर्मना उदय-लगइ जिप अंगार ज्वलइ, तिम सुकुमालिकानउ शरीर ज्वल-तउं जाणी सागर भयभीत हूंतउ रात्रिनइ समइ नासी गयउ। तिसिइ प्रभाति जागी हूंती, भर्तार गयउ जाणी, यूथ-भ्रष्ट कुरंगीनी परिइं मुकुमालिका रुदन करिवा लागी। तिसिइ ए वात पिताई सांभली, जिनदत्त श्रेष्टिन कहिउ । तिवारइं जिनदत्ति आपणउ सागर पुत्र गाढउ ैहटिकेड. 'अरे निर्लंडन ! ए मला कुलनो पुत्री तूं किम छांडइ ? रूडी अनइ पाह्यई इ आंगीकार कींघी किम परिहराइ ? इणि कारणि तूं जईनइ आदिर, समयण म भांजि । तिवारइ सागर पुत्र कहइ, 'वरि हूं कूइ पडउं, पणि ए सुकमालिकानइ नादरउं।' ए वात सागरदत्तइ भीति-नइ आंतरि थकउ सांभली पुत्रीनइ कहइ, 'विस्ति! ते सागर तिम किमइ विस्तउ हुउ, जिम ताहरउ नाम न सांबहइ। तु वरित ! असमाधि म करि । वली बीजउ को वर जोईसिंइ ।' इम कही श्रेष्टि गउखि बइठउ बइठउ वर जोइ छइ ।

इसिइ भीखारी एक दीठउ । पणि कहाउ १ एक खापर हाथि छइ, माखी भणहणाट करतड, कुरिउत, योवनावस्थाइ संप्राप्त, वली कक्षाट जि परिग्रह, साक्षारकारि दालिद्रीमूर्ति । एहवउ ते घर-माहि तेडी, अभ्यंग-उद्गर्तन करावी, चंदनइ लेपी, दिन्य वस्त्र पहिरावी, सागरदत्त किह्वा लागड, 'ए माहरी पुत्री सुकुमालिका । तेहनइ परणी घणी लक्ष्मी विलिस ।' इम किह्इ हुंतइ ते भिक्षाचर स्वर्गवास-समान श्रेष्टिनउ घर मानतड घर-जमाई थई रहिउ । एहवइ ते सुकुमालिका शृंगार करी वासघर-माहि आवी । पछइ जेतलइ ते स्पर्श करवा लागड, तेतलइ ते अग्निदाह-समान । राक्षसीनी परिइं सुकुमालिका नइ मानतड ते भिक्षाचर खापर लेई रात्रिइं नाठड । तेतलइ बली प्रभात पुत्री रोती देखी पिता कहइ, 'वित्स ! ए भवांतरना कर्मनड विपाक । त्ं असमाधि म किर । कर्म आगलि कोई न छूटइ । तेह-भणी हिव त्ं दान दिइ, संतोष आणी माहरइ घरि सुलइ रहइ।' पछइ सुकुमालिका आपणडं कर्म भोगवती पितानइ घरि थकी रहइ छइ ।

इसिइ अन्यदा महातमा एक विहरवा आविउ । तिवारइं प्राप्तक अन्ति करी महातमा पिंडलाभिउ । तिणइ महातमाइ वलतं धर्मापदेश तिम दीधं उ, जिम वैराग्य-लगइ तीणी सुकुमा-लिकाई ते महातमा-कन्हलि चारित्र लीधं । जिम निर्धन मनुष्य माणिक्यनइ पालंइ, तिम ते चारित्र पालंबा लागी। घणा तप तपो, एकदा विशेष तपनी बांछाई गुरुणीनइ प्रणमी इसिउं पूछई, 'भगवित ! जिम महातमा वन-माहि रही उम्र तद तपई, तिम ह पणि वन-माहि जई तप करिसु ।' तिवारई महासती कहई, 'महानुभावि ! पुरुषनई वनवासि रही तप करिवं वीत-रागे कहिंउ छई। पणि संयतीनइ नहीं ।' तु ही सुकुमालंका न मानह । गुरुणी घणंड इ

१. K.हाकिउ ।

वारइ पणि कदाग्रह न मूंकइ । पछइ वनवासनी तुलना करिवा-भणी एकली नगर-समीपि जे वन छइ, ते वन-माहि जई उग्र तप करिवा लागी ।

हिवइ एकदा वसंतऋतई देवदत्ता गणिका पांचे पुरुषे परिवरी तेह जि वन-माहि आवी कीडा करिवा लागी। एक पुरुष पग तलहांगइ, बीजउ वोजणइ वाय घातइ छइ, बीजउ पानना बीडी करी मुखि दिइ छइ, चउथानइ उरसंगि सृति छइ, पांचमउ पाणी पाइ छइ-इम पांचे विट पुरुषे देवदत्ता गणिका सेन्यमान। पांचइ लालि पालि करतां देखी सुकुमालिका चींतवइ, 'एक हूं स्त्री जोउ, जे मइं वि वर परण्या अनइ ते बेइ वर रात्रि मूंनइ मेल्ही नाटा। अनइ एकि बापडी स्त्री जोउ, जेहनइ पांच पुरुष लालिपालि करई छई, तु ही ए बोल नही देती। तु हिव जु माहरा तपनुं प्रमाण छुई, तु हूं भवांतिर पांचे भरतारे सेन्यमान हूजिड।' इम कामभोगाभिलाषिणीइ निआणउं बांधिउं। तिहां आपणउ तप वेचिउ। जु ए तप न वेचत, तउ तीणउ जि भवि तपनइ प्रमाणि मोक्ष जाअत। हिक ए निआणउं अणआलोइ 'अद्मासनी संलेखना करी ता तपती हुइ उपाश्रिय रही। तिहां-थको मरी नव पल्योपमनइ आऊखइ सौधर्मइ देवलोकइ देवी हुई। तिहां-हुती चिवी कांपिल्य-पुरनउ अधिपति दुपदराजा, तेहनइ घरि दुपदी एहवइ नामि महा-रूपवंति कन्या हुई। क्रमिइ योवनपणउंपामिउं।

तिवारइ द्रुपदराजाइ पुतिकाना पाणिग्रहण-मणी स्वयंवरा-मंडप मंडाविउ । तिहां राधावेध-विद्या मांडी । सर्व राजा दूत मोकली मोकली तेडान्या । तिहां पांड राजाना पुत्र युधिष्ठिर १, भीम २, अर्जुन ३, नकुल ४, सहदेव ५-ए पांचइ पांडव महारिद्धिनइ विस्तारि आन्या । तिसिइं द्रुपदी सालंकार, साभरण, स्नान करी, स्वेत वस्त्र पिहरी, स्वयंवरा मंडप-माहि आवी । तिहां हाथि वरमाला लेई ऊभी रही । एतल्ड अर्जुनि राधावेध साधिउ । तिसिइं द्रुपदीइ अर्जुननइ कंठि वरमाला मूंकी । तेतलइ पूर्विला निआणाना कर्मना उदय-लगइ पांचइ पांडवनइ गल्ड समकालइ वरमाला पड़ी । तिवारइ राजा द्रुपद अनइ द्रुपदीना मन-माहि एहवी चिता ऊपनी जु, 'एक वरमाला पांचनइ कंठि किम पड़ी ? अथवा पांच-इ-नइ पुत्री किम देवराइ ?' एतल्ड आकाशि देवतानी वाणी हुई । कहिउं, 'ए नियाणा-चद्ध छइ, एहनइ पांच भरतार होसिइ । ए वात चूकइ नही । पांच-इ-नइ पाणिग्रहण करावउ ।' इम देवतानी वाणी सांमली भवितन्यतानु निओग जाणी पांच-इ-नउ पाणिग्रहण कराविउ । पछ पांचइ भर्तार-साथिइ दुपदी सुख भोगविवा लागी । एहनउ विस्तार पांडवना चरित्र हूंतड जाणिवउ । इहां संखेपिई करी कहिउं छइ । जिम हैपदीइ पाछिल्ड भवि विषयाभिलाषि नियाणउ बांधिउ, तिम अहो लोकी! विषयनउ एहवउ न्याप जाणी तुम्हे निआणउं न बांधिवउं ।

इति श्री शीलापदेशमाला बालाविबोधे द्वपदीचरित्र समाप्त ॥३०॥

हिवइ जे पुरुष पारदारिक कहीइ परस्त्रीनइ विषइ व्यसनीआ हुई ते गरुया इ छघुत्व-पण्डं पामइ । ते दृष्टांत-सहित देखाडतउ कहइ—

> अमर-नर-असुर-विसरिस-पोरिसचरिओ पि पर-रम्णि-रसिओ । विसम-दसं संपत्तो छंकाहिवई वि रंको व्व ॥६४

१. C.K.Pu. आठ मासनी ।

ठ्याख्याः—अमर=देव नर=मनुष्य, असुर—तेह-माहि अद्भुत-चरित्र, असामान्य पराक्रमी एहवड लंकाधिपति रावण, जे त्रेलोक्यनड कंटक, ते हो रावण जु पररमणी=परस्त्रीनइ विषइ रिक्तिताल्लगइ रांकनी परिइं महा—विषम दशा—माहि पडिड=राज्यभ्रंश, कुलक्षय, मरणांत कष्ट पामिउं तु अनेरानड सिउं कहीइ १ इति गाथार्थ । हिबइ वली शीलभ्रंश-लगी जीव नग्कादि दुर्गति भवांतरि लहइ अनइ इह लोक अनेक काल सीम अयश पृथ्वी-माहि विस्तरइ । इसिउं दृष्टांते करी कहइ—

नेजरपंडिय-दत्तयदुहिया-पमुहाण अज्ज वि जयम्मि । असई त्ति घोस-घंटा-टंकारो विरमइ न तारो ॥६६

व्याख्याः —नूपुरपंडिता, दत्तनी पुत्री—प्रमुख अनेक स्त्री असती=कुशील हुई । तेहनड आचार आज-सीम 'ए असती' इसिड तारः दीर्घ अयशरूप घंटानड शब्द नथी फीटड । सहू कोइ इम कहइ जु—नृपुरपंडिता, दत्तदुहिता महा असती हुइ । इसिड अपयश - शब्द जगत्रय-माहि आज-लगइ पसरी रहिड छइ । अजी फीटतड नथी । अनेरा घांटनड शब्द थोडी बार रही फीटइ, पणि असतीनु शब्द न फीटइ । एतलइं गाथानड अर्थ हुड ।

सांप्रत नूपुरपंडितानउ दृष्टांत कहइ छइ—

[३८. नूपुरप डितानु दृष्टांत]

राजगृह-नगिर देवदत्त सुवर्णकार वसइ । तेहन पुत्र देवदित्त । ते पणि समस्त गुणे करी विख्यात हुउ । तेहनी भार्या दुर्गिला एहवइ नामि। पणि ते आपणउं रूप-लावण्य-सौभारय-गौवन-रूप पाश, तिणि करी तरुण पुरुषरूप मृग, तेहनइ पाश-माहि पाडइ, अनइ गौवनमिद करी उन्मत्त थकी निर्गेल फिरइ । एक वार ते दुर्गिला ग्रोष्म-कालि स्नान करिवा-भणी नदीइ गई । तिहां स्नान करती नगरनइ जुवान पुरुषइ दीठी । तेतलइ तेहनइ मिन व्यामोह ऊपनउ । तिवारइ ते पुरुष कहई, 'हे सुभिग ! ए नदी, ए वृक्ष, ए हूं तुझनइ कुशल पूछउं छउं ।' वलत्ं दुर्गिला कहइ, 'तुझनइ, वृक्षनइ, नदीनइ कल्याण हु । अनइ तुम्हारी इच्छा पणि अवसिर पहुचाडीसिइ ।' इणि वचिन क्षण-एक ते पुरुष उन्मत्त सरीखउ थई रहिउ । एहवइ कोईएक बालक रमतां हूंता, ते आश्रइ वचन कही आपणपउं जणाविउं जु, 'देवदत्त स्वर्णकारनी देवह, देवदिन्ननी प्रिया । अनइ मारउं घर पूर्व दिसिइ छइ।' ईम आपणउ संबंध जणावी घरि आवी । ते युवान पणि आपणइ घरि आविउ ।

पछइ तिणि तापसी एक सीखवी दुर्गिला-कन्हिल मोकली। ते तापसी भिक्षानइ मिसिइं स्वणंकारनइ घरि आवी। तिवारइ दुर्गिला हांडला घोती हूंती। ते-आगिल प्रच्छन्नपणइ तिणि तापसीइ वात कही जु, 'तुझनइं स्नान करतां जीणइं पुरुषइ आपण्ड माव जणाविड हूंत, तीणइ हूं मोकली छंड।' ए वात सांमली मन-माहि जाणी, आकार गोपवी, कहिवा लागी, 'रे पापिणी! एहवउं वचन तइं मुझनइ सिउं कहिउं'? जे कुलीन हुइ, ते ए वात न सांसहइ।' इम कही ते तापसी गलहथी बाहरि काढी, काढतां पृठिइ मिसि-खरिड हाथउ दोघउ। पछइ ते तापसी दूहवाणी हूंती पाछी आवी ते युवाननइ कहइ, 'अहो! ए पाषाण-सरीखी कठिन स्त्री, ए-कन्हिल मुझनइ सिउं मोकलइ ? प्रझ नीकलनां जीणइ माहरी प्रिटं काजल-खरडी थाप पणि दीघी।' इम कही पूठउं देखाडिउं। पांच आंगुलोनइ अहिनाणि जाणिउं जु, 'हूं काली पांचिमइं तेडिउ छउं। कांइ, धूर्तनी सान धूर्त जि जाणइ। पणि मुझनइ टाम न जणाविउं।' तेह-मणी वली तापसीनइ घणउं घन देई कहइ, 'ते माहरइ विषइ सही अनुरक्त छइ। पणि किसिइं कारण-लगइ तूं जे निर्मरिसी,

ते बात न जाणीइ । पणि एक बार बली तूं जा । कांई, जे गढ छइ ते ही उपक्रमिइं जि लीजइ । पछइ मनुष्यनं सिखं कहिवं उ ? ' तिवारइ तापसी कहइ, 'ते तु सती । तेइनं दर्शन तुझनइ दोहिखं घटंइ । तु ही तुझनइ तां एहनी आशा छइ, तउ एक बार बली जाउं ।' इम कही ते तापसी[इ] दुर्गिलानसमीपि जईनइ इसिउं कहिउं, 'ते तउ नर ताहरइ विषइ अनुरक्त छइ, तूं निरास कांइ मूक्इ ?' तिवारइ दुर्गिलाई जाणिउं, 'सही तिणि दिहाडउ जाणिउ, पणि ठाम न जाणिउं, तेइ-भणी मोकली ।' पछइ दुर्गिलाइ ते तापसी-ऊगरि रोस करी घरनो छोंडीइ काढी । तिसिइ विलखी थकी पाछी आवी । ते तहण पुरुषनइ सर्व वृत्तान्त कहिउ । तिवारइं तिणि जाणिउं जु 'हूं घरनइ पछोकडि तेडिउ छउं ।' तापसी कहई, 'आज पछाइ हूं बली नहीं जाउं।'

पछडं ते तरुण पुरुष काली पांचिमनी रातिई तेहना घरनी वाडी-माहि गयउ । तिसिंड तिहाँ विहंनड माहोमाहि संबंध हुउ। तिहां जि विदुंतर निदा आवी। तिसिरं देवदत्त वृद्ध सोनार, तेहनड सुसरउ, जे रात्रिई घरनइ पछोकडि जिहां वाडी छइ, तिहां कायनी चिंता-भणी जु अ'नइ, तु तेहवउ अपमंजत संबंध देखी चीतवह, 'ए तु पुत्र नहीं।' पछइ घर-माहि आवी पुत्रनइ जोई वही पाछउ आवी चीतवइ, 'जड प्रभाति वेटानइ ए वात ऋिसु, तु बेटउ मानिसिइ नहीं ।' इम विमासी मउड-इसिउं पगनंउ नेउर ऊतारो लीघउं । तेतलइं दुर्गिला जागी । सुसरउ उलखिउ । पछइ तिणि जार-पुरुष जगाडीनड कहिउं, 'आपणपे सुसरई दीठां, पणि हिव तूं सखायत करे ।' पछइ ते तरुण बचन पडिवजी आपणइ घरि गयड । अनइ दुर्गिला ऊठी भर्तार-समीपि आवी । तिहां भर्तारनइ जगाडीनइ इसिउं कहइ , 'इहां ता। हुइ छइ, पणि आपणपे पछोकडि अशोकविनका-माहि जई निद्रा कीजइ ।' पछइ देवदिन्न दुर्गिछा-सहित पछोकडि जई स्तुत । मन-माहि कांइ कपट नहीं, तिवारइ जि तेहनइ निद्रा आवी । पणि दुर्गिलानइ निद्रा नावइ । घडी विघडी गई. तेतलइ भर्तारनइ जगाडी कहइ, 'ए तुम्हारा घरनउ सिउ आचार जे मुझनइ तुम्ह-कन्हलि-थकां तुम्हारंड पिता हिनडा आवी इगी अवस्थांइ सूनां माहरा पगनं ने उर काढी गयंड। ए डोसंड तु चलचित्त हुउ । लाज इ गमाडी । वडी एतलइ नहीं सरइ । प्रभाति सुन्हई दोस चडाविसइ। अनइ तुम्हे आपणा पितानउ मुख राखिसिउ । तेह-भणी हिवडां जि ऊठउ । आछस न करउ। ईणी वातइ माहरा प्राण जाइ छइ । तुम्हें नेउर ^भमांगी आणड ।' तिवारई मर्तार कहइ, 'हूं डोकरनइ गाढउ है। किसु । तूं रखे मन-माहि संदेह आणइ । प्रभाति जो, ए डोकरनइ सिउं सिउं कहुउ छउं। देणी रीतिइं भर्तार हाथि करी, वली समनां सईं कराव्या जु, 'सही हूं न पहिंडें ।' कहुउ, स्त्रीनइ वसि पुरुष पडिउ हुनु कउण कउण सम न करइ ?

इसिइं प्रभाति देवदिन्न निता समीप जई कहिवा लागउ, 'तात! एहवउं सिउं की धंड, जे वधूना पगनं नेउर लीघंडं?'तिवारह ते बृद्ध कहइ, 'ताहरी स्त्रो कुशीलि। मह परपुरुष-साथि स्ती दीठी। तेहनी प्रतीति-भणी महं नेउर लीघंडं।' तिवारहं पुत्र कहइ, 'तात! ते हूंय जि पछोकि स्तुत हूंतड। पणि तुम्हनह वडपण आविंड, तिणि करी बुद्धि गई। ते तु सती जि छह। हहां विचार कांई नही।' तिसिहं बृद्ध कहइ, 'रे पुत्र! जिवारह मह नृपुर लीघंडं, तिवारह तूं जोयउ, पणि तू घर-माहि हूंतउ।' तेतलह वधू आवीनह कहइ, 'हिवइ ए वान हूं सांसहूं नही। धीज इ करीनह हूं आपणंडं कलंक ऊतारंडं। कुलवंती स्त्रीनह थोडडं इ कलंक घणूं दूषण ऊपजावह। तेह-भणी

१. A. B. K. तुरुण । २. K. पाछलि २, Pu. मागी आवड । ३. C. P. L. हरिकस, K. हार्कीस ।

आपगई नगरि शोभन -नामा यक्षती ऊभी प्रतिमा छइ, तेहनी जांघ विचालह जि को साचंड हुई ते नीकली जाह, अनई जि को कूड उ हुई ते इनई जांच विचि चांगी राखह।' तिवारह ए बात सघले मानी।

पछइ दुर्गिलाइ स्नान करी, धौत वस्त्र पहिरी, पूजा-भणी बिल हाथि लेई आदित्य-वारि सर्व-लोक प्रत्यक्ष यक्षनइ भुवनि आविवा लागी। तेतल्इ मार्गि जातां ते जार-पुरुष संकेत-ऊपरि गहिलानइ रूपी आवी दुर्गिलानइ विलग्ड । तिसिइ दुर्गिलाइ ते परहु की जड, अनइ घरि जई नवी वार स्नान करी यक्षनइ कहिवा लागी, 'अहो यक्षराज ! आजन्म देवदिन्न भर्तार अनइ मार्गि आवतां जे गहिल्ड आवी लागड ते टाली बीजा कहिनइ जु हूं आभडी हुउं, तड नूं यक्ष ! मुझनइ शुद्धि म देजे । नहीतर आपणड प्रत्यय देखाडे ।' इम कहिइ हूं तइ जेतल्ड यक्ष कांई विमासइ, तेतल्ड दुर्गिला यक्षना दिहुं पग विचाल्ड नीकली गई। तिवारइ सघले लोके सूधी सूधी कही । तेहनइ गल्ड राजपुरुषे फूलनी माल घाती। हिन्द यक्ष विमासत जि रहिउ । पछइ ते दुर्गिला वाजित्र वाजते, मनुष्यने सहसे परिवरी, देवदिन्नइ महा-महोत्सव की जते आपणइ घरि आवी। तिहां नूपुरनड अग्वाद ऊतरिड, तेह-भणी लोके नूपुरंपडिता नाम दी घडं।

हिवइ देवदत्त, वधूनउं एहवउं विस्मयकारक चरित्र देखी, तेहनइ निद्र नाठी, योगीनी परिइं नष्टनिद्र हूउ । ए वात मउडइ मउडइ राजाई सांभली जु, 'देवदत्तनइ निद्र नावइ ।' पछइ राजाइ ते देवदत्त तेडी अंतःपुरनउ रखवालउ की घउ ।

इसिइं आगइ अंतःपुर-माहिली का एक राणी हाथीनउ पउंतार कहतां मेंठ, ते-साथि लुब्ध हुई छह । ते वार वार ऊठइ अनइ सोनार जागतउ देखी वली पाछी जाइ । तिवारइ देवदत्त स्वर्णकारि जाणिउं जु, 'इहां 'कणे कांई कारण संभावीइ ।' इम जाणि ते वृद्ध सोनार कपट-निद्राइ सूतउ । तिवारइं राणी चोरनी परिइ ऊठी, उरइ-परइ जोती, पूर्व संकेत-स्थानिक गउिल जई बइठी । तिसिइ तलइ राजानउ पट-हस्ती हूंतउ, तीणइ सूंढिइ करी राणी भुंइं ऊतारी । तिवारइ राणी—ऊपरि पउंतार रीसाणउ कहइ, 'रे ! तुं मउडी कांइ आवी ?' इम कही हाथीनी सांकल हाथि लेई दातीनी रीतिइं पूठिइ आहणी । तिवारइ राणी कहइ, 'स्वामी ! हूं सिउं करउं ? आज राजाइ कोई नवउ पाहरी मूकिउ छइ । ते तु जागतउ रहइ छइ । तेहनइं मइ हं नावी । हिवडां लगारेक तेहनइ निद्रा आवी छइ, तिणि करी हूं इहां आवी । तु मुझ ऊपरि पोकट कोप कांइ करउ ?' इम राणी प्रहर वि तिहां रही । पछइ पाछिली रात्रिइं वली हाथीइ ऊपाडी राणीनइ गउिल मूकी अनइ राणी आपणइ ठामि गई । एहवउं राजाना घरनउं चरित्र देखी वृद्ध सोनार चींतवइ 'जोउ, जेहनइ एवडा पाहुरी, एवडां रखोपां, तेहने घरे जु एहवा वृद्धांत, तु मुझनइ माहरी वद्नउ सिउ अउरतउ ? ए स्त्रीना चरित्रनउ पारंपर्य कउण लही सकइ ? जिणि करिण किरिजं,

अश्वप्लुतं वासवगर्जितं च स्त्रीणां चिरत्रं भवितन्यताः च । अवर्षणं चाट्यतिवर्षणं च देवा न जानन्ति कुतो मनुष्याः॥१॥

विशेषत सीनं चरित्र मेघना गर्जित सरीखं कडण जाणी सक्ह ? तु हिव हूं सिउं विस्मय करं ? कांई, जे सदा इ घरनइ व्यापारि थकी रात्रिदिवन बाहरि फिरह, तेहनइ सील किम पलइ ?' इम विमाली वधुना दोषनड अगर्ष मन हूं तड मूं की देवदत्त स्वर्णकार सूतड। पछइ प्रभात हु उं,

१. C. K. Pu. पणि ।

तुही सोनार जागई नहीं । तिसिइ पाहुरिए जई राजानई कहिउं । तिवारइ वलतुं राजा कहइ, 'कांई कारण जि घटइ । एहनई कोई म जगाडिज्यो ।' इम तेहनइ सूतां सात दिन गया । सातमई दिनि जिम जागिउ, तिम राजपुरुषे सोनार राजा—समीपि लीधउं । तेतलई राजाइ पूछिउं, 'किह, तूं जे सात दिन-ताई स्तुउ, ते सिउं कारण ?' तिवारइ देवदित्त अभयदान मांगी रात्रिनउ इत्तांत राजा-आगलि कहिउ । राजाई ते राणी-पउंतार- हाथीनउ सर्व इत्तांत सांभली ते सोनार सरकारपूर्वक विसर्जिउ । पछइ राजा इसिउं चींतवई, 'ते राणो किम ओलखीसिई ?' इम चीतवी तिहां-हूंतड ससंभ्रांत ऊठी, राजा अंतःपुर-माहि आवी, गूढ कोप धरतउ कहिवा लागउ जु, 'आज मई सुहणउं एक लाधउं छइ । तेह-भणो तुम्हे आपणां वस्न मूंकी मुझ-आगलि आवउ, जिम हूं तुम्हारी पृठिई असवार थाउं, एतलइ पाइउ सहणउं टलइ ।' इम कहिइ हूंतइ सचली राणीए तिम जि कीधउं । पणि जे एक दुश्चारिणी ते कहई, 'हूं लाजउं अनइ बीहउं ।' तिवारई राजानइ हाथि सनाल कमल हूं तउं, तिणि कमलि करी राजाई राणी आहणी। तेतलइ कपट-मूर्छाइ अचेत थई मुई पडी। तिवारई राजा कहइ, 'रे नीलजि । तिवारइ हाथीइ करी उत्तारी अनइ पउंतारि सांकल्ड करी मारो, तिवारइ त् न बीहनी, अनई हिवडां एक कमलनइ घाई अचेत थई मुई पडी ?' जिम इम कहिउ, तिम राणी चमकी।

पछइ राजा रीसाणउ हूंतउ पउंतार तेडी, पट्टह्स्ती अणावी, ते राणी नइ पउंतार उपिर बइसारी, राजा भृकुटी-भीषण थई मुहता आगिल किहवा लागउ, 'जाउ, ए हाथीउ राणी-पडंतार-सिहत वैभारिगिरि पर्वतनइ शृंगि चडावी, त्रिहुंनइ ढोली दिंउ।' पछई पउंतार-राणी-सिहत हाथीउ पर्वतनइ शृंगि चडाविउ। तिवारई पर्वतारि हाथीउ त्रिहुं पगे ऊभउ राखिउ। सर्व लोक हाहाकार करिवा लागा। तिसिइ प्रधाने जई राजा वीनविउ, 'स्वामी! ए पशु अजाण। एहनई जीवरान दिउ।' इम कहइ हूंतइ राजा न मानइ। तिवारइ हाथीउ विहुं पगे राखिउ। वली प्रधाने लोके जई राजा वीनविउ। तु ही राजा न मानइ। पछइ एकइ पिंग राखिउ। तिवारइ वजी सर्व लोके जई वीनविउ, 'स्त्रामी! ए हिस्त-रत्न काई मारउ छउ? ए तु परविश। जिम पउंतार कहइ, तिम कीधइ जि छूटइ।' तिवारइ राजाई कहिउं, 'जाउ, जाउ तुम्हे कहउ छउ, तु हाथी ऊतारउ।' पछइ लोके जई कहिउं, 'अहो पउंतार! राजानउ आदेश हुइ छइ। हाथीउ पवंत-हूं तु उतारि।' तिरिई पउंतारइ कहिउं जु, 'अम्हनइ अभयदान देवरावउ, तु हूं ए हाथी ऊतारउं।' तिरिई वली प्रधानि राजा मनावी अभयदान देवरावउं। अनइ हाथीउ सजडइ मउडइ पर्वा-हूं तउ ऊतारिउ। तेतल्ड पउंतारराणीनइ विस्वटउ हुउ। अनइ हाथीउ राजानइ घरि आविउ।

पछइ राणी नइ पंउतार नासतां नासतां संध्यानइ समइ कीणइ गामि गया । तिहां बाहरि सून् देवकुलि सूता । एहवइ चोर एक चोरी करी नाठउ, तीणइ जि देवकुलि रात्रिइं आविड । तेतलइ देहरउं राजाने जणे वीटिउं । पछइ महांधकारि ते चोर जिहां ते बि जणां सृता छईं, तिहां आविड । हिवइ तेहनइ स्पर्शि जे पउंतार सृतउ छइ, ते जागिउ नहीं । पणि ते चोरनइ स्पर्शि ते राजनव्हभा तत्काल जागी । ते जिम जागी, तिम जि तेहनइ विषइ अनुरक्त हूंती पूछइ, 'तृं कउग ?' तिवारई ते कहइ, 'हूं चोर, राजाना जणना भय-लगइ नाठउ, इहां आविड छंड ।' तिवारइ राणी कहइ, 'अहो पुरुष ! जउ माहरउं वचन मानइ, तु तुझनइ

१ A. B. आण्यत । २ C. K. सडण्डं, Pu. मुणु । ३ C. K. स्ंडिइ, Pu. स्ंडि । १ C. K. L. देसउटड, Pu. देसटड ।

मरण—इंतउ राख्य ।' तु जोड, स्त्रीना स्नेह एहवा छइ, जेराजा नइ पर्यंतार छांडी चोर-ऊपिर मन कीघर । जिणि कारणि स्त्री एहवी—

> जर्दित सार्धमन्येन पश्यत्यन्यं सविभ्रमा । हृद्ये चिंतयत्यन्यं प्रियः को नाम योषितां ॥ १॥

इम जाणी पंडिते ममता न करिवी | तिवारइ चोर कहइ, 'सोनउं नइ वली सुरहुं। एकं तुझ थकी माहरा प्राण ऊगरइं, अनइ वली ताहरी प्राप्ति हुईं। तु हुं आजन्म ताहरउ बोल लोपउं नहीं | पणि कहइ (१ हि,) कीणी युक्तिइं माहरा प्राण राखेसि १ तिवारइ वलतुं राणी कहइ, 'जित्रारइं प्रमाति तलार आविसिइ, तिवारइ हुं कहिसु, ए माहरउ पति भरतार ।' पछइ चोर कहइ, 'ए वात वारु कही ।'

तेतल्रइ प्रभाति राजाना सुभट 'हिण' 'हिण' करतां देवकुल माहि पहसी पूछिवा लागां, 'तुम्ह-माहि चोर कउण ?' तिसिह ते पापिणी चोर-साम्हुं जोई कहह, 'ए माहरउ भरतार ने अम्हे देशांतरि जाता हुंतां। तिसिहं सांझ पड़ी। पछह अम्हे ए देवकुल-माहि आवी सुतां। तिसारइ तलार विमासवा लागा जु, 'ए चोर हुइ, तु एहवउं स्त्रीरित किहां?' जेहनह लक्ष्मी सरीली ए वल्लभा, ते चोर किम घटइ ?' पछइ ते स्त्रीनइ व्यतिकरि, बापडउ निरम्पराध पउंतार चोर करी बांधो सूलीइ दोधउ। तिवारइ तृषा ऊपनीइ जे जे लोक मार्गि आवइ, ते ते कन्हिल पाणी मांगइ। पणि राजाना भय-लगइ कोई पाणी पाइ नहीं। इिष्टं जिनदास आवक तीणी बाटइ आवतउ देखी पाणी मांगिउं। तिवारई जिनदास कहइ, 'ज माहरउं वचन करइ, तु तुझनइ पाणि पाउं।' तीणइ कहिउं 'करिसु।' तिवारइ जिनदासइ कहिउं, 'नवकारनु पद स्मिर। जेतलइ हूं पाणी आणी पाउं, तेतलइ तूं ''नमो अर्रहंताणं' ए पद उत्तरि।' पछइ पउंतारइ जलनी वांछाइ वली वली पद स्मिरिवा लागउ। तिसिह जिनदास राजानउ आदेस अवगणी पाणी लेई आवतउ तिणि पउंतारि दीटउं। पाणी आवतंउ देखी संतोष उत्तरइ वली वली ''नमो अरिहंताणं क्ष्मि आवतः तिणि पउंतारि दीटउं। पाणी आवतंउ देखी संतोष उत्तरइ प्रमाणि अकाम-निजराइ पद स्मरतं है व्यतर-माहि देवता हुउ।

हिवइ ते दुराचारिणी चोर-साथि मार्गि जाती हूंती | विचालइ नदी एक महांत आखी | तिवारइं चोर कहइ, 'हे प्रिये ! हूं तुझनइं वस्त्र-अलंकार-सहित नदीनइ पेलइ पारि लेई जईं नहीं सक्छं | तेह-भणी पहिल्छं आपणा वस्त्र-आभरण सर्व माहरइ हाथि आपि, जिम पेल्ड्रा पारि लेई मूंकछं | पछइ बीजी वार तुझनइ लेई मूकिसु | 'इणि वचिन राजवल्लभाइ सर्व आपणां आभरण-वस्त्र ऊतारी तेहनइ हाथि दीघां | तिवारइ चोर कहइ, 'हे स्वामिनी ! जां लगई ए पारि जई आभरण पेलइ पारि मूंकि आवंड, तां—लगइ तूं निर्भय हूंती ए शरकडना वन-माहि रहि | हूं हिवडां जि आवी तुझनइ लेई जाइसु | 'इम कही ते चोर नदीनइ पेलइ पारि जई विमासिका लगउ, जे स्त्री पंउतारनइ आपणी नथी हुई, ते मुझनइ किम आपणी होसिइ ?' इम चींतवी ते चोर सर्व आभरण लेईनइ नाटउ | तिसिइ राजवल्लमा नग्न शरकडना वन-माहि थकी पोकारिवा लगी, 'अहो पुरुष ! म नासि, म नासि | अरे अधम ! मुझनइ मूंकी त्ं किहां जाइ छइ ?' तिवारइ चोर कहइ, 'हूं तुझनइ नग्न देली बीहउं | तेह-भणी हूं जाउं छडी ।' इम कहितउ चोर नासी गयउ | पछइ राणी दीन-द्यामणी थकी ऊभी रही |

इसिइं प्रस्तावि ते पउंतारनउ जीव देवत्वपणउं पामिइ हूंतइ अवधिज्ञाननइ बलि ते राणीनई नदीनइ उपकंठि निरावरणी दीठी। तिसिङ पूर्वभव-संबं^ध-लगइ प्रतिबोधिवा-भणी देवताई सीआलियानउं ह्य करी मुखि मांस-खंड लेई नदीनइ कांठइ आविउ। जिम नदी-माहि माछिडी दीठी, तिम जि मांस मूंकी माछिडी-भणी धायउं। तेतलइ माछिलड कूदी नदी-माही पइठउ। अनइ जे मांस-खंड हूंतउ, ते समला लेई गई। इम सीआलिउ बिहुं-हूंतु चूकउ देखी राजवल्डभा कहइ, 'रे दुर्बुद्धि! रे मूर्खि! मुखि आविउ मांसपिंड मूकीनइ जड माछला-पूठिइ धायउ, तु जोइ-न बिहुं-इंतड चूक्ड।' तेतलइ मनुष्य-भाषाइं सीयालीइ श्लोक बोलिउ। यतः-

> 'इतो भ्रष्टा ततो भ्रष्टा नदी वहति संगमे। न च जारो न भतीरो कथं वदसि निग्नके'।।१॥

बली कहइ, 'रे नीलिजि! हूं तु बिंहु-थक चूकड, पणि तूं राजा-पउंतार-चोर त्रिंहु-थकी चूकी। रे निन ! मुझनइ सिउं हसइ!' ए बात सांमली जेतलइ भयत्रस्त हुइ, तेतलइ देवता प्रगट हुई कहइ, 'अरे पापिणी! ते हूं पउंतार, जे तई हूं मराविउ । पणि मइ जिनधमनइ प्रमाणि देवपणउं पामिउं। तु हिवइ हूं तुझ-ऊपरि सी दया करउं? पणि तथापि जिनधम पिडविजि।' तिवारइ तिणि राजविल्लभाई वचन मानिउं। पछइ देवताई ते राणी ऊपाडी महासती-समीपि लेई मूकी। तिहां दीक्षा लीधी। तु ही अजी असतीनउ अपयश रूपीउ नाद विरमिउ नथी।

इति श्री शीलोपदेशमाला-बालाविबोधे नूपुरपंडितानी कथा समाप्त ॥३८॥

अथ दत्तदुहितानी कथा कहीइ--

[३९. दत्तदुहितानी कथा]

जयपुर नगर | तिहां जयस्य राजा राज करह | तेहनइ दत्त एहवइ नामि मंत्रीश्वर | तेहमी पुत्री श्रंगारमंत्ररी एहवी नामि | ते आपणइ रूपि यौविन करी सर्व विश्वनइ व्यामोह ऊपजावइ | पणि ते पूर्वकर्मना दोष-उगइ आकार-इंगत-चेष्टाई करी असतीपणउं जणावइ | हिवइ राजा वावि-क्य-तडाग-वननइ विषद कीडा-कुत्हल-रिक हूंतड एकदा जयस्य भूपतिइ जिम ते गडिख बहुठी श्रंगारमंत्ररी दीठी, तिम ज राजा काम-विह्नलें हूउ | चेतना इ नाठी | कांई, कंदर्य-रूपीइ मीलिइ राजा हणिउ | तेहना दर्शन-लगइ आराम-वाविनी कोडा वीसरी गई | पछइ ए वात प्रधाने जाणी, ते श्रृंगारमंत्ररी मांगी | भड़द दिवसि राजाइ तेहनंड पाणिप्रहण कीधंड | पछई राजाई सप्तभूमिका आवास-माहि राखी | पणि ते श्रृंगारमंजरी स्वमावि इ चपला | हिवइ राजा-सिहत किवारइ वन-माहि, किवारइ प्रासादि, किवारइ सात भूमिकानि आवासि इम मर्तारना वालंभपणा-लगई स्वेच्छाइ सुख विज्यह | अनइ राजा पणि स्नान-मोजनादिक सर्व तेह-जिन्नई विर करह | तेह-तु एक क्षण अलगड न रहइ |

इसिइं तेह जि नगर-माहिं व्यवहारीआनु पुत्र धनंजय । ते एकदा मार्गि जातउ हूं तउ । जीणइं गउल्वि बहुठी छह जे श्रुं गारमं नतो, ते गउल-तिल हारि मनोहारि कंदर्गवतार ते धनंजय नीक-लिख । तिसिइं ते दत्तनी पुत्री श्रुं गारमं तरोइ दीठउ । पछइ कामनी वाही हूंती तत्काल चीरीइ मनोगत बात लिखी मुक्ताफलनइ हारि बांधी उपरि-थकीइं धनंजयना कंठ-मणी ते हार लांखी गलइ घातिउ । तिसिइं धनंजइ ते हार-हूंती चीरी लेई वांची । तिवारइं ते राणी सानुरामिणी जाणी आपणइ घरि आविउ । पछइ घणउं घन वेची आपणा घर-हूंतो राणीना घर-सीम मोटी सुरंग देवरावी।

र. C. काम-विद्धउ, K. काम-विकल ।'

तीणा सुरंगइ घनं जय जाइ-आवइ । किवारईं राणी धनं जयनह घरि आवह । इम केतलउ-एक काल अतिक्रमिख ।

एकदा राणी धनंजयनइ घरि गडिल बड़िटी क्रीडा करइ छइ। इसिइ राजा रइवाडीइ नीकिल्डिट | तेतल्ड राजाइं ते दत्तनी पुत्री कीडा करती दीठी। तिसिइं तिणी राणीइ पणि विचक्षण-पणा-लगई ते राजानड अभिप्राय जाणिउ। पछइ तरकाल ते सुरंगनी वाटइ थई आपणइ घरि आवी। तेतल्ड राजा पणि साशंक ऊतावल्ड आवी जिम आवास-ऊपरि चडिड, तिम आगिल राणी देखी राजा हिंव । हिव अन्यदा राजाइं नाटक एक मंडाविउ। तिहां गंधर्व गीत-गान करिवा लागा। तिसिइं ते दत्तनी सुता तिहां जोवा आवी। ते देखी राजानइ मिन क्षोभ हूउ। पछइं सभा विसर्जी राजा आवास-माहि आविउ। जड बोइ, तउ ते राणी घूर्माती, बगाई खाती दीठी। ते देखी राजानइ मिन शंका ऊतरी। इम राजा राणी-सहित सुलाई काल अतिक्रमानवह छइ।

एहवइ वसंत-समय आविड जाणी राजा राणी-सहित पीरलोके प्रविरिड वन-माहि कीडा किरिवा-भणी गयड । तिहां घणी कीडा करी, रात्रिइं तेह जि वन-माहि वेदिना मांडवा-तलइ सृतां । तेतलइ अकरमात राणीनइ सापनड डंस हुउ । पछइ राणी पोकार करती जागी, अचेत होइवा सागी । इसिइं राजाइ मंत्रवादी बोलाव्या । जेतलइ मंत्रवादी आवइं, तेतलइ राणी अचेत थई भुइं पडी । जेतला उपचार हूंता, तेतला सर्व गाफडीए कीचा, पणि सर्व निःफल हुआ । पछइ राजा घोरिमा मूकी रोवा लागड । तिवारइ आपणउं राज तृण-समान गणतड ते राणी साथि काष्ट भक्षण करिवानइ सावधान हुउ । तिसिइं घणउं इ प्रधान राखइं, पणि रहइ नहीं । पछइ नगर-बाहिरि चिहि कीधी । जिवारइ राजा राणी-साथि तिहां आविड, तिवारइ सर्व लोक विलाप करिवा लागा । एहवइ नंदीश्वरि यात्रा-भणी विद्याधर एक जातड हूंतड । तीणइ ते राजानुं मरण सांभली दया-लगइ पाणी अभिमंत्रे जेतलइ राणी छांटो, तेतलइ विष गयउं । राणी सचेत थई । गजा हिष्ठ । समस्त नगरलोक पणि हर्ष्या । महा-वाजित्र वाजिवा लागा । पछइ राजाइं ते विद्या- घरेश्वरच बदुमान-पूर्वक विसर्जिंड ।

हिन ते रात्रि तेह जि वन माहि रह्या । तिसिइं घनंजय पणि रात्रिइं तिहां आविउ । कांइं, जिहां आपणउं मन तिहां अलगू इ ह्यकड । तिवाग्इं राणी घनंजय-कन्हिल आवीनइ कहइ, 'आवउ, आपणपे देशांतिर जईइ । इहां आपणपानइ वेहउं सुख ?' तिवाग्इ धनंजय कहइ, 'अरे मुग्धि ! ए कूडी विमासण म किरे । ए राजा जीवतइं तुझनइं लेई जातां माहर माथंउ इ आइ ।' तिवारइ वली राणी कहइ, 'प्राणनाथ ! ए राजा जीवतां आपणपे निस्तंक सुख भोगवी नहीं सकीइ । तेह-भणी हूं राजानइं मारी आवउं छउं। पछइ तूं राजा अनइ हूं राणी।' तु जोउ संसारनी गति । एक ए योषिता किस्यां किस्यां वानां न करइ ? यत :—

कवयः किं न कुर्वेन्ति, किं न कुर्वेन्ति योषितः । मध्याः किं न जल्पन्ति, किं न भक्षन्ति वायसाः ॥१॥

ते राणी इम कही जिहां राजा सृतउ छइ तिहां आवी, राजानु खद्दग लेई, जेतल्ड प्रहार करइ, तेतल्ड धनंजय आवी, हाथ-हूंतउ खड्ग लेई मन-माहि इसिउं चींतिववा लागउ, 'जोउ, जीणई राजाई ए पद्भराणी कीभी, वली जेहनइ स्नेहि करी राजा काष्ट-मञ्चण करतउ तेउ, जेह-नइ प्रसादि एवडा सुल भोगव्यां, तेहनइ जउ ए आपणी नथी हुई, तु ए मूहनई आपणी किम होसिइं ? जाते दिहाडे मुझनइ पणि ए प्रकार होसिइं । तु माहरइ ईणइ संबंधि करी सरिउं।

ए माहरा आत्मानइ धिक्कार, जे मइ एतलउ काल एह-साथि संबंध कीघड । तु तेह जिंधन्य, जे सर्व संसार छांडी, धर्म आदरो, त्योधन हुआ ।' इत्यादि मन-माहि विचारी जिम कोई बलती चिता-हूंतउ नासइ, तिम ते स्त्री-हूंतउ नासी, वैराग्यरंग-पूरित विरक्तचित्त हूंतु, गुरु-समीपि जई दीक्षा लीधो। तिसिइं प्रमाति राजा आपणह घरि आविड, सुखइ राज पालइ छइ।

इसिइं अन्यदा कोई एक वणिजारे घोडा आण्या । तेह-माहि लक्षणयुक्त तुरंगम एक मोटउ देखी कउतिग-लगइ राजा असवार हूउ । तिवारइ प्रधान कहइ, 'स्वामी ! सबल निबल द्विपद-चतुष्पदि अणपरीखिइ काज न कीजई।' इम वारतां इ हूंतां राजा तुरंगिम चडिउ। पणि ते अश्व मउडइ मउडइ चालिवा लागउ। पछइ जेतलई राजाई वाग खांची तेतलई ते अश्व पवन वेगि चालिउ। ''जाइ, जोइ'' लोके इम कहतां जि राजा अह्रय हूउ। इम मार्गि जातां राजा चींतवइ, 'ईणइ घोडइ तु वन-माहि लीधउ। तु हिबइ जि कांई निबद्ध छइ, ते पामीसिइं।'इम कही ते घोडानी वाग ढीली मूंकी। तेतलई अश्व ऊभउ रहिउ। तिवारई वक्र-शिक्षित अश्व जाणी राजा ऊतरिउ। एहबइ तृषा-बुभुक्षाकांत हूंतउ राजा अरण्य-माहि फिरवा लागउ। तेतलई महातमा एक शांत-दांत देखी राजाई वांदिउ। तिसिई महातमाइ काउसग्य पारी, राजानइ धर्म-लाभ कही, उपदेश देवा लागउ, 'राजन! ए असार संसार-माहि जीवनइ धर्म जि आधार छइ।' इत्यादि उपदेश सांभली वैराग्य-रंग-पूरित चारित्रनउ मनोरथ करतउ, राज-रिद्धि तृण-समान गणतउ महारमानइ कहइ, 'हे भगवन! तई जे नवयौवनि दीक्षा लीघी ते, कहि, करण वैराग्यनउ कारण ?' तिवारइ मुनि कहई, 'राजन! जे मइ दीक्षा लीघी, ते तिहां कारण तूंह जि।' राजाई पूछिउं, 'किम ?'

तिवारइ मुनि कहइ, 'राजन! जिवारई ताहरी राणीनइ साप-उंस हूउ, तिवारइ तूं काष्टमक्षण करिवानइ सज्ज हूउ। तेतलई विद्याधिर आवी विष वालिउं। रात्रिइं तुम्हे तेह जि वन-माहि रिह्या। तिवारइ राणी तुझनइ मूंको मुझ-समोपि पूर्व-परिचय-लगइ आवी, इसिउं किह्वा लागी जु, 'ए राजा जीवतां आपणपानइ सुख न घटइ। तेह-भणी राजानइ हणी आवं।'' इम कहो ते राणी खड्ग लेई जेतलई ताहरउं महतक छेदइ, तेतलई मई हाथि झाली. आपणइ मनि चींतिवंड जु, ''मुझनइ धिक्कार, कामनइ धिक्कार, जे कामनी वाही राणी राजानड एवडउ स्नेह अवगणी आज राजानइ मारिवा आवी। तु ते मुझनइ किम आपणी होसिइ ?'' इम चींतवी पछइं मुझनई संवेग-रंग ऊपनइ, विष-समान विषय-सुख मूकी चारित्र लीघं। तेह-भणी हिव हुं आति आतापना करंड छउं।' ए वात सांभली राजा वैराग्य-पूरित हूंतड, चारित्र लेवानु मनोरथ करिवा लागउ। एहवइ ते राजानउं कटक आविउं। पछइ राजा सपरिवार नगर-माहि आवी, पुत्रनइ राज देई, आपणपे दीक्षा लोघी। तिहां राणीनी वात प्रकट हुई। तिवारइ लोक राणीनी निंदा करिवा लागा। हिव ते श्रृंगारमंजरी राणी निकाचित कमें बांघे, आऊखानइ क्षिय मरी, नरिक गई। तिहां-हूंती आवी घणड काल संसार-माहि भमितइ। इति श्रीशिक्षिपदेशमाला-बालाविवोधे मेरुनुंदर-गणिना विरिवार दत्त-दुहितानी कथा संपूर्ण ।। ३९ ।।

हिब पाछिला द्रष्टांतनउ अर्थ उपदेशि करी कहइ— एवं सीलाराहण विराहण(णं च सुक्छ-दुक्ख।इं। इय जाणिय भो भव्वा सिढिला मा होह सीलम्मि।। ६७ व्याख्याः — एवं=ईणइ प्रकारे, जेहे जीवे शीलनी पालना कीधी, ते जीवनइ इह-लेकि पर-लोकि मुख-यशादि फलनी प्राप्ति हुई। अनइ जेहे शीलनी विराधना कीधी, ते जीवनइ अयश= अपकीर्ति, नश्कादि फल हूआ। एह-भणी शील-आराधन-विराधन-लगइ सुख-दुखनउं फल जाणी, भो भविक-लोकी! शील पालता दला म होज्यो ।

हिव शील-पालणहार पुरुषे नारीनउ संग वर्जिवउ ते कहइ-

बभव्वयः धारीणं नारी - संगो अणत्यः प्रथारी ।

मृसाण व मंजारी इयं निसिद्धं च सुत्ते वि ॥ ६८

व्याख्या: — जे पुरुषनइ स्वदार-संतोष, परदार-परिहार हुइ अनइ जे स्त्रीनइ परपुरुषनउ परि-हार हुइ ते शीलवत कहीइ । अनइ जे सर्वथा मैथुननउ त्याग, ते ब्रह्मवत कहीइ । ते ब्रह्मव व्यासी-नइ नारीनउ संग अनर्थनई हेति हुइ, ऊंदिरनइ दृष्टांति । जिम ऊंदिर निलाईनइ संगि विणास पामइ, तिम स्त्रीनउ संग ब्रह्मव्यक्षारीनई विणास ऊपजावइ ।

वली एह जि कहई ---

विभूसा इत्थि संसम्गी पणीयं रस भोअणं नरस्सऽत्त-गवेसिस्स विसं तालउड जहा ॥६९

च्याख्याः —आत्मगवेषी =तरववेत्ता जे पुरुष हुइ, तेहनइ ए विभूषादिक सर्व तालपुट विष-समान जाणिद छं। हिवइ ते विभूषा सिउं कहीई १ जे सयरनी शोभा-भणी नख समारीइ, अलंकारनउं पहिरवर्ज तांबूलादिक शोभा । अनइ स्त्रीनउ संसर्ग=एकत्र निवास । प्रणीत सरस आहार=रसभोजन, विगइनउं सेविवउं। जिम तालपुट विष तरकाल प्राणनइ अपहारक, तिम शीलवंतनइ विभूषादिक तालपुट विष-समान जाणिवउं।

हिव वली सिद्धांतनउं उदाहरण कहइ-

जहा कुक्कुड-पोयस्स निचं कुललओ भयं। एवं खु बंभयारिस्स इत्थी-विगाहओ भयं।। ७०

ठयाख्याः -- जिम कूक्ष्डाना बालकनइ कुलल कहीइ बिडालानउ भय सदाइ हुइ, तिम ब्रह्मचारीनइ स्त्रीना विग्रह कहीइ डील-थकी भय ऊपजइ। स्त्री नइ पुरुषना संग−लगइ विणास इ ऊपजइ। एह-भणी परस्परिइं संग वर्जिवउ। यतः ---

> स्मृता भवति तापाय दृष्टा तून्माद-कािणी। रृष्ट्रच्या भवति मोहाय केनेयं निर्मिता वद्या ।। १ ॥ अग्निकुंड-समा नारी घृतकुंभ-समो नरः। एक-संग-प्रसंगेण द्रवो भवति नान्यथा॥ २ ॥

वली स्त्रीनउं रूप वर्जिवउं ते कहइ —

चित्त-भित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं । भक्तवरं पिव दट्टूणं दिष्टिं पडिसमाहरे ॥ ७१

च्याख्याः —भीतिनां लिख्यां रूप न ध्याईइ=न जोईइ, अनइ नारी भला अलंकार, भलां वस्त्र पिहरे रूप जोइवउं नहीं । जिम भास्कर=सूर्य देखी दिष्ट वालीइ, तिम स्त्री देखी दिष्टि पाछी वालियइ ।

हिवइ जे काम-छोचना=स्त्रीनंड संसर्ग ब्रह्मचारीइ वर्जिवंड एहनंड किसिडं कहिवडं ? पणि जे एहवीइ स्त्री हुइ तेहनंड इ संग वर्जिवंड ते कहइ छड्- हत्थपाय पडिछिन्नं कन्त- नास-विगप्पियं । अवि वास-सयं नारिं वंभयारी त्रिवडजए ॥ ७२

रुयाख्याः—जे स्त्रीना हाथाग छेद्या हुई, काननाक ते पणि काप्यां हुई वस्ती सड वरस व उल्या हुइ, एहवी ई बीमत्स स्त्रीनउ सतर्ग ब्रह्मवारी निश्चइ-सिउं वर्जेई । कांई १ इंद्रियमाम दुजय छइ ।

वली एह जि विशेष बिहुं गाहे करी कहइ-

विसमा विसय-पिवासा अणाइ-भव-भावणाइ जीवाणं । अइ दुड्जेआणि य इंदियाणि तह चंचलं चित्तं ॥ ७३ येवमसारं सत्तं मोहण-बल्ली अ महिलिआओ वि । इअ कह विचलिय-चित्तो य ठावए एवमप्पाणं ॥ ५४

ठयाख्या:—इहां पहिलं जीवनइ अनादि भवाभ्यास-लगी विषय-पिपासा=भोग-तृष्णा निवारतां दोहिली, अनइ इंद्रिय तु महादुर्जय=जीपाइ नही । तेह इ माहि वली चित्त=मन ते तउ गाढेरं चपल [७३], [थेव०] जे सत्त=चित्तनउ दृढपणं छइ, ते तु थोडिलंडं=लगारेक, बली असार=क्षण विनश्वर । अनइ जे महिला=स्त्री ते तु मोहणनी वेलडी । कांइ, रात्रिदिवस हाव-भाव कटाक्ष-विक्षेगादिके करो व्यामोह ऊगजावइ। एतले प्रकारे करी जेती वारइ चित्तचल इ, तिवारइं सीनइ संसर्गि आपणं ब्रह्मवत किम राखी सकइ ? अपि तु न सकइ। इम शील-भेगनइ अणकरिवइ करी आपणं मन राखइ।

हिवइ ए अथंनइ विहरह आपणा आत्मानइ शिख्या दिइ ते कहइ-रे जीव समय किंपय-निमेस-सुह-लालसो कहं मृढ । सासय-सुहमसमं तं हारिसि सिस-सोयरं च जसं ॥ ७५

ठयाख्याः-रे जीव ! विद्धांत माहि कहिउं छइ अनई प्रत्यक्ष अनुभव करी देखइ छइ पणि, कामभोगनां सुख जेतलइ आंखि मीची ऊवाडीइ, एतलउं विषय-सुख छइ । तु एहनइ काजि, अरे मूर्ख जीव, अनंत=शास्वतां मोक्ष सुख कांइ हारवइ ? ते केहवां छई ? जे शशी=चंद्रमा, तेहनी कान्ति ते समान उज्ज्वल छई । अनइ वली जस=कीर्ति, ते पणि मुहीआं कांइ गमाडइ ? कांइ नीगमइ ?

हिवइ कामातुर मनुष्यनइ जे इह-लोकि दोष ऊपजइ, ते कहइ—

कलमल-अरइ-अभुक्ला वाही दाहाइ विविह−असुहाइं । मरणं पि हु विरहाइसु संपऽजइ काम-तविआणं ॥ ७६

व्याख्या:-कामतप्त जीवनइ जे ऊपरि वांछा हुइ, ते-पाखइ कलमलउ=चित्तनउं व्याकुल-्णाउं, तिणि करी अरित=चित्तनउ उद्वेग, तेह लगइ अभूख हुइ । अति काम-लगी व्याधि=ज्वर, खयनादि रोग ऊपजइ, हीया-माहि दाघ ऊपजइ। आदि शब्द-इतु मूर्छा=चित्तनइ सून्यता इत्यादि ऊपजइ। मरण पणि ऊपजइ विरहादिके करी। यतः-

प्रथमे त्वभिलाषः स्यात् द्वितीये ह्यर्शचितनं । अनुस्मृतिस्तृतीये च चतुर्थे गुण-कीर्तनं ।।१॥ उद्वेगः पंचमे जेयो विलापः षष्ठ उच्यते । उन्मादः सतमे जेयो भवेद् व्याधिरथाष्टमे ॥२॥ नवमे जङता प्रोक्ता दशमे मरणं भवेत्।

इत्यादि ।

वली विषयातुरनइ दुखी संसार देखाडइ— विसईण दुक्ख-लक्खा विसय-विरत्ताणमसमन्तम-सुक्खं । जइ निडणं परिचितसि ता तुज्झ वि अणुभवो एसो ॥७७

ठ्याख्याः—जे मानवी विषयासक्त हुइ, तेहनइ दुक्खना लक्ष ऊपजई। अनइ जे विषय-हूंता विरता हुई, तेहनइ सुक्ख असामान्य=परम सुख ऊपजई। ए वातनइ विहरइ अनेराना कह्या-पाहइ आपणइ हीइ=निपुणगणइ हीआ-साथिं आफहणी विचारी जोइ। रे जीव! तृंहनइ अनुभूत स्वरूप छइ। आपणा हीया सिउं विचारी जोइ। एतऌइ गाथार्थ हूउ।

वली ए उपदेश कहइ-

जासि च संग वसओ जस-धम्म-कुलाइ हारसे मृढ । तासि पि किंपि वित्ते चिंतसु नारीण दुच्चरियं ॥७८

ठयाख्याः--रे जीव=आत्मन् ! तूं नारीनु जे संग=संभोग, तेहनह काि आपणड यश, धर्म, कुळाचार समस्त हारवइ छइ=नीगमइ छइ । तु ते नारीना जे दुश्चरित=दोष छइं, ते आपणा हीया-सिउं विचारी कांइ न जोइ ?

वली नारीना विशेष कहइ--

चवलाओ कुडिलाओ वंचण-निरयाउ दुट्ट-धिट्टाओ । तह नीय गामिणीओ जाओ तेसि पि को मोहो ? ॥ ९

ट्याख्या:——जे नारी स्वभाविइं चपर=चंचल-स्वभाव हुइ, अनइ वली महा-कुटिल=वक-स्वभाव हुइ, परवंचनानइ विषइ निरत=सावधान हुइ, वली मनुष्यनई आपदाई पाडिवानइ काजि महादुष्टि, धृष्टा, वली वक-चित्त, वली नदीनी परिइं नीचगामिनी, इसी जे निर्पुणि, निर्लिज, निस्नेहि, ते स्त्री-उपरि किसिउ मोह कीजइ? अपि तु न कीजइ।

हिवइ ए नारी क्षण-एक राग घरइ ते कहइ—
गुण-सायरं पि पुरिसं चंचल-चित्ता विविज्जिड पादा ।
रच्चइ निरक्खरे वि हु नीअत्तमहो महिलाए ॥८०

ठ्याख्या:--ए पापिणी स्त्रीं चंचल-चित्त हूंती, गुणरूप रत्न तेहनउ सागर=समुद्र इसिउ गुणसागर ते आपणउ पुरुष मेव्ही, जे निरक्षर=मूर्ख हाली-पींडार-प्रशृति जे पुरुष हुई, तेहनइ विषइ राचइ=तिहां मन करइ, तेह-सिउं रमइं । तु अहो लोको ! ते स्त्रीनउ नोचपणउं=अधमपणउं जोउ ।

वली स्त्रीनंड अधमपणंडं कहइ—

रूवोवहसिय-मयरद्धयं पि पुहवीसरं पि परिहरिष्ठं । इयर-नरे वि पसज्जइ ही ही महिलाण अहमत्तं ॥८१

ठ्याख्या:——जीणइ पुरुषि आपणइ रूपि करी मकरध्वज=कंदर्प हसिउ=जीतउ छइ, अथवा पृथ्वीपति=राजा हुइ तेहवा इ आपणा पुरुषनइ परिहरी, कामातुर हूंती स्त्री जे कुरूप, दालिद्री, कर्मकरादि जे पुरुष ते-ऊपरि अभिलाष करइ=अंगना संग करइ। 'ही ही' इसिइं खेद-वचित । जोउ-नि, महिला=स्त्रीनउं अधमपणउं। जे रूपिइं न राचइ, गुणे न राचइ, किंतु काम सुलि राचइ, इणि कारणि अधमपणउं कहिउं।

२०

हिवइ ए स्त्रीनंड स्वरूप जणावतउ कहइ-

धीरा व कायरा वा नारी मुद्धा व बुद्धिमंा वा। रत्ता व विरत्ता वा सरला कुडिला व नो जाणे॥८२

ठ्याख्याः — ए स्त्रीनइ कोई इम जाणी न सकइ जु, 'ए स्त्री घीर=साहसवंति छइ ? किंवा कांयरि=बीहकणि छइ ? कि ए स्त्री मूधी=भोली छइ ? कि ए बुद्धिवंत छइ ? कि ए राती= सानुरागि छइ ? कि ए विरति छइ ? कि ए सरल-स्वभावनी छइ ? किंवा ए कुटिल-स्वभावनी= उन्मार्ग-चारिणी छई ?' इत्यादि बोले स्त्रीनडं स्वरूप को जाणी न सकइ ।

सामान्य मनुष्यनंउ सिउं कहीइ ? जे महा-बुद्धिवंत हुई, तेह इ ए स्त्रीनां चरित्र जाणी न सकह । ते स्वरूप कहइ——

> निय-मइ-माहप्पेणं जे सयलं तिहुयणं परिकलंति । नारी-चरिअ-विभारे ते वि हु मृढ व्व मृअ व्व ॥ ८३

व्याख्याः — जे पुरुष महा बुद्धिवंत हुइ, आपणी बुद्धिनइ महातिम करी त्रिहु त्रिभुवन-माहि ज्ञान-विज्ञानादिक सहू जाणइं, एहवा जे पुरुष, ते पणि नारी=स्त्रीना चरित्र=कुटिलपणडं इत्यादि कारणे नारीना चरित्रनइं विषइ=विचारिते पुरुष मुख्ति बोलिया मूक=बोबडा हुई, स्त्रीना चरित्र लखी न सकई, अनइ बोबडानी परिइं जाणताई हूंता पणि जीमइ कही न सकई, किसइ कारणि।

हिवइ ए स्त्रीनां चरित्र जाणीई नही ते कारण कहइ —

अन्तरं रम्इ निरिक्खइ अन्तं चितेइ भासए अन्तं । अन्तरस देइ दोसं कवड-कुडी कामिणी विअडा ॥८४

व्याख्याः — ए नारी अनेरा साथि रमइ=क्रीडा करइ, अनेरानइ निरखइ=जोइ, अनेरउ कोई पुरुष चित्त-माहि चींतवइ, अनइ अनेरानइ मुखि श्रृंगारवचने करी हासपूर्वक बोळावइ । अनेरा दु:शीळादिक पुरुष, दोष अनेरानड अनुरक्त पुरुषनई दिइ, अनइ अनेरानइ अणहूंतउ दोष चडावइ=क्ळंक दिइ। ईणि कारणि ए कामिनी=स्त्री महाविकट=वांकी । अनइ वळी कूडकपट= बंच-द्रोह तेहनी कुटी=एइ। जेनळां सर्व कपट, तेतळां समस्त ए कामिनी स्त्री-माहि हुई ।

हिवइ अनुरक्त इ स्त्रीनउ वेसास न करिवउ ते कहइ — जत्थाणुरत्त-चित्ता सुर-धण-देसाइअं पि छड्डेइ । तं पि हु खिवेइ दुक्खे महिला मिठस्स निव-भज्जा ॥ ८५

च्याख्याः —िज पुरुषनइ विषइ अनुरक्तिचित्त हुइ, रागसुख-परविश महिला कामसुख-भणी, सुह कहीइ राज्यादिक सुख, धन कहीइ सुवर्ण-मिन-मिणिक्यादिक, देन कहीइ स्थानकादिक, आदि शब्द तु मातृकुल-पितृकुल-स्वसुरकुल, परिवार समस्त ए छांडइ= मेल्ही जाइ । जे पुरुष साथि छुब्घ हुंती ए सर्व मेल्हइ, निदानि ते पुरुषनइ पणि महा-दुःख माहि पाडइ । ते स्त्रीनड क्रिसिड वेसास ? तेह—ऊपरि किसिड मोह ? राणीनी परिइं, जिम नृव=राजानी कामिनी=कलत्र मेंठ=पडंतार, तेहसिंड अनुरक्त हूंती अनइ पछइ ते पडंतार एवडइ दुक्लि पाडिउ । इहां नूपुर-पड़िता, राणी अनइ पडंतार ए त्रिहुंनी कथा जाणिवी । ते कथा आगइ कही छइ, तिहां हूंती जाणिवी ।

१. A.B. सदोष अनेरा अनुरक्त पुरुष नं दिइ ।

हिवइ जे भव्य हुई ते स्त्रीनां चरित्र देखी विषय-हूं ता विरता हुई । इसिउं दृष्टांतपूर्वक कहइ---

> कुडिलं महिल-इलियं परिकलिउं विमल बुद्धिणे। धीरा । धन्ना विरत्त चित्ता हवंति जह अगडदत्ताई ॥ ८६॥

ठयाख्या: —महिल = न्नीन उमहाकुटिल = बांकुं लिलतपण जं बुद्धिवंत - पुरुषन इं अनाकलीय, तु एहवा ते चेष्टित = भाचरण परिकली= जाणीन इ जे निर्मेल - चेष्टित हुई, बुद्धिमंत हुई, घीर हुई, हुल्हमा जीव हुई ते ए स्नी-हुंता विरक्त - चित्त हुई, अगडदत्त इ दृष्टांति । जिम अगडदत्त कुमार स्त्रीना चेष्टित देखी विरक्त हुउ, तिम आदि शब्द - इतु भतृ हिरि-शालिभद्र - जंबूस्वामि-प्रमुख अनेक पुरुष जाणिवा । एतल इ गाथान उअर्थ हुउ । विस्तरार्थ कथा - हूंत उ जाणिव उ। ते अगड - दत्तनी कथा कही इ —

[४०. अगडदत्तनी कथा]

शंखपुर नगरि सुंदर राजा, भार्या सुलसा । तेहनी कृष्वि-हूंतउ ऊपनउ अगडदत्त । पणि ते महा रूपवंत, महा पराक्रमी अनइ वली सर्व दोषनउं निधान । ते एकदा राजसभा-माहि आवी बहठउ । तिसिइ लोके आवी राजा विनविउ, 'स्वामी! ईणइ अगडदत्ति सहू नगरः संतापिउं। एह्-थकां अम्हे वसी न सकूं।' ए वात सांभली राजा रीसाणउ हूंतु कहिवा लागउ, 'विर अणजायउ पुत्र भलउ, पणि दुर्विनीत पुत्र पाइ्उ । जिणि कारणि, सामान्य इ कुल भलड़ पुत्रिइं विभूषीइ, अनइ भल्डूं इ कुल कुपुत्रिइ कलंकीइ।' इत्यादि वचन कही साहंकार कुमार राजाइ निर्भितिउ ।

तिवारइं कुमार 'प्रहुसिउ हूंतउ रात्रिइं नीकली गयउ । मउडइ मउडइ भूमि आक्रमतउँ वाणारक्षी—नगरीइ आविउ । हिवइ ते नगरी जोतउ जोतउ कुणहि एकणि मिंढ गयउ । तिहां नेसालीआं भणइं छइं उपाध्याय-समीपि आवी । तिसेइ पत्रनचंद्र उपाध्यायन प्रणाम करी ते अगडदत्त—कुमार आगलि बइटउ । तिवारइ ते आकृतिवंत कुमार देखी उपाध्याय पूछइ, 'तूं कउण ? किहां-हूंतउ आविउ ? अनइ कउण कारण ?' तिवारइ कुमारि आपणउ सवै वृत्तांत कहिउ । पछइ उपाध्याय कहइ, 'वत्स ! जे सुपुत्र हुइ, मातापितानइ न मूं कई । कांइ ? तेहना उपगारनई आपणपे 'ऊरण किम इ न थईइ । जीणइ स्तन्यपान कराव्यां तेहनइ जु मुंकीइ तु ढोर नइ माणसनइ सिउ विहरउ ?' तिवारइ कुमार कहइ, 'ए बोल तुम्हारउ मह मानिउ ।' पछइ उपाध्यायइ आपणइ परि आणी स्नान—भोजन करावी कहिउं, 'वरस ! पिताना घरनी रीतिई इहां तुं रहे । चिंता किसी इ म करे ।' पछइ कुमार तिहां रहिउ हुंतु सर्व शास्त्र भणिउ ।

हिव एकदा कुमार वन-माहि खेलतउ हुंतउ, तेतलइ अकस्मात् फूलनइ दडइ आहणिउ | तिसिइ, जड पाछउं जोइ, तु रमणी एक दीठी ! कुमार पणि तेहने कटाक्षवाणे करी वोधिउ हूंतउ स्त्री-सन्मुख जोवा लागउ । तिवारइ स्त्री कहइ, 'अहो कुमार ! जे वेला-लगइ तूं दृष्टिइं दीठउ, ते वेला आरंभी तूं कंदर्पने वाणे करी हणइ छइ!' ए वात सांभली कुमार पूछइ, 'सुभिगि ! तूं कडिण शकिहिनी वेटी !' तिवारइ स्त्री कहई, 'हूं वंधुदत्त श्रेष्टिनी पुत्री, नामिइं मदनमंजरी । मह बालक-पणइ सर्व कला अभ्यसी । पछई हूं पिताइं परणावी । पणि भरतारइ दालिइ-लगइ हूं पिरहरी ।

१. P. रीसाणउ । २. A.B.L.Pu. ऊर्ण्ण, K. उसिंकल । ३.K. अंतर ।

ते-भणी हूं पितानइ घर-थकी रहउं छउं । तु आज तूं दृष्टिईं करी दीठउ। हिनइ तूं माहरउ मनोरथ सफड़ करि।' तिनाम्ह कुमार कहइ, 'ताहरउ मनोरथ अवसरइ सफड़ कीजिसिइ। तूं चिंता म करे।' पछइ मदनमंजरी हर्षित हूंती घरि गई, अनइ कुमार असनार थई नगर-भणी आविना लागड।

एतल्ड नगर-माहि कोलाहल सांमलिउ | तिसिइ विस्मित हूंतउ सन्मुख जु बोइ, तु हस्ती एक प्रचंड आवतउ दीठउ | ते देखी कुमार घोडा-थकी ऊतरी रमसपणइ हाथी-भणी धायउ | जेतल्ड हाथि उत्तरासणनी वीटली करी हाथी-भणी लांखी तेतल्ड हाथी कुमार-सन्मुख धायउ | तिसिइ लोक हाहारच करिवा लागा | एतल्ड कुमार इ विद्युत्करण देई, पखंतारनी परिइं हाथीइ चडिउ | तेतल्ड भुवनपाल-राजाइं कुमार दीठउ | साहस क जाणी राजाइ कुमार तेडी आपण-समउ बइसारी कहिवा लागउ, 'वत्स ! गुणे करी यद्यपि कुल जाणीइ छइ, पणि तथापि आपणउं स्वरूप प्रकट करि ।' तिवारई कुमार पवनचंद्र उपाध्याय-सन्मुख जोयउं । तिसिइं तिणि उपाध्यायइ ते कुमारन उ सर्व वृत्तांत कहिउ । तिवारइ राजाई कहिउं, 'एवडा पराक्रम राज-बोब टाली अनेथि न हुई ।' पछइ कुमार वस्त्र-अलंकारे सरकारिउ ।

इसिइ नगरीना लोक मेटि लेई आज्या, राजानइ वीनवइं, 'स्वामिन ! तई राज पालतइ ताहरउं नगर कुणिह एकि अदृष्ठ चोरे मुसीइ छइ ।' ए वात सांमली राजाई तलार तेडावी आक्रोसपूर्वक किहिंडं, 'रे ! तुम्ह थका चोरे नगर संतापीइ, ते सिउं कारण ?' तिवारइ तलार कहइ, 'स्वामी ! चोर न जाणीइ सिद्ध छइ किंवा मंत्रवादी छइ ? अम्हे घणउं घणउं जोता रहउं, पणि चोर अम्हारी दृष्टिइं नावइ । ते सिउं कारण ?' तिवारइ राजा सचिंत जाणी कुमार कहइ, 'तात! ए चिंता म करउ। ए काम मुझनइ दिउ। ए आदेश अनेथि म देंज्यो । जु सूंठिइ श्लेष्मा बाइ, तु रसायण कउण लिइं ?' पछइ राजाई कुमारनइं आदेस दीघउ । हिवइ कुमार पवनचंद्र उपाच्यायनी अनुज्ञाइ चूतकार, मालाकार, कलाल, वेश्या, कंदोईनां हाट—ईणे स्थानके चोर जोता छ दिन हुया । पछइ सातमइ दिनि कुमार चींतवइ, 'अजी तां चोरनी वात इ न सांमलीइ, अनइ दिन तु एक जि थाकइ छइ। माहरी प्रतिज्ञा पूरी किम थासि ?' इम चींतवी जेतलइ नगर—बाहरि नीकलिउ, तेतलई परित्राजक एक, कथायक वस्त्र पहिरो, ताम्राक्ष, विकराल आवतउ देखी, कुमार चींतवई, 'सही एह जि ते चोर।' एहचउ निश्चउ करी तेहनइ प्रणाम कीघउ। तिवारई परित्राजक एकइ 'तूं कउण ?' कुमार कहइ, 'हूं विदेसी, दालिझी—पीडित हूं तु घननइ काजि उरइ—परइ फिरडं छउं। 'तिवारई पालंडी कहई, 'मुझ साथि आवि, जिम ताहरंड दालिद्र गमाडउं।' पछइ कुमार 'प्रमाण'इसिउं कही ऊभउ रहिउ।

तेतलइ ते परित्राजक पाछउ जई, प्रेतवन-माहि-हूंता वि कुशि, वि खड्ग आणी, कुमारनइ साथि लेई, नगर-माहि आवि, विद्यानइ बिल नगरना लोकनां लोचन बांध्यां । पछइ कोई-एक व्यवहारीयानइ घरि जई खात्र पाडिउं। तिहां अनेक ररन-आभरण-बस्ने भरी 'पेई वि काढ़ी । बीजा इ घणां वानां काढ्यां। ते समस्त घन लेई कुमार-सहित कुणिहि देवकुलि गयउ। तिहां घणा विदेशी सूता देखी परित्राजकइ कुमारनइ कहिउं, 'आपणपे इहां सूईसिइ।' पछइ तिणि परित्राजिक सर्व सुता जाणि, बिन्हइ वैपेई ऊपाडी, सूनइ देवकुलि लेई मूंकी। आपणि पाखंड-लगइ आवी सूनउ। तिवारइ राजकु गरि चींतत्रीउं, 'एइनउ वेसास न कीजइ।' इम चींतवी आपणइ साथरइ पछेडी लांबी करी मूंकी। पछइ आपणउं खड़ग सखायत करी वहना

१. A. B. Pu. पेडी । २. A. B. Pu- पेडो, L. पटारी P- पेटारी, C. पिटारी ।

कोटर-माहि रहिउ । तेतलइ परिवाजिक ऊठी जेतला सूता हूंता ते सर्व हणी, कुमारनइ साथरइ आवी पछेडी बि-खंड की घो । पछइ ते साथरउ सूनउ जाणी ते चोर उरइ-परइ जोवा लागउ । तेतलई कुमार खड्ग काढ़ीनइ कहइ, 'रे चोर ! हिव तूं किहां जाएसि ?' इम कहितइ जि खड्गि करी चोरनी बिहूइ जांघ छेदी । तिवारइ चोर कहइ, 'आहो सत्पुरुष ! ताहरइ सौर्यपणइ करी हूं संतोषिउ । हिवइ माहरी वात सांभलि । ए देहरा-पूठिइ वडना कोटर-माहि पातालि माहरउं भुवन छइ । तिहां वीरमती पुत्री-पाहइ शिला उघडावे । अनइ ए खड्ग संकेत-भणी देखें । वली तेहनउं पाणिग्रहण करिजे । ते तुझनई सर्व भंडार देखाडिसिइ ।

पछइ कुमारि तिहां जई वीरमतीनइ सर्व वात कही । अहिनाण-भणी खड़ पणि दीघउं । तिवारइं तिणि वीरमतीइं आगतास्वागत करी, कुमारनइ पल्यंकि बइसारी, घर-माहि जई, बीजी भूमिकाइं चडी । तिसिइं कुमारि चीतविउं, 'एहनउ इ वीसास न कीजह ।' इम चींतवी पल्यंक मूंकी कुमार एकइ खूणइ छकी रहिउ । हिव वीरमतीइ ऊपरि चडी यंत्रिशल कापी। ते तत्काल खडखडती पल्यंक-ऊपरि पडी। पल्यंक चूर्ण हुउ। पछइ वीरमती आवीनइ कहइ, 'अरे! माहरा पितानइ हणी जीविवउं वांछइ ?' ते वीरमतीनइ इम कहितां जि कुमार प्रगट थई जटीए झाली भूमिग्रह-बाहरि काढी, ते शिला तिम जि देई, राजा-समीपि लेई आविउ। तिवारइं राजा कुमारनी सौर्यवृत्ति प्रसंसिवा लाग्उ। पछइ राजाइं नगरना लोक तेडी जेहनी जे वस्तु हूंती तेहनइ ते वस्तु आपी। याकती राजाइ लीघी। पछइ राज इं संतुष्ट वर्त्तमान एक सहस्र हाथी, एक लाख जात्य तुरंगम, एक कोडि सोनउं, लाख गामनउ एक देश, दस कोडिनउ भंडार, वली अनेक वस्तु आमरण-अलंकार-सहित आपणी कमलसेना कन्या, एतलां वानां ते अगडदत्त-कुमारनइ दीधां। वली सात-भूमिक आवास दीघउ।

हवइ तिहां कुमार सपितार उपाध्यायनइ ध्यातउ, राजानइ नापनी परिइं मानतउ, मुखिइं रहइ छइ । इसिइ काई एक स्त्री वधावती कुमारनइ कहइ, 'जे पूर्विइ बंधुदत्त श्रेष्ठिनी पुत्री मदनमंजरी संतोषी हूंतो, तीणीइ ताहरउ वृत्तांत, चोर निग्नहिवउं, राज-पुत्रीनउं परिणवउं ए सर्व सांमली हूं तुझ-कन्हिल मोकली छउं ।' इम कही कुमरनइ कंठि कुमुममाला धाती । वली किहिवा लागी, 'अहो कुमार ! माहरउं अभाग्य, जे तइं हूं वीसारी'। तिवारइ कुमार कहइ, 'त्' तेहनई किहेंजे, जउ खेद न घरे । चालतां तुझनइ साथि लेई चालिसु।' इम कही आपणा हाथनी नामांकित मुद्रिका देई मोकली । इसिइं कुमारनइ पोलीइ आवी वीनती कीभी, 'स्वामी ! शंखपुरना नि प्रधान नारणइ आवी ऊभा रिहया छई।' पछइ कुमारि माहि तेडाच्या । ते बेहू उलली, आलिंगनपूर्वक बहुमान देई, आपण-कन्हिल बहसारी माता-पितानउं क्षेम-कल्याण-कारण पूछिउं । तिवारइ सुवेग कहइ, 'हे कुमार ! जे दिवस-लगइ तुम्हे चाल्या ते दिवस-लगइ मातापितानइ असमाधि न मागी।' ए वात सांमली कुमार अश्रुपात करतउ इसिडं कहइ, 'मइ मानापनई दुःख जि कीघडं।' तिवारइं वली सुवेग कहइ, 'तुम्हे जे देशांतरना कुत्हल जोयां, तिणि करी ए दुख इ सुखरूप हूउं। तु हिव आवउ। आपणे गुणे, दरीन करी पिताना मनोरथ पूरउ।' पछई कुमार ते बेह प्रधान सत्कारी, संतोधी आपणइ साथि लेई राजा-समीपि आविउ। तिहां सुवेग-पाहंति सर्व वृत्तांत कहाविउ।

पछइ भुवनपालि राजाइ पुत्रीनइ सर्व सीख देई कुमारनइ चालिवानी अनुमित दीधी। कुमार पिषा उपाध्यायनइ पूछी सपरिवार चालिउ। पछइ कुमारि कटक वहितउं करी, आपणि पाछउ वली, ते मदनमंजरी दूती-पाहंति तेडावी, रथि बइसारी वली चालिउ । तेतलइ कटक चाली गयउ । पछइ कुमार स्नाडिनी वाटइ नीकलिउ । इम स्नइ मार्गि जातां विध्यवन-माहि भीम पल्लीपित आवी पडिउ । पछइ माहोमाहि युद्ध होवा लागउं । तिवारइं कुमारना सुभट दिशोदिशि नासिवा लागा । इम कुमार अनइ भीम पल्लीपितनइ युद्ध हूंतां, जिवारइं कुमार भीम जीपी न सकइ, तिवारइ कुमार मदनमंजरो सारथी करी रथि बइसारी । तेतलइ भीम मदनमंजरीनइ रूपि व्यामोहिउ हूंतउ क्षोभ पामिवा लागउ । तिसिइं कुमरि अवसर लही भीम हणिउ । मरण पामिउ । पछइ कुमार एकलइ रथि तीणी वाटइ निकलिउ । जे कटक दिशोदिशि नाठउँ ते तउ जूजूइ वाटइ पडिउं ।

हिवइ कुमार एकणि रथइ जातउ जेतल इं अर्घ पंथ अवगाहिउ, तेतल इ वि पुरुष साम्हा मिल्या । ते-कन्हिल कुमारि वाट पूछी । तिसिइ ते पुरुष कहई, 'अहो ! ए वड-हूंता दि मार्ग छइं । तेह-माहि जिमण इ मार्गि शंखपुर अलग उं हुइ, पणि मार्गि भय नही । अनइ डाबइ मार्गि शंखपुर द्वकड उं हुइ, पणि मार्गि भय घणा । एक दुर्योघन नाम इ चोर छइ, एक मदोनमत्त हस्ती छइ, विल एक सिंह छइ । तेह-भणी तुम्हे डाबी वाटइ म जाज्यो ।' ए वात सांभली पछइ कुमारि द्वकड उपथ जाणी डाबी वाटइ रथ खेडिउ । तिवार केतलाएक लोक कुमारन इ साथिइ चाल्या । तीणई मार्गि जातां कापालिक एक सन्मुख आवी कुमारन आशीर्वाद दीघउ । पछइ ते कापालिक कुमारन कहइ, 'हूं तीर्थयात्रा-भणी चालिउ छउं, इणि कारणि ताहर उसाथ वांछ उं'। तिवार इ कुमारि ए बोल मानिउं । पछइ कुमारना रथ साथि ते कापालिक चालिउ । जु केतलीएक भूमिका गयउ, तु कापालिक इसिउं कहइ, 'अहो ! हूं इहां आगइ वरसाल इ रहिउ हुंत उ, तेह-भणी इहां मुझन इं गोकुलना घणी पहुणागत करिस इं । इणि कारणि, अहो कुमार ! साथ-सहित आज तुं प्राहुण या ।' कुमार कहइ, 'मुनिन उं भोजन करिवा युगत उं नही ।' इम कहइ हुंत इ पछइ तीण इ कापालिक इ विघ-मिश्रित दूध-दही आणी दीषां। तिहां एक कुमार टाली बीजे सघ छे लीषां। लेई सघ ड इ साथर इ सूता।

हिवइ जेतल्ड कुमार आपणड शंबल काढी मोजन करिवा बहठउ, तेतल्ड ते कापालिक खड्ग काढी कुमार समोपि आवी कहइ, 'ओर ! ते हूं दुर्योधन-नामा चोर । तह किसिउं मारहउं नाम इ नहीं सांभलिउं ! तु हिव तूं प्रिया अनइ लक्ष्मी लेई किहां जाएसि ! ताहरा जे सखाइआ ते सर्व मह विषइ करी मारिआ।' इम कही खड्ग काढी जेतल्ड कुमार भणी घायउ तेतल्ड कुमारि आपणइ खड्गि करी ते कापालिक बि-खंड कीघड । पछइ कुमारइ पाणी आणी कापालिकनइ मुखिइं देवा लागड । तिवारइ कुमारने गुणे रंजिउ हूंतउ कापालिक कहइ, 'ए पर्वत-माहि वडना कोटरनइ अहिनाणि माहरउं घर छइ । तिहां घन छइ सर्व, अनइ खुंदरी भार्यों छइ। ए सर्व तूं लेजे ।' पछइ ए वात कुमारि मदनमंजरीनइ कही । तिसिइ मरनमंजरीइ वित्ति विवारीनइ कहिउ, 'नाथ ! हिवडां आधा चालउ ।'

पछा कुनार जेतलई आघउ चालिड तेतलई वनगज एक सामुह्ड आविड। ते पणि हेलाई विस्ति कीघड। इम वली केमरी बिंह आविड। ते पणि आपणि शक्तिह करी बि-खंड कीघड। हैंगो रीतिह पंथ अवगाहता आगलि कमलसेना-प्रिया-सहित आपणंड कटक दीठंड। ते देखि हिषित हूंतड पृष्ठिया लागड, 'तुम्हे मुझ-पखई आघा किम चाल्या ?' तिवारई कुमारना प्रधान कहई, 'स्वामी! अम्हन कुणिहि एकणि हैम कहिंड जु, ''कुमार आघड चालिड।" ते-भणी

१. C. K. Pu. कोतर ।

अम्हे कमलसेनानइ लेई बीजी वाटइ चाल्या । तु सांप्रत हिवडां तुम्हे मिल्या ।' इम वात करतां पंथ अत्रगाहतां संखपुरिनइ उद्याति विन आल्या । पळइ पिताइं कुमार प्रवेशोत्सव करी नगरी-माहि आणिउ । तिसिइं वधू-सिहत कुपर मातापिता पग नमस्करी आपणइ घरि आविउ । पळइ भळइ दिवित कुमारनइ युवराज पदवी दोधी । अनइ कुमारिइ ते मदनमंजरी पहराणी कीधी । अनइ कमलसेना लहुडी राणी कोधी । हिवइ सर्व काजकामनइ धुरि मदन-मंजरी कीधी । पण लगारइ कमलसेना रीसाणी नहीं ।

हिव अन्यदा वसंतऋत आविई राजा सांतः पुर वन-माहि गयउ । तिस्हिं अगडदत्तकुमार पणि मदनमं जरी-सिहत रिथ बहसी वन-माहि गयउ । तिहां सर्व दिन कीडा करी, तीणइ जिरिथ निद्रा करिवा लागा । एहवर निद्रा-माहि मदनमं जरीनउ हाथ लांवउ हूउ, तिहां सर्पिइ आवी डंके कीध । तेतलइ तत्काल मदनमं जरी पुकारी ऊठी । तिसि इं कुमार दीवउ करी जु जोइ, तु साप दीठउ । एतलइ प्रियानइ मूर्छा आवी । ते देखी कुमारनइ पणि मूर्छा आवी । पछइ शीतल वायनइ योगइ कुमार सचेत हूउ । हिवइ जेतलई मंत्रवादी-तंत्रवादी तेडावीनइ उपचार करावइ, तेतलइ राणी अचेत हुई मुंइं पडो । तिवारइं कुमार विलाप करतउ काष्टनी चिहि करावी प्रिया-सिहत चिहि-माहि पइसिवा लागउ । तिसि इं कोई एक विद्याधर आकाश-मार्गि जातउ हूं तउ । तेणइ ते कोलाइल सांमली तिहां आविउ । पछइ विद्याधरइ विद्याइ करी त्रिण्णि वार पाणी अभिमंत्री मदनमं जरी छांटी । तेतलइ तरकाल विष गयउं, आंखि ऊघाडी जोवा लागी । तिवारइ कुमारनइ मिन आनंद ऊपनउ । पछइ विद्याधर सत्कारिउ हूं तउ आपणइ टामि पहुतउ । अनइ कुमार मदनमं जरीनइ लेई देवकुल-माहि आविउ । तिसिइं मदनमं जरी कहइ, 'स्वामी ! मुझनइ ताढी लागइ छइ।' ए वात सांमली कुमार अरणीना काष्ट लेवा गयउ ।

हिवइ ते देवकुळ-माहि आगइ पांच चोर चोरी करी प्रच्छन्न रह्या हूंता, तीणइ दीवउ प्रगट कीघउ । तिवारइ ते चोरन् रूप देखी मदनमं जरी व्यामोहि हूंती इसिउं कहइ, 'जु मुझनइ आदरउ तु हूं भतिरनइ हुगी तुम्ह-साथि आवंड ।' चोरे ए वचन मानिउं। एहवइ कुमारिइं अरणी-काष्ट लेतां, देवकुळ-माहि उद्योत दीठउ । ते देखी सासंक हूंतउ पाछउ आवी प्रियानइ पुछइ, 'हे प्रिये ! ए देवकुळ-माहि उद्योत किसिउं हूउ ?' तिवारइ स्त्री कहइ 'स्वामी ! तुम्हे जे अरणीनी आगि पाडी तेहनउ उद्योत इहां प्रतिबिंबिड ।' इणि वचिन मननी शंका भागी । पछइ आपणं खड्ग प्रियानइ हाथि देई, सीत गमाडिवा-भणी आपणपे आगि प्रगट करिवा लागउ । तिसिइं प्रियाइ भर्तार-भणी खड्ग मूं किउ, पणि लागउं नहीं, भीतिइं खळहाणउं। पछइ कुमार सासंक हूंतउ प्रियानइ पूछइ,'हे प्रिये ! ए सिउं ?' तिवारइ स्त्री कहइ, 'माहरा हाथ वतात्या, तिणि करी खांडउं खिसी मुंइं पिडउं।' पछइ कुमारनइ मिन वेसास ऊपनउ । तिहां-थकउ प्रिया-सिहत कुमार घर आविउ। हिवइ पाछिल चोरे चींतिविउं, 'जोउ, जेहनइ कीघइ कुमार काष्ट-भक्षण करतउ हूंतउ, तेहनइ जु आपणी नहीं हुई, तु अम्हनइ किम हुसिइ ?' इम चींतवतां वैराग्य-रंग ऊपनइं पांचे चोरे दीक्षा लीघी।

हिव कुमार धर्म-अर्थ-काम ए त्रिवर्ग साधतउ रहइ छइ। इसिइ परदेसी तुरंगम आन्या। जेतलइ एकइ घोडइ कुमार असवार हूउ, तेतलइ ते तुरंगम पंचमधाराइ चालिवा लागउ। एहवइ केंतलाएक असवार पाछा वल्या केतलाएक संघाति नीकल्या। इम जातां जि क्षण-एक-माहि कुमार अहहय हूउ। महा-अटवी-माहि गयउ। तिहां जेतलह कुमारि घोडानी वाग मूंकी,

१ · G. Pu इस, K · इंश । २ · P टर्या।

तेतनई घोडउ पडिउ । पछइ कुमार वन-माहि फिरतउ, तिहां श्री-आदिनाथनउ प्रासाद देखी मिन हर्ष ऊपनउ । पछइ प्रासाद-माहि आवी श्री-आदिनाथनइ प्रणमी आगिली वाविह स्नान करी, वली फलफूल लेई, जगननाथ पृजी, जगती-माहि आवीउ । तेतलइ तिहां मुनि एक धर्मीपदेश देतउ देखी, पछइ महारमा-पाखती त्रिण्णि प्रदक्षिणा देई, प्रणाम करी, आगिल बहुउउ । तिसिह तिहां केई-एक पुरुष दीक्षा-लेणहार देखी महारमा-कन्हिल पुछइ, 'भगवन! ए पांच पुरुष दीक्षा लिई छई, ते कउण ? अनइ वली एहनइ वैराग्यनउ स्यउं कारण ?' तिवारइ मुनि कहइ, 'अहो भद्द ! एहनउ संबंध सांभलि ।

इहां वध्याटवी । तेह-माहि भीम नामा पछीपति रहइ । तेहना ए पांच इ बांधन । हिनइ तिहां कोई एक राजकमर कटक लेई आवतं हुंतं । तेह-साथि भीमई हा की घउं। तिवारह भीम मदनमंजरीनइ रूपिइ व्यामोहिउ हुंतउ काम-व्याकुल हुउ । तिसिइ कुमारिइं ते पछीपित हणिउ । पछइ कुमार आपणइ नगरि आविउ । हिवइ ते भीमना पांच इ बांधव कुमारनइ हणिवा-भणी छिद्र जोइं, पणि पहुची न सकइं । इम एकदा ते कुमार प्रिया सहित वन-माहि देखी ते पांच इ छाना देवकुल-माहि रह्या । इसिइ कुमारनी वल्लभा सर्पनइ डसिइ अचेत हुई । तिवारइ तेहनइ विरहि कुमार अग्नि-प्रवेश करिवा लागउ । एहवइ विद्याधरि आवी प्रिया जीवाडी । कुमार हर्षिउ । पछइ प्रिया कहइ, 'स्वामो ! ताढी लागइ छइ, अग्नि आणि ।' इणि वचिन कुमार स्नेहनउ वाहिउ आप अग्नि छेत्रा बन-माहि गयउ। अनइ प्रिया देवकु उ-माहि मूंकी । एहवइ जे पूर्विई पांच इ चोर कुमारनइ हणिवा भगी देहरा म हि रहा। छई, तीणे दीवउ प्रगट कीघड । तेतलई कुमार-नी प्रियाइ ते पांव इ चौर दीठा। हिवइ तेह-माहि जे लघु बांधव छइ, तेहनउं मन कुमारनी प्रिया-ऊपरि हुउं । अनइ ते स्त्रीनउं मन ते चोर-ऊपरि हुउं । पछइ स्त्रीइ प्रार्थना की घो । तित्रारइं चोरिइं कहिउं, 'जां ताहरउ पति जीवइ तां-ताइं आपणपानइ संबंध न घटइ ।' वली स्त्री कहइ, 'अहो । जेतलइ कुमार आवइ, तेतलइ कुमारनइ हणी नि:शल्य करिसु ।' इम कहितां जि ते कुमार आगि लेई आविउ । तिसिइं चोरे दीवउ ढांकिउ । पछइ कुमारि प्रिया पूछी 'कर्डि-न, ए देवकुरु माहि उद्योत सिउ हुउ ?' तिवारइ आपण उ संबंध गोपवी स्त्री कहइ, 'स्वामी ! तुम्हे जे आगि आणी, तेइनइ प्रतिबिंबि उद्योत हुउ ।' स्त्रीइं इम वेसास ऊपजाविउ । पछड आंपणंड खड्ग पियानई हाथि देई, आप अपने प्रगट करिया लागड । तिवारई तीणी पापिणीइ पति मारिवा भणी खांडउं सउन कीघंउं । तेनलर ते चोरनइ दया ऊपनी । चोर चींतविवा लागा, 'जोड, जेहनई कीघइ ए कुमार अग्नि-प्रवेश करतं हूंतंड, तेह-ऊपरि स्नेह ऊतारी सांप्रत माहरइ विषइ राती हूंती, वजी तेहनइ मारिवा चींतवइ छइ। तु ए युवती स्वीनड केहर वेसास, जे हूंता एतलां वाना हुई ?' यतः

अकीर्ति-कारणं योषित् योषित् वैरस्य कारणं । संसारे कारणं योषित् योषितं वर्जयैत्ततः ।।१।।

स्त्रीनड एहवडं कारण जाणी ते पांचे इ चोर संसार-हूंता विरम्या । हिव जेतलइ तीणी स्त्रीइं कुमारना गला-भणी खांडडं मूकिड तेतलई चोरे खांडडं खलहिडं ।'

जिम ते मुनिना मुल-इनु एवात सांभनी तिम जि कुमार स्त्री-ऊपरि विरतउ हुउ । मन-माहि चींतविवा छागउ, मुझमइ भिकार, जे मइ जाति-कुल-विशुद्ध स्त्री छांडी ए-ऊपरि अनुराग कीघड।' तिवारई मुनि कहा, 'अहो कुनार ! ईणह कारणि ए पांच इ चोर दीक्षा लिइ छहं।' एहवड

१. K. रहिड । २. C. आपणिपे सीत गमाविवा-भणी अग्नि ।

वृत्तांत सांभली ते चोरनइ लमावी स्त्रीनउं स्वरूप विमासतु मुनिनइ कहइ, धन्य ए चोर, जे एहवउं कारण देखी दीक्षा लिइ छइं।' इम वली गुरु इं कहइ, 'स्त्रामिन ! ए सर्व तुम्हे माहरड बि वृत्तांत किहउ। ते हूंय जि। तु तुम्ह टाली मुझनइं ए कउण संदेह भाषत ? हिवइ ए पांच इ चोर माहरा बांषव हूया, जीणे हूं जीवतउ राखिउ। तु आज पछइ मुझनइ अरहंत देव, सुसाधु गुरु, जिन-प्रणीत धर्म-एह जि समिकित्व सरिण।' तिहां एहवउं समिकित्व पिडवर्जी, आपणइ धरि आवी, माता-ितानइ समझावी, कमलसेनािप्रया-सिहत दीक्षा लेई, वैराग्य-रंग-पूरित हूंतड, चारित्र पाली, ते अगडदत्त महारमा मोक्ष-सुखनइ भाजन हूउ। इहां अगडदत्त-पुनिनड हन्टांत संक्षेपिई करी किहउं। हिव एहनउ विस्तार श्री-वसुदेवहीं डि न्हेंतड जाणवड ।

इति श्रीशीलोपदेशमाला-बालाविबोघइ श्री-खरतरगच्छ-तायक-श्री*-*जिनचंद्रसूरि-शिष्येन विरचित श्रीअगडदत्तमुनि-कथा ॥४०॥

अथ वढी नारीनउ वेसास करतां दुर्दशा पामीइ ते कहइ— सुद-महुरासुं निश्चिण-मणासु नारीसु सुद्ध वीसासं । जंतो लहसि अवस्सं पएसिराउ व्व विसम-दसं ॥८७

व्याख्याः — हे मुग्ध = हे सुद्ध-हृदय ! ए नारी मुखिइ महा मधुर हुइ, अनइ मन-माहि महा-निर्शृण=दुष्ट-चित्त हुइ । तु अहो अप्राज्ञ ! इसी नारी=स्त्रीनउ जु तूं वेसास करिसि, तज्ञ तूं तेहनइ विश्वासि जातउ हूं तज्ञ अवश्यमेव=निश्चइ─सिउं विषम=पाङ्कई दशा पामिसि । कुणनी परिइं ! प्रदेशी राजानी परिइं । जिम प्रदेशी राजाइं स्त्रीना विश्वास-लगइ विषम अवस्था पामी, तिम अनेरज-इ नर पामइ । इति गाथार्थ । हिवइ विस्तर-अर्थ कथा-हूं तज्ज जाणिवज ।

ते प्रदेशी राजानी कथा कहीइ-

[४१ प्रदेशी राजानी कथा]

श्वेतवती—नगरीइ प्रदेशी राजा राज्य करइ । तेहनी प्राणिप्रया सूर्यंकांता राणी। अनइ चित्र नामा मंत्रीश्वर । ते चित्र एकदा राजकान मणी जितशत्रु राजा-समीपि श्रावस्ती—नगरीइं गयउ । तिहां केशी गणघर देखी, प्रणाम करी, उपदेश सांभत्ती, गृहधर्म पडिवजी, केशीकुमार-नइ आग्रह कीधड, कहिउं, 'स्वामी ! एक वार श्वेतवती—नगरीइ विहार करिज्यो ।' इम कही गुरुनइ हा मणावी । पछइ चित्र महुतड आपणइ नगरि आविड ।

हिवइ जे प्रदेशी-राजा, ते महा-नास्तिक। पुण्य-पाप कांई न मानह। नित महुता-साथि विवाद करतं जि रहा। इसिइं पृथ्वी-मंडल-माहि विहार करतं केशी आचार्य, श्वेतवतीनइ परसरि उद्यानवन,तेह-माहि आवी समोसर्या। एहवइ उद्यानपालकि आवी महुतानइ वधामणी दीधी। तिसिइं चित्र महुतउ इसिउं चींतवइ, 'जु मुझ थकां माहरउ स्वामी नरिक जासिइ, तु ए बात युगती नही।' इम चींतवी घोडानइ मिषांतिर प्रदेशी राजा वन-माहि लीधउ। तिहां घणा अश्व फेरिया । राजा थाकउ। पछइ वृक्ष-मूलि जई वीसामउ लेवा लागउ। तेतलह ते गुरुनी वाणी राजानइ कानि पडी। तिवारइं प्रधान-प्रत कहइ, 'ए कडण बोलइ छइ?' तिसिइं प्रधानि कहिउं, 'स्वामी! चालउ आपणपे जई सांमलोइ।' पछइ राजा ह्कडउ आवी वाणी सांमलिवा लागउ। तिहां मधुर स्वरि

१. B ∘ हींडिसिद्धांत-हूंतड । २. AB • फर्या, P • फेर्या, L. फिरया । २१

करी गुरु कहइ, 'अहो होको ! ए संसार-माहि जे मूढ जीव तस्व अणजाणतउ हूंतउ अनइ असद्-वासनाइं करी आपणउ जन्म मुघा हारवइ, ते नरगनइ अतिथि थाइ । अनई जु घर्म आदरइ तु ऊर्ध्वगति पामइ ।'

एहवरं सांभली वलतुं राजा कहइ, 'महात्मन! पुण्य-पाप नथी, जीव-अजीव नथी। जिणि कारणि, मइ चोर एक झाली तोलावी जोयउ। पछइ वली गलइ ट्रंपड देईनइ तोलिउ। न तेहनड कांइ मार घटिउ, न कांइ वाधिउ। इम वली चोर एक झालीनइ खंडोखंडि करी जीव जोयउ। पणि तेहनड जीव दीठउ नही। पछइं वली एक चोर झाली कुं भी-माहि घाती, वारणउं लीपावी, दिन पांच-सात माहि राखी जिम बाहरि काढचाउ तिम गाडरनां सई दीटा। तु कहड, ते चोरनड जीव कीणी वाटइ गयउ? अनइ गाडरनां जीव कीणी वाटइ आव्यां? कुंभीइ तु कांई छिद्र पडिडं न हूंतड।'

तिवारइ गुड गाजानइ वलतु दृष्टांत देखाडिवा-भणी कहइ, 'राजन! एक दईडु अणावीनइ जोइ।' तिवारइ राजाई दईडु अणावी, तोलावी, वली वाइं भरी तोलाविड, पणि तेह-माहि तेतलड जि भार । ए राजाना पहिला बोलनड ऊतर हूड । विल गुरे अरणी-काष्ट अणावी राजानइ कहिडं, 'राजन! एह-माहि आगि किहांइ दीसइ छइ ?' किहंड, 'ना।' तिवारइ ते काष्ट घसाव्यां, माहि- हूंती अग्नि प्रगट हुई। ए बीजा बोलनु ए ऊतर। वली गुरे कूंभी एक अणावी, माहि दांखवादक पुरुष घाती, बारणउं बूगवी, संख पूराविड। पछइ गुरे राजानइ कहिडं, 'जिम ए स्वर नीकडतड कुणिहि न दीसइ, तिम जीव नीकलतड कुणिहि न दीठड।' इत्यादि युक्तिइं राजा टिम किमइ प्रतिबोधिड, जिम राजाइ नास्तिक-मत छांडी, हेमनी रीतिइ परीक्षा करी, जिन-मत आदिड। तिहां जि सम्यक्त्व-मूल द्वादश वत ऊचरी, वली शीलक्षतादिकना अभिग्रह लीधा। पछइ पर्वतिथिइं राजा पोसह लेवा लागड। इम जिनधमनइ विषइ महांत रक्त हुउ।

तिसिई सूर्यवांता राणीइ कामाशक्तपणइ अन्य-पुरुष-सिउं प्रीति बांषी। तिवारइं तिणि पुरुषिई कहिउं, 'जां ए राजा बीवइ, तां आपणउ स्नेह सफल नहीं थाइ ' पछइ सूर्यकांता-राणीइ राजानइ उपवासना पारणानइ दिवसि भोजन-माहि विष दीषउं। जेतल्लइ प्रधाने आवी विषापहारी प्रयोगे करी विष वालिवा लागा, तेतल्लइ सूर्यकांताइं चीतवीं जु, 'माहरउं कीषउं आणकीषउं थास्यइ।' इम चोंतवा माया-लगी रोती हूंती सूर्यकांता राणी राजानइ गलइ बलगीनइ कहिवा लागी, 'हा स्वामी! हा प्राणनाथ! ए तृंहनइ किसिउं हुउं ?' इत्यादि कपट-विलाप करती राजानइ गलइ अंगूठउ चांगी ट्रंपड दीघउ। तिवारइ राजाइं ते पापिणीनउं स्वरूप जाणिउं, पणि चालइ कांई नहीं। पछइ नवकार गुणतां जि राजाना प्राण गया। मरीनइ सूर्याप-विमानि सौधर्मि देवलोकि देवता हुउ। हिव तिहां अविधनइ बलि आपणउं पूर्व-स्वरूप जाणी, सम्यक्तव निर्मेलउं करतड, च्यारि पल्योपमनउं आयु पाली, महाविदेहि क्षेत्रि आवी मोक्षि जासिइ। तु अहो धार्मिको ! इक्षिडं जाणी ते स्त्रीनड वेसास म करिज्यो।

इति श्रो-शोलोपदेशमाला-बालाविबोधे प्रदेशीराजानी कथा समाप्त ॥४१

×

वली हष्टांतपूर्वक नारीनउ अविस्वासपणउ देखाडतउ कहइ—
अणुकूल-संपिम्माण वि रमणीणं मा करिज्ञ वीसासं ।
जह राम-लक्खणेहिं सुष्पणहाए महारण्णे ॥८८
व्याख्या:—हे विदुषो ! इम म जाणिसिउ, जु ए मूहनइ अनुकूल=हितकारिणी छइ, अथवा
१. Pu. गाढरनां सइ, B.लटनां सई। २. A. B. दडड, P. दीवडडPu, दीडड ।

माहरइ विषइ सप्रेम=सस्नेह, सानुरागिणी छइ । इसिउं जाणिई हूंतइ पणि ते रमणी=स्त्रीनुउ विश्वास न करिवड । यतः—

> न विश्वसेत् कृष्णसपैस्य स्त्री-चरित्रं न विश्वसेत् । सर्थो विराधितो हन्ति स्त्री समाराधिता पि हि ॥१॥

ए ऊपरि दृष्टांत कहइ-जिम इहां अरण्य=दंडकारण्य-माहि श्री-राम-लक्ष्मण-कुमारि सूर्पणखा= रावणनी बहिन, तेहन 3 वेसास न कीघड । किम ते कहइ-यदा कालि श्री-राम-लक्ष्मण बेहू वन-वासि, फिरता फिरता जिवारइ लक्ष्मण-कुमारि शांबूक विद्याघर हणिड, तिवारइ रावणनी भगिनी सूर्पणखा आपणा पुत्रनड वघ जाणी, जेतलई लक्ष्मण-समीपि आवी, तेतलइ लक्ष्मणनडं रूप देखी व्यामोही हूंती, पुत्रनी असमाधि मूंकी, संभोगनइं कारणि प्रार्थना करिवा लागी । तिवारइ लक्ष्मणि श्रीराम-कन्हिल मोकली । पणि श्रीराम न मानइ । वली श्रीरामि लक्ष्मण-कन्हिल मोकली । जिम इमरूनी मणि उरइ-पण्ड फिरइ, तिम ते सूर्पणखा फिरी । पणि तेहनड वेसास न कीघड । ए मोटड दृष्टांत छइ । पणि शीताना चरित्र-हूंतड जाणिवड । तिम अनेरे पुरुषे पणि स्त्रीनड वेसास न करिवड ।

वली एह जि अर्थ दीपावतउ कहइ--

ुपर-रम्णी−पत्थणाउ दक्क्लिन्नाआित मुज्झ मा मूढ । ेपडसि अणत्थे किं किल दक्खिन्नं रक्खसीहिं समं॥ ८९

ठयाख्याः—रे मूढ= मूर्ख । पर-रमणी=परस्त्री, किवाग्इं मैथुन-सेवा-मणी प्रार्थना करइ, तु रखे तेहना दाक्षिण्य-लगी चूकइ । जु किवाग्इं तेहना दाक्षिण्य-लगई मोहइ पिडिंख, चूकड, तु सही मोटइ अनिर्थ=संकटि पिडिसि । किल इसिइ(१७) प्रिश्न । किसिछं १ जी राक्षसी हुई तेहनी कोई काणि करइ १ अपि तु कोई न करइ ।

जिसी राक्षसी, तिसी परस्त्री जाणिवी । यत:—
दर्शने हरते प्राणान् स्वर्शने हरते बलं ।
मैथुने हरते वीर्थ स्त्री हि प्रत्यक्ष-राक्षसी ॥ २

हिव पारदारिकनी निर्भेत्सेना करइ-

परसणी-संगाओ सोहग्गं मा मुणेसु निक्भगा। जइ सिद्धि-बहू-रंगं करेसु ता सुणसु सोहगां।।९०

व्याख्याः - हे निर्भाग्य-शेखर ! पर रमणी=प स्त्रीना रंग लगइ आपणउं रूप, लावण्यादि सीभाग्यवंत करी म मानि । स्त्री बापडी कुण मात्र ? जह किमइ सिद्धिवधू=मुक्ति-कन्या, ते साथ रंग करइ=ते जु आपणइ विश करइ, तेह-सिउं रमइ, तु ताहरउं सीभाग्यपणउं साचउं मानउं=तड जाणडं सही, ताहरउं साचउं सीभाग्य। इति गाथार्थ ।

हिवइ संसाराभिलाषी जीवनइ मोक्षनउं लाभ दोहिलउ ते कहइ---

बहु-महिलासु पसत्तं सिव-लच्छी कह तुमं समीहेइ। इयरावि पोढ-महिला अन्नासत्तं न ईहेइ।।९१

१. Pu. पडिस्सं। २. C. मा मणेसु ।

ठयाख्याः—अरे मूढ जीव! जह किसइ अनेरी बहु=घणी स्त्रीनइ विषइ आसक्त होसिइ, तउ जें शिवलक्ष्मी=मुक्तिकन्या छइ, ते त्ंहनइ किम वांछसिइ? इहां दृष्टांत देखाडइ-जिम अनेरी प्रोह-महिला, भर्तार अन्य-स्त्री-आसक्त देखी विरती थाइ, तिम मुक्ति-स्त्री पणि अन्य-स्त्री-रक्त पुरुषनइं न वांछइ ।

हिवइ निर्मंत शील पालवइ जि करी मोक्षनी प्राप्ति हुइ ते कहइ— सासय-सुह-सिरि-रम्मं अविहड्ड-पिम्मं समिद्ध-सिद्धि-वहुं । जइ ईहसि ता परिहर इयराओ तुच्छ-महिलाओ ॥९२

ठयाख्याः—अरे मुग्ध जीव ! जिहां सिद्धिवधू छइ, तिहां तु शाश्वतां=निश्चल, भनंत सुख छइं ! वली शाश्वता, रम्यप्रधान, अनंत लक्ष्मी ते पणि तिहां छइ ! जे अनंतह कालि विहडह नहीं इसिउ प्रेम=स्नेह पणि तिहां छइ । ए सर्व वात सिद्धिवधूनइ विषइ प्रसिद्ध छइ ! इसी मुक्तिनारीनउ संगम जइ ईहइ=वांछइ तु, इतर=अनेरी जे तुच्छ=अधिम, नीचि, निस्नेहि महिला छई, तेहनड संहर्ग मेलिह=गरिहरि !

अथ स्त्री-लंपटनइ किहां सुख न हुइ ते कहइ— रम्माओ रमणीओ दृद्ठुं विविहाउ काम-तिवयस्स । करथ सुहं तुह होही भणियमिणं आगमेवि जओ ॥९३

ड्याख्या:-अरे आत्मन! रम्य=मनोहर रमणीना हावभाव, विविध कटाक्षक्षेपीदि देखी, षउ कामि करी संतप्त होएसि, तु तृंहनइ सुख किहां-थवड होसिइ?

वही एह जि संबंध सिद्धांत-माहि कहिउ छइ । ते कहइ— जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छिसि नारीओ । वायाइद्धो व्य हढो अद्विअप्पा भविस्सिस ॥९४

ड्याख्याः—जइ किमइ त्ं जे जे नारी सुरूप देखिसि, ते ते नःरी-ऊपरि जउ चित्त-माहि संभोगाभिलाष करेसि, तउ वायनउ अंदोलिउ वृक्ष, तेहनी परिइं अनिश्चितात्मा होसि=अथिर-आत्मा थाएसि ।

हिव स्त्रीनइ शरीरि वैराग्य-हेतु-कारण देखाडतु कहइ--

रमणीणं रमणीयं देहावयवाण जा सिरिं सरसि । जुट्यण-विरमे वेरग्ग-दाइणिं तं चिय सरेसु ।। ९५

व्याख्याः—हे विवेकी ! जिम त्ं उन्माद-जनक रमणी=स्त्री तणां स्तनादिक अंगोपांग तणी रमणीय=मनोहर श्री=शोभा आपणा मन-माहि स्मरइ छइ, तिम तेही जिस्त्री तणां यौवननइ विगमनि=जगइ आविइं हूंतइ, एतलां वानां हुइ—स्तन सूकी जाइ, मुखिइ दांत न हुइ, सपरि लालरी वलइ, मुखि लाल पडइ—इत्यादि स्त्रीनी अवस्था देखी, चित्त-माहि वैराग्य कांइ न स्मरइ ? इति गाथार्थ |

अथ शीलनड महातम्य अनइ शीलरहितनी निंदा कहह— सील-पवित्तस्म सया किंकरभावं करंति देवा वि । सील-च्यहो नहो परमिट्टी वि हु जओ भणियं ॥ ९६

ठ्याख्याः— जे पुरुष सीलि करी पवित्र हुइ=सुशीलवंत हुइ, तेहनइ देवता पणि किंकर-भाव=दासपणउं करइ । अनइ जे परमेष्टी=ब्रह्मा हुइ, "अथवा ते परमेष्टी—सरीखु हुइ, परं जउ शील-भ्रष्ट हूउ, तउ निश्चिइ-सिउं नष्ट=विगृतउ इ जि । वली श्री-उपदेसमाला-माहि कहिउं छइ, ते कहइ— जइ ठाणी जइ मोणी जइ मुंडी वक्कली तवस्सी वा । पत्यंतो अ अवंभं वंभा वि न रोचए मज्झं ॥ ९७

ठ्याख्याः—जह किमइ एकणि ठामि काउसिंग सिंहगुफावासीनी परिइं रहइ, अथवा जंगमा-दिकनी परिइ मूनवत-घारक हुइ, अथवा मुंडितमस्तक=छंचितकेश बौद्धादिकनी परिइ, वक्कली=वस्कल कहीइ त्वचा-घारक तापसादिक, तपस्वी=मास-क्षपणादि उग्र-तपकारक विश्वामि-त्रादिक, वा-शब्द-इतु अनेरउ इ कोई जाति-कुल-ईश्वर्यादि जे संगन्न, गुणवंत हुई, तेहवउ इ हूंतउ जह किमइ अबहा सेविवा वांछइ, तउ ते नर=मनुष्य मूंहनइ न रुचइ=न सुहाइ । अनेरानउं सिउं कहीइ ? जे लोक-माहि ब्रह्मा=जगतनउ कर्ता छइ, ते पणि न रुचइ=न मावइ ।

इय भावं भावंतो सजोग-जुत्तो जिइंदिओ धीरो । रक्खइ मुणी गिहीवि हु किम्मल निय-सील-माणिककं ॥९८

व्याख्या:- इम पूर्वोक्त भाव भावतड=चींतवतु हूंतड आपणड मन-वचन-कायनड योग, तिणि करी संयुक्त=सिह्त हूंतड, जितेंद्रिय कहीइ आपणी इंद्रिय जीपी=उन्मार्ग-हूंती निवर्तावी, जे घीर=निश्चल, मुनि=महारमा अथवा यहस्थ, ते आपणडं निर्मेष्ट-शीलरूप माणिक्य=रस्न राखइ । माणिकनी परिइं शील सुरक्षित करिवडं।

हिव मुनिनी परिद्वं शीलरक्षानउ उपाय कहइ—
एगंते मंताई पासत्थाई—कुसंगमिव सययं ।
परिवडजंतो नवबंग-गुत्ति—गुत्तो चरे साहू ॥९९

ठ्याख्याः- एकांति=निर्विजन-स्थानिक, स्त्री-साथि मंत्र=आलोचकरण, आदि-शब्द-लगी जे स्त्रीई ब्याकुल स्थानक, तेहनंड वर्जिबुं, वली पासत्था=उसन्नादिक, तेहनंड संग वर्जिवंड । इत्यादि बोलं वर्जतंड, नवविध ब्रह्मचर्य गुप्ति तिणि करी गुप्त=सहित साधु विचर्ड । वली आदि-शब्द इतु अवसन्न=कुशील-संसक्त यथाळंदादि जाणिवा ।

हिव गृहंस्थनेइ पणि शीलरक्षानउ उपाय कहइ-

वेसा-दासी-असई-पमुहाणं सेस-दुइनारीणं। सील-वय-रक्खणत्थं गिद्धी वि संगं विविज्जिज्जा।।१००

ठ्याख्याः — गृहस्थि आपणउं शिलवत राखिवा – भणी वेश्या, दासी, असती कहीइ जे भतिरनइ वैची पर-पुरुष-सिउं रमइ, एह — प्रमुख अनेरी इ जे दुष्ट=कुशीलिणी नारी हुइ, तेहनउ संसर्ग सर्वथा वर्जिवड । एहना संसर्ग-लगइ गृहस्थनइ शीलभंग-दोष ऊपजइ ।

अथ वली मुनि-ग्रहथनइ शिक्षा कहइ—

वेसा-दासी-इत्तर-परंगणा-लिंगिणीण सेवाओ । विजवन उत्तरोत्तर ए ए दोसा विसेसेण ॥१०१

ठ्याख्याः — गृहस्थइं ए सर्वे वर्षिवी, जिणि कारणि एक एक पाहं ते अधिक अधिक सदोष छइ। ते कउण १ वेश्या=पणांगना, ते भल्ड मनुष्यइ वर्षिवी। दासी=चेडी ते पणि न सेविवी। इत्वरा कहीइ जे भाडउं देई संभोग-भणी घरि राखी हुइ। परांगना कहीइ परस्त्री, ते तु सर्वथा त्याज्य

हुइ । लिंगिणी कहीइ यति-वेष-धारिणी=महासती । इणि कारिण एकेकथी अधिक अधिक सदोष छइ । तेह-भणी उत्तमे एह-सिउं संबंध=संभोगाभिलाष सर्वथा वर्जिवउ । एतलउ गाहनउ अर्थ हुउ ।

हिव बिहुंनइ कुसंसर्ग वर्जिवड, ते कहइ--

जू आर-पारदारिअ नड विड-पमुहेहिं सह कुमित्तेहिं। संगं विजिज्ज सया संगाउ गुणा वि दोसा वि ॥१०२

ठयारुयाः—जूआर=जूआरी, पारदारिक=ारस्त्री−लंपट, नट=नाटकी, विट=चोर, एह-प्रमुख अनेरा इ मद्यपानी, पाइ्आ मित्र, एह-साथि संग सदाइ वर्जिवड । जिणि कारणि, जिसिड संसर्गे कीजह, तिसा जि गुण नइ दोष ऊपजड़ं।

अथ नारीना गुण कहइ--

मिय-भासिणी सलज्जा कुल-देस-वयाणुरूत्र-वेसधरा । अभमण-सीला चत्तासइ-संगा हुज्ज नारी वि ॥१०३

ठयाख्याः — मित-भाषिणी कहीइ थोडउं-सिउं बोलई । वली सलज्जा=ल्राज-सहित हुइ, अनइ वली कुल नई देसनइ सारइ, वयनइ सारइ, रूक्मीनइ सारइ, रूपनइ सारइ वेस पहिरइ । वली अभमण कहीइ घरि घरि भमतो न रहइ । असतीनउ संग त्यजइ । −इसी कुलक्ष्मी सघले प्रशस्य= श्लाघनीय हइ ।

वली कुलस्त्री किसी हुइ ते कहइ-

देव-गुरु-पियर-ससुराइएसु भत्ता थिरा वर-विवेया । कंताणुरत्त-चित्ता विरला महिला सुदढ-चित्ता ॥१०४

ठ्याख्याः — देव, गुरु, माता-पिता, सासू-स्वसुग-प्रमुख जे वडा=पूड्य हुई, तेहनइ विषइ भक्ता हुइ, थिरा=स्थिर कहीइ ्चपल-स्वभाव न हुइ, वली ्वर=प्रधान-विवेकवती हुइ, वली कांत= भर्तारनइ अनुरक्त-चित्त हुइ, वली शील राखिवा-भणी दृढ-चित्त=निश्चल-मन हुइ-एहवी कुलीन स्त्री सइसहस्त्र-माहि एकका=विरली जि दीसइ ।

अथ महासतीनी शीलनी दृढिमा कहइ-

निम्मल-महासईणं सीलवयं खंडिउं न सक्को वि । सक्केइ जेण ताणं जीवाओ सीलमञ्महिअं ।।१०५

ह्याख्याः — जे स्त्री निर्मल महासती सत्ववति हुइ, तेहनउं शील शक्र=इंद्र इ खंडी न सक्द । जिणि कार ण, ते स्त्रीनईं जीवतन्य-पाहंति शील वालहूं हुइ । वरि आपणा प्राण छांडइ, पणि शीलनु भंग न करइ ।

हिव सती-शब्दनड अर्थ कहइ--

स चिचय सइ त्ति भन्नइ जा विहुरे बि हु न खंडए सीछं। तं किल कणयं कणयं जं जलणाओ विमलयरयं ॥१०६

ठ्यारुखाः—सती एहवर्ड नाम तेहनइ कहिवराइ जे विधुरि=संकृटि पिडिइ, जीव संदेहि पिडिइ हूंतइ जे बीलनी खंडना न करइ | इहां दृष्टांत देखाडड-किल=निश्चइसिउं जिम कनक= सुवर्ण ते कहीइ, जे ज्वलन=वैश्वानर-माहि घ तिउं हूंतउ विमलतर=चोखउं नीकलइ । कांइ ? सोनउं जिम जिम अग्नि-माहि घातीइ, तिम तिम चोखउं नीसरइ । तिम सती ते कहीइ, जे संकटि पड्यां शील राखइ ।

हिवइ असतीनउं स्वरूप कहइ-

निय-सत्त-विजयाओ पावाउ नराण दूसणं दिति । किं काहामो अम्हे निरमगळा जेणिमे पुरिसा ॥१०७

ठयाख्याः—निज=आपणइं सत्विइं विवर्जित=शील-हित्तमा-रहित हूंती ए पापिणी स्त्री, नर= पुरुषनइ इसिउं दूषण दिई कि, 'सिउं करउं? अम्हे तु अवला स्त्री-मात्र अनइ ए पुरुष तउ स्वच्छंद, लेपट, निर्गल हूंता आवी आवी उद्देग करइं। ए-आगलि किमहि न छूटीइ। ए सर्व पुरुष-जिन्तु दोष, अम्हारउ दोष कांई नहीं।'

अथ शीता-महासतीनउ दृष्टांत पूर्वक कहरू---

तिहुअण पहुणा वि हु रावणेण जीसे न रोमिन पि । संचालियं नं तीए चरिअं चित्तं ति सीआए ॥१०८

ठयाख्याः —अतेरा सामान्य पुरुषतउं सिउं कहिवउं १ पणि जे त्रिभुवननउ स्वामी, महा-रूपवंत कंदर्पावतार, ए वि जे लंकानउ अधिति रावण, तीण्ड अतेकि महा-हावभाव, दीन हीन ववने स्नेह-क्रोभ-भयादिक घणा प्रकार कीषा, पणि ते शीता महासतीनउं रोममात्र रावणिइं चलावी न सिकेउं । तु जे एहवी हुइ, ते महासती कहीइ । हिवइ ते महासतीना चरित्र कुण देव-मनुष्य-महर्षिनइ आश्चर्यं न ऊपवावइ १ किंतु नाम-मात्र सांभलतां सघलानई मनि अष्टचर्यरूप चमत्कार ऊपजइ । एतलइ गाहानउ अर्थं हुउ । विस्तरार्थं कथा-हूंतु जाणिवउ ।

हिव शीतानी कथा कहीइ--

[४२ सीतानी कथा]

मिथिलानगरीई जनकराजा राज करह । तेहनी भार्या विदेहा राणी । तिणि अन्यदा पुत्रपुत्र नं युगल प्रवितं । तेतलई कर्मना योग-लगी पूर्व वयर चींतवी, देवताई पुत्र अपहरिउ, पछइ वैतादय पर्वत-ऊपिर आणी मूकिउ । एहवइ दक्षिण-श्रेणिइं रथनूपुरनगरनं अधिपित चंद्रगति आविउ हूंतउ, तीणइ ते दालक लेई, पुत्र करी, आपणी चंद्रमती प्रिया तेहनइ देई विधराविउ । पछइ भामं- इल एहवउं नाम दीघउं । हिवइ पाछिल जनकराजा-विदेहाराणीइं पुत्रनं अपहरण जाणी, घणी असमाधि नइ घणी शोचा करी रह्या । पछइ माता-पिता पुत्रीनं मुख देखी शीतल थया । तेह-मणी शीता एहवउं नाम दीघउं । पणि पुत्रनं अपहरण देखी बीहता हूंता ते शीता-पुत्रीनं मुइं जि लोटाइइ । इणि कारणि ए शीतानं बीजउ नाम भूमिसुता एहवउं हूउं । ते शीता मंडडइ मंडडइ वाघती यौवनावस्थाई आवी । तिवारइं जनकपितानइ वरनी चिंता ऊपनी । इसिइ मंडेडछ-राजाइं ते जनक-राजानउ देस घणड लीघउ । पणि जनक पुहची न सकइ ।

हिनइ अयोध्या-नगरीइ राजा दश्ररथ र ज करइ । तेहनी ए च्यारइ वछभा जाणिवी-एक कोशला (१), बीजी सुमित्रा (२), त्रीजी कैकेयी (३), चउथी उसुप्रभा (४) । तेहनइ अनुक्रमिइ वली ए ज्यारि पुत्र जाणिवा-राम (१) लक्ष्मण (२), भरत (३), शत्रुष्न (४)-इत्यादि सहित सुलिइ रहइ छइ ।

१. C. चंडगुति । २. C. वधारइविड । ३, C. सुमद्रा ।

इसिइ जनकराजानं दूत दशरथराजानं प्रणाम करी आगलि आवी बहटड । तेतलह दशरथराजाई जनकनउं कुशलक्षेप-समाचार पुछिउ । वली पुछिउं, 'तू केहइ काजि मोकलिउ छइ ते कहि ।' तिवारइ द्त प्रणाम करीनइ कहइ, 'स्वामी ! जनकराजानइ घणाइ मित्र छइ', पणि कष्टि पिड तुझ सरीखंड सगउ मित्र बीजंड कोई नहीं । जिणि कारणि, वैतादय-पर्वतनइ अंतरालि बर्बर-देस, तिहां मयूरशाल-पुरि म्लेब्लराजा दुर्जय छइ । तीणइ जनकर।जानउ देस लीध्र । तेह-भणी हं तुम्ह-भणी मोकलिङ छउं। हिव तुम्हे विलंब म करङ । प्रीतिनङ अवसर एह जि छइ।' ईणि वचनि दशरथराजा प्रयाण-भंभा देवरावी चालिवा लागउ। तिसिई श्री रामिइ आवी, प्रणाम करी, पितानइ राखी, आप लक्ष्मण-सहित कटक लेई, मिथिलानगरीइं गयउ। तिहां रामि म्लेच्छ-साथि महायुद्ध करी, म्लेच्छ हणी, देस-हुता काढी, जनकराजानइ हर्ष ऊप-जाविउ । तिवारइ जनकराजाई इसिउं चींतिविउं जु, 'ए शीता श्रीरामनइ दिउं ।' इम जेतलइ देवानी मनसा की घी, तेतलइ नारद ऋषि कन्याना अंतः पुर-माहि आविउ। तिसिइ शीताइ ते नारद कछोटी-धारक, भीषण-आकार देखी, बीहती हूंती, ते नारदनइ आगता-स्वागत विण-कीधइ घर-माहि गई । तिवारइ नारद रीसाणउ हुंतु, वैतादय-पर्वत जई, चंद्रगतिनउ पुत्र भामंडल तेहनइ शीतानउं रूप पुटि (१ पटि) लिखी जिम देखाडिउं, तिम ते कामार्च हूउ । तिवारइं चंद्रगति-पिताइं शोतानउं नामठाम सहू नारदनइ मुख-इतु जाणी, नारदनइ विसर्जी, पछड्नेचंद्रगति भामंडल-पुत्रनइ कहइ, 'वत्स ! खेद म धरि । शीता तूँहनइं परिणावीसिइ ।' इम कही पछइ रात्रिई चपलगति विद्याघर मोकली, जनकराजा अणावी, भामंडल-पुत्रनइ हेति शीता मागी। तिवारई जनिक कहि उं, 'मइ शीता श्रीमिनइ दीघे छइ।' ए वात सांम की चंद्रगति कहइ, 'जु मित्र गण इं नहीं दिइ, तु हुं बलात्कारि हरिवा समर्थ छउं। अथवा वली एक वात सांभलि, जे सघला-इ-नइं संमिति। आपणइ घरि वज्राणीव घनुष छइ, सहस्र-यक्षे अधिष्टित, देवतादत्त छइ। जि-को ते घनुष चडाविसइ, ते शीतानउ पाणि-प्रहण करिसिइ । इम करतां जु राम घनुष चडावइ, तु अपारि भलंड । अम्हे पणि करणवार न करउं। इम ताहरउ बोल पणि ऊपरि आविसिइ ।' ए वात सांभली जनकराजा क्षण-एक विमासी, कालक्षेप करिवा-भणी ए वचन मानिउं। पछइ चंद्रगतिइ वज्राणीव धनुष जनकनइ देई, जनक मिथिलाइ पहतउ की घउ ।

पछइ जनकराजाई शीतानइ काजि संग्रंवरा-मंडप मंडाविड । तिहां अनेक खेचर, भूचर, राजा दशरथ, राम-लक्ष्मणादिक सहू इ आव्या । इसिइं शीता सालंकार सामरण करी संग्रंवरा-मंडिप आणी । तिसिइं सघले राजाए दीठी । पछइ तिहां सर्व प्रत्यक्ष देखतां प्रतिहारणी इसिडं किह्वा लागी, 'अहो राजानो ! जि-को ए वज्रावर्त धनुष चडाविसिइ, ते शीतानुं पाणिग्रहण करिसिइ ।' तिवारइ सहू राजा धनुष-भणी हाथ घातई, पणि चडावी कोई न सकइ । पछइ पितानइ आदेशि श्रीरामइं घनुष चडाविडं । अनइ वली ऊतारिउं । तिसिइं शीताई वरमाला रामनइ कंठि घाती । तिहां वली जेतलइ लक्ष्मणि वज्राणिव धनुष चडाविडं, तेतलई विद्याधरे अढार कन्यानडं पाणि-प्रहण कराविडं । एहवडं स्वरूप देखी भामंडल कोप घरिवा लागड । तिसिइ ज्ञानीइ आवी समजाविड । कहिउं, 'ए तु ताहरी युग्मजात बहिन ।' इम कही प्रतिबोधिड । पछइ जनकराजाइं अनेक वस्न, अलंकार, आभरण देई, संतोषी, सर्व विसर्जों । हिवइ जे राम-लक्ष्मण, तेह इ शीतानइ लेई आपणइ नगरि आव्या ।

अन्यदा दशरथराजा आपणपानः बृद्धपणं जाणतं शीरामनइ राज देवा लागउ । इतिह के केइइं अवसर जाणी पूर्विलंड वर ैपोतिइ हुंतड, ते मांगिड । तिवारइं दशरथ राजा चिंतातुर हूंतड रामनइ तेडीनइ कहइ, 'वल्स! मइ केकेइनइ सयंयरा-मंडिप सारथीपणइ वर कहिउ हुंतउ। ते वर हिवडां केकेइ मागइ छइ। इसिउं कहइ जु. "माहरा पुत्रनइ राज दिउ।" तु हूं हिवइ सिउं करउं?" तिवारइं राम हर्षित हुंतउ कहइ, 'तात! ताहरइ तु बेहू पुत्र सरीखा। तेह-भणी भरतनइ राज दिउ।' ए वचन सांमली पछइ राजाई भरत तेडीनइ कहिउं, 'ए राज तूं लई।' तिवारई भरत कहइ, 'राम-थकां मुझनई राज किसिउं ?' तिवारइं वलत्ं राम कहइ, 'हे बंधव ! तूं बापनूं ऋण वालि । हुं वनवास आदरिस् ।' इम कही पितानइ प्रणाम करी, घनुष, तूणीर-भाथउ हाथि लेई, मानइ प्रणाम करिवा गयंड | तिसिइं माइ पणि ए वात सांभली, असमाधि करती कहइ, 'वरस ! हं ताहरउ वियोग किम सहिसु ?' तिवारइं राम कहइ, 'मात ! जिवारईं सिंह वन-माहि जाइ छह, तिवारई सिंही कांई असमाधि न करह । तिम मुझनइ वन-माहि जातां तूं कांई असमाधि करइ १' इम मातानइ समझावी प्रणाम करी, सिंहनी परिई श्रीराम वनवास भणी नीकलिउ । तिसिइं सीता पणि सास-स्वसुरानइं प्रणमी भर्तार-केडिइं नीकली । तेतलइ वली लक्ष्मणि इ ए वात सांभली जु, 'श्रीराम वनवासि चालिउ'। तिवारइं लक्ष्मण रीसाणउ हूंते उसमाधि करत र इसिड कहिवा लागउ जु, 'ए केकेइ कालसित्र-सरीखी हुई। कांई ? जेह-हृंतउ सांप्रत एवडउ उत्पात ऊपनउ ।' इम कहितां जि दशरथ राजा केकेइना पुत्रनइ राज देई आप ⁸ऊरण हुउ । तिवारइं लक्ष्मण कहइ, 'तात! कहउ तु एहनइ हणी राज रामनइ दिउं। अथवा भरत आफे रामनइं देसिइं । वली लक्ष्मण झींतवइ, 'इम करतां कुलि विरोध ऊपिनसिइ ।' इम चींतवी पितानई पूछी लक्ष्मण ६ राम-केडिइ नीकलीउ । इम जिवारइं लक्ष्मण, श्रीराम नइ शीता-त्रिणइ अयोध्या-हूंती नीकल्या, तिवारइ समस्त नागरीक-लोक आंखिइ अश्रुपात करतां इसिउं कहई, 'वली ईणि नगरि एह जि श्रीराम राजा होसिइ।' पहवी लोकनी आसीस लेता, पादचारी, मउडइ मउडइ पंथ अवगाहता. महा-दंडकारण्य-वन-माहि एक गुफा छइ, तिहां आबी रह्या। तिहां जेतलइ बि मास-खमण की घा, तेतल्ह पारणइ मुनि एक विहरवा आविउ । तिवारइ शीताइ प्रामुक-अन्न-पाने करी महातना प्रतिलाभ्या । तिसिइं देवताए देवत् दुमि-नाद करी कुसुमनी वृष्टि की घी। एहवइ कोई एक कुष्ट-रोगी खग-पांखीइ आवी मुनिना चरण नमस्कर्या। तेतलइ तत्काल मुनि-चरणना स्पर्श – लगी सुवर्ण-पश्ची हुउ । तिवाग्ह श्रीराम मुनिनइ वंदीनइ पूछिवा लागउ, 'ए रोगी, दुष्ट पंखीउ, तुम्हारा स्पर्श-लगइ सुवर्ण-वर्ण हुउ, ते सिउं कारण ?'

तिवारइ मुनि कहइ, 'हे राम ! एहनउ पूर्व संबंध सांभिल । इहां जि कुं भारनउ की घडं धुरनगर, तिहां दंडकराजा राज्य करइ । तेहनउ महुतउ पालक इतिह नामि । अन्यदा तेणह महुतइ श्रीखंदकाचार्य गादा पीडिया । तीणी वेदनाइ खंदकसूरि मरी विद्याकुमार-माहि देवता हुउ । तिवारइ ते रीस-लगइ ए नगर, देस, राजा, लोक सहित सहु भस्म की घउ । तिणि कारणि ए दंडकारण्य हुउ । हिवइ जे दंडक राजानउ जीव, ते संसार-माहि भमी भमी सांप्रत ए कुष्टी पालीउ हुउ । ते हिवडां अम्हनइ देखी एहनइ जाती-स्मरण-ज्ञान ऊपनं । सांप्रत आपणाउं पूर्विहरं स्वरूप दीठउं । अनइ वली जिन-धर्मनइ प्रमाणि नीरोग हुउ । तु हिषइ ए

र. C. L. . पेतरं Pu. पेति-हुंतु । २. K. ऊऋण, Pu. ऊण्णे । ₹. P. पुरिमताल नगर ।

२२

जटायु पांखिउ आज पछइ तुम्हारइ साहम्मी ।' पछइ श्रीरामइं ते जटायु पांखीउ बांघवनी रीतिइं बहुमान देई संघाति लीघउ ।

हिव च्यारिइ तिइां-हूं तां चाल्या—राम, लक्ष्मण, शीता, जटायु पांलीउ। पंथ अवगाहता दिवग-देसि पंचत्रटी, गोशवरीनइ कांटइ आव्या। तिसिइं तिहां अनेक नदीना जलवर जीव, तेहना शब्द सांभलतु हूं तु, लक्ष्मणकुमार नदीना करातिग जोतड जोतउ 'वंसियालि एक-माहि गयउ। तिहां जड जोइ, तु एक खड्ग दीटउं। तिवारइं लक्ष्मणि ते खांडउं हाथि लेई, रामित-लगइ लीलाइं खिक्क करी वंसियालि छेदी। तेतलइं माहि अमिनउ कुंड दीटउ। तिहां वली ऊंधइ माथइ, ऊपहरे पगे, पुरुष एक धूम्रपान करतड एहवड खड्गिइ छेदाणड द टउ । ते देखो लक्ष्मण चींतवइ, 'मइ तां पुरुष एक निरपराध हणिउ।' माथउं अमि ऊपरि दीटउं अनइ डील भूमिकाइ पिइंड। ते तिहां एहवड संबंध देखी वडी वार-तांइ शोचा करी खड्ग लेई रामनइ देखाडिउं। तिवारइ राम कहइ, 'बांधव! ए तु चंद्रहास खड्ग। एहनड साधक तइं हणिउ। तु वली एहनड रखवालड पणि कोई हुसिइ।'

तीणइ प्रस्तावि पाताल-लंकानउ अधिपति खर नामा राक्षस, तेह्नी वल्लभा अनइ रावणनी बहिन सूर्पनखा, ते आपणा पुत्रनइ जेतलइ जोवा आवी, तेतलइ वंसियालि-माहि पुत्रनं घड अनइ मस्तक ज्ज़ुआं देखी, रोती कहइ, 'रे वरस! तृं कुणिहि हिणिउ ?' इम विलाप करती पिगइं पिग पंचवटीइ जिहां राम-लक्ष्मण छइं तिहां आवी। तेतलइ राम-लक्ष्मणनां रूप देखी व्यामोही हूंती, पुत्रनी असमाधि मूकी कामविह्नल हूंती, प्रार्थना करइ जड, 'माहरउं पाणिग्रहण करि ।' तिवारइ रामि कहिउं, 'अहो ! माहरइ तु भार्या छइ । तृं लक्ष्मण-कन्हिल जा।' पछइ लक्ष्मण-कन्हिल जई प्रार्थना करिवा लागी। तिवारइ वलतृं लक्ष्मणि कहिउं, 'अहो ! तई तु पहिलउं वडा बांघवनी प्रार्थना कीघी, इणि कारणि तृं माहरइ भउजाइ हुई।' पछइ वली कामा तृं हुतो राम-समीपि आवी। तिवारइं शीताई ते गाढी हसी।

पछइ ते सूर्पनखा अत्यंत रीसाणी हुंती आपणउ पति खर राक्षस,ते-कन्हिं जई मंबूक पुत्रना मरणनी वात कही । तेतल्डं तत्काल ते खर राक्षस चउद सहस्र सुभट लेई रामलक्ष्मण साथि झूझ करिवा आविउ । तिबारई लक्ष्मण श्रीराम शीताना रखोपा-भणी मोकलिउ, अनई आपणपइ लक्ष्मण एकांग-वीर युद्ध करिवा रिहुउ । तिबारई श्री रामई कहिंउ, 'बांधव ! जिवारई काई गाढी आपदा आवइ, तिबारई तूं सिहनाद करे ।' इम कही राम शीता-कन्हिल गयउ । पछइ लक्ष्मण एकलउ ते खर राक्षस-साथि झूझ करिवा लागउ । तिसिई राक्षस भाजिवा लागा । एहवइ ते सूर्पनखा भर्तारनी सखायत-भणी त्रिकूट-पर्वति जई, दशवदन रावणनइ वहइ, 'अहो बांधव ! दंडकारण्य माहि राम-लक्ष्मण आव्या छइं । ते खर-माथि झूझ करइ लई । तेह-भणी तुम्हे वहिला आवउ । मुझनइ पति-भिक्षा दिउ । अनइ ते वहरीनइ हणो दसइ दिसिनइ विषइ बलि दिउ । वली एक वात सांभलि । तिहां लक्ष्मण एकलउ झूझ करइ छइ । अनइ जे श्रीराम, ते गर्वित हूंतउ शीता-साथि क्रीडा करइ छइ । तु बांधव एहवउं स्त्रीरत्न पृथ्वी-माहि नथी ।'

ए वात सांभली कामातुर हूंतड रावण तत्क्षण पुष्पक विमानि बइसी जिहां शीता छइ तिहां आविड । पणि श्रीराम-छतां शीतानइ हरी न सकइ । पछइ रावणि अवलोकिनी विद्या स्मरी । तिवारइ ते आवीनइ कहइ, 'स्वामी !ृमइ इहां काई न चालइ ।

१, P. वंशजालि । २. K कामि पीडी हुंती ।

पणि एक वात सांभलि र रामुलक्ष्मण बिहुंनइ माहो-माहि सिंहनादनउ संकेत छइ। 'ए वात जाणी जिम रावणि सिंहनाद कीघड, तिम जि श्रीराम सासंक हुंतड शीतानइ कहइ, 'हे शीते ! ह्रक्ष्मणनइ आपदा आवी ।' तिवारइ शोता कहइ, 'स्वामी ! हिवइ विलंब म करि । तूं लक्ष्मणनइ जई राखि। 'इम कहिइ हु तह राम धनुष चडावीन इ लक्ष्मण-भणी चालिख । तिसिइ रा णि प्रस्ताव जाणी, विमान-इतु ऊतरी, शीतानइ अपहरी, विमानि बहुषारी जावा लागउ । तेतलइ शीता इदन करिवा लागो । एहवइ घटायु पांखीउ आपणे नखे करी रावण-साथि झुझ करिवा लागउ। तिहां रावणि खड्गि करी जटायु पांखीउ भुंई पाडिउ। पछइ रावण शीतानइ लेई चालिउ। तिवारइं शीता महा-विलाप करती कहइ, 'हा भ्रात भामंडल ! हा रामलक्ष्मण ! मुझनइ राखड, राखउ ।' इंम विलाप करती मागि जाइ छइ । इसिइ भामडलनउ पायक एक आकाशि आवतु हुंतु, तीणइ ते शीतानउं हरण जाणी रावण-साथि झुझ मांडिउ । तिवारइं ते .ही रावणि खड़्गि करी भुंड पाडिउ । इम आकाशि जातां रावण शीतानइ कहइ, 'हे सुभगि ! तूं विलाप कांड़' करि १ हूं तु रावण, लंकानउ अधिपति । ताहरउ आदेशकारक थाउं छउं । हिवइ तूं ते वनेचर रामनइ मूकी माहरड अंगीकार करि।' इम कहितड रावण शीतानइ लेई लंकाड आव्यउ । तिहां अनेक चाटुकार वचने करी प्रार्थह, पणि शीतानंड रोम-मात्र भेदीइ नहीं । किन एक 'राम' 'राम' स्मरतो रहइ । तिहां वली एइवड अभिग्रह लीघड, 'जां राम-लक्ष्मणनुं कुशल -समाचार न पामउं, तां-सीम मुझनइ अन्ननउ नेम ।'

इसिइ तिहां लक्ष्मणनइ झ्झ करतां श्रीराम आविउ । ते देखी लक्ष्मण ससंभ्रांत हूंतु कहई, 'बांधव ! शीता एकली मूंकी इहां कांड आविउ ?' तिवारइ श्रीराम कहइ, 'हे भ्रात ! तई सिंह-नाद कीघंउ, तेह-मणी हूं आविउ ।' तिवारइं वलंतु लक्ष्मण कहइ, 'भ्रात ! मइं तु सिंहनाद न कीघंउ । हिव तूंपाछंउ जा । सही, तृं कुणिहिं छेतरिउ । तृं ऊतावलंउ जा । ह्ं हिवडा जि वहरीनइ हणी ताहरी पूठिइं आवंउ छउं ।' इम जेतलंड श्रीराम पाछंउ आवी जोइ, तु शीता न देखई । तिवारइ राम विलाप करतु, छेद्या वृक्षनी परिइं मूर्छा-गत हूंतउ, भुंइ पडिउ । पछइ वनना वाय लागइ सचेत हूई वन जोइवा लागउ । तिहां जटायु पांखीउ खड़्गाहत, सुसतउ हूंतउ, भूमिकांइ पडिउ । तीणइ शीताना हरणनउ वृत्तांत किहेउ । पछइ श्रीरामइ जटायु पंखीयानइ नवकार दीघंउ । तेहनइ प्रमाणि जटायु मरी माहेंद्र-देवलोकि देवता हूउ ।

हिनइ राम शीतानइ वनि वनि जोतउ मूर्छागत हूंतउ वली मूंइं पडिउ । तेतलइं लक्ष्मण वहरीनइ जीपी राम-समीपि आविउ । तिसिइं राम अचेत देखी पाणीइं सींची सचेत की धउ । पछइ कहई, 'बांघव ! ताहरइ की घइ शीतानइ मूंकी आविउ हूंतउ, पणि जोइ-न, देविइं की सिउं की घउं ?' तिवारइं वलतुं लक्ष्मण कहइ, 'बांघव ! विख्वाद म किर ! शीता तउ छिट्डं करी अपहरी, पणि दिनइ कांई आपणपे उपाय करीइ । पणि वली एक विशेष सांमलउ, जे मई सांप्रत खर राक्षस हणिउ, तेहनउ वहरी विराध आगइ पाताल-लंकानउ अधिगति हूंतउ । ते खिर काढिउ छइं, ते मुझनइ आवी मिलिउ । तेह-साथिइं मइं मित्राचार पडिविज छइ । तु चालउ, तेहनइ पितानउ राज देई आपणउ की जह ।' पछइ श्रीरामि ते विराधनइ पाताल-लंकानउं राज दीघउ । ग्रुंद अनइ स्मूणपेखा बेहू बोहतां नासी रावण-किन्हिल गया।

१. C कन्हड्हि ।

इसिइं प्रस्तावि किनकं धानगरीनड अधिपति सुग्रीव कीडा भणी नाहरि नीकलिउ हूं तड । एह्वइ विद्याधर एक विद्यानइ बिल नवउं सुग्रीवनउं रूप करी राजि बइठउ । तेतलइ मूलिंगु सुग्रीव आविउ पणि नगर-माहि पइसिवा न लहइ। प्रधान कहइ, 'तू कडण १ सुग्रीव तु आगइ राज करइ छइ।' तिंहां विट-सुग्रीवनड पक्ष सघले कीघड, पणि तेहनड कुणिहि न कीघड। पछइ जे मूलगड सुग्रीव ते दीन-द्यामणड थकड रहइ छइ।

इसिइ राम-लक्ष्मण किन्कं घाइ आग्या । तेतलइ ते सुग्रीव रामनइ शरिण जई कहइ, 'अहो राम ! मुझनइ माइरउं राज्य देवारि, जिम हूं ताहरउ सेवक थाउं, ताहरइ काजि आविसु ।' तिवारइं श्रीरामि वचन मानिउं । पछइ सुग्रीविइ प्रधाननइ इम कहाविउं, 'जि को रेणांगणि जिपिस्हिं ते राज लेसिइ ।' इणि वचनि विट-सुग्रीव सूझ-भणी सर्व-बलि नीकलिउ । तिहां जेतलई रामनउ दर्शन हुउं तेतलई रूप-परावत्ते विद्या नाठी । तिसिइं विट-सुग्रीव पणि नासी गयउ । पछइ तिहां श्रीराम मूलगा सुग्रीवनइ किन्कि धानगरीनउं राज्य दीधउं । तिवारइ सुग्रीव अदार कन्या लेई आविउ । रामनइ कहइ, 'स्वामिन ! मुझ ऊपरि कृपा करी ए कन्यानउ पाणि-ग्रहण करउ ।' तिवारइ वलतुं श्रीराम कहइ, 'अहो सुग्रीव ! ए कन्या रहिवा दइ, किंतु श्रीराम कहइ, 'अहो सुग्रीव ! ए कन्या रहिवा दइ, किंतु श्रीतानी शुद्धि आणि ।'

पछइ कपि-वानर, तेहनउ राजा सुग्रीव, तीणइ दिशोदिशिइं शीता जोवा-भणी आपणा सुभट मोक-ह्या । अनइ आप सुग्रीव कंबुद्वीप-भणी चालिङ । तिसिइ मार्गि जातां रत्नजटी विद्याधर, भामंडलनउ पायक मिलिउ, जे रावणिइं हणी भुंइं नांखिउ हूंतउ । तिहां तीणइ शीतानउ सर्व वृत्तांत कहिउ । पछइ सुग्रीवइ रत्नजटी-पायक राम-कन्हिल आणिउ । तिवारइं तीणइ जीणी रीतिइ रार्वाण शीता अपहरी, जीणी रीतिइं तीणी झुझ कीधउं, ते सर्व वृत्तांत राम-आगलि कहिउ । पछइ रावणि शीता हरी जाणी, श्रीराम सुग्रीवनइ पूछइ, 'अहो सुग्रीव! लंका केतलइ दूरि छइ ?' तिवारइ सुग्रीव कहइ, 'स्वामी ! लक्ष्मणना बल आगलि लंका काई अलगी नथी ।' तिया-रइ लक्ष्मण कहइ, 'अहो ! जे रावण वायसनी परिइं शीतानइं लेई गयउ, ते रावणनउ बल जाणिउ ।' तिसिइं जांबवंत मंत्री कहइ, 'स्वामी ! नैमिसिकि इम कहिउं छइ-जि को कोटि-शिला ऊपाडिसिइ, ते रावणनइ हणिसिइ।' इम कही पछइ सघले वानरे लक्ष्मण सिध-देसि लीघडं। तिहां जेतलहं लक्ष्मणि कोटि-शिला ऊपाडी, तेतलहं देवताइ कुमुम-दृष्टि कीघी । जयजय-रव हउ । पछइ कोटि-शिला पर्वति अनइ समेतशिखरि वीतराग नमस्करी, सह किक्कि धाइ आव्या । ातवारइं वृद्ध वानर रामचंद्रनइ कहइ, 'स्वामी ! लक्ष्मणनइ हाथि रावणनउ श्वय होसिइ। पणि तथापि एक वार दूत मोकलीइ ।' एह वचन रामिइ मानिउं। पछइ सुग्रीवइ अंजनानउ पुत्र हनूमंत सूर्यपत्तन-हूं तड अणावी, बहुमान देई, श्रीरामनइ कहिंड, 'स्वामी! माहरा राजनड ए जीवितन्य-सार छइ। वली ए महापराक्रमी छइ। ए शीतानी शुद्धि-भणी मोकलउ। तिवारई श्रीराम आ-पणी नामांकित मुद्रिका देईनइ इसिउं कहइ, 'अहो हनूमंत! तुं लंकाइ जई शीता वियानइ संकेत-भणी ए मुद्रिका देई, संदेसउ कहिंजे जु-राम ताहरइ विरिह "जगत्र तृणसमान गणइ छइ । तेह-भणी रखे तूं आपणा प्राण छांडइ । जु हूं राम जीवतंउ छउं, तु त्र्हनइ बहिली पाछी आणिसु ।' ए बात हुनूम त सांमली तहत्ति करी, आकास मार्गि फाल देई ल काई आविउ। पछई तिहा रावणनउ भाई विभीषण, तेहनई मिलो कहिवा लागउ 'हे भात! न्याय अनइ अन्याय सर्व आगलि हुइ छइ । इणि कारणि हूं तुझनइ कहउं छउं। तुम्हे रामनी पत्नी

१. B. ऋगांगणि Pu. रुणांगणि । २. K. जग त्रिण समान छेखंबइ ।

मूं कावड, जु आपणपानइ हित वांकड । कांई ? ताहरड बांचव रावण वलवंत छई, पणि श्रीराम-आगाल रही नहीं सकड़। तेह-भणी श्रीता रामनइ पाछी अपावउ।' तिवारह विभाषण बोलिउ, 'ओर हनूमंत ! आपणी बल्लभा तु सवि कहिनइ वास्ही दुइ । पणि ताहरउ स्वामी श्रीराम माहरा भाई-सिउं पहुची नहीं सकड़ । एह-भणी तूं पाछउ जा । शीतानह कोई नहीं आपइ।' ए वात सांमली हनूमंत रोषारुण हुंतं देवरमण-उद्यानवीन आवि । तिसिह तिहां शीता दीर्घ नीसासउ मूंकती कुश-देह, मलमलिन वस्त्र घरती, बुखि राम राम स्मरती, अश्रुपात करतो. अशोकवृक्ष तलइ दीठो । एहवी शीता देखी हनूम ति रामनी नामांकित मुद्रिका आगिक मूंकी, प्रणाम कीघउ । तेतलइं शीता हर्षित-वदन हुंती पूछइ, 'राम-लक्ष्मणनइ समाधि छइ ?' तिवारइ हनूम त कहइ, 'हूं रामि ताहरी शुद्धि-भणी इहां मोकलिउं छउँ। हिव मई पाछइ गयइं जि राम कटक करो इहां आविसिइ ।' तु शीता पूछइ, 'वरस ! कहि-न, तई समुद्र किम लांधिउ ?' तिवारइं हन्मत कहइ, 'हे मात ! श्रीरामनइ वर्चान आकाशगामिनी-विद्यानइ बलि समुद्र लांघिउ । तु हिव मात ! ताहरउं चूडाररन आपि, जिम रामनइ प्रत्यय ऊपजइ ।' पछइ शीताइ आपणं चूडारत्न आपिउं । अनइ वली इम कहिउं, 'वत्स ! तूं शीघ्र पाछउ जा । ए राक्षस-माहि मरहिस्सि ।' तिवारइ हनूमंत कहइ, 'मात ! भयनी शंका म करि । हुं तु आपणउ पराक्रम देखाडीनइ जाइसु ।' इम कही शीतानइ प्रणाम करी पछइ लंकानां समस्त वन भांजिया लागउ । जे रखवाला हुंता ते ही हण्या ।

पछइ वही लंकाना घणा घर भाका, छाजां त्रोडी, वही रावणना मस्तकनउ मुकुट चूर्ण करी, लंका प्रजाही, इत्यादि विनोद करी हन्मंत पाछउ राम-समीपि आविउ। पछइ प्रणाम करी शीतानूं चूडारन आगिल मुकी सर्व बात कही-जिम शीता मिली, जिम लंका विध्वंति, इत्यादि सर्व बात कही। तिवारई श्रीराम हर्षित हूंतु आलिंग-पूर्वक घणउं बहुमान देई, पछइ प्रयाणमंभा देवरावी। तिहां अनेक विराध, जांबवंत, नील, भामंडल, नल, अंगद -इत्यादि परिवार लेई रामलक्ष्मण लंका-भणी चाल्या। तिवारइ सुमीव आगेवाए कीघउ, अनइ जे नल-नल ते बेहु संग्रामनइ अग्रेसर थाप्या। इम मार्गि जातां तीणे नल-नीलि समुद्र नइ सेतु राजा बेहू बांधी करी रामनइ आप्या। तिवारइ रामि पणि ते तिहां जि आपणा करी थाप्या। इम मार्गि जातां वली सुवेलनगरि सुवेलराजा जीपी संघाति लीधउ। वली तिहां-थकी हंसदीप लंकानइ पासइ छई, तिहां आवी, हंसरथ राजा जीपी, राम-लक्ष्मण कटक-सहित केतलाएक दिन तिहां रह्या।

इसिइं रावण पणि श्रीरामनइ आवतं जाणी रैणनइ विषइ सज्ब हुई, सर्व सैन्य मेली, जेतलइ नीकलिंड, तेतलइ विभीषण आवी रावणनइ प्रणमी कहुई, 'स्वामी! अणविमासिउं काम म करउ। आगइ एक परस्त्रीनइ अपहारि करी कुल लजाविउं छइ। तु बांघत! हिव शीता परही आपड। सर्व लोकनड श्चय म करउ।' इणि वचिन रावण रीसाणड हूंतड, विभीषण तिम किमइ निर्मेच्छिड, जिम विभीषण सपरिवार रामचंद्रनइ आवी मिलिड। तिवारइ श्रीरामि अवसर जाणी विभीषण बहुमानी आप-समीपि राखिड। वली कहिडं, 'ए लंकानडं राज तुझनइ आपिसु।' पछइ रामनइ आदेसि वानरे लंका रूंघी। तेतलइं रावणने सुभटे युद्ध मांडिउं। इम बेहु कटकनइ युद्ध होतां राक्षस मागा। निसिइं रावण बांघव-सहित सामुहु आवी झूझ करिवा

१. С. बलवंत इ हूतउ पणि, К. बलवंत हूतु पणि। २. \mathbf{B} С. ऋणनइ। ३ \mathbf{K} . विना सर्वत्र 'अपहरि' ।

लागउ । इसिइं राम-लक्ष्मण-भामंडलादिक सहू इ रणतूर वाजते खुझनइ साम्हा थया । तिहां खड्गादि खड्गि, शरादि हारिइं, इम माहोमाहि खुझ करतां, रावणि विभीषण-भणी जिम त्रिशूल मू किउं, तिम लक्ष्मण इ चूर्ण कीषउं। तिवारइ रावणि रीसाणइ हृंतइ, शक्ति-प्रहरणि शस्त्रि करी लक्ष्मणनहें होइ ताडिउ। तेतल्डं तरकाल लक्ष्मणनइ मूर्का आवी। तिसिइं रामि शोकाचे हुंतइ आवी रावण-भणी भालउ मूंकिउ। तिम जि वली रावणि राम-भणी गदा मूंको। तिवारइं राम अचेत हुई भुंइं पृडिउ। तेतल्डं विद्याधरे जिल करी सीचिउ।

तिण प्रस्तावि शीता चींतवइ, 'जोड, भर्तार-देवरइनइ ए अवस्था आवी ।' इम विलाप करते देखी, काइ. एक विद्याघरी आवी, शीतानइ कहइ, 'हे शीते ! तूं असमाघि म करि । ताहर उदेवर प्रभाति निःशस्य थासिइ ।' ए वात सांमली सुर्यना उदय-ताई शीता सुस्ती थई।

हिवइ तिहां लक्ष्मण अचेत थई पडिउ देखां श्रीराम पणि अचेत थई पडिउ। वली शीतल वायुनइ योगि राम सचेत हुउ। तिवारइ राम इसिउं कहइ, 'बांभव! बोलइ काई नहीं ? तई वृं लंकानउ राज विभीषणनइ देवउं कहिउं छइ। ते वचन किसिउं तई वीसारिउं ? तु तूं बांधव! ऊठि, जिम आपणपे रावणनइ हणों, राज विभीषणनई दीनइ।' इम कही राम धनुष हाथि लेई जेतलई ऊठिउ, तेतलइ विभीषणि रामनइ कहिउं, 'हे श्रीराम! सांपत ए मोह छांडि। धीराणउं आदिर। जिणि कारणि, शक्ति-पहरण-शस्त्रनउ हणिउ पुरुष सूर्योदय-ताई जीवइ, अधिकउ न जीवइ। ते-भणी तुम्हे मंत्रतंत्रे करीं यतन करावउ।'

पछइ श्री रामिइं लक्ष्मण-पाखती सुप्रीवादिक रखवाला मूंक्या । एहवइ चंद्र विद्याघर आवी रामनइ वीनवइ, 'स्वामी! शक्ति नीकलिवानउ एक उपाय छइ, ते तूं सांभलि। जिणि कारणि, भरतनंड माउलंड द्रोणमेघ राजा, तेहनी कन्या विश्वख्या, तेहना स्नाननः नीरि करी शक्ति आफे बाहरि नीकलिसिइ।' इणि वचनइ भामडलदिके तिहां चई विशल्या कन्या आणी। पछड तेहना जल-स्तान-लगी सूर्यनइ उदिय शक्ति ज्वलती बाहरि नीकली। तिसिडं जयज्ञारव हुउ । तिसिइ प्रभाति रावण शुक्रने वारीतउ हूंतउ संग्राम-भणी रण-भुमिकाइ आविउ । तिहा राम-रावणनइ महा-युद्ध करतां, राक्षसे वानर उलाली नांख्या । तेतल्रइ लक्ष्मण वेदना-रहित युद्धनइ विषइ वली सज्ज हुउ देखी, लक्ष्मणनइ जीपवा-भणी रावणि बहरूपिणी विद्या समरी । तेतल्ड तत्काल रावणनां अनेक रूप हुआं । तिसिई लक्ष्मण आग्रलि-पाछिले आसइ-पासइ सघले रावण श्रुस करतं देखह । तिवारइ एकलंड लक्ष्मण गुरुड-पंक्षि चडिउ हुंतु नानाविध शस्त्रे करी रावणनुं सह इ रूप पाडिवा लागुउ। तिबारह रावणि आयण्ड चक स्मरी मस्तक-पाखती फेरवी लक्ष्मण-भणी मूंकिड । हिवइ जेत-लंड लक्ष्मणि चक्र आवत उजाणि ई, तेतल इ डाब इ हाथि करि झालि ई । तेतल ई देवताए आकाशथी एहवी उद्योषणा कीघी जउ, 'ए लक्ष्मणकुमार आठमउ हरि हुउ ।' तिहां देवताए इसिउं कहिउं। पछइ लक्ष्मणि तेह जि चक्र रावण-भणी मूंकिउ। तिसिइ ते चक्र रावणनउ शिरच्छेद करी पाछउं लक्ष्मणन् हाथि आची बइठउ । तिवारह वली देवता जयजयारव करतां कुसुमनी वृष्टि करिवा लागा ।

१ K, लक्ष्मण होइ। २. K. आफणी।

तिण समइं श्रीरामइ विभीषणनइ लंकानं राज दीषउं। तिहाँ विभीषणनइ राज बहसारी पछइ राम-लक्ष्मण परिवार-महित शीतानइ लेवा वन-माहि गया । तिसिइ शीताइं श्रीराम आव-तउ देखी हर्षाश्च पाडती विकथर—नेत्र साम्हउं जोवा लागी । तिवारइ आकाशि देवतानी वाणी हूई जु, 'ए शीता महासती, महासती ।' इम वात सांभली पछड राम-लक्ष्मण सहर्षित हुंता पुष्पक-विमानइ बहनी सुग्रीव-विभीषण—भामंडालदिक-सहित आपणइ साकेतपुरि नगरि आव्या । तेतलइ भरत पणि सुमित्र-बांघव-सहित आवी राम-लक्ष्मणनइ प्रणाम कीघड । पछइ महा विस्तारि वाजित्र वाजते राम-लक्ष्मण-शीता-प्रमुख सहु घरि आव्या । तिवारइ लक्ष्मणनइ अर्थचक्रीनं राज दीघडं। अनइ आपणपे श्रीराम राजा हुउ । पछइ सुग्रीवादिक सहु आपणे आपणे देशे मोकली, सुखिई शीता-सहित सुख अनुभविचा लगा।

इम केतले दिहाडे शीता सरभ-स्वप्न सूचित हूंती गर्भ घरिवा लगी । तिवारइ संमेत - शिखरि यात्रा जावान उ डोहल उ जगन । इसि अवसरि शीतान जिमणुं लोचन फुरिकवा लगा । पछइ ए वात जिम रामन इकही, तिम जि राम चमिक डंत शातान इकह है प्रिये ! तुझन इ वाई पाइ उं संभावी इ । इणि कारणि त्ं आपण इघरि जई देवार्चन करावि, सुपाति दान दिइ ।' एहवी मर्तारनी शिक्षा सांमली शीता आपण इघरि आवी, देवार्चनादिक सर्व पुण्य की थां। तेतल इनगरने वृद्ध — पुरुषे आवी राम वीनविड, 'स्वामी ! साचर्ड कि सूठडं, अथवा रूडडं कि पाइ अमे हे न जाण इं, पणि सर्व लोक इम कह इं छई जु, ''रावण की लंपिट शीता एका किन छमास — ताई घरि राखी, हिवइ यद्यपि शीता रावण — ऊपरि विरक्त हूंती, पणि तथापि रावणि बलारकारिइ शील भांजिड घटइ।'' तु राजन ! ए वात विचारिवा सरीखी छइ। जिम तेलनुं बिंदु पाणी-माहि प्रसरइ, तिम लोक माहि अपयश प्रसरिड छइ। तु स्वामी ! रखे आपण इक्ति आघड अपयश अणावड।'

इम शीतान कुल सामली श्रीराम राजा अणबोलि इहिड । तिसिइं वली धेर्यपण अवलंबी किहवा लाग उ, 'अहो महाजा ! तुम्हे मुझनइ मुझन जणावि । ए स्त्रीन कि इस कि सहाज नहीं सांसह ।' इम कहीं महाजन विस्त्रों, पछा रात्रिइं राम नष्टचर्याई नीकिल । नगर-माहि लोकनी वात सांमलत चमारना घर-द्वकड आवी राम वात सांमल लवा लाग । इसिइं चमारिइं आपणी स्त्री पाद्र आहणीन इकहिड , 'रे दुराचारि ! एतली वेला तूं किहां गई हूंती ?' तिवारइ स्त्री कहइ, 'तूं मलेर पुरिष आवि । जोड-न, शीता तां रावणनई घरि छ मास रही, तु ही रामिइं कांई न कहिड । रामइं तां छ मास सांसह्या , अनइ आज तूं एक क्षणमात्र सही न सिक ३ ?' तिवारइ वलतु चमार कहइ, 'राम तु स्त्रीन विश्व छइ, पण हूं कहिन विश्व नथी।' तिहां रामि एहवी वात सांमलो । राम दुखात्त हूँ तु चीतवइ, 'मुझनइ बिकार हु, जे हुं स्त्रीन इकीच नीचनां वचन सांमली सांसह ।' वली राम चीतवइ, 'सही शीता तु पतित्रता, अनइ रावण तु स्त्रीलंग्ड। अनइ महार कुल तु निर्मल, अनइ लोक तु दुराराध्य । तु हिवइ हूं सिउं कर हुं शीतानइ छांड उ ?' इम चीतवी लक्ष्मण-आगलि सर्व वात कही। तिवारइ लक्ष्मण कहइ, 'बांचव! हो इन इकहिइ शीता म छांडिसि । कोक प्रवाह परदोषनइ विषइ रिसक हुई। यत:—

^{. 🤲} १, C, सम्रा । २, B, बई ।

खलः सर्षेपमात्राणि पर-छिद्राणि पश्यति । अगरमनो बिल्बमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥१॥

इस लक्ष्मिणिइ घणुं इ कि इ.उ., तु ही राम न मानइ । पछइ श्रीरामि कृतांत सेनानी ते जीन इ कि इ.ं, का, शीतान इ चन-माहि मूंकी आनि । कांइ ? लोक तु शीतान उ एहवर अपवाद बोल इ इंड । तेह-भणी हूं शीतान इ छांबिस । इणि कारणि तूं रथ सरज करि । कांइ ? आगई ए शीतान इ संमेतिश्वास जावान उ डोहल उ छह । ईणाइ मिल शीतान इ रिथ बहसारी गंगान इ पारि लेई मूंकि ।' पछ इ कृतांत सेनाती संमेतिशासरानी यात्रान इ मिलि शीतान इ रिथ बहसारी नीक कि इ । तिहां जई अमेतिशासरानी यात्रा करावी वलतां अटवी-माहि मूकीन इ इम कहि उ, 'मात ! लोकापवाद-भणी रामचिन्द तूं वन-माहि मूकावी छह । तु माह उ अभाग्य, जे हूं ईणाइ कृमि मोकलि उ।' ए वचन सांमली मुर्छागत हूंती शीता शुंइ पड़ी। पछइ शीतल वायन इ योगि सचेत हुड हूंतो शीता विलाप करती कहिवा लागी, 'हे रामचन्द ! जु तूं लोकापवाद-मइ बीहतु हुंत, तु मुझन इ लोक-मरथक्ष तह धीज कांई न 'काराविज ? अहो राम ! एहवर्ज निघृणपण ! तहं आपणा कुल-सरीख उंन की घड़ा, जे हूं एका किनी निरपराध आधान-सहित वन-माहि मूंकावी। हिवह हूं तां कि मही वन-माहि थाइस । पणि राम-लक्ष्मण जयवंता हो उयो।' इम कही सेनानी विसर्विज । तिवार इ सेनानी पणि शीतान इ पणाम करी अश्चपात करत पछउ वलि । पछइ शीता पणि आपण उंकमी निदती यूथ-अग्ड हरिणीनी परिइंवन-माहि फिरवा लागी।

इसिड प्रस्तावि श्री वज्राज्ञंघ राजा तिहां आविउ हूँतउ वीणइ ते शीता बहिन पडिस्रजी, पुंडरीक-पुरि आ्णी ।

हिन्द सेनानी पास्तुद आव्युद्ध, रामनद प्रणाम करी शीतानद सर्व वृत्तांत कहित । राम-चंद्र शीतानद वियोग अणसहितद, तेह जि सेनानी साथी लेई रामचंद्र वन माहि गयद । तिहां शीता सर्वत्र जोई, पणि लाधी नहीं । पछइ राम घरि आवी शीतानी प्रेत-क्रिया करी, शीतानदं ध्यान करतद काल अतिक्रमावह छइ ।

हिवह शीताह तेहनह घरि लव अनह कुश पुत्रयुगल प्रसवित । तिवारह वज्रजंघि आपणा पुत्रनी परिहं जन्मोस्पव कीघर । ते बेहू वालक कुश अनह लव एहवे नामें प्रसिद्ध हुआ । विहुए संपूर्ण कला अम्यसी । बेहू यौवनपण प्राम्या । बेहू महा-दुर्घर सुभट हुआ । पछह वज्रजंधि आपणी शशिक्ला पुत्री लवनइ परिणावी । वली बत्रीस कन्या बीजी परिणावी । इम कली कुश्तनह कीघह पृथुराजानी पुत्री मंगावी । तिवारह पृथुराजा कहइ, 'हुं अज्ञातवंशनइ आपणी पुत्री नही आपर्छ ।' इणि वचिन वज्रजंघ अनह पृथुराजानह माहोमाहि युद्ध हुउं । तिसिहं पृथुराजाह वज्रजंघनं कटक मांजिंड । तिवारह लव अनह कुश रीसाणे हुते, तिम किमह सुद्ध मांदि अ, जिम पृथुराजा नाठ । तितलह लव-कुशि कहिंह, 'अहो ! अम्हे अवंश पिण ते वंशज नसाहि अ।' तिवारह पृथुराजा पाछ व वजीनह कहह, 'अहो कुमारो ! तुम्हारी की-र्यंश्वतिहं करी महं तुम्हार कुल जाणिउं ।' इम कही पछह वज्रजंघ साथि मेल करी बेहूं करक तिहां ऊत्रयाँ । इसिहं नारद आविड । तिवारह वज्रजंघ नारदनह प्रणाम करीनह कहिंह, 'आहो रिषि ! ए कुशनह पृथुराजा आपणी पुत्री दिह छह । इणि कारणि तुम्हे कुशनउं कुल प्रकट करह, जिस पृथुनह हर्ष ऊपजह ।' तिवारह नारद हरीनह कहह, 'आहो अबूश लोको !

१. B. कराबी, K. Pu. कराविउ'। २, C. प्रतिकिसा । ३. B. C. सूर्यञ्चतिइ।

एइनां कुछ कुण न जाणइ ? रामलक्ष्मण तु सवलइ प्रसिद्ध छईं। जिणि कारणि, ए वात सांभ-लउ । लोकापवाद-भणी भीरामइ शीता वन-माहि मूंकावी। तेहना ए लव अनइ कुश बेहू पुत्र। ए वात सांमली कुश कहर, 'नारद ऋषि! श्रीरामइ तां रूडउं न की घउं, जे लोकनी वातई अणिबचारिइं शीता वन-माहि मूंकाबी। 'तेतलइ वली लव बोलिउ, 'अहो ऋषि ! ते नगरी केतल्ड दूरि छइ, जिहां राम-लक्सण छइं ? 'तिवारइं नारद कहइ, 'इहां हूंती अयोध्यानगरी वीसा-सउ जोअग हुई । ' तिसिइं तिहां पृथुराजाई कनकमाला पुत्री कुशनह परिणावी । पछई वज्रजंघ लवकुश-सहित आपणइ नगरि आविउ। तेतलइ लव नइ कुश माउलउ पूछी, जे श्रीरामि शीता छांडी ए अमर्ष मन-माहि घरी, बेह बांधव कटक करी राम-भणी चाल्या। इस पंथ अयगाहता जेतलइ अयोध्यानइ परसरि आव्या तेतलइ राम-लक्ष्मण पणि घणउं सैन्य लेई साम्हा आवी महा-सूझ मांडिउं। तिसिइ लवकुरी रामनउं सैन्य क्षण-एक-माहि आकडाना तूलनी परिइं दिशोदिशि ऊडाडिउं। तिवारई राम-लक्ष्मण रीसाणा इंता, अति अमर्थ करी कुश-भणी चक्र मूं कि-उं । पणि ते चक्र ैगोत्रि−तु पुहची न सकइ । पछइ कुश-पाखती फिरी बली लक्ष्मणनइ हाथि आबी बइठउं । तिवार् राम-लक्ष्मण मन-माहि विखवाद धरता इम चींतविवा लागा जउ, 'बलिभद्र— नारायण अम्हे ई, कि ए छत्र नइ कुश १ १ इम चींतवह छईं। इसिइ नारद-ऋषि भामंडल-बहित तिहां राम-लक्ष्मण-समीप आवी, हसीनइ इम कहिवा लागउ, 'अहो! हर्षनइ ठामि तुम्हे सिउ विखवाद मांडिउ ! जेहना एहवा पुत्र, तेहनइ हर्ष जि कीघउ जोईइ । ' तिवारइं श्रीरामि पुछिउं, 'रिषि ! ते किम ?' वलतुं नारद् कहइ, 'ए बेहू ताहरा पुत्र, शीतानी कूखिइं ऊपना । सांप्रत संग्रामनइ मिसि तुम्हनइ जोवा आग्या छइं। पणि ए वहरी नही, इणि कारणि ए चक्र गोत्रि-भणी न पुहिचिउं। तु ए अहिनाण तुम्हे आणिज्यो । ' ए वात सांभली राम-लक्ष्मण स्नेह-लगइ साम्हा मिलवा गया । तिसिइं लव-कुस पणि विनीत हूंता आवी पिताने पगे लागा । तिवारइ बिहुं कटकनइं माहो-माहि महा-उत्सव-आनंद हुआ। पछइ पुष्पक विमानि बइसी राम-लक्ष्मण लबकुश-सहित नगर-माहि आञ्या ।

तिसिइं लक्ष्मणि, सुग्नेवि, वज्रजंघ शीता आणिवा-भणी श्रीराम व नविउ। तेतलइं रामि अनुज्ञा दीर्था। पछइ लक्ष्मणादिक सहू साम्हा तिहां जइ शीतानइ नगर-माहि तेडिवा लागा। तिवारइ शीता कहइ, 'जां भीज करीनइ स्झउं नहीं, तां-सीम हूं नगर-माहि नावउं। दश भीज छइं। तेह-माहि जो मेलि आवइ ते करावड। जु कहु तउ आगि-माहि पइसी नीकलउं (१), अथवा चोखा चावउं (२), अथवा कहउ तउ कोस पीउं (३), अथवा घटसपं कावउं (४), अथवा घटगोलड कावउं (५), अथवा वित्वारि—ऊपरि चालउं (६), अथवा तातउ लोहनउ गोलउ हाथ—ऊपरि राखउं (७), अथवा कहउ तउ ताती तेल-कडाइ-माहिथी कउडी कावउं (८), अथवा वित्वारं कुलि जीमइ करी चाटउं (९), अथवा कहउ तउ देवनउं पूल ऊतारउं (१०)। शीताइ इम कहिई हुंतई, पछइ श्रीरामि मोटी चउरी खणावी। त्रिण्णि सइ हाथ लांबी, बि पुरिस ऊंडी एहवी, चंदनादिक काघ्टे भरी, माहि अग्नि प्रज्वाली, महा भखभवती करी। श्रीराम-लक्ष्मणादिक सहु इ मिली जीता-पाहंति स्नान कराविउं। पछइ श्रीताई स्नान करी, त्रिण्णि नवकार कही एहवी अवश्रावणा कीघी, 'अहो लोकपालो ! सांभ-

१. B. गोत्रि माहि तु, Pu. गोत्र तु, P. गोत्रपुत्रनई । २. K. चडक ऊपरि ।

लड़। जु मह राम टाली त्रिचा-सुद्धिह बीचड़ कोई पुरुष ध्यायड हुह, तु मुझनइ आगि भस्म करिश्यो, नहीं तु आगि फीटी पाणीनड़ कुंड होश्यो। 'इम कही जिम शीताइ आगि-माहि झांप दीची, तिम शीलनइ प्रमाणि आगि शीतल हुई। वावनी परिइं ते लाई पाणी[इ] भराणी। ते पाणी-माहि सहस्रदल कमल हुआं। ते कमल-ऊपरि स्तमय सिंहासन। ते ऊपरि शिता बहुटी, लक्ष्मीनी परि सोधिवा लागी। तिसिंह देवताए शीताना मस्तक—ऊपरि कुसुम-बृष्टि कीची। 'अहो शीलमहो शोलं' इम देवता प्रसंसा करिया लागा। एहवडं मातानडं स्वरूप देखी लब अनइ कुश बेहू पुत्र आवी पगे लागा। तेतलइ लक्ष्मणािक तेह इ नमस्करिवा लागा। तेतलइ वली श्रीराम आवी हाथ जोड़ी किहवा लागड़, 'हे देवी! मह जे लोकनी वाते तृ अरण्य-माहि मूंकाबी अनइ सांप्रत वली तुझ-पाइंति दिग्य कराविडं इत्यादिक सर्व माहरड अपराध खीम। हिव ईणइ विमानि बहसी आपणिइ घरि आवि। राज्यलक्ष्मी सफल करि।' तिबारह शीता कहइ, 'हे प्रियतम! ए ताहरड दोस नहीं, न अनेरानड दोस। किंतु ए माहरा कर्मनड दोस। एह-पणी माहरइ संसारनइ सुखि करी सरिउं। हिव इं दुक्लना छेद-भणी जिन-दीक्षा लेसु।' पछइ मोटइ महोत्सवि श्रीरामइ अनइ शीताइ बिहूं जणे दीक्षा लीची। इम घणु काल चास्त्रि पाली श्रीसम मोक्षि पहुतड। अनइ शीता श्रीतंद्र हुड। तिहां देवलोकनां सुल मोगवी किंसई कर्मनइं क्षिय शीता मोक्षा(श्रि) जासिइ।

इति ओशीडोपदेशमाळा-बालाविबोधे शीता-महासती-कथा समाप्ता ॥४२॥

वली महासतीना लक्षण कहइ--

जा सीलभंग-सामिश्य-संभवे निच्चला सई एसा। इयरा महासईओ घरे घरे संति पउराओ ॥१०९

ठयाख्याः—जे स्त्री शील-मंगनी सामग्री हूंती इ आपणउं शोल पालिवा-मणी दृढ हुइ —ते सामग्री कठण ? रूप, लावण्य, यौवन, नरनी प्रर्थना, लक्ष्मीना उन्माद, एकांत प्रदेश, राजादि, ग्रहादि कारणे—जु शीलभंग न करइ, तु इम जाणीइ ते महासती। अनइ एह-हूंती जे अनेरी सती, ते घरि घरि घणी इ दीसइ।

वली शीलरक्षानउ उपाय कहइ-

तह वि हु एगंताई–संगो निच्च पि परिहरेअब्बो । जेण य विसमो इंदियगामो तुच्छाइं सत्ताई ॥११०

च्याख्याः—यद्यपि शील पालतां दोहिलडं छइ, पणि तु ही शेलना पालणहार नरनारीए एकांति संग सदाइ विजिय ! जिणि कारणे जीवनइ जे इंद्रियमाम, ते तु महा विषम=अति दुर्जय छइ। अनइ जे सत्त्र=साहस ते तु थोडां। इणि कारणि, निसत्त्व जोवनइ पडतां वार न लागइ। तेह-भणी शोलवंतइ पुरुषे एकांति स्त्री-संग टाल्विय । तिम स्त्रोइ पणि एकांति पुरुषनड संग टालिवड ।

अथ ते संग-लगी जे दोष ऊपषड़ ते कहड़—

जइ वि हु नो वय भंगो तह वि हु संगाउँ होई अववाओ। दोस-निहाल्लग-निउणो सन्त्रो पार्य जणो जेण ॥१११

र. Ç. L. P. शीतानड'।

ठयाख्याः — यद्यपि ते यतेंद्रियन इब्राबतनउ भंग न हुइ, पणि तथापि संग-लगी अपवाद-दोषादिक कारण ऊपजइ। जिणि कारणि, प्रवाहि लोक दोष लेवानई विषइ सावधान छइ। हिव शीलनउ उपदेश कहइ—

ता सब्बहा त्रि सीछम्मि उज्जमं तह करेह भो भव्वा । जह पावेह लहु-चिचय संसारं तरिय सिव-सुक्खं ॥११२

ठ्याख्या:—अहो भविको ! तेह कारण-इतु मनसा वाचा कर्मणा-त्रिकरण-सुद्धिई, शीलनइ विषइ उद्यम करुउ, जिम लधु=शीव्र संसार-समुद्र तरी शिव-सौरव्य पामउ ।

हिवइ ग्रंथनउ करणहार स्व-गर्व-परिहार-पूर्वक सर्व-संग्रह उपदेस कहइ-

इय सील भावणाए भावतो निच्चमेत्र अप्पाणं । धन्नो धरिङज बंभं धम्म-महा-भवण थिर-थंभं ॥ ८१३

ठ्याख्या:—ईणइ प्रकारि=पूर्वीक्त उपदेश, दृष्टांतरूप शीलनी भावनाइं करी, निरय=सदाइं, आपणपुं भावता हूंता, हे धन्यो=भाग्यवतो, जीवो, तुम्हे बहाबत=शिलबत धरउ=प्रतिपालउ । पणि ते ब्रह्मवत केहवउं छइ १ धर्मरूपीउ महा=गच्उ भुवन=आवास, तेह थोभिवा-भणी निश्चल स्तंभ-समान ए ब्रह्मवत छई । जिम प्रासाद स्तंभि करी निश्चल हुइ, तिम धर्म=सील दृढ ब्रह्मवत पालिवई करी निश्चल हुइ। जे धन्य=कृतपुण्य हुइ, तेह जि शीलबत धरिवानई विषइ क्षम=समर्थ हुइ। पणि मुझ सरीखउ पापी समर्थ न हुइ।

वही एह जि संबंध ग्रंथकार जणावइ—अहो संगदोषि जे धन्य हुइ, तेह जि शील पाली सकड़ | पणि अधन्य पाली न सकड़ | इहां धनश्री सतीनउ दृष्टांत देखाडड़—

[४३. धनशीनुं दृष्टांत]

उन्नेणी नगरीइ जितरात्रु राजा कमला-भार्या-सिंहत सुखिइं आपणउं राज पालइ । वली तेह जि नगरी-माहि सागरचंद्र श्रेष्ट चंद्रश्री-भार्या-सिंहत वसइ । हिवइ तेहनउ पुत्र समुद्रदत्त, ते अन्यदा मातापिताइ कलाचार्य-समीपि भणिवा मू किउ । पछइ मउडइ मउडइ कलाचार्यनी भार्यानइ संसमि ते समुद्रदत्तनी माता कलाचार्य-साथि छुब्धी हुइ । इम एकदा समुद्रदत्त मातानउ ए स्वरूप देखी सर्व स्त्रीनइ विषइ विरतउ हुउ । तिवारइ समुद्रदत्ति विवाहनउ अभिग्रह लीधउ जउ, 'हूं पाणिग्रहण नही करउं ।' पछइ पिताइं पुत्र यौवन वय(१इ) आविउ देखी घणी इ कन्या मागइ, पणि समुद्रदत्तनइ स्त्रीन उं नाम न सुड़ाइ, सर्वथा न मानइ, यतीनी परिइं सर्व निषेधइ । इम करता प्रणउ काल गयउ ।

अन्यदा विवसाय-निमित्त पिता सागरचंद्र सोरठदेस-भणी चालिउ। तिहां गिरिपुरि अन सार्थवाह, तेहनइ घरि जई ऊतरिउ। तिहां घण उ विवसाय करी, पछइ तेहनी पुत्री धनश्री समुद्र-दत्तनइ कांजि मांगी, सागरचंद्र आपणइ घरि आविउ। इम एकदा पिताइं समुद्रदत्तनइ कहिउं, 'वत्स! गिरिपुरि आपणी वस्तु-भांड छइं, ते त् जई लेई आवि।' ते-आगलि परणवानी वात इन कही। किंतु समुद्रदत्तनु मित्र छइ तेह-आगलि छानइ-सिउं वात कही जु, 'मृइं तिहां धनश्री कन्या मागी छइ। ते त् प्रपंच करी एहनइ पाणिषदण करावे।' तिवारइ तीमइं मित्रिः सर्व वात पडिवजी। पछइ भलइ मुहूर्ति मित्र-सहित गिरिपुर-भणी समुद्रदत्त चालिउ। मार्ग उछां-घतउ थोडे दिहाडे गिरिपुरनइ उद्यानि-विन पहुतउ।

१. B.Pu. बोलवानइ ।

तिसिइ तिणि मित्र 'छ।नइ-सिउं धन-सार्थवाहनइ वरनउं आगमन जणाविउं । धनइ पणि विवाहनी सर्व सामग्री सज्ज करी मूंकी । पछइ समुद्रदत्त सपरिवार घरि जिमवा निहुतरिउ । तिहां काणिइं पाडो धनश्रीनउं पाणिग्रहण कराविउं । हाथ-मेल्हावणीइं घणउं धन दीघउ । पछइ वली मित्रनु प्रेरिउ वासग्रह-माहि गयउ । तिसिइं तिहां धनश्रीनइं देखी तत्काल पाछउ वली, मित्र-समीपि आवी सृतउ । पछइ प्रभाति शागरनी चितानइ मिसि कागनी परिइं किहांइ नासी गयउ । लगारेक हुई जित्रारइं नावइ, तिवारइ मित्रिइं सुसरानइं कहाविउं जउ, 'तुम्हारउ जमाई दीसतु नथी ।' पछइ धन सार्थवाहइ जमाई सघले जोआविउ, पणि किहांइ न लाधउ । मउडइ मउडइ ए वात सागरचंद्र—पिताइ सांमली । पिता पणि महा असमाधि करतउ तिहां आविउ । तिहां इ पुत्रनी सुद्धि अणवामतउ वली पाछउ घरि पहुतउ । इम करतां बार वरस वउलियां ।

बारमा वरसनइ अंति समुद्रदत्त कापडीनइ वेसि स्थूळ पीनांग देह धरतउ तिहां आदी धनश्रेष्टिनइ प्रणाम करोनइ इसिउं कहइ, 'अहो श्रेष्टि ! जउ तुम्हारइ उद्यान-वननइ रखवालउ जोईइ, तु मुझनइ राखउ।' पछइ सेठइ तेह जि वाडीनउ रखवालउ कीधठ । हिवइ ते समुद्रदत्त कापडीनइ वेषि हूंतइ तिम कांइं वृक्षनी ग्रुशूषा कीधी, जिम थोडा दिन-माहि नंदनवन सरीखउ वन दीसिवा लागउ। अन्यदा धन-सार्थवाह तेहवी वनलक्ष्मी देखी, आनंद-प्रित हूंतउ, मन-माहि इम चौतविवा लागउ जउ, 'आज-पहिलउ एह-वउ कलापात्र मइं योग्य कोई न दीठउ। तु हिवइ ए आपणइ हाटि बइसारीई।' इम चौतवी पछइ ते समुद्रदत्त कापडी बहुमानपूर्वक आपणइ हाटि बइसारिउ। तीणइ थोडा दिन-माहि घणी लक्ष्मी ऊपार्जी। पछइ अति विनीत देखी विनीतक एहवउं नाम दीधउं। ते विनीतक सबले विख्यात हुउ। तिवारइ श्रेष्टिइं चौतिवउं जउ, 'रखे ए विनीतक सर्व-गुणमइ देखी राजा लिइ।' इम विमासी पछइ सर्वे घरना विज्ञा-काम तेहनइ मलाव्यां। हिवइ ते घरना वांछित काज करतउ पुत्र-गाहइ ते अधिकड करो मानिउ। कांई ? सघले गुण जि अभवींइ। यत:-

लहुंडा वडा पमा भणउ, गुण वडा वंसारि । गागरि अछइ बइटडी, करवइ पीजइ वारि ॥१॥

इम ते विनोतक सर्व कार्य करतड, घनश्रीना मननइ विश्वासपणडं पामिउ । पणि भरतारनइ डल्लइ नहीं । इम अनेरइ दिविस घनश्री गडिल बहटी तलारिई दीटी । तिसिई तलार कामांघ हुउ । यत:—

> न पश्यति हि जारयंधः कामांधो नैव पश्यति । न पश्यति मदोनमत्तो अर्थी दोषो न पश्यति ॥२॥

ते तलार अति काम-ज्याप्त हूंतइ, धनश्रीनी प्रार्थना विनीतक पाहइ करावी । तिवारइ आपणी स्त्रीना पारखा-भणी विनीतिक कहिउं, 'ए वातनी चिंता म करी । अवसरि धनश्रीनइ हूं सर्वे बात कहिसु ।' कांई १ जे धूर्त हुइ, ते परमार्थ लेवा भणी सघली वस्तु पडिवजड । पछह

१. С. L. Pu. छानउं। २. K. लाजिइं पाडी। ३. С. Pu. काज तेह माहि भलाव्या। ४. K. Pu. अर्थीइ। ५. K मन गुणउ।

विनीतिक धनश्रीनइ जिम तलारनउ संबंध कहिल, तिम धनश्री कहिवा लागी, 'अहो विनीतक ! आज-पछइ एहवर्ड यचन सर्वथा म कहेसि ।' इम बली दिवस एकनर्ड आंतर्ड घालीनइ विनीतिक कहिउं । तिवारइ धनश्री माथउं धूणती विनीतकनइ कहइ, 'अहो ! एतला दिवस त् प्राण-इ-पाहइ अति-वल्लम हूंतल, पणि ईणि वचिन वहरी—पाहिइ अधिकउ हूट । कांई? जे त् महर्ष श्रील-माणिक्य दूषववा बांछइ । जिणि कारणि, सांभिल मन-वचन-कायि करी मुझनइ पितादत्त भरतार समुद्रदत्त ,तेह जि शरणि ।' तिवारइ विनीतक आपणपर्ड गोपवतु, गृद हर्ष धरतउ कहिवा लागल, 'हे मुण्धि ! कृपणना धननी परिइं न्त् मुधा जन्म कांई गमाडइ ? ते तु भरतार तुझनइ छांडी गयउ । तेहनी शुद्धि इ किहां इ न लाधी । इणि कारणि तलारनल वचन मानि ।' तिवारई धनश्री कहइ, 'अरे ! त् विनीत इ अविनीत हुल, जे त् एहवां बचन मुझनइ संभलावइ । कांई ? जुल्ल्लीनइ शील जि रत्न राखिलं जोईइ, अनइ तिणि शील भाषातइ स्त्री जीवती इ मूई जाणिवी । सांप्रत चिर-परिचित-लगी त् जीवतु मूं किउ छइ ।' इम धनशीइ विनीतक गाउउ निर्मेरिसउ । पछइ तलारनइ जई कहिन, 'अहो ! स्त्री तु न मानइ ।'

तिवारइ तलार रागांच हुंतु विनीतकनइ कहरं, 'अहो विनीतक ! धनश्रीनइ वली एक वार कहि, पछइ म कहेित ।' इम वली दिवस पांच-सात आंतरड करी वली श्रीकी वार धनश्रीनइ कहितं । तिवारइ धनश्रीइ चींतिवडं, 'श्राख्या-पाखंदं ते नही रहइ ।' इम चींतवी धनश्रीइ कहितं, 'बा, ते तलार सर्व सामग्री करावो अशोकविनका-माहि तेडि । पत्यंकादिक सर्व भोगादि सामग्री मेलाव ।' इम कही पछइ आपणपे तिहां गई । ते पणि तिहां आविड । तिसिइ घनश्रीइ चनद्रहास मदिरा अणावी । ते तलारनइ चिम पाई, तिम तलार अचेत यई मुंदं पडिउ । पछइ धनश्रीइ तेइ-जिन्नउं खड्ग लेई मस्तक-छेद करी विनीतकनइ कहिउं, 'अरे विनीतक ! वेगउं खाड खणि, विनीत दुर्दण्ड खड्ग करी ताहरउं पणि मस्तक छेदिसु ।' तिवारइ दीहतइ हुंतइ खाड खणी । पछइ तलारनइ धनश्रीइ ते-मा हे दाटिउ । विनीतकनइ कहिउं, 'अरे ! जउ बाहिरि वात कीधी, तु तु जाणिइ ।'

इम निर्मिर्सिइं बोहतु दूंतु घनश्रीनइ पिंग लागी कहइ, 'स्वामिनि ! ए माहरं अपराध खिम । पिंग कि ते समुद्रदत्त कडण ?' तिवारइ घनश्री कहइ, 'सांमिलि, उज्जेणीनगरीई सागरचन्द्रनु पुत्र समुद्रदत्त, सर्व गुणनु आगर, ते माहरउ पित जाणिवड ।' हिवइ तेह जि समुद्रदत्त छइ, पिंग आपणपढं अणजणावतु स्त्रीनइ इसिडं कहइ, 'हे सुमिंग ! ताहरे गुणे रंजिड हूंतु, मावइ तिहां थकु ताहरड भरतार जोईनइ आणिसु ।' ईम कहीनइ नीकल्डिड । तिसिइं मार्गि जातड इम चींतवइ, 'मई तु माहरी स्त्रोना शीलनी परोक्षा दीठी । जे हूं इम जाणतड जे सर्व स्त्री कुशीलि, ते तां वृथा ।' इम चींतवतु घनश्री—उपिर सानुराग हूड। इम मार्ग उल्लंघी आपणइ घरि आविड । मातापितानइ हर्ष उपजाविड । पछइ सागरचंद्र श्रेष्टिइ गिरिपुरि घन-सार्थ वाहनइ जमाईनडं आगमन जणाविडं। तिसिईं ते पिंग महांत हर्ष घरिवा लागा । घनश्रीइ

१.К. भाष्मिवइ, С. Ри. नाठइ । २. К. ऊतावरुउ । ३. К. नहीतिर ईणइ । 8. С. व्रथा फोकट ।

'क्लीआइति थई । पछइ अन्यदा समुद्रदत्त स्त्रीनइ आणउं करिवानइ अधि गिरिपुरि गयउ । स्वसुरानइ वरि आविउ । पणि लाज-मणी आपणपं देखाडइ नहीं । इम करना रात्रिनइ समइ धनश्रीइ वासघर-माहि दोवउ आणिउ । तिसिइ समुद्रदत्ति लाज-मणी दीवउ वधारी, शिष्याई सुई रहिंड । इम बीजइ दिनि । त्रीजइ दिनि इम जि करो रहिंउ । पछइ धनश्रीइ चउथइ दिनि संध्यानइ समइ प्रच्छन्न दीवउ करी घर माहि राखिउ । इसिइ भरतार आवी शिष्याई सूतु, तेतलइ धनश्रीइ तत्काल दीवउ प्रगट कीघउ । जो जेइ, तु तेह जि विनीतक आपणउ भर्तार जाणो सहिषत सस्तेह हूंती कहिवा लागी, 'हे स्वामी ! हे प्राणनाथ ! तई मुझनइ आपणपउं कांई न जणाव्यउं ?' इम आपणउ जमाई जाणोमइ सहू इ हरख्या । पछइ समुद्रदत्त आपणउं हाथ-मेल्हावणीनं इधन अनइ धनश्रीनइ लेइ आपणइ नगरि आविउ । इम धनश्री आपणउं भर्तार पामी, नि:कलंक शील पाली, सकल सुखनइ भाजन हुई ।

इति श्रोशीकोपदेशमाठा—बालाविबोधे धनश्रीनी कथा संपूर्ण ॥४३॥

हिवइ प्रथकार प्रथनी समाप्ति-भणी आपणउं नाप-गर्भित मंगल-

गाथा कहइ--

इय जयसिंह-मुणीसर-विणय-जयकित्तिणा कयं एयं। सीलोवएसमालं आराहिय लहह बोहि-फलं ।।११४

च्याख्याः —ईणइ=पूर्वोक्त प्रकारि करी, जयसिंहसूरि, तेहनु विनीत शिष्य अयकीति मुने, तीणइ ए श्रीशोलोपदेशमाला—प्रकरण-रूप मूल-सूत्र कीषडं । तु ए प्रकरण, भो भविक लोको ! तुम्हे आराधी करी, ईणइ प्रकारि शील पाली. सिद्धांतोक्त गाथारूप प्रकरण भणतां गुण-तां, सुद्ध शील पालतां, भावना भावतां, जिम बोधिबीजनु फल लहु, परंपराई मोक्षफल पणि पामड ॥

इति श्रीशीलोपदेशमाला-बोलावबोधः संपूर्णः ॥ श्री खरतरगच्छे, श्री जिनचन्द्रसूरि-विजय-राज्ये, वाचक-रत्नमूर्तिगणि-शिष्येण वाचक-मेरुसुन्दरगणिना शीलोपदेशमाला-बालावबोधः मुग्धजनविबोधाय कृतः ॥

१. C.Pu. वलीआति हुई ।, K. वलियाइति हुंती प्रक्रइ ... ।

शीळोपदेशमाळानी गाथाओनी अकारादि छ्चो

गाथा	संख्या	गाथा	संख्या
अ क्खलिय—सील	80	जे नामंति न सीसं	१६
अणुकूल–सपिम्माण	66	जे सयल सत्थ जलनिहि	१९
अन्नं रमइ निरिक्खइ	۷٧	जो अन्नायरओ	٠. لاق
अबंभे पयंड चिय	રષ	तं दाणं सो अ तवो	* * *
अम्र-नर-असुर	& 4	तं नमह वयरसामि	٠٠, ٧٦
आबल-बंभयारि	₹	तहिव हु एगंताई	११०
इय जयसिंह-मुणीसर	११४	ता कह विसय-पंसत्ता	२६
इय भावं भावंतो	९ ८	ता सयल इयरकडा	2.6
इय सील-भावणाए	११३	ता सन्वहा वि सीलिम्म	११२
एगैते मंताई पासस्थाई	. 55	तिहुअण-पहुणा वि	206
एवं सीलाराहण	६७	तिद्वयण-जगडण-उब्भड	34
कलमल-अरइ	७६	तुच्छा वि रमणि-जाई	ય ૦
कलिकारओ वि जन	१२	ते घनना गिहिणो	Y Y
कुडिलं महिल-लिवं	८६ '	येवमसारं सत्तं	98
गुण सायरं पि पुरिसं	60	दाण-तव-भावणाई	. १०
चवहाओ कुडिहाओ	95	दायार-सिरोमणिणो	Ę
चालणि-धरिय	५२	दाया वि तवस्ती वि	१३
बित्त-भित्तिं न	७१	दालिइ खुइ-वाही	६२
छ हु मदसमाइं	৬	दीसंति अणेगे उगा	, {
बड़ ठाणी बड़ मोणी	9.0	दीसंति सीह-पोरिस	र ४ १५
जई तं काहिसि भावं	38	देव-गुरु-पियर	१०४
चाइ वि हु नो वयभंगो	१ ११	देवो गुरू य भम्मो	4
चउ-नंदणो महप्पा	३२	घीरा व कायरा	૮૨
जं होए वि सुणिज्जद्द	6	नंदड सीलाणंदिय	48
जत्थाणुरत्त-चित्ता	८५	म वि किंचि अणुन्नायं	२७
सर-सज्जर-धेरी	3 %	निम्मल-महासईंग	१०५
जहा कुक्कुडधोयस्स	90	निम्महिय-सयल हीलं	· ` ` ` ` `
जाणंति भग्मतंत	•	निय-मइ-माहप्पेणं	८३
जा निय-कंतं	86	निय-सत्त-विजयाओ	१०७
जासिं च संगवसओ	96	निय-सील-बहुल	३६
जा सील-भंग-सामिग	१०९	निय-सील-महामंतेण	વ ર
जिप्पंति सुहेणं चिय	₹४	निय-सील-रक्खणहथं	५ ३
ज्ञार-पारदारिअ	१०२	निरुवम-तव-गुण	६३
A 40	,	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	, ,

१८४

गाथा	संख्या	ं, गाथा 🖟 .	संख्या
निव-धुआ निय-रूवा	36	रुच्छी जसं पयावो	₹
नेउरपंडिय-द्त्तय	६६	विभूसा इरिथ	६९
नो कामीण सञ्चं	२४	विसईण दुक्ख	७७
पइ-दिवसं दस दस	₹ १	विसमा विसय-पिवासा	७३
पर ्पुरिस-सेवि णीओ	85	विसयासत्तो वि नरो	२ २
पर-रमणी-पत्थणाड	63	विस-विसहर-करि	لر و
पर-रमणी-संगाओ	% 0	वेसा-दासी-असई	१०•
परलोए वि हु	ሄ	वेसा-दासी-इत्तर	१०१
पालंति निय-सीलं	४३	संवेगगहियदिक्खो	₹ο
पूइज्जंति सिवत्थं	२१	सक्को वि नेय	१७
बं भण- छेयण-ता ड ण	६१	स व्चिय सइ त्ति	१०६
बं भव्वय-धारीणं	६८	समणी वि हु विसय	& 8
बहु -महिलासु पसत्तं	5	सयलो वि गुणग्गामो	46
मयण-पवणेण जइ	३ ३	सावउजजोग-वज्जण	२९
मरणे वि दीण-वयणं	१८	सासय-सुह-सिरि	5 2
मिय-भासिणी सलङ्जा	१०३	सिरि-मल्लि-नेमि	80
मुह महुरासु	८७	सील-कलिएहिं सद्धि	૫ ૭
मेहुण-सन्नारूढो	२३	सील-पभाव-पभाविय	४५
रमणी-इडक्ख-विक्खेव	३७	सील-पवित्तस्स	5 Ę
रमणीणं रमणीयं	44	सील-ब्मट्ठाणं पुण	६०
रम्माओ रमणीओ	९ ३	सीलवइ नंद्यंती	પ <u>ે</u> હ્
रिसिदत्ता दवदंती	લ બ	सो जयड थूलमहो	४१
रूबोवहसिय	८१	इ त्थपाय-पडिछिन्नं	હર
रे जीव समय	હ્ય	इरि-हर-चउराणण	30

शीलोपदेशमाला-बालावबोधमां उद्धृत संस्कृत-प्राकृत पद्योनी अकारादि सूची

पद्य	पृष्ठ	पद्य		पृष्ठ
अक्रीर्ति-कारणं योषित्	१६०	न वेत्ति लोको मूढो		५२
अक्लाणसणी कम्माण	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	निर्विशेषः प्रभुः		१२४
अग्निकुण्ड-समा नारी	१५१	पंचिंदिया मणुस्सा		રર
अनार्याणामलज्जानां	११०	पक्लंदे जलियं जोइं		३२
अश्वष्टुतं व सवगर्जितं	१४५	परोपकारो मैत्री च		९३
असंखइत्थिनर	२२	पुरिसेण सहगयाए		२२
अहं च भोगगयस्स	३२	प्रथमेत्वाभिलाषः	2.	१५२
इतो भ्रष्टा ततो भ्रष्टा	१४८	भृ त्येर्घनेन		98
इत्थीजोणिमज्झे	२२	राजपरनी गुरोपरनी	*	90
इत्थोजोणीए संभवति	२२	लक्ष्मीर्थशः कुले जन्म		ጸ
कवय: किं न कुर्वन्ति	१४९	लहुडा वडा मा भ णउ		१८०
को देव: को गुरुः	१२०	वसासृग्मांस		. ९५
ख्लः सर्षपमात्राणि	१७६	वायुना यत्र नीयन्ते		३२
चेईय-दब्व-विणासे	३२	विश्रब्धां वल्लमां		११०
जइ तं काहिसि भावं	३२	वीतरागः परं देवो		१२०
जल्पन्ति साधं मन्येन	१४७	श्रीनामेयममेयश्री		१
जो जारिसेण संगं	१३६	श्रीजिनचन्चन्द्रगुरूगा		१
दर्शने हरते प्राणान्	१६३	संघरणम्मि असुद्धि		२३
धिरत्थु ते जसोकामा	३२	संसार तव पर्यन्त-पदवी		२४
न पश्यति हि जात्यंधः	१८०	समणे जइ कूलवालए		१३८
नवलक्खाणं मज्झे	22	सब्बो पुब्बकयाणं		२
न विश्वसेत् कृष्णसर्पस्य	१६३	स्मृता भवति तापाय		१५१

महत्त्वना शब्दोनी सार्थ सूची

अऊठ साडात्रण अग्निद्याच अग्निदाह अजी हजी **अठील** बेडी अणसण अनशन अधविचि अधवच अधिकंड अदकी, वधारानी अनेथि अन्यत्र, बीजे अंनेरंड बीजुं, अन्य **अपञ्चा**जना हीणपत, अवमानना अपारि (भलउ) घणुं (सार्व) अमावस अमास अलगड दूर, आधुं अवदात यशस्वी कार्य अवश्राचणा घोषणा असमाधि चिंता, उपाधि अहिनाण एघाण अंगमोटन अंग मरोडवुं अंगोलगु अंगसेवक अंतपुरी राणी अंते उरी अंत:पुरनी स्त्री, राणी आऊखु, आऊखउं आयखुं, आयुष्य आगता-स्वागत (नपुं.) आगतास्वागता आदिस्यवार भातवार, रविवार आगम् आवकारवुं आगिम आगळथी, पहलेथी आप पोते आपणइ पोते आपणंड पोतानु आपणपानइ आपणने आपहणी आपोआप आपणीइ पोते आफणीइं, आफहणी आपोआप आभउं वादछं

आम तात हे तात ! आय-वर्ड आय-व्यय आरेणि प्रथम हरोळनुं युद्ध भालोय् आलोचवुं आले.यणंड आलोच आव्र आवडवुं आवड् आवडवुं आंसोज आसो आस्वासना आश्वासन आहण् मारबं आंहेडड शिकार ईग्यारसि अगियारस ईटवाह ईटनो नीमाडो उरइं-पगई अहीं तहीं उठींगइ अठिंगे उत्तरासण उत्तरासंग **उरहउ** ओरडो उरतं ओरतो, अप्राप्तनी शंखना उरमाई ओरमायो उछिउं ओल्युं उसन्न शिथिलाचारी (साधु) उसर पेखणुं, नाटक-भवाई जेवो तमाशो उहरू हटबुं ऊगर् बचवुं ऊगाह् उछाळवुं (घूळ) ऊघाड़ उघाड़ पड़ी जबुं, घटरफोट थवी ऊचल् उचाळा भरवा ऊदाऌ आंचकी छेबुं ऊपराठंड नारांज, प्रतिकूळ, विफरेंडु^{*} ऊपहरडं ऊंचु, ऊफरं ऊभग् ५५,५७ कंटाळी जबु, थाकबुं, मन-थी थाकवुं ऊमण दूमणी खिन्न **ऊरण** ऋणमुक्त एक्ण एक ज

आभइ अडवुं

فُاحِ الْحُ

एक-संथुई (स्त्री) जेने एक वारना अवणयी याद रही जाय तेवी (स्त्री) एकु एक पण, एके य कडितगीयाल कौतुकी कटकी ७१, १२८ आक्रमण, चडाई कणयर कणेर कणवार करणवार, सार-संभाळ कयर केरडो करगराट कळकळाट (कागडानो) करणवार चिंता, सारसंभाळ करसणी खेडूत कलहाट ६८ १ कागल (फा.) कागळ काणि मर्यादा, दाक्षिण्य, लाज (काणिइं पाडो शरममां नाखी, शरमावी) काद्म कादव कापडी रखडतो भिखारी कारखानडं (फा.) कारखानुं कारिमंड कृत्रिम, बनावटी किरण करण, युद्धमां अंगना चलन-बलननो प्रकार कुरमाई करमाई कुणंबी खेडुत, कणबी केलिहरा कदली गृह केहा केवा क्रोंकाट (भेंसनुं) डणकबुं खडल् खोळबुं ख्डह्ड् हथडवुं, स्वलित थवुं खडी-चापडी ९८ ? खडोखली ४४ कुंड, होज खम् क्षमा करवी खयन खेन, क्षय खयर खेर खर्च (फा.) खरच खळहाणडं स्वलित थयुं, अथडाणुं खली राखिउ १०४ छूटो पाडीने बंदी राख्यो ?

ख्वड खभो **खापर** ठीबडु* खांच् खेंचवुं खुभ् क्षुब्ध थवुं खोय खोंसबुं गडर्व गौरव, वरपक्षने कन्यापक्ष तरफ्थी अपातुं जमण, हरख-जमण गडउ पहाणो गढ-रोहड गढनो घेरो गमाड् गुमाववुं, विताववुं गमें गमें दिशो दिश गलहथ् गळवीए पकडबुं गंजा— गांजलु गाढड घणुं गाढेरडं वधारे गालहथा (देवा) (चितामा) हथेळी पर गाल ढाळवा गावडि २९ ? गिरिनारि गिरनार गुडि हाथीनुं कवच गुणव् गणवुं, वार्रवार पठन करवुं गुरुणी गरणी, जैन साध्वी गोगड १३६ गोगा बापा, गोगा देव, बोघा वीर **यामांतरि** गामतरे घद् संभववुं, लागवुं घडीआ-जोअणी ९७ घडिया-जोजन, एक-घड़ीमां एक योजन कापती घाई उतावळ घात् घालवं, नाखवुं घास् छेतरावुं घूर्मा-१४९ झोकां खावां चड-पखेर चोपास, चोगम चउमासडं चोंमासुं चउरी १७७ चोखंडो खाडो चिकिंड चिकत थयो चर्ड चोर

866

चाल् चालवुं, ऊपहर्वुं चाळणडं जवानुं, प्रस्थान चांपेल चंपानी सुगंधवाळुं तेल चिणउठी चणोठी चित्राम चित्र चिव् च्यववुं (स्वर्गमांथी) अवतरवुं चिहि चेह, चिता चिरी चीठी चीतार् चीतवबुं चोरीइ चोरीछूपीथी छट्टी जागी १०५ छडीए (संतान-जन्म पछी छट्ठे दिवसे) जागरण कर्यु छत्रडी छत्री छब् अडवुं छाजां छनां छाणहरू छाणांनो गंज छांदुआ बोल खुशामतना बोल, छांदां छेहिलउं छेल्छं जगन्न त्रण जगत, त्रिभुवन जर्हि बख्तरनो एक प्रकार जाजरंड जर्जरित जानीया, जानीलोक जानैया जायड जण्यो जिण् जणवुं जितकासी विजेताने योग्य जिस जेथी करीने जीणसाल बख्तरनो एक प्रकार जीप् जीतंबु जुहार् वंदवं, जुहार करवा जूड जुडुं ज्त ज्हें **जूप्** जूतबुं **ज्वटंड** जुगार जोयण योजन झीख् नहाबं **ध्यास युद्ध क**रवुं

झूझ युद्ध झोटींग भूत टोडर फूलनुं छोगुं, कलगी ठीकिरडं ठीकरं डंक दंश डाभसी हाभनी तीणी सळ डाहउ डाह्यो डील शरीर डुंगर डु[ं]गरो डोहलड दोहद, दोहलो ढोळ् दोडवर्बु तलहांस् तळां खबुं तलार नगररक्षक तंगोटी नानो तंबू तंबोलदार तांबूलिक ताछ् छोलंबु ताद तादा थई जवुं ताढि ताढ तुडिइं स्पर्धामां तुहे तें तूह तूं तूस् प्रसन्न थवुं तृणडं तरणुं त्रोडू तोडवुं थाक् रहेवं, बाकी रहेवं थाकड थाक्यो थाकती बाकीनी थांभड थांमलो थ्रभ स्तूप थोभ् टेको देवो द्इड् दडो दाझ् बळबुं दाधी दाझी दालिद्र दारिद्रथ दीस् देखावुं दुर्गीचि दुर्गंघ

दुहवण दुःख, दुभावं दोपडी ९८ बे-जीभी ? ठगारी वात कर-नारो ? हुंग गाम धीज साचनुं पारखुं धुरि आरंमे, शरूमां घूण् धुणाववुं धूपधाणां धूपदानीओ नमया नर्मदा नवबारही नव योजन पहोळी, बार योजन लांबी नष्टचर्या रात्रिचर्या नहोतड, नहींतो नहीतरि नहितर नानड नानो, मानो बाप **नालेरी** नाळिएरी नाव् न आवडवुं, न घटवुं नादु आनं देत थवुं, सुखी-समृद्ध थवुं निआणडं निदान, नियाणुं निभ्रंक् निंदवुं निवरंड निर्जन, एकांत निवाइ निवति, एकांते निहुंत**्** नोतरबुं नीगम् वीताववं, गाळवं नीठ ६९ नष्टप्राय ? दीन-हीन ? **नीटर** निष्टुर नीठाड्, नीठाळ् नाश करवो नेडालि दामणी नेसाळ निशाळ पइछंड पेछं पइसार्ड प्रवेश पउद् पोढवुं पडण पोणुं पउतार महावत पखाल स्नान पगइं पिंग पगले पगले

पग-घोअण पग घोवानुं पाणी पच्चखाण पचखाण अमुक पाप कर्मनो त्याग करवानी बाघाी पछोक डि पछवाडे पजून प्रद्युम्न पजूसण (पाठांतर: पजूसरण) पर्शुषण पडख, पडिख वाट जोवी, प्रतीक्षा करवी पडगह प्रतिग्रह, वाटका जेवुं पात्र पडहुउ पड़ो, घोषणानो दोल पडूतर प्रत्युत्तर पतगर् कबूल करबं, खातरी आपवी पतीज् विश्वास बेसवो, प्रतीति थवी परहुणड परोणो पराव् पारणुं कराववुं परिअछि, परियछि पडदो परिठव् स्थःपवं परीख् समजवं, जाणवं पवाडड पराक्रम, पराक्रमनो जश परोक्ष हुउ मृत्यु पाम्यो पसाय भेट पहिंदू ४४ फटकबं, विचार बदलवो, फरी जव पहिरणउं पहेरण पंचयज्ञ पांचजन्य (कृष्णनो शंख) पाखर घोडानुं कवच पाडूडं खराब पात्र गणिका पाथउं ४६ ? पाधर अं सीधे सीधुं, पाधरं, मात्र, केवळ पारिणेत पानेतर पालद् पलटावै, बदलावै पालि पल्ली, चोरोनो वास पाशी, पासड फांसो पाहुरी प्राहरिक, पहेरेगीर पीतरीउ पितराई पूजनीक पूजनीय

पूठडं पूठ पूरव पूरवं पुविलउं पहेलांनु पेई पेटी पेखणिया पेखणु करनारा, नाटकिया पोतर्ज अंग, पंड पोत्तउ निधान, खजानो पोतरा पौत्र प्रउद्देस १२२ दुःखद लगणीनो आवेग प्रगुण कीधड तैयार कर्यो प्रमाण प्रभाव प्रवाहि, प्रवाहइ सामान्यपणे, नियमे करी प्रहणागत परोणागत प्रहुसू १५५ दु:खद लगणीनो आवेग आववो प्रार्थिक प्रार्थित प्राहइ प्रायः फलहुलि भोजनमां फळफळादि खाद्य फासू प्रासुक फीट मटबुं, नष्ट थंबु पुर्क फरकबुं बगल (फा.) बगल बगाई बगासु बहिरख़ बेखो बंदीखाणडं बंदिखानुं बंदीवाण बंदीओ बार दीधां बारणां वैध कर्यां बांह (स्त्री.) बाहु बिडालड बिलाडो विलाई विलाडी बीहकण बीकण बीहनउ बीन्यो बोल वानां बोलबांह स्नेह-सद्भाव, सहाय भउजाई भोजाई भण् कहेबुं भरूअच, भरूअच्छ, भरूयछ भरूच

भथाइत माथावाळो भलइ भले भावइ तिहां फावे त्यां, गमे त्यां भाविठ पीडा, संकट भांगड प्रकार, भंगी **मांभलोइ** मांमळुं थाय भीनां भोनां थयां, भींड्यां भुइहरु भोंयरं भेटि भेट भोगहली कर्म भोगववा माटे उदयमां आवेलुं कर्म मउडड-सिउ धीमेथी मडडी मोडी मजूद (कर्) (फा.) दैयार करवुं मतु संमति (लिखित), मतु मनसः वांछा मयणहरू में दळ मसवाडउ मास महुतड, मुंहतड मंत्री महांत मोड़े मंथाणुं रवैयो माई मातृका, वर्णमाला माउलंड माभो माछिलंड, माछिली मान्नुंड, माछली मातड मत्त, मातो मातुल मातलि (इंद्रनो सार्थि) माम (स्त्री.) शाख, आबरू मालाखाडउ महल-अखाडो मास-दीह मासदिवस, एक मास सुधी माहिलडं माह्यलं, अंदरनं मित्राचार मैत्रो मुस् छंटबं मुहियां मुघा, व्यर्थ मधी भोळी, मुग्धा मुर्छी लालसा, सप्टहा मृगयात्रा मृगया मेघ वरसाद

मेल् मेळववुं, एक ठुं करवुं मेलापक मेळाप मेह वरसाद मोकलाव् विदाय लेवी मोजडा जोडा रइवाडी राजानी सवारी रति (स्त्रीनी) ऋतु, रजसावनी समय **रतिवंती ऋ**तुमती, रजस्वला रतोरतिई रातोरात राख् रक्षण करवुं राती अनुरवत रात्रि विहाणी वहाणुं थयुं **राम**ति रमत रांदुं दोरडुं, रांदवुं रोसाव् रीसावुं रीसाणु काप्यो गुस्से थयो रुलियामणडं रिकवामण् रुलियायति (स्त्री.) रिळयात, आनंद-उमंग रूसू (-ना उपर) गुस्से थवुं लहू प्राप्त करवुं लहुंडपण बचपण **छालरी** करचडी लालिपाछि हल्लोचप्पो, खुशामत लांख् नाखवुं लुक् संताबुं **ॡस्**–ॡटबु **लोटाड्** सुवाग्वुं लोटीकगणउं आळोटबुं लोहखंड होखंड लोंग लविंग वउळ् वीतवुं वड आंटो, वॉटो वडडं झ झुं वणिगपुत्र वाणोतर वधार ओलववुं (दीवो) वधराव् वधःववुं

वरसालड चोमासु वरंडी नीचो कोट, वंडी वर्णव् वखाणवुं वरांस् भ्रममां पडवुं वरांसइ भूलथी वरांसंड खोटो भरोसो, भूल, भ्रम वरि भले वहियावटि वही वहिरड वहेरो, फरक वहिर् वोरवुं वहीआही, वहयाही घोडा खेळववानुं स्थान वंदरवालि वंदनमाला, शोभा माटे लटकावेली माळा वंसियालि वांसनु जाळुं वाय् वगाडवुं वाखर माल वाग लगाम वाछरूया वाछरू वाटली, वादुली गोळ **वाणडत्र** वाणोतर वाणही मोजडी वाध् वधवु वानगी वानगी वार (कोधी) सहाय (करी) **वालंभप**णडं वहाल वासगृह, वासघर शयनगृह वाहरइ आव्या वार करी, संकटमां सहाय करो विकल्प शंका विखवाद विषाद विगइ घी वगेरे विकारजनक खाद्य वस्तु विगूच् निंदा कराववी, उतारी पाडवुं विचालइ दरमियान विछाह् ढांकवुं विछोहिं विख्टो पाडचो विण्ठं विनास्यु वित्ं ७० धुल्लक काम, कनिष्ठ काम

वर्णं वरण

विधात्रा विधाता विरतं विरक्त विरलडं छूड़ं विख्वड भोंठो, झंखवाणो विश्लेष १३२ वांकदेखो संशय विहड् वछूटवं, छूटवं विहरइ मिशे, निमित्ते अर्थनइ विहरइ (अर्थने मिरो) बोघर् पीगळवुं वीसम् विश्वास करवो वेगउ वहेलो वेच् खरचवुं, वापरवुं वेडस वेतस वेडि वगडो वेसास विश्वास ठयतिकर १४७ दगाबाजी, वंचना ठ्यवहार वेपार शत्रकार सदावत शराप शाप शाटड (१) ५० इंडं १ शिख्या शिक्षा शीकोत्तरी १३६ शिकोतरी ×**लेदमा** सळेखम संडण शकुन संडणडं, सुहणडं स्वप्त सउंचल संचळ सखाइउ सह।यक सखायति महाय सज्झाय स्वाध्याय समकित्व सम्यक्त्व समार् कापवुं, सरखुं करवुं (नख) सयर शरीर सविद्वं सौ ससंभ्रांत संभ्रांत, हांपळ फांपळ **सही (कर्**) पाकुं (करवं) सह सौ संघ।डउ संघाडो, संघेडो सचकार अवकाश ?

संप्रेड ६८, ११७ वळाववुं, विदाय आपवी समेडड कल्ह साखोड साक्षी साजउ साजो साढ सार्घ, दोढ साढी बार साडी बार सात् संताइवुं साह पकडवु साहम्मी साधर्मिक, समान धर्म पाळतुं सांढि सांढणी सांसह खमबुं, सहन करबुं सिज्यातर साधुने वास-स्थान देनार सोगडउं शुंगवाद्य सीझ् िद्ध थवुं सींगणीड घनुर्धर सुरहुं सुगंधी सुसरंड संसरी सुस्त स्वस्थ सुद्दा- गमवुं सुआर रसोयो स्क सुकः बु स्केडि सुवड स्वडी स्वडी सूझ शुद्ध थवुं सुधि समाचार सूनाडि निर्जन स्थळ, सूनु, एकांत सेवा सेवन स्वसुरुड ससरो हटक् हाकनु, धमकावनुं हस्त्रुआ हलका हाजीविड 'हा जो हा' करनारो हाथड थापो हाथ - मेलावणी हस्तमेळाप हारव् हारवुं हास्र चालवुं हास्यू हसवुं, हास्य हींड् (करवा हींरइ १०९) चाहवु (करवा चाहे) हेरू छूपी तपास, बासुसी तपास